विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
भूमिका	अ - उ
संक्षिप्त नामावली	
प्रथम अध्याय	
नलदमयन्ती-कथा का उद्भव	१ - ५३
(क) वैदिक साहित्य और नलदमयन्ती-कथा	१ - ११
(१) वैदिक साहित्य में नल आदि शब्द	१ - ४
(२) वैदिक काल में पांसों की संख्या	४
(३) वैदिक साहित्य में पांसों के खेल की प्रवृत्तियां	४ - ६
(४) वैदिक काल में पांसों के खेल की पद्धति	६
(५) नलदमयन्ती-कथा और पांसों का खेल	६ - ८
(६) वैदिक काल में नलदमयन्ती-कथा का स्वरूप	८ - ११
(ख) इतिहास और पुराणों में नलदमयन्ती-कथा	१२ - ४०
(१) बाल्मीकि रामायण में नलदमयन्ती-कथा	१२
(२) महाभारत में नलदमयन्ती-कथा	१२ - ३२
(३) पुराणों का रचना-काल	३३ - ३५
(४) पुराणों में नल आदि शब्द	३५ - ३६
(५) भारतीय इतिहास में दो नलों का प्रसंग	३६ - ४०
(ग) नलदमयन्ती-कथा की ऐतिहासिकता	४१ - ५३
(१) प्राकृतिक सिद्धांत के प्रतीक के रूप में नलदमयन्ती-कथा की कल्पना।	४१ - ४५
(२) श्री हेविट का सिद्धान्त और यथार्थता	४५ - ४६
(३) ऋग्वेद की इन्द्रसेना तथा केशी	४६ - ४७
(४) महाभारतीय मौद्गल्यानी और नल की पुत्री इन्द्रसेना	४७ - ५०
(५) इन्द्रसेना का स्थितिकाल	५०

विषय	पृष्ठ संख्या

(६) नल का स्थिति-काल — ५० - ५१

(७) निषध देश की भौगोलिक स्थिति — ५१ - ५२

(८) नलदमयन्ती-कथा के अन्तर्गत उल्लिखित अन्य देशों की भौगोलिक स्थिति। — ५२ - ५३

द्वितीय अध्याय

नलोपाख्यान विषयक साहित्य एवं उसके रचयिता — ५४ - १००

(१) नैषधानन्दम् — ५४ - ५५

(२) नलविलास — ५५ - ५६

(३) भैमी परिणयम् — ५६ - ५७

(४) नलानन्द — ५७

(५) नलाभ्युदयम् — ५८

(६) नैषधानन्द — ५९

(७) नलचरित्रम् — ५९ - ६०

(८) दमयन्ती कल्याण — ६०

(९) मंजुल नैषधम् — ६० - ६१

(१०) हर्ष नैषधीयम् — ६१

(११) अनर्घनलचरित्र — ६१ - ६२

(१२) नलचरित — ६२ - ६३

(१३) नलदमयन्तीयम् — ६३

(१४) पुण्यश्लोकोदयम् — ६३

(१५) भैमीपरिणयम् -- तीन भिन्न-भिन्न नाटक — ६३ - ६४

(१६) भैमीपरिणयम् — ६४

(१७) दमयन्तीकल्याणम् — ६४ - ६५

(१८) नलभूमिपालरूपक — ६५

(१९) दृश्यकाव्य की नाटकेतर विधाओं में नलदमयन्ती-कथा और उसके विरलग्रहण के कारण — ६६ - ७२

विषय	पृष्ठ संख्या
(२०) नैषधीय चरितम्	७२ - ७३
(२१) नलायनम्	७३ - ७४
(२२) सहृदयानन्दम्	७४ - ७५
(२३) नलकीर्तिकौमुदी	७५
(२४) नलाभ्युदयम्	७५ - ७६
(२५) नलोदयम्	७६ - ७७
(२६) नैषधपारिजात	७७
(२७) प्रतिनैषध	७७ - ७८
(२८) दमयन्ती परिणय	७८
(२९) राघवनैषधीयम्	७८ - ७९
(३०) उत्तरनैषधम्	७९ - ८०
(३१) दमयन्ती परिणय	८०
(३२) कल्याण नैषधम्	८०
(३३) नलवर्णनम्	८०
(३४) कलिविडम्बन	८१
(३५) नलहरिश्चन्द्रीय	८१
(३६) नलचरितम्	८१
(३७) नलकथार्णव	८२
(३८) नलयादवराघवपाण्डवीयम्	८२
(३९) नल-चम्पू	८३ - ८४
(४०) नलायनी चरित	८४
(४१) दमयन्ती परिणय चम्पू	८४
(४२) नलस्तोत्र	८५
(४३) नलचरित्र--तीन अन्य ऐसे ग्रन्थ	८५
(४४) बृहत्कथामंजरी में नलदमयन्ती-कथा	८६ - ८९
(४५) कथासरित्सागर में नलदमयन्ती-कथा	८९ - ९३
(४६) कथासरित्सागर और नलदमयन्ती कथा	९३ - १००

विषय — पृष्ठ संख्या

तृतीय अध्याय

नलदमयन्ती-कथा का नाट्यकाव्यात्मक विकास — १०१ - २०३

(१) दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य — १०१ - १०३

(२) नैषधानन्दम् और महाभारतीय नलदमयन्तीकथा — १०३ - १०७

(३) नलविलास की कथा — १०७ - ११३

(४) नलविलास की कथा और मूल कथा — ११३ - ११८

(५) मूलकथा के दो भाग और उनमें ~~नलदमयन्ती में~~ अर्थप्रकृतियां कार्यावस्थायें तथा पंचसंधियां । — ११८ - १२०

(६) नलविलास की कथा में अर्थप्रकृतियां अवस्थाएं तथा संधियां । — १२० - १२६

(७) नलचरित्रम् की कथा — १२७ - १३१

(८) नलचरित्रम् की कथा और मूल कथा — १३१ - १३४

(९) नलचरित्रम् की कथा में अर्थप्रकृतियां अवस्थाएं तथा संधियां । — १३४ - १३७

(१०) मंजुल नैषधम् की कथावस्तु — १३८ - १४३

(११) मंजुल नैषधम् की कथावस्तु और नलोपाख्यान — १४३ - १४७

(१२) मंजुल नैषधम् की कथावस्तु में अर्थप्रकृतियां अवस्थायें एवं संधियां । — १४७ - १५०

(१३) अनर्घनलचरित्र की कथावस्तु और नलोपाख्यान — १५० - १५५

(१४) अनर्घनलचरित्र की कथावस्तु में अर्थप्रकृतियां अवस्थाएं तथा संधिया । — १५५ - १५७

(१५) नलदमयन्तीयम् की कथा — १५८ - १६४

(१६) नलदमयन्तीयम् की कथा और मूलकथा — १६४ - १६९

(१७) नलदमयन्तीयम् की कथा में अर्थप्रकृतिया अवस्थाएं और संधियां । — १७० - १७३

(१८) मैत्रीपरिणयम् की कथावस्तु — १७३ - १८३

(१९) मैत्रीपरिणयम् की कथा और मूलकथा — १८३ - १९५

(२०) मैत्री परिणयम् में अर्थप्रकृतियां अवस्थाएं और संधियां । — १९५ - १९८

विषय		पृष्ठ संख्या

(२१) दमयन्ती कल्याणम् की कथावस्तु १६६ - २०१

(२२) दमयन्ती कल्याणम् की कथा और मूलकथा २०१ - २०२

(२३) निष्कर्ष २०२

चतुर्थ अध्याय

नलदमयन्ती-कथा का महाकाव्यात्मक विकास २०३ - २८१

(१) श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य २०३ - २०४

(२) नैषधीय चरितम् की कथावस्तु २०४ - २११

(३) नैषधीय चरितम् की कथा और मूलकथा २११ - २१४

(४) नैषधीय चरितम् में अर्थप्रकृतिया अवस्थाएं और संधियां । २१४ - २१७

(५) नलायनम् की कथावस्तु २१७ - २३०

(६) नलायनम् की कथावस्तु और मूलकथा २३१ - २४३

(७) सहृदयानन्दम् की कथावस्तु २४३ - २५५

(८) सहृदयानन्दम् की कथा और मूल कथा २५५ - २६४

(६) सहृदयानन्दम् में अर्थप्रकृतियां अवस्थाएं और संधियां । २६५ - २६७

(१०) नलाभ्युदयम् की कथा और मूलकथा २६७ - २७०

(११) नलोदयम् की कथा और महाभारतीय नलोपाख्यान । २७० - २७२

(१२) राघव नैषधीयम् और महाभारतीय नलदमयन्ती कथा । २७२ - २७४

(१३) उत्तरनैषधम् और मूलकथा २७४ - २७६

(१४) उत्तरनैषधम् में अर्थप्रकृतियां अवस्थाएं और संधियां । २७६ - २७८

(१५) कल्याण नैषधम् और मूलकथा २७८ - २७६

(१६) निष्कर्ष २८०

विषय | पृष्ठ संख्या

पंचम अध्याय

चम्पू काव्य के रूप में नलदमयन्ती-कथा का विकास २८१ - ३०१

(१) चम्पू काव्य का स्वरूप २८१ - २८३

(२) नल चम्पू की कथा २८३ - २९१

(३) नल चम्पू की कथा और मूलकथा २९१ - २९६

(४) दमयन्ती परिणय चम्पू की कथा और मूलकथा २९६ - ३००

षष्ठ अध्याय

नलदमयन्ती-साहित्य में पात्रों का चरित्र-चित्रण ३०१ - ३४५

(१) प्रस्तुत निबन्ध में पात्रों के चरित्र-चित्रण पर विचार करने की आवश्यकता । ३०१

(२) काव्यों में नायक ३०२

(३) नलदमयन्ती साहित्य में नल ३०२ - ३१८

(४) नलदमयन्ती साहित्य में दमयन्ती ३१८ - ३३१

(५) नलदमयन्ती साहित्य में हंस ३३१ - ३३६

(६) नलदमयन्ती साहित्य में कलि ३३७ - ३३९

(७) नलदमयन्ती साहित्य में देवगण ३३९ - ३४२

(८) नलदमयन्ती साहित्य में पुष्कर --कूबर ३४२ - ३४४

(९) निष्कर्ष ३४५

सप्तम अध्याय

नलदमयन्ती साहित्य में रसनिरूपण ३४६ - ३६८

(१) काव्य में रस का महत्त्व ३४६

(२) रस का स्वरूप ३४६ - ३४७

(३) शृंगार रस का रस-राजत्व ३४७ - ३४८

(४) शृंगार रस का विस्तार ३४८ - ३४९

(५) नलदमयन्ती साहित्य में अंगीरस ३४९

(६) शृंगार रस के भेद--विप्रलम्भ और संयोग ३४९ - ३५०

विषय | पृष्ठ संख्या

(७) नलदमयन्ती साहित्य में पूर्वराग शृंगार ३५० - ३५५
(८) नलदमयन्ती साहित्य में प्रवास विप्रलम्भ ३५५ - ३५८
(९) संयोग शृंगार ३५८ - ३६०
(१०) शृंगार रसाभास ३६० - ३६१
(११) वीर रस ३६१ - ३६३
(१२) रौद्र रस ३६३ - ३६४
(१३) हास्य रस ३६४
(१४) वात्सल्य रस ३६५
(१५) अद्भुत रस ३६५ - ३६६
(१६) करुण रस ३६६
(१७) भयानक रस ३६६ - ३६७
(१८) बीभत्स रस ३६८
(१९) शान्तरस ३६८

अष्टम अध्याय

नलदमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से नलदमयन्ती साहित्य का मूल्यांकन । ३६९ - ३७५

परिशिष्ट --१

संस्कृतेतर भारतीय भाषाओं में नल दमयन्ती कथा पर आधारित साहित्य । क - च

परिशिष्ट--२

सहायक ग्रन्थ सूची छ - ढ

(क) नल दमयन्ती कथा पर आधारित हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची.
(ख) नल दमयन्ती कथा पर आधारित प्रकाशित ग्रन्थों की सूची
(ग) सामान्य ग्रन्थ
(घ) अंग्रेजी के ग्रन्थ

भूमिका

बाल्यावस्था में पुजाओं के अवसर पर मातृ-मुख से नल तथा दमयन्ती की कथा सुनकर चित्त नाना प्रकार की भावनाओं से ओतप्रोत हो जाता था। कभी नल के साथ सहानुभूति होती थी और कभी दमयन्ती के साथ। कभी-कभी नल पर क्रोध भी आने लगता था।

कालान्तर में मुझे संस्कृत पढ़ने का सौभाग्य मिला। एम०ए० में 'नैषधीय चरितम्' तथा 'नल-चम्पू' ये दो ग्रन्थ पढ़ने को मिले। बाल्यावस्था में अंकुरित बीज को पनपने के लिए उपयुक्त भूमि मिल गई। पूज्य गुरुवर पं०सरस्वतीप्रसाद जी चतुर्वेदी ने 'नल चम्पू' के अध्यापन के समय इस विषय में अपूर्व प्रोत्साहन दिया। एम०ए० परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पूर्व से ही शोध-कार्य करने की लालसा मन में जागरूक होने लगी थी। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात् मैंने अपने श्रद्धेय गुरुवर डा० आद्याप्रसाद जी मिश्र से मिलकर इस विषय में अपनी इच्छा प्रकट की। अपने अत्यधिक व्यस्त जीवन में भी उन्होंने मेरे निर्देशन का कार्य-भार स्वीकार कर लिया एवं मेरे मनचाहे विषय को ही शोध का विषय स्वीकार करके मुझे कृतकृत्य किया। एतदर्थ मैं उनकी बहुत ही आभारी हूं। जिस कथा से आकृष्ट होकर श्रीहर्ष जैसे उद्भट प्रतिभावान कवि-मुर्धन्य ने अपने 'नैषधीयचरित' के आरम्भ में ही 'रसैः कथा यस्य सुधावधीरिणी' इत्यादि लिखा है, उससे भला कौन सहृदय आकृष्ट न होगा। संस्कृत साहित्य में राम तथा कृष्ण की कथाओं पर विपुल साहित्य की सर्जना की गई है। यह कहना न होगा कि नलदमयन्ती-कथा भी लगभग उसी प्रकार से व्यापक है। इस कथा पर आधारित साहित्य के केवल एक ही ग्रन्थ 'नैषधीयचरितम्' पर अब तक दो शोध प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं परन्तु शेष समस्त साहित्य अछूता पड़ा था।

इनका सांगोपांग विवेचन अभी तक नहीं किया गया था । अतस्व इस साहित्य की मीमांसा करना मुझे अत्यन्त रुचिकर प्रतीत हुआ ।

इस विषय को स्वीकार करके शोधकार्य प्रारम्भ करने के पश्चात् `विश्वविद्यालय अनुदान आयोग` ने सौभाग्यवश मुझे दो सौ रुपये प्रति मास की छात्र-वृत्ति भी प्रदान की ।

मेरे इस अनुसन्धान विषय पर उस समय प्रकाशित साहित्य अधिक मात्रा में नहीं मिल रहा था । अतस्व प्राकृत भाषा में भी प्रस्तुत विषय का विस्तार करने की इच्छा मन में बलवती होने लगी । परन्तु प्राकृत साहित्य में नलदमयन्ती कथा का विकास गुण और मात्रा दोनों ही दृष्टियों से प्रभुत होने के कारण स्वत: ही स्क शोध निबन्ध का विषय प्रतीत हुआ । इसी समय मैंने नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता में जाकर भी पुस्तकों की खोज की । कार्यान्तर से मद्रास जाने पर केवल उसी विश्वविद्यालय में उपलब्ध होने वाले `स्नल्स आफ ओरियण्टल रिसर्च` का भी अध्ययन किया । इसी खोज के क्रम में इस विषय पर ग्रन्थ मिलते ही चले गए । परन्तु इस विषय पर उपलब्ध होने वाले ग्रन्थों में से अधिकांश की न तो कोई टीका मिलती है और न कोई अनुवाद ही । इस अवस्था में उन ग्रन्थों को समझने में ही बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा ।

प्रस्तुत प्रबन्ध में प्रयुक्त ग्रन्थों को जुटाने में भी बहुत कठिनाई हुई । साथ ही समय भी बहुत लग गया । कई प्रकाशित ग्रन्थ भी आजकल दुर्लभ हो गए हैं तथा अप्रकाशित पाण्डुलिपियों को प्राप्त करना सहज कार्य नहीं था । इन पांडुलिपियों के लिए `राजकीय अभिलेखागार` इलाहाबाद के अधिकारियों ने भी बहुत प्रयत्न करने के पश्चात् अपनी असमर्थता प्रकट की । `पुण्यश्लोकोदयम्` नाटक के विषय में उसके उल्लेखकर्ता श्रीमान् लालचन्द्र भगवान गान्धी से पत्रव्यवहार किया परन्तु इस विषय में वे भी कोई सहायता न कर सके । रामनगर दुर्ग के सरस्वती भण्डार पुस्तकालय तथा अन्य अनेक पुस्तकालयों के अधिकारियों को पत्र लिखे परन्तु कहीं से तो उत्तर ही नहीं मिला और यदि कहीं से यदि मिला भी तो वह अनुकूल नहीं था । अड्यार लाइब्रेरी मद्रास में भी इन पुस्तकों की खोज की परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ । श्री स्स०पी० स्म्बार महोदय से पत्रव्यवहार किया । उन्होंने `मंजुलनैषधम्` नाटक की स्क प्रति मुझे भेंट कर दी । स्तदर्थ उनकी मैं बहुत आभारी हूं ।

उपर्युक्त पाण्डुलिपियों के संरक्षक पुस्तकालयों ने इन्हें यहां भेजना अस्वीकार कर दिया । कुछ पाण्डुलिपियां किसी व्यक्ति-विशेष के पास हैं ।उनके उपलब्ध पतों पर पत्र-व्यवहार करने में निराशा ही हाथ लगी । इस सब से चित्त इतना उद्विग्न हो गया कि आगे से पाण्डुलिपियां प्राप्त करने का हौसला ही चूर-चूर हो गया ।

अध्यक्ष महोदय की कृपा से, `गवर्नमेण्ट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी` मद्रास के सौजन्य से तथा प्रयाग विश्वविद्यालीय कर्मचारियों के साहाय्य से `अपरनैषधम्`,`कल्याणनैषधम्`, `दमयन्ती कल्याणम्` तथा `दमयन्ती परिणय चम्पू` ग्रन्थ उपलब्ध हुए । परन्तु दुर्भाग्यवश इनकी प्राप्ति में दो वर्ष से भी अधिक समय लग गया । इस अवस्था में अवशिष्ट अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की प्राप्ति की दिशा में उत्साह और भी ठण्डा पड़ गया । अस्वास्थ्य आदि विविध बाधाओं के रहते हुए भी यह निबन्ध जो कुछ भी बन सका है, उसकी रूपरेखा निम्नलिखित है :--

प्रस्तुत निबन्ध में कुल आठ अध्याय हैं, प्रथम अध्याय के अन्तर्गत नल-दमयन्ती -कथा के उद्भव पर विचार किया गया है । वैदिक काल में और उसके पश्चात् इतिहास पुराणों के समय में नलदमयन्ती-कथा थी अथवा नहीं, यदि थी तो उसका क्या स्वरूप था । इसके अतिरिक्त संस्कृत-साहित्य के इन बहुचर्चित चरित्रों का इस संसार में कभी अस्तित्व था अथवा ये केवल कल्पना ही की भूमि पर निवास करते हैं । उनका स्थिति-काल क्या था तथा वे जिस देश के राजा थे उसकी भौगोलिक स्थिति पर भी यथाशक्ति विचार किया गया है ।

इस निबन्ध के शेष सात अध्याय नल दमयन्ती कथा के विकास से सम्बन्ध रखते हैं । द्वितीय अध्याय में नल और दमयन्ती विषयक समस्त उपलब्ध और अनुपलब्ध संस्कृत साहित्य और उसके निर्माताओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है । नलदमयन्ती -कथा के विकास पर विचार करने से पूर्व इस विषय के समस्त साहित्य का विवरण देना आवश्यक प्रतीत हुआ । इसके अतिरिक्त इसविषय के जिन ग्रन्थों का केवल उल्लेख ही मिलता है अथवा जो किन्हीं कारणों से प्राप्त नहीं किए जा सके उनका आगे के अध्यायों में समय-समय पर उल्लेख न करके केवल इसी अध्याय में विवरण दे दिया गया है । यही नहीं, काव्य की कुछ विधाओं में नलदमयन्ती-कथा को एकदम ही स्थान नहीं मिला है या कम मिलता है उसका क्या कारण

हो सकता है, इस विषय पर भी विचार किया गया है ।

तृतीय, चतुर्थ तथा पंचम अध्यायों के अन्तर्गत क्रमश: नल एवं दमयन्ती की कथा पर आधारित नाटकों, महाकाव्यों और चम्पू काव्यों में प्रस्तुत कथा का विकास किस प्रकार से मिलता है, इस पर विवेचन किया गया है । महाभारतीय नलदमयन्ती- कथा से काव्यों की कथावस्तु में क्या क्या परिवर्तन किए गए हैं, तथा इन विभिन्नताओं का क्या कारण हो सकता है , इस विषय का भी यथाशक्ति विवेचन किया गया है । इसी सन्दर्भ में जिन नाटकादि काव्यों की कथावस्तु में मूल-कथा से भेद नगण्य है उनकी कथावस्तु यहां देना व्यर्थ की पुनरावृत्ति होता अत: उनकी कथा यहां नहीं दी गयी है । इसके विपरीत जिनकी कथा नलोपाख्यान से बहुत अधिक भिन्न है तथा केवल मूलकथा से उनकी कथा में मिलने वाले भेदों को दिखाने से जिनकी कथा का स्वरूप स्पष्ट नहीं हो सकता था उसकी कथावस्तु ही संक्षेप में दे देना अधिक समीचीन प्रतीत होता है । नाटकों तथा महाकाव्यों का स्वरूप लक्षण ग्रन्थों में स्पष्ट ही मिलता है इसके अतिरिक्त इसके विषय में विद्वानों में कोई विशेष मतभेद भी नहीं परिलक्षित होता इसलिए इस स्थल पर उसका विवरण केवल पिष्ट-पेषण ही सिद्ध होता । इसके विपरीत चम्पू काव्य के दण्डी आदि आचार्यों द्वारा प्रतिपादित लक्षण अधूरे तथा भ्रामक प्रतीत होते हैं । अतएव षष्ठ अध्याय के अन्तर्गत चम्पू काव्य की आन्तरिक प्रकृति से सम्बन्धित उन सूक्ष्म बातों को प्रस्तुत किया गया है, जिनके आधार पर गद्यकाव्य से चम्पू काव्य का भेद स्पष्ट हो सके । तृतीय और चतुर्थ अध्यायों में नाटकों और महाकाव्यों के अन्तर्गत मिलने वाली पंच अर्थ प्रकृतियों, कार्यावस्थाओं तथा पंचसंधियों पर भी विचार किया गया है । नलदमयन्ती कथा पर आधारित 'नलायनम्' महाकाव्य कुछ विचित्र प्रतीत होता है । 'कादम्बरी' के अन्तर्गत तो बाण ने शुक के तीन ही जन्मों की कथा का वर्णन किया है परन्तु नलायनम् के अन्तर्गत तो महाराज नल और दमयन्ती के पांच जन्मों की कथा मिलती है । इस प्रकार तो 'हरिकथाअनन्ता न्याय से जो इसमें सौ सर्ग लिखे गए वह कम ही है । यह महाकाव्य कम और पुराण ही अधिक प्रतीत हुआ इस स्थिति में इसमें अर्थप्रकृतियां, कार्यावस्थायें, तथा संधियां दिखाने के लिए खींच-तान नहीं की गयी है । इसी प्रकार जो ग्रन्थ नलदमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं रखते उनको भी केवल

संधियों आदि का परिगणन अनावश्यक समझ कर छोड़ दिया गया है ।

षष्ठ अध्याय में नल दमयन्ती-कथा के पात्रों के चरित्र चित्रित किए गए हैं । वास्तव में प्रबन्ध का विषय तो प्रस्तुत कथा का उद्भव और विकास ही था परन्तु कथा-विकास पात्रों के द्वार से ही सम्भव होने के कारण उनके चरित्र का चित्रण उसके प्रदर्शन में उपयोगी ही होगा । इस कारण से चरित्र-चित्रण पर प्रस्तुत पुरा अध्याय लिखा गया है ।

सप्तम अध्याय में नलदमयन्ती साहित्य के अन्तर्गत मिलने वाले रस पर विचार किया गया है । आचार्यों द्वारा काव्य का प्राण तत्त्व रस ही निर्धारित किया गया है । इस स्थिति में काव्य का सौन्दर्य और उसके माध्यम से होने वाले कथा के विकास पर विचार करना रस पर विचार किए बिना असम्भव प्रतीत हुआ । परन्तु यही बात अलंकारादि के विषय में नहीं कही जा सकती । अत: उनका विवेचन यहां अनपेक्षित समझ कर छोड़ दिया गया है ।

अष्टम अध्याय में सम्पूर्ण नल दमयन्ती साहित्य का मूल्यांकन किया गया है वास्तव में यह इस निबन्ध का सार या उपसंहार समझा जाना चाहिए ।

टाइप के विषय में मैं श्री रामहित त्रिपाठी जी को उनके सहानुभूतिपूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद देती हूं । मैं अपने पूज्य माता-पिता तथा अन्य पारिवारिक सदस्यों की भी बहुत आभारी हूं, जिनके प्रोत्साहन और सहयोग से मैं इस कार्य में प्रवृत्त हो सकी । संस्कृत साहित्य के सभी विद्वानों का स्मरण करते हुए अन्त में मैं परम पूज्य गुरुवर डा० आद्याप्रसाद जी मिश्र जो मेरे लिए केवल निर्देशक ही न होकर गुरु, पिता या इन सब से भी अधिक कुछ रहे हैं, शब्दों के माध्यम से आभार प्रकट करने में स्वयं को असमर्थ पाती हूं । उन्हीं सब की महती कृपा के मूर्तरूप इस ग्रन्थ को उन्हीं के चरणों में अर्पित करती हूं ।

लक्ष्मी देवी
(लक्ष्मी देवी)

संस्कृत विभाग
प्रयाग विश्वविद्यालय
प्रयाग

संक्षिप्त नामावली

अ० न० च०	-- अनर्घ नल चरित्र
उ० नै०	-- उत्तरनैषधम्
क० स० सा०	-- कथा सरित्सागर
का० प्र०	-- काव्य प्रकाश
द० रू०	-- दशरूपक
द० क०	-- ~~नलाभ्युदयम्~~ दमयन्ती कल्याणम्
न०	-- नलायनम्
न० द०	-- नलदमयन्तीयम्
न० च०	-- नल चरित्रम्
न० वि०	-- नलविलास
ना०शा०	-- नाट्य शास्त्र
नै०	-- नैषधीय चरितम्
बृ०क० मं०	-- बृहत्कथामंजरी
भै० प०	-- भैमी परिणयम्
म० भा०	-- महाभारत
मं० नै०	-- मंजुल नैषधम्
रा० नै०	-- राघवनैषधीयम्
सहृ०	-- सहृदयानन्दम्
सा० द०	-- साहित्य दर्पण

प्रथम अध्याय

-o-

नल दमयन्ती-कथा का उद्भव

(क) वैदिक साहित्य और नल-दमयन्ती-कथा

(ख) इतिहास और पुराणों में नल-दमयन्ती-कथा

(ग) नल-दमयन्ती कथा की ऐतिहासिकता

प्रथम अध्याय

-०-

नल-दमयन्ती कथा का उद्भव

(क) वैदिक साहित्य और नल-दमयन्ती-कथा

नल और दमयन्ती की पवित्र कथा में आने वाले प्रमुख पात्रों के नाम कितने प्राचीन हैं, यह जानने के लिए सर्वप्रथम तो वैदिक साहित्य के वे स्थल विचारणीय हैं, जहां कहीं इनका नामोल्लेख भी मिलता है। साथ ही यह भी अवधेय है कि किसी स्थल-विशेष पर उस संज्ञा का अर्थ क्या है ?

ऋग्वेद[1] में `नड` शब्द का प्रयोग मिलता है जिसका अर्थ झीलों में उत्पन्न होने वाला एक पौधा विशेष है। अथर्ववेद[2] में इसे वार्षिक कहा गया है। आगे चलकर शतपथ ब्राह्मण[3] में `नड नैषध` प्रयुक्त हुआ है। उक्त स्थल पर यह एक ऐसा मानव-राजा प्रतीत होता है, जिसकी[4] उसकी विजयों के कारण मृत्यु के देवता `यम` के साथ तुलना की गयी है। दक्षिण की यज्ञाग्नि के साथ समीकृत

१- द्रष्टव्य : वैदिक इण्डेक्स
२- वैदिक इण्डेक्स
३- ए०वेबर : हिस्ट्री आफ इंडियन लिट्रेचर पृ० १३२।
४- वैदिक इण्डेक्स

किए गए होने के कारण श्री मैक्डानल तथा कीथ महोदय ने सम्भावना की है कि वे भी दक्षिण दिशा से सम्बद्ध यम की ही भांति दक्षिण के कोई राजा रहे होंगे[१]।

शतपथ ब्राह्मण[२] में 'नैषिध' शब्द दक्षिण के राजा 'नड' की उपाधि के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। श्री मैक्डानल और कीथ महोदय के विचार से इसका ही परवर्ती रूप 'नैषध' हुआ है[३]। सैण्ट पीटर्सबर्ग-कोश के अनुसार 'नैषिध' का मूल रूप 'नै: षिध' था। शतपथ ब्राह्मण[४] में ही प्राच्य और उदीच्य जातियों के उल्लेख के अन्त में राजा नल और नैषध का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। यहां पर यह नल-दमयन्ती कथा के नायक 'नल' का स्पष्ट उल्लेख प्रतीत होता है।

'बौधायन श्रौतसूत्र'[५] के एक ब्राह्मण ग्रन्थ जैसे स्थल पर ऋतुपर्ण नाम आया हुआ है। यहां पर इसका प्रयोग भंगाश्विन के पुत्र तथा शफाल के राजा के लिए हुआ है। 'आपस्तम्ब श्रौतसूत्र' में 'ऋतुपर्ण कयोवधोभंगयश्विनौ' मिलता है[६]। इस प्रकार नलोपाख्यान में आने वाले अयोध्या-नरेश अक्षविद्या-विशारद ऋतुपर्ण इन सबसे नितान्त भिन्न प्रतीत होते हैं।

१- वैदिक इण्डेक्स

२- 'एता ह वै देवता-- योऽस्ति तस्मिन् वसन्ति-- इन्द्रो, यमो, राजा नडो नैषिध:, असन् पांसव: ।।१।।

तद्वा एव एवेन्द्रो-- यदाहवनीय: । अथैष एव गार्हपत्यो यमो राजा अथैष एव नडो नैषिधो यदन्वाहार्यपचन: । तद्यदेतमहरहर्दक्षिणत् आहरन्ति ।तस्मादाहु:-अहरहर्वै नडो नैषिधो यमं राजानं दक्षिणत उपनयतीति ।।२।।'

माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण-- वेदार्थ प्रकाश टीका सहित -- प्रथम भाग ।
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित । काण्ड-२,प्रपाठक २,ब्राह्मण४ का१-२ ।

३- द्रष्टव्य - वैदिक इण्डेक्स

४- शतपथ ब्राह्मण २,२,४-१२

५- द्रष्टव्य वैदिक इण्डेक्स

६- द्रष्टव्य वैदिक इण्डेक्स

ऋग्वेद[१] और उसके आगे[२] भी नीले कमल के अर्थ में 'पुष्कर' शब्द प्रयुक्त हुआ है। ऐतरेय ब्राह्मण में 'स्रुवा' के लिए 'पुष्कर' शब्द का प्रयोग मिलता है[३]। निरुक्त के अनुसार पुष्कर का अर्थ 'जल' है[४]। शतपथ ब्राह्मण में भी इस शब्द का इसी अर्थ में प्रयोग मिलता है[५]। इस प्रकार वैदिक साहित्य में, कलि की प्रेरणा से नल को द्यूत में पराजित करने वाले पुष्कर का उल्लेख कहीं भी नहीं मिलता।

ऐतरेय ब्राह्मण में 'भीम वैदर्भ' शब्द आया है[६]। यह भीम विदर्भ के राजकुमार हैं जिन्होंने 'पर्वत' और 'नारद' द्वारा आविष्कृत सोम रस के समान किसी अन्य द्रव का ज्ञान प्राप्त किया था। इन भीम वैदर्भ का विदर्भ-नरेश दमयन्ती के पिता भीम के साथ 'ऐक्य' जान पड़ता है।

ऋग्वेद संहिता में 'इन्द्रसेना' शब्द आया है[७]। यह सम्भवतः नल-दमयन्ती की पुत्री इन्द्रसेना ही है।

तैत्तिरीय ब्राह्मण में 'वृष्णि' के वंशज 'शुष' की वंशगत उपाधि के रूप में और शतपथ ब्राह्मण में एक व्यक्ति की वंशगत उपाधि के लिए 'वार्ष्णेय' शब्द का प्रयोग मिलता है[८]। नल के सूत 'वार्ष्णेय' से इनके सम्बन्ध के विषय में कुछ कह सकना कठिन है, फिर भी सम्भव है कि 'नल' का सूत भी 'वृष्णि' का वंशज हो और इसीलिए वह वार्ष्णेय कहलाता हो। जो भी हो, नल-दमयन्ती की कथा में ऐसा कुछ संकेत नहीं मिलता।

वैदिक काल में नल और दमयन्ती की कथा थी या नहीं और यदि थी तो उस समय उसका क्या रूप था, इस विषय पर विचार करने के लिए वैदिक काल में प्रचलित 'पासों के खेल' के साथ नल और पुष्कर के बीच होने वाले द्यूत का साम्य और वैषम्य काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। वैदिक-आर्यों के मनोरंजन का एक

१- द्रष्टव्य-- वैदिक इण्डेक्स

२- द्रष्टव्य-- वैदिक इण्डेक्स

३- द्रष्टव्य-- वैदिक इण्डेक्स

४- द्रष्टव्य-- वैदिक इण्डेक्स

५- द्रष्टव्य-- वैदिक इण्डेक्स

६- द्रष्टव्य-- वैदिक इण्डेक्स

७- इण्डियन एण्टीक्वेरी, जिल्द संख्या-४७, १६१८, पृ०२८०

८- द्रष्टव्य-- वैदिक इण्डेक्स

प्रमुख साधन `पांसा` ही था[1]। वैदिक साहित्य में इस पांसा फेंकने वाले खेल का उल्लेख अनेक स्थलों पर मिलता है। ऋग्वेद में पांसों की संख्या `त्रिपंचाश:` बताई गई है[2] परन्तु इसके अर्थ के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। लुडविग, वेबर और त्सिमर जब इसका अर्थ पन्द्रह करते हैं तो रौथ तथा ग्रौसमैन तिरपन और ल्युडर्स एक सौ पच्चिस। परन्तु जैसा कि ल्युडर्स ने अन्त में इसे एक बड़ी संख्या का अस्पष्ट अभिव्यंजक स्वीकार किया है वही अर्थ समीचीन प्रतीत होता है[3]। पश्चात्कालीन संहिताओं तथा ब्राह्मण ग्रन्थों के अनेक स्थलों पर पांसा फेंकने से संबंधित व्याहृतियों की तालिकाएं दी हुई हैं। तैत्तिरीय संहिता में इनका नाम `कृत`, `त्रेता`, `द्वापर`, `आस्कन्द` और `अभिभू` मिलता है। वाजसनेयि-संहिता में पुरुष मेध के बलि प्राणियों में से कितव अक्षराज को, आदि नव दर्शं, कृत को, `कल्पिन्`, त्रेता को, `अधिकल्पिन`, द्वापर को, और समा स्थाणु`, आस्कन्द को, अर्पित किया गया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण के समानान्तर उल्लेख की तालिका में नाम हैं --`कितव`, समाविन्`, आदिनवदर्शं`, `बहि: सद्` और समास्थाणु` तथा `अक्षराज`, `कृत`, `त्रेता`, `द्वापर` और `कलि`। शतपथ ब्राह्मण से यह प्रतीत होता है कि कलि का ही दूसरा नाम `अभिभू` था और `तैत्तिरीय` तथा वाजसनेयि` संहिताओं की समानान्तर तालिकाओं से यह ज्ञात होता है कि `अभिभू` और `अक्षराज` दोनों समान हैं परन्तु तैत्तिरीय ब्राह्मण के बाद की तालिका में दोनों ही आते हैं। पांसा फेंकने के इन नामों में से कुछ का उल्लेख ऋग्वेद और अथर्ववेद में मिलता है। कलि का प्रयोग अथर्ववेद में मिलता है और ल्युडर्स यह दिखाने का प्रयत्न करते हैं कि `ऋग्वेद` के अनेक स्थलों पर `कृत` भी एक चाल विशेष का नाम है। `अथर्ववेद` में भी स्पष्टत: यही अर्थ पाया जाता है।

१- वैदिक इण्डेक्स (अक्ष)

२- वैदिक इण्डेक्स (अक्ष)

३- वैदिक इण्डेक्स

साथ ही साथ पांसा फेंकने (अक्ष:) के स्थाधिक प्रकार होते थे ऐसा ऋग्वेद के एक स्थल द्वारा सिद्ध होता है, जहां पांसा फेंकने का धनदायक या नाशक के रूप में देवों से तुलना की गयी है[1]।

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है, वैदिक साहित्य में कहीं भी इसके खेलने की पद्धति का स्पष्टीकरण नहीं होता । 'सैण्ट पीटर्स बर्ग कोश' में यह अनुमान किया गया है कि उपर्युक्त 'कृत', 'त्रेता' आदि नाम या तो ४,३,२,१ की संख्या द्वारा चिह्नित पांसों से या पांसों के उन पार्श्वों से जिनपर ये अंक चिन्हित हों संबंधित हैं । द्वितीय अर्थ कुछ बाद के भाष्यकारों द्वारा भी पुष्ट होता है परन्तु प्रथम अर्थ के पक्ष में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं और द्वितीय अर्थ में भी जैसा ल्यूडर्स ने कहा हैविभीदक के बीजों का पांसों के रूप में उपयोग होने से किसी भी पार्श्व का ठीक ऊपर होना असम्भव कर देता है । फिर भी आपस्तम्ब श्रौत सूत्र आदि में अग्न्याधेय और राजसूय के अवसरों पर सांसारिक खेल के वर्णन से पूर्वोक्त व्याहृतियों पर थोड़ा सा प्रकाश पड़ता है । खेल का उद्देश्य,पांसों की कुल संख्या अर्थात् चार से विभाजित होने वाली संख्या की प्राप्ति होता था । इसी संख्या को 'कृत' कहते थे ,। यदि पांसों की संख्या को चार से.विभक्त करने पर तीन शेष बच जायं तो उसे 'त्रेता', इसी प्रकार चार से विभाजन पर दो बचने पर 'द्वापर' और एक शेष रहने पर 'कलि' कहा जाता था । विभाजक संख्या पांच होने पर फेंके गए पांसों का विभाजन करने में कुछ भी न बचने पर उसे 'कलि' 'कलि', दो बचने पर 'द्वापर' , तीन बचने पर 'त्रेता' और चार बचने पर 'कृत' कहते थे ।पांसों पर कोई अंक-चिह्न नहीं होता था केवल पांसों की सम्पूर्ण संख्या क्या होती थी यही मुख्य था । जैसा ऋग्वेद से पता चलता है पांसों की संख्या नि:सन्देह अधिक होती थी और उसी का महत्व होता था । ऋग्वेद में क्षति का कारण 'अक्षस्य एकपरस्य' बताया गया है । इस प्रकार चार प्राप्त करने की चाल और एक से हारने की बात से यही प्रतीत होता है कि कृत जीतने वाली चाल थी

१- द्रष्टव्य-- वैदिक इण्डेक्स

और कलि हारने वाली । इस खेल की पद्धति के विषय में ल्यूडर्स का अनुमान बहुत समीचीन प्रतीत होता है । अक्षक्रीडा में प्रवृत्त दो व्यक्तियों में से पहले एक व्यक्ति खेल के स्थान पर कुछ पासे फेंकता था फिर दूसरा व्यक्ति उसी स्थान पर एक ऐसी संख्या में पासे फेंकने का प्रयत्न करता था जो पहले की संख्या के साथ जोड़ देने पर चार से या पांच से विभाजित हो जायें।[१]

नल-दमयन्ती की कथा में पासों के खेल का विशेष महत्त्व है । एक दृष्टि से तो नल-दमयन्ती कथा-वितान के मूल स्रोत हंस और द्यूत क्रीड़ा ही है फिर भी महाभारत में नल और पुष्कर में कई मास तक चलने वाले द्यूत का कोई विवरण प्राप्त नहीं होता । बस, यही पता चलता है कि द्यूत क्रीडा के माध्यम अक्ष थे और उसमें दांव लगाया जाता था । वैदिक काल के पासों के खेल में भी ये दोनों लक्षण मिलते हैं तथा तब भी पासों के खेल में होने वाली गम्भीर क्षतियों का उल्लेख मिलता है । ऋग्वेद में ही एक जुआरी पासे के खेल में अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति और पत्नी को भी हार कर विलाप करता है । लगभग ऐसी ही गम्भीर क्षति पुण्य श्लोक 'नल' को भी उठानी पड़ी क्योंकि 'कलि' ने उनमें प्रवेश पा लिया था । जैसा कि ऊपर कह आए हैं 'कलि' हराने वाली चाल का नाम था । उसके और द्वापर (वह चाल जिसमें सम्पूर्ण संख्या को ४ या ५ से विभाजित करने पर २ अवशिष्ट रहते हैं) के प्रयत्न से द्यूत में पुण्य श्लोक 'नल' की पराजय स्वाभाविक ही थी ।

इस विषय में वह 'अक्ष-विद्या' बहुत महत्त्वपूर्ण है जिसे नल ने ऋतुपर्ण से प्राप्त की थी । यह अक्षविद्या 'परिगणन विधि' मात्र थी जैसा कि महाभारत में स्पष्ट उल्लेख मिलता है --

ममापि द्यूत पश्य त्वं, संख्याने परमं बलम्[२] ।

१- द्रष्टव्य -- वैदिक इण्डेक्स

२- महाभारत : वनपर्व ७०।७

इस अक्ष विद्या को ग्रहण करते ही नल पासों के खेल में अजेय हो गए । कलि को उनके शरीर में से बाहर निकलना पड़ा । वह बाहर निकल कर उनसे क्षमा मांग कर अक्ष वृक्ष में प्रविष्ट हो गया । वैसे भी `नल` में प्रवेश पाने के पूर्व `कलि` अनेक वर्षों तक अक्ष वृक्ष पर स्थित होकर नल के शरीर में प्रवेश पाने की प्रतीक्षा करता रहा था, ऐसा उल्लेख महाभारत के बाद के ग्रन्थों[1] में मिलता है । अक्ष का प्रयोग ऋग्वेद[2] में और उसके बाद भी `धुरे` के अर्थ में हुआ है, इस शब्द का अर्थ घोड़ा[3] भी किया गया है । परन्तु ऋग्वेद में तथा उसके बाद भी पासे या गोटी के अर्थ में एक वचन और बहुवचन दोनों ही रूपों में इसका प्रयोग मिलता है[4] । सामान्यत: पासे `विभीदक` फल के बीज से बने प्रतीत होते हैं । इस प्रकार के पासों का ऋग्वेद और अथर्ववेद दोनों में ही उल्लेख है और इसीलिए उन्हें भूरे रंग का (बभ्रु) तथा हवा चलने वाले स्थान में उपजने वाला कहा गया है[5] । अक्ष अर्थात् पासे से `कलि` (पासे के खेल की एक चाल विशेष) का सम्बन्ध तो वैदिक काल में मिलता ही है । अक्ष विद्या का ज्ञान प्राप्त करने के बाद `नल` निषधा जाकर पुष्कर से फिर द्यूत क्रीड़ा में प्रवृत्त होने के लिए कहते हैं । वहीं `नल`.जो पिछली बार `पुष्कर` के कहने पर भी दमयन्ती को दांव पर न लगा सके थे इस बार दमयन्ती को और अपने सर्वस्व को दांव पर लगाने के लिए सहर्ष तत्पर हैं, क्योंकि

१- राघव नैषधीयम् १।३६

उत्तर नैषधम् ७।१

नलायन ४।४।२

२- द्रष्टव्य: वैदिक इण्डेक्स

३- द्रष्टव्य : वैदिक इण्डेक्स

४- द्रष्टव्य : वैदिक इण्डेक्स

५- द्रष्टव्य : वैदिक इण्डेक्स

उन्हें अब परिगणनविद्या का ज्ञान हो चुका है और कलि उनके खेल में बाधक नहीं बन सकता । परिगणन विद्या से द्यूत क्रीड़ा में विजय किस प्रकार प्राप्त हो सकता है, इसका तो समाधान वही लगता है जो ल्यूडर्स ने वैदिक काल में प्रचलित पासों के खेल की पद्धति के प्रसंग में प्रस्तुत किया है । पुष्कर द्वारा फेंके गए पासों में अपने संख्यान बल से तुरन्त गणना करके उतने ही पासे फेंकना कि सब का योग करने के पश्चात् वे चार संख्या से पूर्णरूप से विभाजित हो जाएं, कुछ भी शेष न रहे, अथवा पांच संख्या से विभाजन करने पर चार अवशिष्ट रहें । इस प्रकार कलि से मुक्ति प्राप्त कर लेने के पश्चात् नल द्यूत में विजयी हुए ।

इस सब पर विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि नल-दमयन्ती की कथा वैदिक काल से बहुत दूर की नहीं है। वैदिक साहित्य में यद्यपि इस कथा का उल्लेख नहीं हुआ है, फिर भी 'ड' और 'ल' की अभिन्नता के प्रति वैदिक प्रवृत्ति को देखते हुए तथा शतपथ ब्राह्मण में 'नड नैषध' नैषिध' और अन्त में राजा नल के उल्लेखों से यही प्रतीत होता है कि इस कथा के नायक जो बड़े पराक्रमी और विजयशील होने के कारण मृत्यु के देव यम की तरह थे अ जो अश्वहृदयवेदज्ञ भी थे, ऐसे राजा 'नड' (नल) और उनके पासों के खेल से विशेष सम्बन्ध तक की बात तो वैदिक काल में ही प्रसिद्ध हो चुकी थी । वैदिक काल में युद्ध और मनोरंजन के प्रमुख साधन 'अश्व' के विषय में 'नड नैषध' जैसे विजयशील राजा का विशेष ज्ञान रखना तनिक भी आश्चर्यावह नहीं है । हो सकता है कि वैदिक काल में उन्हें दक्षिण का राजा माना गया हो और आगे चलकर महाभारत तक इसी केन्द्र के चारों ओर कथा का जो जाल बना उसके मध्य उनकी नैषध उपाधि के कारण उन्हें 'निषध' देश का राजा मान लिया गया हो । राजा नैःषिध' ही नैषिध हो गए हों और शतपथ ब्राह्मण में वे ही नैषध बन गए हों[1] । तत्पश्चात् इस उपाधि ही के आधार पर राजा नड(नल) को निषध देश का राजा मान लिया गया हो । प्राचीन साहित्य में अयोध्या

१- द्रष्टव्य : वैदिक इण्डेक्स (नैषिध)

आदि के समान निषध देश का कहीं उल्लेख नहीं मिलता । निषध पर्वत से उनका सम्बन्ध असम्भवप्राय लगता है जैसा कि इसके प्रसंग में कहा ही जा चुका है । विदर्भ भीम और अयोध्या में ऋतुपर्ण के राज्य के समय निषध देश का कोई उल्लेख नहीं है, जब कि वहां का राजा नल सार्वभौम था । इस भूमि पर उपर्युक्त संदेह को और बल मिल जाता है ।

जब कि नल में कलि का प्रवेश था नल की बड़ी दुर्दशा रही और ऋतुपर्ण से अक्षविद्या का ज्ञान प्राप्त करते ही कलि नल के शरीर से निकल कर कांपता हुआ बाहर आ खड़ा हुआ और नल से क्षमा याचना करके अक्ष वृक्ष में प्रविष्ट हो गया । यदि इस कथा में आने वाले कलि का वही अर्थ मान लिया जाय जो वैदिक काल में था अर्थात् पासे के खेल में पराजय वाली चाल तो यही नल की कथा के इस प्रसंग में अधिक ठीक बैठता है । द्यूत में नल का पराजय उस पराजयमूलक चाल कलि के कारण ही हुई थी और इसी कारण से नल की दुर्दशा हुई । काफी समय व्यतीत करने के पश्चात् जब उन्हें अक्ष विद्या का ज्ञान प्राप्त हुआ तब उन्होंने कलि पर विजय प्राप्त कर ली वे पासों के खेल में अजेय हो गए इस दशा में उस पराजय मूलक चाल अर्थात् कलि का उनमें निवास हो सकना असम्भव हो गया और वह नल के भय से कांपता हुआ बाहर निकल आया । वैदिक काल में पासे सामान्यतः विभीदक फल के बीज ही हुआ करते थे[१] । इसीलिए कलि का अक्ष वृक्ष में प्रवेश माना गया । इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य में कलि का युगदेव के अर्थ में कहीं भी प्रयोग नहीं मिलता । ऋग्वेद के एक स्थल द्वारा सिद्ध होता है कि पांसा फेंकने की धनदायक या नाशक रूप में देवों से तुलना की गयी है । बहुत सम्भव है कि यही उपमेय और उपमान कोटियां कालान्तर में अभिन्न हो गई हो और धन नाशक कलि (पासे के खेल की एक चाल विशेष) एक अमंगलकारी, अवगुण मण्डित युग देवता बन गयी हो और इसी प्रकार धनदायक

१- वैदिक इण्डेक्स

कृत । पांसों के खेल की विजय मूलक चाल) का विकास कालावधि शुभ युग के रूप में हो गया हो । कृत के चार चरणों की कल्पना से इस सम्भावना को और बल मिलता है । जिस प्रकार पांसों की वह चाल जिसमें पांसों की सम्पूर्ण संख्या चार से विभक्त हो जाये या फिर पांच से विभाजित करने पर जिसमें चार शेष रह जायें, कृत कहलाती थी । यही कृत चाल वांछित हुआ करती थी । हो सकता है यह विभाजक या शेष रहने वाली चार संख्या ही `कृत युग` के चार चरणों की कल्पना का आधार हो ।

इस दृष्टि से देखने पर तो नल-दमयन्ती की मूलकथा एक वैदिक सत्य बन कर चार युगों की कल्पना से भी पूर्ववर्ती ठहरती है । तब नड दक्षिणाग्नि से समीकृत कहे जाने के कारण सम्भवत: दक्षिण के एक मानव राजा थे, विजयों के कारण जिनकी तुलना मृत्यु के देवता यम के साथ की गई थी । वे वैदिक युग के प्रमुख मनोरंजन के साधनों अश्व, और अक्ष क्रीडा दोनों के शौकीन थे । वैदिक काल में आर्यों का वाहन अश्व था जिसकी सहायता से वे युद्ध करते थे । युद्धों में निपुण राजा नड(नल) को यदि अश्व हृदयज्ञ, अश्व विद्या-प्रवीण मान लिया गया हो तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है । अक्ष क्रीड़ा में वे एक बार बुरी तरह पराजित हो गए, फिर उन्हें कहीं से अक्ष विद्या प्राप्त हो गई, जिससे वे पुन: समृद्धि को प्राप्त हुए । इस प्रकार उन्होंने अक्ष क्रीडा में अपनी अक्षविद्या के कारण निरन्तर कलि (पांसों के खेल में पराजित कराने वाली एक चाल विशेष)की बाधा से रहित होकर शान्तिपूर्वक कृत (पांसों के खेल में विजयमूलक चाल) में राज्य किया । उनके समय में कृत (वही चाल) अपने चारों चरणों (जिसमें विभाजक संख्या चार हो या विभाजक पांच होने पर ४ शेष बचे) से स्थिर रहा । नल-दमयन्ती कथा का आदि रूप सम्भवत: यही रहा होगा । उनकी विजयों के कारण आगे चलकर महाभारत में उन्हें सार्वभौम राजा मान लिया गया ।

वैदिक साहित्य में अयोध्या-नरेश ऋतुपर्ण का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता परन्तु इनकी ऐतिहासिकता में कोई सन्देह नहीं है । सम्भवत: दक्षिण के राजा नल का वैदिक काल के विदर्भ-राज--भीमवैदर्भ के साथ कुछ सम्बन्ध रहा

हो जिसका आगे चलकर दमयन्ती का सहारा लेकर बड़े सुन्दर रूप में पल्लवन कर दिया गया हो । साथ ही नल के काफी बाद में होने वाले अयोध्या नरेश ऋतुपर्ण को राजा नल का समकालीन मान कर सुविधापूर्वक नल-कथा का नलोपाख्यान के रूप में उपबृंहण हो गया हो । कदाचित् राजा नल का विशेष महत्त्व प्रदर्शित करने के लिए ही उन्हें, जैसे एक ओर स्वर्ग के इन्द्रादिक देवों के साथ सम्बन्धित किया गया, उसी तरह,दूसरी ओर पाताल के नाग कर्कोटक को भी कथा के मध्य स्थान दे दिया गया हो । युद्धों में विजय प्राप्त करने के कारण जो खूब समृद्ध रहा होगा, उसने पासों के खेल में इतनी गम्भीर हानि उठाने के बाद भी डट कर इस विपत्ति का सामना किया, अक्ष विद्या प्राप्त की और फिर अक्षक्रीड़ा में भी अजेय हो गए । ऐसे व्यक्ति को पुण्य श्लोक मान लेना स्वाभाविक था । पुण्य श्लोक नल का उपकार करने के कारण कर्कोटक और ऋतुपर्ण इन दोनों को भी पुण्य श्लोक मान लिया गया हो और फिर ऐसे प्रभाविष्णु राजा नल की सहधर्मिणी पतिव्रता पत्नी के रूप में दमयन्ती की कल्पना के साथ ही दमयन्ती के पुण्य श्लोकत्व का रहस्य भी स्वतः ही स्फुट हो जाता है । वैदिक काल की मूल नल-कथा को अधिक सुन्दर रूप देने के लिए खूब विस्तृत करके कुछ नया जोड़ कर और फिर अनिवार्य परिवर्तनों से संवार कर महाभारत तक बहुत विकसित रूप प्राप्त हो चुका था जिससे प्रतीत होता है कि नलोपाख्यान का मूल रूप महाभारत से बहुत पहले ही प्रसिद्ध था । क्योंकि इतना विकास बहुत अधिक समय की अपेक्षा रखता है । इस प्रकार यद्यपि लिखित रूप में यह कथा वैदिक साहित्य में नहीं प्राप्त होती फिर भी मूलतः इसे वैदिक काल की कथा मानना ही संगत लगता है ।

-0-

(ख) इतिहास और पुराणों में नल-दमयन्ती कथा

वाल्मीकीय रामायण में केवल एक स्थान पर भैमी-दमयन्ती और नैषध नामों का प्रयोग हुआ है। सीता ने राजाजियों से कहा कि "दीन हो अथवा राज्यहीन हो, जो मेरा पति है वही मेरा गुरु है। उसमें मैं उसी प्रकार अनुरक्त हूं, जैसे सूर्य में सुवर्चला। भैमी-दमयन्ती जैसे अपने पति नैषध नल में अनुरक्त थी, उसी प्रकार मैं अपने पति में अनुरक्त हूं।[1]

रामायण में उपलब्ध होने वाले इस उल्लेख को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय तक नल और दमयन्ती की कथा अत्यधिक प्रसिद्ध हो चुकी थी। दमयन्ती भीम की पुत्री थी तथा उनके पति नैषध को वन में जाना पड़ा था। उस समय पतिव्रता दमयन्ती ने अपने पति का अनुगमन किया था। नल-दमयन्ती की इतनी कथा तो रामायण में ही निर्दिष्ट है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि यह कथा उस समय तक इतनी प्रख्यात हो चुकी थी कि इसे वहां विस्तार से देने की कोई आवश्यकता नहीं समझी गई। उपमान रूप में इस कथा का संकेत मात्र ही पर्याप्त समझा गया।

नल एवं दमयन्ती की इतनी प्राचीन तथा प्रसिद्ध कथा के पूर्ण लिपिबद्ध रूप का दर्शन सर्वप्रथम महाभारत के वन पर्व में ही होता है। यहां नलोपाख्यान के रूप में यह कथा २६ अध्यायों में बड़े विस्तार से प्राप्त होती है। परवर्ती साहित्य के लिए रामायण तथा महाभारत उपजीव्य काव्य हैं। चूंकि रामायण में नल-दमयन्ती कथा नहीं प्राप्त होती इसलिए महाभारतीय

१- दीनो वा राज्यहीनो वा यो मे भर्ता स मे गुरुः।
तं नित्यमनुरक्ताऽस्मि यथा सूर्यं सुवर्चला।
नैषधं दमयन्तीव भैमीपतिमनुव्रता।
तथाहमिक्ष्वाकुवरं रामं पतिमनुव्रता।।
--वाल्मीकि रामायण सु०का० २४-६,१३
निर्णय सागर प्रेस

नलोपाख्यान ही परवर्ती नल-दमयन्ती साहित्य का आधार बना । इस स्थिति में यहां नलोपाख्यान की कथा को संक्षेप में देना आवश्यक है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान का कथानक[१]

निषध देश में वीरसेन के पुत्र महाराज नल राज्य करते थे । महाराज नल सर्वगुण सम्पन्न, अश्वविद्याविशारद, सत्यसन्ध, योद्धा, प्रबल पराक्रमी और द्यूत में रुचि रखने वाले थे । विदर्भ देश में महापराक्रमी सर्वगुण सम्पन्न भीम नाम के राजा राज्य करते थे । महाराज भीम ने अपनी पत्नी के साथ ऋषि दमन को सत्कार से प्रसन्न किया था । उनके प्रसाद से राजा भीम ने दमयन्ती नामक कन्या और दम, दान्त और दमन नामक तीन पुत्र प्राप्त किये । दमयन्ती ने अपने रूप और सौभाग्य के कारण प्रभूत यश प्राप्त किया । यथा समय यौवन को प्राप्त हुई दमयन्ती सखियों द्वारा परिवृत होकर मेघमाला के मध्य दमकती हुई विद्युत की भांति सुशोभित हुई । देवलोक में यक्षों में, मनुष्यों में और अन्य किसी लोक में भी वैसी रूपवती कन्या दुर्लभ थी ।

उधर मर्त्यलोक में नल के समान कोई पुरुष नहीं था । सभी लोग कौतूहलवश दमयन्ती के समक्ष नल का और नल के सम्मुख दमयन्ती का गुणगान करते थे जिसके परिणामस्वरूप दोनों के हृदयों में परस्पर अनुरागांकुर अंकुरित हो चला । कामपीड़ा से विह्वल होकर नल मनोविनोद के लिए अपने अन्तःपुर के समीपवर्ती वन में एकाकी ही विहार कर रहे थे, जहां उन्होंने स्वर्णमय पक्षों वाले अनेक हंसों कोदेखकर उनमें से एक को ग्रहण कर लिया । वह पक्षी नल से कहने लगा राजन् ! मैं हन्तव्य नहीं हूं । मैं आपका प्रिय करूंगा । हे नैषध ! दमयन्ती के पास उस प्रकार से आपकी प्रशंसा करूंगा जिससे वह आपको ही पत्नी होगी । आप मुझे आज्ञा दें ।

१- महाभारत वनपर्व ४६-७७

हंस के वचन सुनकर राजा नल ने हंस को मुक्त कर दिया । वे सब हंस उड़कर विदर्भनगरी में दमयन्ती के समीप पृथ्वी पर उतरे । सखियों से परिवृत दमयन्ती ने अद्भुत रूप सम्पन्न उन पक्षियों को ग्रहण करने की चेष्टा की । वे हंस उस प्रमद वन में चारों दिशाओं में फैल गये । दमयन्ती की सखियां भी उन हंसों को पकड़ने की इच्छा से इधर-उधर भागने लगीं । दमयन्ती जिस हंस का पीछा कर रही थी, उसने मानुषी वाणी में दमयन्ती से कहा, "निषध देश में नल नाम के राजा हैं जो रूप में अश्विनी कुमारों जैसे हैं । वे मूर्तिमान कामदेव के समान हैं । यदि तुम उनकी पत्नी हो जाओ तो तुम्हारा जन्म और यह रूप सफल हो जाय । हमें देवों, गन्धर्वों, मनुष्यों, नागों और राक्षसों में कहीं भी वैसा रूप नहीं दृष्टिगोचर हुआ । तुम स्त्रियों में रत्न हो और नल पुरुषों में । विशिष्ट का विशिष्ट के साथ संगम गुणवान् होता है । हंस के इस प्रकार के वचन सुनकर उससे दमयन्ती ने नल से भी उसी प्रकार कहने के लिए अनुरोध किया । पुनः निषध आकर उस पक्षी ने समस्त वृत्तान्त नल को कह सुनाया ।

हंस के वचन सुनने के अनन्तर दमयन्ती दीन, विवर्ण और उन्मत्त सी प्रतीत होने लगी । वह शय्यासन, निद्रा आदि सभी से विरक्त हो उठी । दमयन्ती की सखियों ने विदर्भराज को दमयन्ती के अस्वस्थ होने की सूचना दी । उसे सुनकर महाराज भीम अपनी सुता के अस्वास्थ्य का कारण सोचने लगे । पुत्री को प्राप्त यौवना समझकर उन्होंने राजाओं के पास दमयन्ती के स्वयंवर में आने के लिए निमन्त्रण भेजा । दमयन्ती स्वयंवर का समाचार प्राप्त करके राजागण विदर्भ पहुंचने लगे । वहां पहुंचे हुए राजा, भीम द्वारा सत्कृत होकर वहीं रहने लगे । इसी समय महाप्राज्ञ महाव्रती नारद और पर्वत घूमते-घामते इन्द्र के भवन में पहुंचे । इन्द्र ने पूजा और कुशलप्रश्न के अनन्तर नारद से युद्ध में प्राण त्याग कर स्वर्ग-सुख भोग के अधिकारी क्षत्रियों के स्वर्ग में बहुत समय से न आने का कारण पूछा । नारद ने उन्हें बताया कि पृथ्वी में सर्वाधिक सुन्दरी विदर्भराज की कन्या दमयन्ती का कुछ ही समय बाद स्वयंवर होने वाला है । दमयन्ती को प्राप्त

करने की इच्छा से पृथ्वी के समस्त राजागण और राजपुत्र वहां जा रहे हैं ।

इसे सुनकर वहां जाने की इच्छा से सभी लोकपाल अपने गणों और वाहनों के साथ विदर्भ की ओर चल दिये । उधर दमयन्ती-स्वयंवर में दमयन्ती को प्राप्त करने की इच्छा से राजा नल भी चल दिये । मार्ग में कामदेव के समान कान्तिमान उन्हें देखकर देवगण दमयन्ती-प्राप्ति के विषय में निराश हो गये । विमानों को अन्तरिक्ष में ही निरुद्ध करके वे नल से बोले, ' हे निषधनरेश ! नल ! तुम सत्यव्रत हो अतएव दौत्य कर्म द्वारा हमारी सहायता करो ।'

निषधराज नल ने उनके कार्य के लिए दूत बनने की प्रतिज्ञा की । तदनन्तर नल ने उनसे उनका परिचय पूछा और दौत्य के विषय में प्रश्न किया । इन्द्र ने बताया कि हम इन्द्र, यम, अग्नि तथा वरुण देवता हैं जो दमयन्ती को प्राप्त करने की इच्छा से पृथ्वी पर आये हैं । तुम दमयन्ती को बताओ कि हम चारों लोकपाल स्वयंवर में आ रहे हैं । इसमें से जिसे चाहो अपना पति स्वीकार कर लो । नल ने कहा मैं भी आप लोगों की ही भांति दमयन्ती के स्वयंवर में जा रहा हूं । जिसे मैं स्वयं प्राप्त करना चाहता हूं, उससे आप लोगों के लिए अनुरोध करना असम्भव है । परन्तु देवताओं ने सत्यप्रतिज्ञ नल को उनकी प्रतिज्ञा के विषय में याद दिलायी उस पर नल ने सैकड़ों प्रहरियों से सुरक्षित अन्त:पुर में प्रवेश की दुष्करता का उल्लेख किया । जब इन्द्र ने कहा कि तुम मेरे प्रभाव से सहज ही वहां पहुंच जाओगे तो नल वहां से चलकर सखियों से परिवृत अलौकिक रूपराशि संपन्न दमयन्ती के निकट पहुंच गये । प्रतिज्ञा-पालन के लिए नल ने अपने काम-विकार को किसी प्रकार संयत किया । उधर नल के असामान्य रूप को देखकर सारी सखियां स्तब्ध रह गयीं । दमयन्ती ने नल से उनका परिचय मांगा और बताया कि आपको देखते ही मैं काम परवश हो गयी हूं । इस सुरक्षित अन्त:पुर में आपने क्यों और कैसे प्रवेश किया ? मैं निषध देश का राजा नल हूं और इस समय लोकपालों का दूत बनकर उन्हीं के प्रभाव से यहां आया हूं । वे चारों लोकपाल तुम्हें प्राप्त करना चाहते हैं अत: तुम उनमें से एक का वरण कर लो । अब तुम जैसा चाहो वैसा करो ।

नल के वचन सुनकर दमयन्ती ने कहा कि हंस के मुख से नल का वृत्तान्त सुनकर वह नल को ही पति स्वीकार कर चुकी है तथा उन्हीं की प्राप्ति के लिए स्वयंवर का प्रपंच किया गया है । यदि नल उसे नहीं स्वीकार करेंगे तो वह जलकर, डूबकर , विष खाकर या फिर फांसी लगाकर प्राण त्याग देगी ।

नल ने देवताओं की तुलना में अपने को तुच्छ बताया । देवताओं की सामर्थ्य का उल्लेख करके महाराज नल ने अपनी ओर से भी दमयन्ती को लोकपालों के वरणार्थ सुझाव दिया । अन्ततः अपने ही प्रति दमयन्ती के आग्रह को देखकर नल ने बताया कि वे देवताओं से प्रतिज्ञा करके उनके दूत बने हैं । इस प्रकार परार्थ में प्रवृत्त होकर वे किस प्रकार स्वार्थ-साधन कर सकते हैं । यदि दूतधर्म अक्षत बना रहे उसी दशा में वे दमयन्ती की इच्छा पूर्ण कर सकते थे । दमयन्ती ने नल को सलाह दी कि नल उन देवताओं के साथ ही स्वयंवर में आवें । सब के सम्मुख जब दमयन्ती उनका वरण करेगी तो नल का कुछ भी दोष नहीं रहेगा ।

लौट कर नल ने यथावत् समस्त वृत्तान्त लोकपालों से निवेदन कर दिया ।

इसके अनन्तर शुभ लग्न में भीम द्वारा निमन्त्रित सभी राजागण उच्चद्वार और स्वर्ण स्तम्भों वाले मण्डप में पहुंचे । उचित समय पर ~~सज्जनों की दृष्टि पड़ी वहीं~~ रंगभूमि में दमयन्ती ने प्रवेश किया । दमयन्ती के जिस अंग पर राजाओं की दृष्टि पड़ी वही जम गई । दमयन्ती को राजाओं का परिचय दिया जाने लगा । दमयन्ती ने वहां नल के समान पांच पुरुषों को देखा । इससे चिन्तित होकर दमयन्ती ने मन-ही-मन देवताओं को प्रणाम करके उनसे नल के प्रति अपनी आसक्ति का निवेदन किया। तब देवों ने प्रसन्न होकर अपना-अपना वास्तविक रूप स्पष्ट कर दिया । देवताओं ने अपने-अपने लक्षण प्रकट कर दिये । दमयन्ती ने अलौकिक लक्षणों से रहित नल को पहिचान कर उनके कण्ठ में जयमाल डाल दी । यह देखकर राजागण हाहाकार करने लगे तथा देवता व महर्षि धन्यवाद देते हुए नल की प्रशंसा करने लगे । नल और दमयन्ती ने परस्पर एक-दूसरे का अभिनन्दन किया । नल और दमयन्ती ने देवताओं को प्रणाम किया । प्रसन्न

होकर इन्द्र ने कहा, --` हे नल ! तुम मेरे वरदान के प्रभाव से मुझे प्रत्यक्ष देखोगे और अन्त में परमगति को प्राप्त होगे । अग्नि ने कहा--`तुम मुझे जहां स्मरण करोगे, वहीं तत्क्षण मैं प्रकट हो जाऊंगा और तुम्हें यथेष्ट फल दूंगा । यमराज ने कहा, --` तुम्हारी बनाई रसोई अत्यन्त स्वादिष्ट होगी तथा धर्म पर सदैव तुम्हारी प्रबल निष्ठा होगी । वरुण ने कहा,` हे नल ! तुम मुझे जहां भी बुलाओगे वहीं मैं पहुंचूंगा । तदनन्तर लोकपालों ने महाराज नल को दिव्य मालाएं पहिनायीं ।

नल-दमयन्ती का विवाह देखकर सब राजा भी अपनी-अपनी राजधानी को लौट गये । नल भी कुछ दिन वहां रहकर भीम की आज्ञा प्राप्त करके दमयन्ती के साथ अपने देश लौट आये । अपने राज्य में महाराज नल दिन-रात दमयन्ती के साथ सुखभोग करने लगे । राजधर्म के अनुसार अपनी प्रजा का पालन करते हुए समय-समय पर प्रभूत दक्षिणा देकर उन्होंने अश्वमेध और अन्य महायज्ञ किए । इस प्रकार धर्म-कर्म करते हुए वे दमयन्ती के साथ रमणीय उद्यानों में विहार भी करते थे । कुछ समय बाद दमयन्ती ने पुत्र इन्द्रसेन और पुत्री इन्द्रसेना को जन्म दिया । इस प्रकार अनुपम दाम्पत्य-सुख का उपभोग करते हुए राजा नल ने पृथ्वी का पालन किया ।

दमयन्ती के विवाह के अनन्तर अपने लोकों में जाते हुए लोकपालों को मार्ग में द्वापर और कलि से भेंट हुई । देवताओं के पूछने पर कलि ने उन्हें बताया कि दमयन्ती में अनुरक्त वह उनके स्वयंवर में जा रहा है । देवताओं ने कलि को बताया कि दमयन्ती सब के सामने नल का वरण कर चुकी है । क्रुद्ध कलि ने देवताओं को नल को उचित दण्ड देने के लिए प्रेरित करना चाहा परन्तु देवगण नल की प्रशंसा करते हुए वहां से चले गए । कलि ने द्वापर से कहा कि मैं क्रोध का वेग रोकने में असमर्थ हूं । नल के शरीर में प्रवेश करके मैं उन्हें राज्यभ्रष्ट कर दूंगा और वह दमयन्ती के साथ रमण न कर सकेंगे । तुम पासों में प्रवेश करके मेरी सहायता करो ।

इस विषय में द्वापर को प्रतिज्ञाबद्ध करके तब से बारहवें वर्ष कलि को नल के शरीर में प्रवेश करने का अवसर मिला । नल के भाई पुष्कर के पास जाकर कलि ने उसे भांति-भांति के प्रलोभन दिये जिससे प्रेरित होकर वह नल के पास आया । कलि मय पासों को हाथ में लेकर पुष्कर नल से द्यूत खेलने के लिये पुन: पुन: आग्रह करने लगा । महाराज नल पुष्कर के साथ द्यूत क्रीड़ा के लिए तैयार हो गये और दमयन्ती के सामने ही दोनों द्यूत प्रारम्भ हो गया । नल ने रत्न राशि, स्वर्ण, वाहन और अन्यान्य जो कुछ भी दांव पर लगाया वह सब कलि के प्रभाव से पुष्कर ने जीत लिया । मित्रों ने नल को बहुत समझाया परन्तु वे नल को द्यूत से विमुख नहीं कर सके । सभी पुरवासी मंत्रियों को आगे करके नल के पास पहुंचे । दमयन्ती ने पुरवासियों का सन्देश नल से कहा परन्तु नल द्यूत से विरत नहीं हुए दांव पर दांव लगाते ही गये और हारते गये ।

सशंकित दमयन्ती ने बृहत्सेना नाम की दासी को बुलाया । महाराज की आज्ञा से सभी मन्त्रियों को घोर अनर्थ का समाचार सुनाकर बुला लाने के लिये उसे आदेश दिया । प्रजा सहित सारे मन्त्री फिर द्वार पर उपस्थित हुए । उन्हें आया देखकर दमयन्ती ने पुन: राजा को सूचना दी परन्तु राजा ने उधर तनिक भी ध्यान न दिया । इससे लज्जित होकर दमयन्ती अपने भवन में चली गयी जहां उसे राजा के सर्वनाश का समाचार प्राप्त हुआ । बृहत्सेना के द्वारा सारथी को बुलवाकर दमयन्ती ने राजा की दशा का वर्णन किया । दमयन्ती ने सारथी वार्ष्णेय को आदेश दिया कि वह इन्द्रसेन और इन्द्रसेना को बैठाकर उन्हें विदर्भ में छोड़ आवे । रथ और घोड़ों को विदर्भ में छोड़कर सारथी जहां चाहे वहां रहे । सारथी वार्ष्णेय मन्त्रियों से अनुमोदन प्राप्त करके दोनों बच्चों के साथ विदर्भ गया । वह बच्चों और घोड़ों सहित रथ छोड़कर भीमसे आज्ञा प्राप्त करके अयोध्या में राजा ऋतुपर्ण के यहां सारथी का कार्य करने लगा ।

इधर पूर्ण सम्पत्ति हारे हुए नल से पुष्कर ने कहा कि अब यदि चाहो तो दमयन्ती को दांव पर लगाओ । दु:खी नल ने बिना कुछ कहे अपना उत्तरीय वस्त्र तथा समस्त आभुषण उतार कर रख दिए । केवल एक वस्त्र धारण करके वे

राजमहल से निकल पड़े । दु:ख से व्याकुल दमयन्ती भी एक ही वस्त्र धारण करके नल के साथ चल पड़ी । इस प्रकार राज्य-भ्रष्ट नल ने रानी के साथ नगर के प्रान्त-भाग में तीन रात्रि व्यतीत की । पुष्कर के भय से नगरवासियों ने भी नल को सहायता नहीं दी । तीन दिन तक केवल जल पर निर्भर रहने के अनन्तर उन्होंने दमयन्ती के साथ कन्द मूल फलों द्वारा क्षुधा को शान्त करके कुछ दिन व्यतीत किए । एक दिन प्यास से व्याकुल होकर वे एक सरोवर के समीप पहुंचे जहां उन्होंने स्वर्ण पक्षों वाले अनेक पक्षियों को विचरते देखा । आहार और धनप्राप्ति की आशा से उन्हें ग्रहण करने के लिए नल ने अपना वस्त्र उन पर फेंक दिया । वे पक्षी वस्त्र को लेकर उड़ गए और आकाश में उड़ते हुए उन्होंने बताया कि वे नल की पराजय कराने वाले पासे ही हैं जो पक्षी बनकर अब नल का वस्त्र लेने आये हैं । तब दमयन्ती को सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाकर नल ने उसे दक्षिण दिशा को जाने वाले मार्ग दिखाए । अवन्ती और ऋक्षवान पर्वत को लांघने वाले मार्ग तथा विन्ध्याचल दिखाया । पयोष्णी नदी का स्थान, फल-फूलों से पूर्ण महर्षियों के आश्रम और फिर विदर्भ तथा कोशल को जाने वाले मार्ग भी दिखाए ।

दमयन्ती ने दु:खी होकर स्वामी को वन में अकेला छोड़ने में अपने-आपको असमर्थ बताया । दमयन्ती ने शास्त्र की दुहाई दी कि स्त्री अपने स्वामी की सब प्रकार के दु:खों में सहायता करती है और पति के लिए भार्या के समान दु:ख की दूसरी औषधि नहीं होती ।

नल ने दमयन्ती की बात का समर्थन करते हुए कहा कि वे प्राण त्याग सकते हैं परन्तु दमयन्ती को नहीं छोड़ सकते । दमयन्ती ने पूछा कि यदि उनका उसको छोड़ने का निश्चय नहीं है तब क्यों वे दमयन्ती को पुन:-पुन: विदर्भ का मार्ग दिखा रहे थे और यदि नल चाहें तो दोनों विदर्भ चलकर आराम से रह सकते हैं ।

नल ने मलिन वेष में विदर्भ जाना अस्वीकार कर दिया । दमयन्ती का आधा वस्त्र पहन कर वे वन में घूमते हुए श्रान्त होकर एक एकान्त स्थान पहुंचे व जहां नल लेट गये । उन्हीं के समीप परिश्रान्त दमयन्ती भी लेटते ही सो गई ।

शोक सन्तप्त नल तुरन्त ही विनिद्र होकर सोचने लगे कि क्या वे आत्महत्या कर लें अथवा दमयन्ती को एकाकी छोड़ दें जिससे वह अपने स्वजनों के पास पहुंच जाय।

कलि के प्रभाव से भ्रष्ट बुद्धि नल पतिव्रता पत्नी के त्याग के लिए उद्यत हो गए। दमयन्ती का आधा वस्त्र किस तरह काटा जाए यह सोचकर इधर-उधर देखने पर उन्हें वहीं पड़ी नंगी तलवार दृष्टिगोचर हुई। महाराज नल ने वस्त्र उससे काटकर पहन लिया। महाराज नल कलियुग के प्रभाव और प्रिया के सच्चे प्रेम के परस्पर विरुद्ध आकर्षण से कभी इधर कभी उधर खिंचते रहे। तदनन्तर कलियुग की विजय हुई और नल दमयन्ती को वन में अकेली छोड़कर अन्यत्र चले गये। निद्रा भंग होने पर नल को अपने समीप न देखकर दमयन्ती विलाप करने लगी। सत्यवादी और धर्मात्मा होते हुए भी महाराज निद्रावस्था में मुझे वन में एकाकिनी छोड़कर कैसे चल दिए। लोकपालों के समक्ष जो आपने प्रतिज्ञा की थी, वह आपका सत्यव्रत कहां गया? आप अभी-अभी तो दृष्टिगोचर हो रहे थे और अब लताओं के पीछे छिपकर मुझे उत्तर क्यों नहीं देते? इस प्रकार भांति-भांति से विलाप करती हुई दमयन्ती वन में घूमती हुई अपने स्वामी को ~~अनेक~~ खोजने लगी। निष्पाप पुरुष नल को दुर्दशा में डालने वाले पापबुद्धि को उसने जीवन भर इस घोरतर पाप के भार को वहन करने का शाप दिया।

इसी समय एक भूखा अजगर मुंह फैलाकर दमयन्ती को ग्रसने के लिए आगे बढ़ा, परन्तु दमयन्ती नल के लिए विलाप करती ही रही। दमयन्ती के रुदन का शब्द सुनकर आये हुए एक किरात ने अपने शस्त्र से अजगर का मुंह फाड़ दिया और इस प्रकार उसने दमयन्ती की मृत्यु से रक्षा की। दमयन्ती के शरीर का जल से प्रक्षालन करके उसने उनका परिचय पूछा। दमयन्ती ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। वह किरात दमयन्ती के अद्भुत सौन्दर्य पर मोहित हो उठा। दमयन्ती उसके दुष्ट उद्देश्य को समझ गयी और शाप देकर दमयन्ती ने उस किरात को तत्क्षण भस्म कर दिया। पति वियोग से विह्वल दमयन्ती हिंस्रपशुओं, पर्वत मालाओं वापियों और नाना प्रकार के वृक्षों से युक्त भयानक

वन में भटकती रही और फिर एक शिला पर बैठकर तरह-तरह से विलाप करने लगीं -- इस भयानक वन में मुझ एकाकिनी का परित्याग करके तुम कहां चले गये ? तुमको एक बार हंसों की भी बात याद करके देखना चाहिए । हा प्राणनाथ ! तुम्हारी प्यारी मैं इस भयंकर वन में मरने को तत्पर हूं । तुम मुझसे बोलते क्यों नहीं हो ? कौन मुझे यहां तुम्हारा समाचार देकर मेरे हृदय की ज्वाला शान्त करेगा ? इस प्रकार से विलाप करती हुई दमयन्ती मुंह फैलाकर सामने से आते हुए सिंह से नल के विषय में पूछने का निश्चय करके उसके पास गयी । दमयन्ती ने सिंह को अपना परिचय देने के अनन्तर उससे कहा कि या तो वह नल का समाचार सुनाकर उनके प्राणों की रक्षा करे अन्यथा उसका भक्षण करके उसका सन्ताप दूर करे । इसी प्रकार पर्वत से नल के विषय में पूछने पर भी दमयन्ती को निराश होना पड़ा तब दमयन्ती उत्तर दिशा की ओर तीन दिन तीन रात चलकर एक आश्रम में पहुंची जहां तपस्वी तपस्या कर रहे थे । ऋषियों को प्रणाम करके दमयन्ती नम्रतापूर्वक एक ओर खड़ी हो गई । तपस्वियों ने कुशल प्रश्न किए और उनका विधिवत् सत्कार किया । तदनन्तर तपस्वियों ने पूछा कि वे उनका क्या कार्य कर दें ? दमयन्ती ने उनसे कुशल प्रश्न किये । तप,जल,अग्नि,धर्म,मृग और पक्षियों की निर्विघ्नता के विषय में जिज्ञासा की । तपस्वियों के पूछने पर दमयन्ती ने विस्तार से अपना परिचय दिया । सब कुछ बताने के अनन्तर दमयन्ती ने नल को न पाने पर प्राण त्याग द्वारा अपनी व्यथा मिटाने का निश्चय व्यक्त किया । उन तपस्वियों ने दिव्य दृष्टि से देखकर दमयन्ती के आगामी कल्याण और सुख तथा नल के अतुल ऐश्वर्य की घोषणा की । तदनन्तर आश्रम सहित वे सब अन्तर्धान हो गए । विस्मित होकर दमयन्ती नल का अन्वेषण करती हुई अशोक वृक्ष के समीप गई । अशोक वृक्ष को भी शोक दूर करने में असमर्थ देखकर वह नदी के तट पर गई । वहां खड़े होकर उसने हाथी-घोड़ों आदि से युक्त नदी पार करते हुए वणिक्सार्थ को देखा । उसमें से कुछ यात्री तो दमयन्ती को देखकर भयभीत हो गए और कुछ उनपर भांति-भांति के दोष लगाने लगे परन्तु कुछ लोगों को दया आई और उन्होंने उससे उसका परिचय पूछा । दमयन्ती ने संक्षेप में अपना परिचय देकर उनसे नल के विषय में प्रश्न किए । सार्थवाह ने बताया कि उसने नल नाम के किसी आदमी को

वहां नहीं देखा । तब दमयन्ती उन लोगों के साथ ही राजा सुबाहु द्वारा परिपालित चेदि राज्य की ओर चल पड़ी । कुछ दिनों तक चलकर वे लोग पद्म-सौगन्धिक सरोवर के समीप पहुंचे । परिश्रान्त यात्री सरोवर के पश्चिम तट पर विश्राम करने लगे । वहीं रात हो गई और सभी यात्री सो गए । आधी रात के समय एक मस्त हाथियों का समूह उधर से पहाड़ी नदी में पानी पीने के लिए निकला । उन हाथियों के पैरों तले कुचलने से तथा भगदड़ में लगभग सभी यात्री आहत हो गये और अधिकांश काल-कवलित हो गए । तत्कालीन तुमुल रव से दमयन्ती की आंख खुल गई। इस सर्वनाश के कारण के विषय में अवशिष्ट यात्री मिल कर भांति-भांति प्रकार की उद्भावनाएं कर रहे थे । कुछ लोगों ने अपनी शोचनीय दशा के लिये विकृत आकार वाली दमयन्ती को ही उत्तरदायी समझा । वे उसे देखकर मर पाने पर ईंट-पत्थर आदि से मार डालने का संकल्प करने लगे । उनके दारुण वचनों को सुनकर अत्यधिक भयभीत दमयन्ती वन के अन्दर छिप गई । अवशिष्ट यात्री जब वहां से चल दिये तो दमयन्ती भी उनके पीछे-पीछे हो चली । इस प्रकार दिन भर चलकर सन्ध्या के समय वह राजा सुबाहु के राज्य में पहुंचा । कुछ बालकों ने वहां दमयन्ती को पगली समझ कर घेर लिया । इसी तरह चलते-चलते वह राजमहल के समीप पहुंची । महल पर टहलती हुई राजमाता ने दयावश उन्हें बुलाने के लिये धाय को भेजा । धाय के पूछने पर दमयन्ती ने केवल पिता और पति का नाम गुप्त रखकर शेष सम्पूर्ण वृत्तान्त सुना दिया । प्रसन्न होकर राजमाता ने उनसे वहीं रहने के लिए कहा । दमयन्ती ने अपने नियम बताये कि वह न किसी का उच्छिष्ट खायेगी, न किसी के पैर धोवेगी और न किसी पुरुष से बात करेगी । जो कोई उसे छेड़ेगा उसे तत्क्षण दण्ड दिया जायगा । स्वामी का पता लगाने के लिए जाने वाले लोगों से वह स्वयं वृत्तान्त पूछेगी इन नियमों के पालन का आश्वासन मिलने पर दमयन्ती ने वहां रहना स्वीकार कर लिया । राजमाता के आदेश से दमयन्ती राजकुमारी सुनन्दा के साथ रहने लगी ।

दमयन्ती को त्याग कर वनान्तर में कुछ ही पग चलकर महाराज नल ने देखा कि एक ओर दावाग्नि में वन जल रहा है । उसमें से है पुण्यश्लोक नल । बचाओ बचाओ इस प्रकार का स्वर सुनकर नल ने दावाग्नि के अन्दर प्रवेश किया । वहां उन्हें कुण्डलाकार में पृथ्वी पर पड़ा हुआ एक भारी अजगर दृष्टिगोचर हुआ । अजगर ने करुण स्वर में नल को बताया कि मैं कर्कोटक नाम का नाग हूं । मैंने एक बार असत्य बोलकर नारद से छल किया था नारद ने मुझे शाप दिया कि आज से तुम जड़ जीवों की भांति अचल होकर यहां पड़े रहोगे जब महाराज नल इधर आवेंगे और तुम्हें इस जगह से हटा देंगे तभी इस शाप से तुम्हारी मुक्ति होगी । राजन् । शापग्रस्त होकर मैं तभी से यहां पड़ा हूं, आप कृपा करके शीघ्र ही मुझे यहां से हटा दीजिए । यह कहकर कर्कोटक ने अपने शरीर को अंगुठे भर का बना लिया । नल ने उसे उठाकर अग्नि रहित प्रदेश में रखना चाहा । तब उसने कहा कि आप मुझे लेकर कुछ पग गिनते हुए चलिये । आपका मैं भारी उपकार करूंगा । दसवें पग पर दस कहते ही नाग ने महाराज नल को डस लिया जिससे नल का रूप बहुत विकृत हो गया । नाग राज ने अपना वास्तविक रूप धारण करके नल को बताया कि अब आपको कोई भी पहिचान न सकेगा । जो पापी कलि आपके शरीर में प्रवेश करके कष्ट दे रहा है वही विष के प्रभाव से पीड़ित होगा । हिंसक जीव भी या शत्रु अब आपका कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकते । मेरे प्रसाद से अब आपको किसी का शाप भी नहीं लगेगा । मेरे काटने से और मेरे तीक्ष्ण विष से आपको तनिक भी कष्ट न होगा । युद्ध में आप सदा विजयी होंगे । अब आपको अयोध्या में ऋतु पर्ण राजा के पास बाहुक नाम से सारथी हो जाइए । ऋतु पर्ण आपको अक्षविद्या सिखाकर आपसे अश्वविद्या सीखेंगे । अक्षविद्या में निपुण होने से आपका हित होगा । राज्य,ऐश्वर्य,पुत्र, कन्या और स्त्री को प्राप्त करके आप सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे । यह कहकर कर्कोटक ने उन्हें दो वस्त्र देकर बताया कि कर्कोटक को स्मरण करके उन वस्त्रों को पहिनने से नल अपना वास्तविक रूप प्राप्त कर सकते हैं । इतना सब समझा कर कर्कोटक वहां से अन्तर्धान हो गया । दसवें दिन अयोध्या पहुंचकर ऋतुपर्ण से महाराज नल ने निवेदन किया कि महाराज । मेरा नाम बाहुक है । मैं अश्वविद्या

में निपुण हूं । कभी-कभी धन की कमी के कारण होने वाली गड़बड़ी को दूर करने की सलाह भी दे सकता हूं । तरह-तरह की रसोई बनाने में भी निपुण हूं और भी कार्यों को मैं परिश्रम के साथ सिद्ध कर सकता हूं । इस प्रकार दस हजार मोहर प्रतिमास वेतन पर महाराज नल वहां अश्वशाला के अध्यक्ष नियुक्त हो गये । वार्ष्णेय और जीवल उनके अधीन हुए । बाहुक नामधारी नल नित्य रात्रि में दमयन्ती के लिये विलाप किया करते थे । एक दिन जीवल ने उनसे पूछा कि तुम किस स्त्री के लिये इस प्रकार विलाप करते हो ? नल ने अपने और दमयन्ती के नाम को गुप्त रखते हुए शेष वृत्तान्त जीवल को सुना दिया ।

नल की विपत्ति का समाचार प्राप्त करके महाराज भीम ने नल और दमयन्ती को विदर्भ ले आने वाले के लिए एक सहस्र गायें और एक गांव रूप पुरस्कार की घोषणा करवा कर ब्राह्मणों को चारों ओर भेजा । उनमें से सुदेव नाम का एक ब्राह्मण घूमता हुआ चेदि देश की राजधानी में पहुंचा । राजभवन में सुनन्दा के साथ दमयन्ती को देखकर उसने दमयन्ती को उसके आकार और चिन्हों से पहिचान लिया । दमयन्ती के समीप जाकर सुदेव ने कहा -- विदर्भराज की पुत्री ! मैं तुम्हारे भाई का सखा सुदेव हूं । महाराज भीम की आज्ञा से मैं यहां तुमको खोजता हुआ आया हूं । तुम्हारे आत्मीय जन तुमको न देखने के कारण निर्जीव से हो रहे हैं । तुम लोगों के अन्वेषणार्थ सैकड़ों ब्राह्मण भेजे गये हैं ।

सुदेव को पहचान कर दमयन्ती कुशल प्रश्नों के अनन्तर शोक वेग के कारण क्रन्दन करने लगी । यह सब देखकर सम्भ्रान्त सुनन्दा अपनी माता को बुला लायी । राजमाता ने सुदेव से दमयन्ती का परिचय पूछा ।

दमयन्ती का सम्पूर्ण परिचय देकर सुदेव ने बताया कि मनुष्य-लोक में उसके समान रूपवती अन्य कोई स्त्री नहीं है । इसके भ्रूमध्य में अतुल ऐश्वर्य का सूचक लालचिह्न है । जिस प्रकार राख से आच्छन्न अग्नि का अस्तित्व गर्मी से जाना जाता है, उसी प्रकार मलिन वेष में भी इनकी शरीर-कान्ति को देखकर मैंने इन्हें पहचान लिया ।

उसी क्षण सुनन्दा ने दमयन्ती का मस्तक धोया जिससे वह तिलक और भी स्पष्ट हो गया । उस चिह्न को देखकर सुनन्दा और उसकी माता दोनों ने दमयन्ती को पहचान कर गले लगा लिया । सुनन्दा की माता ने बताया कि वे और दमयन्ती की माता दोनों दशार्णाधिपति सुदामा की पुत्रियाँ हैं । दमयन्ती का जन्म नाना के यहाँ हुआ था तब सुनन्दा की माता भी वहीं थी । दमयन्ती ने रानी से विदर्भ जाने की अनुमति माँगी । दमयन्ती के आग्रह करने पर राजमाता ने बहुत प्रकार के सामान और सेना के साथ दमयन्ती को विदर्भ के लिए विदा किया। विदर्भ में बन्धुओं से मिलकर दमयन्ती बहुत प्रसन्न हुई फिर वह देवता और ब्राह्मणों की पूजा करने की तैयारी करने लगी । राजा भीम ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सुदेव को सहस्र गायें प्रभूत धनराशि और एक ग्राम दिया । रात्रि भर विश्राम करने के अनन्तर दमयन्ती ने माता से महाराज नल का पता लगाने के लिए कहा । रानी ने महाराज भीम को पुत्री की बात बतायी । महाराज भीम ने उसी क्षण नल के अन्वेषण के लिए ब्राह्मणों को भेजा । दमयन्ती ने उन ब्राह्मणों से कहा कि वे प्रत्येक राज्य और सभा में जाकर दमयन्ती के बताये हुए श्लोकों को सुनायें । जो कोई भी व्यक्ति उसका उत्तर दे, उसका सब वृत्तान्त जानकर वे दमयन्ती को बताए । दमयन्ती के उन श्लोकों का आशय यही था कि घोर वन में सोती हुई पतिव्रता पत्नी का परित्याग करके तुम कहाँ भाग आये हो ? वह तुम्हारी प्रतीक्षा में दिन-रात रोया करती है तथा विवाहिता पत्नी की रक्षा करना पति का कर्तव्य होता है, तुम धर्मात्मा,दयालु,सहृदय, प्राज्ञ,सुशील और कुलीन होकर भी मेरे भाग्य के दोष से निष्ठुर बन गये हो ।

वे ब्राह्मण दमयन्ती की आज्ञा से अनेक देशों में घूम-घूम कर वही घोषणा करने लगे । बहुत समय के बाद पर्णाद नामक एक ब्राह्मण ने दमयन्ती के समीप जाकर कहा -- मैंने ऋतुपर्ण की सभा में जाकर तुम्हारा सन्देश पुन: पुन: सुनाया परन्तु राजा या उनके किसी भी सभासद ने उसका कोई उत्तर नहीं दिया । राजा से विदा लेकर जब मैं दूसरे स्थान को जा रहा था तब महाराज ऋतुपर्ण का बाहुक नामक सारथी मेरे पास एकान्त में आया । वह अश्वपरिचालन और सूद विद्या में अत्यधिक चतुर है । बाहुक ने जो उत्तर दिया वह भी पर्णाद ने दमयन्ती को सुनाया । उसका अभिप्राय यही था कि कुलीन स्त्रियां आपत्ति में भी आत्मरक्षा

करती है । अतएव यद्यपि राज्यभ्रष्ट नल ने अपनी प्रिया दमयन्ती का परित्याग किया है तो भी दमयन्ती को उनपर क्रोध करना उचित नहीं है । पक्षियों द्वारा अपहृत वस्त्रों वाले नल अधिक अधीर हो रहे थे । इस समय भी वे बड़े कष्ट से जीवित हैं । उनकी ऐसी दशा देखकर दमयन्ती को उनपर क्रोध नहीं करना चाहिए ।

पर्णाद से सब वृत्तान्त जानकर दमयन्ती ने अपनी माता को बताया । दमयन्ती ने माता से सलाह करके सुदेव को महाराज ऋतुपर्ण के पास "कल सूर्योदय के समय दमयन्ती का द्वितीय स्वयंवर होगा" यह मिथ्या समाचार सुनाने के लिए भेजा और फिर पर्णाद को धन तथा रत्न से सन्तुष्ट करके विदा किया । दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर में सम्मिलित होने के लिए ऋतुपर्ण ने उसी दिन विदर्भ पहुंचने की अपनी इच्छा बाहुक पर व्यक्त की । नल को यद्यपि इस द्वितीय स्वयंवर की सत्यता पर सन्देह था तथापि वहां पहुंचकर उसकी सत्यता का निर्णय हो सकेगा, यही सोचकर बाहुक ने महाराज ऋतुपर्ण को एक दिन में विदर्भ पहुंचाना स्वीकार कर लिया । अश्वशाला में जाकर बाहुक ने द्रुतगामी अच्छी नस्ल वाले तथा अच्छे लक्षणों वाले सिन्धुदेशीय अश्व चुन लिये । उन अश्वों पर दस आवर्त थे, नाक मोटी और थूथन चौड़ा था । विदर्भ जाने के लिए चुने गये अश्वों को देखकर ऋतुपर्ण को उनकी शक्ति पर सन्देह हुआ परन्तु अश्वविद्या विशारद बाहुक के समझाने पर वे सन्तुष्ट हो गये ।

महाराज ऋतुपर्ण जैसे ही रथ पर सवार हुए रथ के अश्व घुटनों के बल पृथ्वी पर गिर पड़े, यह देखकर बाहुक ने घोड़ों को उत्साहित किया । वार्ष्णेय भी रथ में एक ओर बैठ गया और तब नल के चलाने पर वह रथ वायु के वेग के समान चल पड़ा । रथ की चाल से ऋतुपर्ण और वार्ष्णेय दोनों ही चकित हो गये । वार्ष्णेय को सन्देह होने लगा कि क्या वे मातलि हैं, या शालिहोत्र है या महाराज नल हैं या उनके शिष्य या उनके सदृश कोई महापुरुष हैं ।

बाहुक बड़े वेग से रथ चला रहे थे तभी ऋतुपर्ण का उत्तरीय सरक कर नीचे गिर गया । ऋतुपर्ण ने बाहुक से रथ रोकने के लिए कहा, जिससे वार्ष्णेय जाकर उत्तरीय उठा लाये । बाहुक ने उन्हें बताया कि उनका उत्तरीय चार कोस पीछे छूट गया था ।

चलते-चलते कुछ दूर पर एक विभीतक का वृक्ष दिखाई देकर ऋतुपर्ण ने अपनी परिगणन विद्या का परिचय देने के लिए उस वृक्ष की दो बड़ी शाखाओं के पत्तों की संख्या ५ करोड़ और छोटी-छोटी डालियों में फलों की संख्या दो हजार पच्यानवे बतायी तथा पृथ्वी पर गिरे हुए पत्तों और फलों की संख्या पृथक् पृथक् एक सौ एक बतायी । बाहुक ने ऋतुपर्ण की इस विद्या पर से अपने सन्देह निवारण के लिए विभीतक के वृक्ष के समीप जाकर पत्तों और फलों की गणना करने की इच्छा की, ऋतुपर्ण के मना करने पर भी हठपूर्वक रथ रोककर नल ने उस वृक्ष को काटा तथा उसके पत्तों और फलों की गणना की । ऋतुपर्ण की इस अलौकिक शक्ति पर आश्चर्य प्रकट करते हुए बाहुक ने वह विद्या जानने की इच्छा की । ऋतुपर्ण ने बताया कि वह संख्यान विद्या और अक्ष विद्या के ज्ञाता हैं । बाहुक की इच्छानुसार उन्होंने अश्वविद्या के बदले में अपनी दोनों विद्यायें उन्हें सिखाना स्वीकार कर लिया । अपनी दोनों विद्यायें उन्होंने उसी समय बाहुक को सिखा दीं । अश्वविद्या प्राप्त होते ही बाहुक नामधारी नल के शरीर के कर्कोटक के तीक्ष्ण विष को मुंह से उगलता हुआ कलियुग बाहर निकल आया । जैसे ही क्रुद्ध नल उसे शाप देने के लिए उद्यत हुए, कलि ने हाथ जोड़कर कि नल से निवेदन किया महाराज । वन में आपके द्वारा परित्यक्ता होने के कारण दुखी होकर दमयन्ती ने मुझे शाप दिया था उस शाप से और कर्कोटक नाग के तीक्ष्ण विष से मैं दिन-रात जलता रहता हूं अब मैं आपकी शरण में हूं । यदि आप मुझे शाप न देंगे तो जो कोई भी आपका नाम लेगा, उसे मुझसे कोई भय नहीं होगा, उसे मन शरीर और वाणी का कोई कष्ट न होगा । कलि के वचन सुनकर महाराज नल ने जैसे ही अपने क्रोध को संयत किया कलि सामने वाले विभीतक वृक्ष में प्रविष्ट हो गया । इस प्रकार नल और कलि को वार्तालाप करते किसी ने भी नहीं देखा । उस वृक्ष के फलों की गणना करके प्रसन्न नल ने विदर्भ की ओर रथ बढ़ाया । नल के चले जाने पर कलि भी अपने घर गया ।

सन्ध्याकाल में ऋतुपर्ण विदर्भ की राजधानी में पहुंच गए । उनके आगमन का समाचार पाते ही महाराज भीम ने उन्हें लाने के लिए अपने परिजन भेजे । नल के रथ का शब्द सुनकर जिस प्रकार पहिले उनके अश्व सन्तुष्ट होते थे

इसी प्रकार इस रथ का शब्द सुनकर भी वे प्रसन्नता से शब्द करने लगे । महलों पर बैठे मयूर तथा हस्तिशाला में बंधे हुए हाथी भी प्रसन्न होकर चेष्टायें करने लगे । चिर-परिचित रथनिर्घोष को सुनकर दमयन्ती का हृदय भी प्रफुल्ल हो उठा । उसने प्रतिज्ञा की कि यदि आज सर्वगुणसम्पन्न नल के मुखकमल का दर्शन न हुआ तो वह प्राण त्याग कर देगी । इस प्रकार विचार करती हुई दमयन्ती महल के ऊपर चढ़ गयी । वहां से उन्होंने वार्ष्णेय और बाहुक सारथी के साथ ऋतुपर्ण को मध्यम कक्ष में पहुंचते देखा । वार्ष्णेय और बाहुक ने रथ से उतर कर अश्वों को खोला और ऋतुपर्ण महाराज भीम से मिलने चले गए । विदर्भराज भीम ने स्वागत प्रश्नों के अनन्तर उनसे उनके विदर्भागमन का कारण पूछा । ऋतुपर्ण को विदर्भ में स्वयंवर का कोई भी लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहा था अतएव उन्होंने कहा--"महाराज ! आपसे मिलने आया हूं ।" तदनन्तर ऋतुपर्ण विश्राम भवन में चले गए । बाहुक ने घोड़ों को खोलकर रथशाला में रथ बांध दिया और स्वयं उसी रथ के भीतर जा बैठे । दमयन्ती ने निरन्तर नल के विषय में विचार करने के बाद केशिनी नाम की एक दासी को नल का पता लगाने के लिए रथशाला में भेजा । केशिनी ने बाहुक से कुशल प्रश्न के अनन्तर के बताया कि उसकी स्वामिनी दमयन्ती जानना चाहती है कि वे लोग किस समय अयोध्या से चलकर कुण्डिनपुर पहुंचे हैं तथा उनके विदर्भ आगमन का क्या कारण है ?

बाहुक ने बताया कि महाराज ऋतुपर्ण ब्राह्मण द्वारा बपब दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर का समाचार पाकर वायु के सदृश वेगवान अश्वों की सहायता से चार सौ कोस पार करके यहां आए हैं और वह उनका सारथी है । तब केशिनी ने बाहुक और वार्ष्णेय दोनों के विषय में जिज्ञासा प्रकट की । नल ने बताया कि वह तीसरा व्यक्ति नल का सारथी वार्ष्णेय है । राजा नल जब द्यूत में पराजित हो गए तो वह ऋतुपर्ण का सारथी हो गया । मैं भी अश्वविद्या का ज्ञाता हूं, इसलिए महाराज ने मुझे अपना सारथी बना लिया । मैं सूदविद्या का ज्ञाता हूं इसलिए महाराज ने मुझे अपना सारथी बना लिया । मैं सूद विद्या में भी चतुर हूं

इसलिए महाराज का कभी-कभी भोजन भी बनाता हूं ।" केशिनी ने पूछा कि क्या वार्ष्णेय को यह ज्ञात है कि नल कहां चले गए ?" बाहुक नामधारी नल ने बताया कि इस विषय में किसी को कुछ नहीं मालूम है । केशिनी ने पर्णाद द्वारा उदाहृत श्लोक को सुनाकर बाहुक द्वारा दिये उसके उत्तर को पुन: सुनने की दमयन्ती की इच्छा प्रकट की । बाहुक नामधारी नल उसका उत्तर देते हुए अपनी अश्रु धाराओं को न रोक सके । केशिनी ने दमयन्ती के समीप जाकर आदि से अन्त तक सम्पूर्ण समाचार कह सुनाया । केशिनी से बाहुक का समाचार प्राप्त करके दमयन्ती ने अनुमान कर लिया कि वे नल ही हैं । दमयन्ती ने केशिनी को नल के चरित्र की परीक्षा लेने के लिए भेजा । बाहुक के याचना करने पर भी अग्नि और जल देने के लिए दमयन्ती ने केशिनी को मना कर दिया । इस प्रकार नल के लौकिक और अलौकिक व्यवहार का निरीक्षण करने का आदेश देकर उन्होंने केशिनी को बाहुक के पास भेजा । अपना कार्य समाप्त करके केशिनी ने बताया कि अग्नि और जल बाहुक की आज्ञा मानते हैं । संकीर्ण से संकीर्ण द्वार से प्रवेश करते समय भी बाहुक झुकते नहीं हैं, द्वार ही परिवृद्ध हो जाता है । पशुओं का मांस धोने के लिए बाहुक के देखते ही जलहीन कलश जल से परिपूर्ण हो गए । मुट्ठी भर तिनके हाथ में लेकर क्षण भर सूर्यदेव की ओर देखने से ही वे तिनके जल उठे । अग्नि के स्पर्श से भी बाहुक जलते नहीं हैं । उनकी इच्छा होते ही जल उनके समीप से बहता है । उन्होंने बहुत से पुष्पों का हाथ से मर्दन किया किन्तु वे फूल जैसे थे वैसे ही रहे और उनमें से पहले से भी अधिक सुगन्ध आने लगी । बाहुक के अलौकिक कार्यों के विषय में जानकर दमयन्ती समझ गई कि वे नल हैं परन्तु सन्देह को पूर्णरूप से दूर करने के लिए उन्होंने केशिनी को बाहुक के पास से सिद्ध मांस लाने के लिए भेजा । इस प्रकार केशिनी द्वारा लाए गए मांस को चखने पर दमयन्ती को विश्वास हो गया कि बाहुक तथा महाराज नल अभिन्न हैं । तब उन्होंने केशिनी के साथ अपने बच्चों को बाहुक के समीप भेजा । बच्चों को के देखते ही स्नेह के कारण बाहुक ने दोनों बालकों को अपनी गोद में बैठा लिया और आंसू बहाने लगे । अपने वृत्तान्त को छिपाने के लिए कुछ ही समय के उपरान्त बच्चों को गोद से उतार कर उन्होंने केशिनी को बताया कि अपने बालकों के समान रूप रंग वाले

उन बालकों को देखकर वे द्रवित हो उठे थे । उन्होंने केशिनी को वहां बार-बार आने के लिए मना भी किया ।

बाहुक के चित्त-विकार को जानकर केशिनी ने दमयन्ती को सब वृत्तान्त सुनाया । नल से मिलने के लिए अधीर दमयन्ती ने केशिनी द्वारा माता को सब कुछ कहलाकर केवल रूप विषयक सन्देह के निवारणार्थ बाहुक से मिलने की आज्ञा दे मांगी । दमयन्ती के बुलाने पर उनके भवन में प्रवेश करके चिरकाल के अनन्तर अपनी पतिव्रता धर्मपत्नी को देखते ही बाहुक नामधारी महाराज नल शोक के कारण आंसू बहाने लगे ।

विरह वेषवाली दमयन्ती ने रोते-रोते भांति-भांति से पिछले वृत्तान्त का परिचय दिया । दमयन्ती ने पूछा --' हे बाहुक ! तुमने कभी किसी ऐसे धर्मात्मा पुरुष को देखा है, जिसने अपनी सोती हुई पत्नी का वन में परित्याग कर दिया हो ।

रोती हुई दमयन्ती को देखकर महाराज नल ने कलि को उस पूर्ण दुर्घटना का कारण बताया । दमयन्ती के शाप और कर्कोटक के विष के कारण कलि की दुरवस्था का उल्लेख करते हुए महाराज नल ने यह भी बताया कि अब कलि से उन्हें मुक्ति मिल गयी है अतएव दु:खों के अन्त का समय आ पहुंचा है । उन्होंने बताया कि वे लोग दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर का समाचार पाकर ही वहां आये थे ।

इसे सुनकर घबरायी हुई दमयन्ती ने हाथ जोड़कर महाराज नल से निवेदन किया कि किस प्रकार देवताओं को छोड़कर उसने नल का वरण किया था । अतएव उस पर सन्देह करना उचित नहीं था । दमयन्ती ने नल को जिस प्रकार वियोग के बाद पुन: प्राप्त किया वह सब समझाकर अपनी पवित्रता के विषय में सन्देह दूर करने के लिए कहा कि यदि मन, वाणी और कर्मों से मैंने कुछ भी अधर्म किया है तो वायु, सूर्य अथवा चन्द्रदेव मेरे प्राण नष्ट कर दें । इसी समय अन्तरिक्ष में स्थितवायु ने दमयन्ती के विगत तीन वर्षों की पवित्रता का विश्वास दिलाते हुए आगे के जीवन में सुखप्राप्ति का आशीर्वाद दिया । वायु के इस प्रकार कहने पर स्वर्ग से पुष्पवृष्टि होने लगी तथा देवता दुन्दभिवादन करने लगे । इस प्रकार

दमयन्ती की पतिव्रता जानकर नल ने कर्कोटक के दिए हुए वस्त्र धारण करके अपना वास्तविक रूप प्राप्त कर लिया । नल और दमयन्ती का मिलन हो गया । रात में दोनों बहुत समय तक विगत घटनाएं याद करते रहे । इस प्रकार तीन वर्षों के अनन्तर अपनी प्रिया को प्राप्त करके महाराज नल बहुत प्रसन्न हुए ।

अगले दिन पत्नी सहित महाराज नल ने राजा भीम के पास जाकर प्रणाम किया । राजा भीम ने उनका बहुत सम्मान किया । समस्त नगरवासी प्रसन्न थे । घर-घर में उत्सव मनाये जाने लगे । बाहुक रूप से प्रच्छन्न महाराज नल के दमयन्ती से मिलन को जानकर महाराज ऋतुपर्ण भी बहुत प्रसन्न हुए उन्होंने सम्मानपूर्वक महाराज को बुलाकर अपने जाने-अनजाने अपराध के लिए क्षमा मांगी । महाराज नल ने उन्हें पहले की भांति सखा और सम्बन्धी स्वीकार करते हुए अश्वविद्या सिखाई । महाराज ऋतुपर्ण एक अन्य सारथी के साथ वापस अयोध्या लौट गए ।एक मास तक विदर्भ में रहकर महाराज नल एक रथ, सोलह हाथी, पचास घोड़े और छ: सौ पैदल साथ लेकर पुष्कर के पास गए । उन्होंने पुष्कर को द्यूत क्रीड़ा के लिए बुलाया । दांव पर अपना धन और दमयन्ती को भी लगाने के लिए तैयार होकर उन्होंने पुष्कर से भी समस्त राज्य, धन-सम्पत्ति का दांव लगाने के लिए आग्रह किया । यदि पुष्कर द्यूत न खेलना चाहें तो महाराज नल ने कहा कि उन्हें नल के साथ युद्ध करना होगा । उस युद्ध में किसी के भी सहायता नहीं ली जाएगी । महाराज नल के धन और दमयन्ती की प्राप्ति की इच्छा से पुष्कर तत्क्षण ही द्यूत के लिए मान गया । वह दमयन्ती को द्यूत में जीतकर उससे अपनी सेवा कराने के स्वप्न देखने लगा । पुष्कर ने इस प्रलाप को सुनकर क्रुद्ध नल तत्क्षण ही पुष्कर को मारने के लिए तैयार हो गए । परन्तु फिर, धैर्यपूर्वक ठहर कर उन्होंने उसे फटकारा । द्यूत में प्रवृत्त होकर महाराज नल ने एक ही दांव में पुष्कर का सर्वस्व जीत लिया । अगले दांव में पुष्कर के प्राण भी जीत लिए । एक के अपराध से दूसरे को दण्ड देना अनुचित समझकर धर्मात्मा नल ने पुष्कर को प्राणों की भिक्षा देकर उसकी सम्पत्ति भी उसे लौटा दी । पुष्कर को पहिले की ही तरह अनुज मानकर महाराज नल ने उसे आशीर्वाद दिया । पुष्कर ने विनयपूर्वक अपनी कृतज्ञता प्रकट की ।

एक महीने तक नल के पास ही रह कर पुष्कर अपने राज्य में वापस चला गया। समस्त प्रजा महाराज नल को प्राप्त करके बहुत प्रसन्न हुई।

निषध देश की राजधानी में उत्सव उत्साव मनाये जाने लगे। महाराज नल ने दमयन्ती को पितृगृह से लाने के लिए सामन्तों को भेजा। पुत्र और पुत्री के साथ रानी दमयन्ती पति के घर आ गई। महाराज नल ने अनेक प्रकार के धर्म-कर्म और प्रभूत दक्षिणा वाले यज्ञ करके अक्षय यश का संचय किया।

रामायण तथा महाभारत के काल निर्णय के विषय पर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। कोई रामायण को महाभारत की पूर्ववर्ती रचना मानते हैं तो कोई परवर्ती। वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि रामायण महाभारत से पूर्ववर्ती काल की रचना है। जो भी हो, दोनों के ही समय में नल और दमयन्ती की कथा प्रसिद्ध थी। एक (महाभारत) में उसका विस्तार से ग्रहण हुआ है तो दूसरी में उसका उपमान रूप में ग्रहण उसकी लोक-प्रसिद्धि को सिद्ध करता है। पौर्वात्य आलोचकों के अनुसार यद्यपि महाभारत का समय इससे बहुत-बहुत पहले होना चाहिए फिर भी पाश्चात्य विद्वानों के साथ यदि महाभारत को ४०० ई० पू० की रचना मान लिया जाय तो इसका अभिप्राय यह हुआ कि ४०० ई० पू० तक नल-दमयन्ती की मूल वैदिककालीन कथा का नलोपाख्यान के रूप में विकास हो चुका था। महाभारत की रचना से बहुत पूर्व से ही यदि उसे भाटों और चारणों के गान के रूप में स्वीकार किया जाय तो यह मानने में कि यह उपाख्यान लगभग इसी रूप में ४०० ई०पू० से कई सदियों पहले ही से प्रसिद्ध था, कोई सन्देह नहीं होना चाहिए। रामायण को यदि ५०० ई० पू० की रचना स्वीकार कर लें तो उस समय नल-दमयन्ती की कथा बहुत प्रसिद्ध हो हो चुकी थी। यह कहना अवश्य ही बहुत कठिन है कि रामायण के पश्चात् महाभारतीय नलोपाख्यान को लिपिबद्ध करने तक उसमें कितना परिवर्धन किया गया। फिर भी इतना तो निःसन्देह कहा ही जा सकता है कि वाल्मीकीय रामायण के समय तक राज्य से रहित, दीन पति नैषध का भीमकुमारी पतिव्रता दमयन्ती ने वन जाते समय अनुगमन किया था। महाभारतीय नल-दमयन्ती कथा का इतना सारभाग उस समय भी काफी प्रसिद्ध था।

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रचारक पुराणों में भी नल-दमयन्ती की कथा और उससे सम्बन्धित पात्रों का उल्लेख मिलता है । आगे और कुछ कहने से पूर्व यह देख लेना आवश्यक है कि पुराणों का काल क्या था ? इसके अतिरिक्त मुख्य-मुख्य पुराणों में नल दमयन्ती कथा से संबंधित नामों का उल्लेख कहां-कहां और किन-किन अर्थ में मिलता है । उसके पश्चात् ही उस समय में नल-दमयन्ती कथा के विकास की अवस्था विचारणीय होगी । कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने पुराणों को बहुत बाद की रचना सिद्ध करने का प्रयत्न किया है । 'विल्सन' ने सब पुराणों को भिन्न-भिन्न काल की रचना मानते हुए उन्हें ईसा की आठवीं शताब्दी से लेकर वल्लभाचार्य के समय अर्थात् ईसा की सोलहवीं शताब्दी तक की रचना माना है ।[१] परन्तु उनका विरोध तो तत्कालीन कर्नल वंश कैनेडी आदि विद्वानों ने ही किया[२] । कोलब्रुक महोदय ने वय्याकरण 'बोपदेव' को भागवत पुराण का रचयिता मान कर भागवत को तेरहवीं शताब्दी ईस्वी की रचना माना है और चूंकि अधिकांशत: पुराणों में भागवत को मिलाकर अठारह पुराणों के नाम गिनाए गए हैं । अत: सभी पुराणों को भागवत के समान ही बाद की रचना सिद्ध करने का प्रयत्न किया है ।

डा० फ्यूहरर के अनुसार बाण (ई० की सातवीं शताब्दी) ने वायु, अग्नि, भागवत तथा मार्कण्डेय पुराण का अध्ययन किया था[३] ।

गुप्तकालीन लिपि में हस्तलिखित 'स्कन्दपुराण' की प्राप्ति से सिद्ध होता है कि ईसा की सातवीं शताब्दी में वह पुराण बन चुका था[४] । बुहलर महोदय ने[५] सब पुराणों को यदि नहीं तो कम से कम वायु, विष्णु, मत्स्य और ब्रह्माण्ड पुराण को तो गुप्तकाल (ई०पू०३२०-३३०) तक पूर्णरूप से बन गया हुआ सिद्ध किया है ।

१- 'पुराणम्' पत्रिका

२-दीक्षितार: पुराण इण्डेक्स--भूमिका

३- ट्रान्जैक्शन्स आफ सिक्स्थ ओरियण्टल कांग्रेस, जिल्द सं०३, पृ०२०५

४- जरनल आफ रायल एशियाटिक सोसायटी (लन्दन) १६०३, पृ०१६३

५- इण्डियन एण्टीक्वेरी जिल्द संख्या २५, १८६६, पृ०३२३

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में उपलब्ध संकेत के आधार पर श्री एस०एम० एडवर्ड[1] ने चौथी शताब्दी ईसापूर्व में ही पुराणों के एक निश्चित रूप को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। श्री जैक्सन[2] ने मेगस्थनीज़ के पौराणिक परिचय के आधार पर एक मूल पुराण की स्थिति चौथी शताब्दी ईसापूर्व में ही स्वीकार की है। उनका कहना है कि वर्तमान पुराणों का समानरूप में वही मूल स्रोत था। मैक्डानल[3] महोदय पुराणों को महाभारत और मनुस्मृति से भी प्राचीन मानते हैं। 'विण्टरनिट्ज़'[4] महोदय ने भी महाभारत के वर्तमान स्वरूप के स्थिर होने से बहुत पहले ही पुराणों की स्थिति स्वीकार की है। डा० आर०सी० हाज़रा ने पुराण साहित्य पर खोजपूर्ण कार्य किया है तथा कालक्रम से प्राचीनतम महापुराणों में मार्कण्डेय, ब्रह्माण्ड, विष्णु, मत्स्य, भागवत, एवं कूर्म पुराण की गणना की है। 'मार्कण्डेय' और 'ब्रह्माण्ड' पुराणों को उन्होंने चार सौ ई० से पूर्व की तथा शेष पुराणों में 'विष्णु पुराण' को ४०० ई० की 'वायु पुराण' को ५०० ई० की, 'भागवत पुराण' को ६००-७०० ई० की तथा 'कूर्म पुराण' को ७०० ई० की रचना स्वीकार किया है[5]।

इस सब को देखने से यह प्रतीत होता है कि वैदिक काल के उत्तर भाग से ईसा की सातवीं आठवीं शताब्दी तक 'पुराण' नाम से कुछ साहित्य उपलब्ध होता था, इसका विषय, प्राचीन कथाएं और परम्पराएं थीं। यही कारण है कि पहले 'पुराण' का प्रयोग एक वचन में मिलता है। कालान्तर में उसी के

१- वी०ए० स्मिथ : अर्ली हिस्ट्री आफ इण्डिया (चतुर्थ संस्करण), पृ०२४

२- बाम्बे ब्रांच आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी सैण्टैनैरी मेमोरियल, वाल्युम्स, पृ०७२।

३- मैक्डानल : हिस्ट्री आफ संस्कृत लिट्रेचर, पृ०२९६

४- विण्टरनिट्ज़ : हिस्ट्री आफ इण्डियन लिट्रेचर, जिल्द संख्या १

५- हाज़रा : इण्डियन कल्चर-- द्वितीय भाग, पृ० २३७ आदि

विविध रूप हो गए और तब `पुराण` का प्रयोग बहुवचन में होने लगा । इस प्रकार इस विकासक्रम में कई सदियां लग गयी हों तो कोई आश्चर्य नहीं । इस प्रकार हम श्री एस०डी० ज्ञानी[1] के साथ ईसापूर्व ~~एक~~ एक हज़ार से सात सौ ईस्वी तक को पुराणों की रचना तथा विकास का काल स्वीकार कर सकते हैं ।

भागवत तथा विष्णु पुराण में `नल` शब्द[2] यदु के पुत्र के अर्थ में उपलब्ध होता है । ब्रह्माण्ड पुराण में यह कनक बिन्दु की पत्नी से उत्पन्न अग्नि के पुत्र वानर के लिए प्रयुक्त हुआ है । `ब्रह्माण्ड पुराण` में ही एक अन्य स्थल पर एक वानरों के मुखिया का `नल` नाम से उल्लेख किया गया है । हिरण्यकश्यपु के भतीजे के लिए `मत्स्यपुराण` में `नल` का प्रयोग किया गया है ।`मत्स्यपुराण` ही में एक स्थल पर तैत्तिरिपुत्र `नल` का उल्लेख है जिसका दूसरा नाम `नन्दनोदर दुन्दुभि` भी मिलता है । इन्होंने `अश्वमेध` किया था और `अतिरात्र` यज्ञ के बीच पुनर्वसु ने प्रकट होकर इनका पुत्रत्व स्वीकार किया था । `मत्स्य-पुराण` में एक स्थान पर `वीरसेन` के पुत्र `नल` का उल्लेख मिलता है । मत्स्य,वायु तथा लिंग पुराणों में कश्यपवंश में उत्पन्न होने वाले `निषध` के पुत्र अतएव नैषध और वीरसेन के पुत्र इन दो नलों का उल्लेख ~~मिलता~~ मिलता है । इसके साथ ही नल ने `ऋतुपर्ण` से `अश्व विद्या` के बदले में अक्षविद्या सीखी थी यह भी उल्लेख भागवत, ब्रह्माण्ड, वायु और विष्णु पुराण में मिलते हैं ।

`अयुतायु` के पुत्र और `नल` के मित्र ऋतुपर्ण[3] का उल्लेख जिन्होंने अश्व विद्या के बदले नल को द्यूत का रहस्य बताया था, तथा जो द्वितीय-नल कहलाने वाले सर्वकाम के पिता थे ,१ `भागवत`, `ब्रह्माण्ड`, `मत्स्य` , `वायु` और `विष्णु पुराण` में मिलता है ।`विष्णु पुराण`के अनुसार तो सर्वकाम ने नल से द्यूत विद्या सीखी थी ।

१- `पुराणम्` , जिल्द संख्या १ न०२,फरवरी १९६०

तथा

एस०डी० ज्ञानी : डेट आफ पुराणाज़, पृ० २१६

२- दीक्षितार : पुराण इंडेक्स

३- द्रष्टव्य -- पुराण इण्डेक्स

कर्कोट' और 'कर्कोटक'[1] शब्द भी कई पुराणों में प्रयुक्त मिलता है। 'पुष्य मास' के अधिपति नाग के रूप में इस शब्द का व्यवहार 'भागवत', 'मत्स्य' तथा 'वायु' पुराण' में मिलता है। काद्रवेय नाग के अर्थ में 'कर्कोटक' शब्द 'ब्रह्माण्ड', 'मत्स्य' और 'विष्णु' पुराण में प्रयुक्त हुआ है। कार्तवीर्य अर्जुन द्वारा इनके पुत्र के पराजित होने का उल्लेख 'ब्रह्माण्ड' तथा 'मत्स्यपुराण' में मिलता है। त्रिपुरारि के रथ के रूप में 'कर्कोटक' का उल्लेख मत्स्यपुराण में हुआ है। 'वायुपुराण' में कार्तवीर्य अर्जुन द्वारा जीती गयी सभा के लिए इस शब्द का प्रयोग मिलता है।

'भागवत पुराण'[2] में एक स्थल पर 'पुष्कर द्वीप' का उल्लेख है। 'भागवत पुराण' में ही अन्यत्र सुनक्षत्र के पुत्र और अन्तरिक्ष के पिता के लिए दूसरी जगह 'पुष्कर' नाम आया हुआ है। दुर्वाक्षी के पुत्र के अर्थ में और फिर 'कृष्ण' के पुत्र 'पुष्कर' का भी उल्लेख तथा 'वायु पुराण' में भरत के पुत्र पुष्कर का जिन्होंने गान्धार में अपनी राजधानी के रूप में पुष्करावती की स्थापना की थी, व नाम आया है। कृष्ण अर्थात् काले पाराशर के अर्थ में 'मत्स्यपुराण' में पुष्कर शब्द का प्रयोग हुआ है। 'ब्रह्माण्ड' तथा 'वायु पुराण' में सीता नदी से युक्त राज्य के लिए पुष्कर शब्द आया है।

'भीम'[3] शब्द 'भागवत पुराण' में विजय के पुत्र तथा कांचन के पिता के लिए आया है। 'ब्रह्माण्ड पुराण' में यह आकाशस्थान से युक्त शिव के लिए तथा वैकुण्ठ के देव के लिए प्रयुक्त मिलता है। 'वायु पुराण' में यह तृतीय गण के मरुत के लिए तथा और राक्षस के पुत्र के लिए एक असुर के लिए एक राक्षसगण के लिए तथा महावीर्य के पुत्र के लिए प्रयोग किया गया है। 'ब्रह्माण्ड पुराण' में यह एक

१- द्रष्टव्य: पुराण इण्डेक्स

२- द्रष्टव्य: पुराण इण्डेक्स

३- द्रष्टव्य: पुराण इण्डेक्स

ानेय गंधर्व के लिए एक वानर प्रमुख के लिए तथा एक पाण्डव के लिए प्रयुक्त हुआ है। `विष्णु पुराण` में `भीम` शब्द का प्रयोग अमावसु के पुत्र और कांचनप्रभा के पिता के लिए मिलता है। `मत्स्य पुराण` में `भीम` शब्द का तात्पर्य एक रुद्र से है।

`इन्द्रसेन`[1] शब्द `भागवत पुराण` में ही विविध अर्थों के लिए प्रयुक्त हुआ है। यहां `प्लक्ष द्वीप` के चारों ओर की पताकाओं देवर्षीन के पुत्र कूर्च के पुत्र तथा बलि के अवतार का नाम `इन्द्रसेन` है। इसके अतिरिक्त `मत्स्य पुराण` में ब्रह्मिष्ठ के पुत्र के लिए `इन्द्रसेन` नाम आया हुआ है।

`वायुपुराण` में `मुद्गल` की पत्नी `इन्द्रसेना` का उल्लेख मिलता है।[2] `सुबाहु`[3] शब्द पौराणिक साहित्य में अनेक स्थलों पर प्रयुक्त हुआ है। `भागवत पुराण में कालिन्दी के पुत्र सुबाहु तथा प्रतिबाहु के पुत्र सुबाहु का उल्लेख मिलता है। `ब्रह्माण्ड` और `वायु` पुराण में सुबाहु नामक अप्सरा का ब्रह्माण्ड पुराण में ही क्रोध से उत्पन्न गन्धर्व `सुबाहु` का वानर प्रमुख का तथा वृष्णि के पुत्र सुबाहु का उल्लेख मिलता है। `वायु पुराण` में सुबाहु नामक एक गन्धर्वराज का तथा `विष्णु पुराण` में एक सुबाहु राक्षस का निर्देश मिलता है। मत्स्य पुराण में एक सुबाहु नामक ऋषि तथा अश्विनी के पुत्र `सुबाहु` का उल्लेख मिलता है। `वायु` तथा `विष्णु` आदि पुराणों में शत्रुघ्न के पुत्र सुबाहु का उल्लेख है। `ब्रह्माण्ड` पुराण के अनुसार इन सुबाहु की राजधानी मथुरा थी।

`कूर्म पुराण` में निषध के पुत्र नल का उल्लेख है।[4] `अग्नि पुराण`[6] में सूर्य वंश के वर्णन के प्रसंग में निषध के पुत्र नल का उल्लेख है।[5] `मत्स्य पुराण`

१- द्रष्टव्य : पुराण इण्डेक्स

२- द्रष्टव्य : पुराण इण्डेक्स

३- द्रष्टव्य : पुराण इण्डेक्स

४- कूर्म पुराण, अध्याय २१

५- अग्नि पुराण, अध्याय २७३।३६

६- मत्स्य पुराण १२।५६

और 'पद्म पुराण'[1] में वीरसेन के पुत्र और निषध के पुत्र नैषध इन दो कश्यप वंश के नलों के विख्यात होने का उल्लेख है, 'वायु[2], लिंग[3] और ब्रह्माण्ड पुराण'[4] में एक सूर्यवंशी नल तथा वीरसेन के पुत्र नल का उनके अक्ष हृदयज्ञ सखा ऋतुपर्ण के साथ उल्लेख है । 'विष्णु पुराण'[5] और 'भागवत पुराण'[6] में नल का ऋतुपर्ण से अश्वविद्या के बदले अक्ष विद्या सीखने का उल्लेख है । देवी भागवत में वीरसेन और दमयन्ती नामों का उल्लेख है[7] । 'स्कन्द पुराण' में दमयन्ती को छोड़कर नल के द्वारा नलेश्वर लिंग की स्थापना और उस लिंग के दर्शन-पूजन से कलि से मुक्ति तथा द्यूत में विजय की बात आयी है[8] । इन सब स्थलों को देखने से एक तो इक्ष्वाकुवंशीय और दूसरे वीरसेन के पुत्र नलका पता चलता है । ऐक्ष्वाकु वंशीय नल की उपाधि 'नैषध' हुई, निषधपुत्र होने के कारण और 'वीरसेन' के पुत्र नल की उपाधि भी नैषध हुई निषध ~~पुत्र होने के कारण~~ देश के राजा होने के कारण । यहां भूलना न चाहिए कि शतपथ ब्राह्मण के 'नड्नैषध' में भी नाम तो नड(नल) था और उपाधि नैषध और यह दक्षिण के राजा थे । इस प्रकार आपाततः तीन भिन्न-भिन्न प्रतीत होने वाले इन नलों के अतिरिक्त 'मार्कण्डेय पुराण' में राजा 'धूम्राश्व' के पुत्र नल का उल्लेख मिलता है[9] । ये सुदेव राजा के मित्र थे और एक बार जब सुदेव के साथ मकुलाल में आम्रवन में विहार करने गये तभी पुष्करिणी के तट पर च्यवन ऋषि के पुत्र प्रमति की सुन्दरी पत्नी को देखकर मत्त हो उठे और उसका बलपूर्वक ग्रहण किया जिसमें क्रुद्ध प्रमति ने नल को शाप देकर भस्म कर दिया ।

'महाभारत' में च्यवन और प्रमति तथा काशी के राजा सुदेव का भी उल्लेख है परन्तु पुष्करिणी नदी का धूम्राश्व का और उनके पुत्र नल का नाम भी नहीं मिलता है । तो क्या मार्कण्डेय पुराण में किसी चौथे नल की कथा आयी है ?

१- पद्मपुराण ८।१५७-१६१
२- वायुपुराण २, २६ १७४
३- लिंग पुराण १।६६।२४-२५
४- ब्रह्माण्ड पुराण ४।३७
५- विष्णु पुराण ४।३७
६- भागवत पुराण ६।२३।२०
७- देवी भागवत ३।१४-१५, ५।१७,६।२६
८- स्कन्द पुराण ६-नागर खंड ५४-५५
७-प्रभासखंड ३४५
९-मार्कण्डेय पुराण ११३-११४।२६-१०

यहाँ नहीं, 'भागवत पुराण' और 'विष्णु पुराण' में यदु के पुत्र नल का उल्लेख है[1] जो इन सबसे पृथक ही लगते हैं। नल के कथित पिता निषध देश के राजा वीरसेन की ऐतिहासिकता में सन्देह है। हो सकता है, यह कल्पित नाम हो। ऐक्ष्वाकु वंश में निषध और उनके पुत्र नल और फिर जैसा कि पुराणों में निर्दिष्ट है नल के पुत्र नभ आदि ऐतिहासिक व्यक्ति प्रतीत होते हैं। श्री जयचन्द्र विद्यालंकार ने महाभारत में ऋतुपर्ण के समकालीन नल के उल्लेख के आधार पर ऐक्ष्वाकु वंश के अम्बरीष नाभागि राजा के समय निषध राज्य के बनने की कल्पना की है और उसमें ऋतुपर्ण के समय नल को राजा मान लिया है[2]। परन्तु यह कल्पना जिस आधार पर की गयी है, उसी की ऐतिहासिकता में सन्देह होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि अति प्राचीन वैदिक नड नैषध की कथा ने आगे चलकर सूतों के पास भिन्न-भिन्न रूपों में विकास पाया। एक जगह वह धूम्राश्व के पुत्र कहे गये और सुदेव के मित्र मान लिये गये और दूसरी जगह वीरसेन के पुत्र और ऋतुपर्ण के मित्र। दूसरा वाला रूप ही अधिक लोकप्रिय हो उठा। इस रूप में कथा का रूप अधिक ललित बन पड़ा था। इसी की थोड़ी-बहुत झलक पुराणों में भी मिलती है। जितनी कथा महाभारत में गृहीत हो गई उतनी तो अधिक प्रसिद्ध हो उठी, शेष रूप जैसे 'स्कन्द पुराण' में नल के द्वारा नलेश्वर लिंग की स्थापना और उसके दर्शन पूजन क से कलि से मुक्ति और द्यूत में विजयप्राप्ति आदि रूप अधिक प्रसिद्ध न हो सके।

इस प्रकार भारतीय इतिहास में दो नलों का एक तो ऐक्ष्वाकु कुल में उत्पन्न और दूसरे दक्षिण के राजा नड नैषध की ही स्थिति मान्य लगती है। वीरसेन और उनके पुत्र नल का क्या वंश था यह न तो महाभारत में निर्दिष्ट है और न पुराणों में। महाभारत से परवर्ती साहित्य में अधिकतर उन्हें सम्भवतः यदु पुत्र से प्रभावित होकर चन्द्रवंश से और कहीं सूर्यवंश से भी जोड़ दिया गया है। इतना अवश्य

१-पुराण इण्डेक्स

२- भारतीय इतिहास की रूपरेखा, पृ० १४६-१५०

है कि महाभारत से परवर्ती नल-दमयन्ती विषयक समस्त साहित्य का मूलाधार महाभारतीय नलोपाख्यान ही बना । महाभारत से परवर्ती ललित साहित्य के लिए नलोपाख्यान मूलकथा के के रूप में सामने आता है और प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भी आगे उसका निर्देश मूल-कथा के रूप में किया जायेगा ।

-0-

(ग) नल-दमयन्ती कथा की ऐतिहासिकता

भारतीय परम्परागत मान्यताओं के अनुसार तो महाराज नल सतयुग में राज्य करने वाले ऐतिहासिक महापुरुष हैं । उनका चरित्र हमारे लिए आदर्श है, परन्तु जिस प्रकार रामायणीय कथा की ऐतिहासिकता पर सन्देह किया जाता है, उसी प्रकार महाराज नल एवं दमयन्ती की कथा को भी एक असत्य काल्पनिक चरित्रों पर आधारित कथा सिद्ध करने का प्रयास किया गया है । श्री जे०एफ० हेविट महोदय ने इस कथा को प्राकृतिक सिद्धान्त के प्रतीक के रूप में समझाया है[१] ।

श्री रौथ महोदय ने दमयन्ती का अर्थ शिक्षा प्राप्त करने वाली तथा नल का अर्थ मार्ग किया है । इस प्रकार इन महाशय के अनुसार नल-दमयन्ती की सम्पूर्ण कथा प्रकृति के खास निर्धारित मार्ग पर वायु किस प्रकार ये नल वीरु देव के उपासकों के पुत्र रहे होंगे, इसीलिए ये वीरसेन के पुत्र कहलाते हैं । निषधा के अधिपति होने से आदिवासी जातियों का स्वामित्व सूचित होता है, दमयन्ती के पिता वैदर्भ से इन्होंने मातृपूजक तथा पितृपूजक जातियों का तात्पर्य निकाला है । नल -दमयन्ती की इन्द्रसेन तथा इन्द्रसेना दो सन्तानों का महाभारत में उल्लेख मिलता है । प्राकृतिक सिद्धान्त के रूप में इन्हें हल्की बूंदाबांदी का प्रतीक ठहराया गया है । नल एवं दमयन्ती के दाम्पत्य-जीवन के प्रथम भाग को वसन्त ऋतु का प्रतीक माना गया है जब कि मन्द-मन्द समीर तथा हल्की-फुल्की बौछारें पृथ्वी को ताज़गी प्रदान करती हैं । नल-दमयन्ती कथा में आने वाला कलि बवंडर का प्रतीक है ।

१-जनरल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड-- १८९०, लंदन, पृ० ७४५-७५० ।

द्यूत में पति की पराजय के परिणाम पर विचार करके दमयन्ती ने नल के सारथी वार्ष्णेय के साथ अपने बच्चों को अपने पिता के राज्य में भेज दिया । कथा के इस भाग का अभिप्राय वर्षा ऋतु में होने वाली जलवृष्टि को पश्चिमी तट पर भेजने से है जहां से आकर दक्षिण - पश्चिमी मानसून ग्रीष्म के ताप से झुलसे हुए देश को नव-जीवन प्रदान करती है । वार्ष्णेय बालकों को वहां छोड़कर स्वयं अयोध्या चला गया और वहां वह ऋतुपर्ण के यहां काम करने लगा । इसका अभिप्राय दक्षिण-पश्चिमी मानसून के अयोध्या जाने से है । ऋतुपर्ण ऋतुओं के क्रम का प्रतीक है । पुष्कर अर्थात् चन्द्र ने नल अर्थात् प्रकृति के नियमित सिद्धान्त को पराजित करने के पश्चात् उसे दमयन्ती के साथ वन में भेज दिया । वन में नल के वस्त्र को भी लेकर उड़ जाने वाले पक्षी बादलों के प्रतीक हैं । तब जिस प्रकार से वर्षा ऋतु के प्रारम्भ-काल में बवंडरों के कारण वायु का निश्चित दिशा में प्रवाह असम्भव हो जाता है, उसी प्रकार दमयन्ती और नल के विलग होने की कथा मिलती है । अब नल और दमयन्ती दोनों ने पृथक्-पृथक् मार्गों का आश्रय लिया । एकाकिनी भटकती हुई दमयन्ती अजगर के चंगुल में फंस जाती है । तब एक बहेलिया उस अजगर को मार कर उससे दमयन्ती की रक्षा करता है । परन्तु बाद में यह बहेलिया भी मार दिया जाता है । यह बहेलिये का वृत्तान्त भी मृगशिरा आदि नक्षत्रों की गति का प्रतीक है ।

ऋषियों से मिलने के पश्चात् दमयन्ती को एक व्यापारियों का दल मिला । यह व्यापारियों का दल सुबाहु की नगरी की ओर जा रहा था । सुबाहु का अर्थ अच्छी वायु किया गया है । इस व्यापारियों के दल पर जंगली हाथियों द्वारा आक्रमण की कथा मिलती है । ये वन्य-गज शरद ऋतु में आने वाले तूफानों के प्रतीक हैं । दमयन्ती कुछ ब्राह्मणों के साथ उत्तर दिशा में चलती हुई चेदि नगर पहुंची । वहां की महारानी दमयन्ती की मौसी थीं परन्तु चूंकि उन्होंने दमयन्ती को नहीं पहचान पाया, इसलिए दमयन्ती को अपनी पुत्री के साथ रहने दिया । दमयन्ती-परित्याग के पश्चात् नल ने वन के एक विभाग को जलता हुआ देखा । उन्होंने अग्नि-शिखाओं के मध्य सर्प-कर्कोटक को जलते हुए देखा । कर्कोटक जलती हुई

लकड़ी अथवा जलती हुई लकड़ी के अधिदेवता के प्रतीक हैं। कर्कोटक ने नल से कहा कि उन्हें नारद का शाप मिला है। ये नारद नर अर्थात् मानव जाति की आत्मा के प्रतीक हैं अथवा सम्भव है कि नारद का सम्बन्ध बेबिलोनियन 'नर' या ६०० वर्ष के समय से हो। इस प्रकार 'नारद' युग-युग की बुद्धि के प्रतीक हो सकते हैं। कर्कोटक को शाप मिला हुआ है कि वे अग्नि से तब तक अपनी रक्षा नहीं कर सकते जब तक नल उनका उद्धार न करें। यहां अग्नि, ग्रीष्म के ताप की प्रतीक है। इससे तभी मुक्ति सम्भव है जब वर्षा का क्रम निश्चित मार्ग का अवलम्बन करे।

नल ने उन्हें उठा लिया और अग्नि-रहित प्रदेश में उन्हें रखने ही वाले थे कि सर्प ने उनसे अपने पगों की गणना करने के लिए कहा। दसवें पग पर जब कि पुनर्जीवन का समय होता है, सर्प ने दंशन द्वारा उनका रूप परिवर्तित कर दिया। उसने कहा कि यह परिवर्तन नल के लाभ के लिए ही किया गया है। इसने नल से बाहुक नाम ग्रहण करके अयोध्या में सारथी रूप से ऋतुपर्ण के पास जाने के लिए कहा। बाहुक वायु देव का प्रतीक है। कर्कोटक ने उन्हें दो अलौकिक वस्त्र प्रदान किए। ये वस्त्र बादलों के प्रतीक हैं। दसवें दिन नल ऋतुपर्ण के यहां पहुंचे, जहां वार्ष्णेय और जीवल के साथ सारथ्य कर्म में उनकी नियुक्ति हो गई। वार्ष्णेय शरत्कालीन वर्षा तथा जीवल किसी भी विनयशील नायक के प्रतीक हैं।

उधर दमयन्ती के पिता भीम अपनी पुत्री का कुछ भी समाचार न मिलने के कारण दुखी थे। उन्होंने दमयन्ती को खोजने के लिए अन्य ब्राह्मणों के साथ सुदेव को भेजा। सुदेव सौभाग्यदेव का प्रतीक है।

सुदेव ने चेदिनगर पहुंच कर दमयन्ती को पहचान लिया और राजमाता को दमयन्ती के विषय में सब कुछ बता दिया। राजमाता ने उसे बताया कि वह स्वयं और दमयन्ती की माता दोनों दशार्णपति सुदर्मा की पुत्रियां हैं। उनकी बहन का विवाह भीम से हुआ और उनका वीरबाहु से। वीरबाहु से अभिप्राय फलदायक वायु से है जो उत्तर से बहती है।

राजमाता ने दमयन्ती को उसके पिता के घर भेज दिया। दमयन्ती ने वहां पहुंच कर अन्य ब्राह्मणों के साथ पर्णाद नामक ब्राह्मण को नल का पता लगाने के लिए भेजा। पर्णाद से अभिप्राय अभिलेख संरक्षक (रैकार्ड कीपर) से है।

ऋतुपर्ण की सभा में पहुंचकर पर्णाद नल-बाहुक को न पहचान सका । उसने जाकर दमयन्ती से बाहुक का कथन कि पति के कारण दुःख को प्राप्त स्त्री को उस अवस्था में जब विपद्ग्रस्त होने पर तथा भोजन-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होने पर पक्षियों द्वारा अपहृत वस्त्र पति द्वारा वह परित्यक्त हो, क्रोध नहीं करना चाहिए । दमयन्ती ने सुदेव द्वारा ऋतुपर्ण के पास समाचार भिजवाया कि अगले दिन दमयन्ती का द्वितीय स्वयंवर होगा । ऋतुपर्ण ने नल से कहा कि बाहुक को उन्हें एक दिन में विदर्भ पहुंचाना होगा । नल ने सिन्धु देश के अश्वों को रथ में जोता और रथ हवा से बातें करने लगा । यहां सिन्धु देश का अभिप्राय चन्द्रलोक से माना गया है । ऋतुपर्ण ने जो कि भंगासुर के पुत्र थे, अपना वस्त्र गिरा दिया परन्तु उनका रथ उस वस्त्र को उठाने के लिए रुका नहीं । यहां भंगासुर मार्गों के देवता का प्रतीक है । उनका वस्त्र बादलों के समूह का प्रतीक है जो वर्षा ऋतु के अन्त में आकाश में नहीं दिखायी पड़ते ।

तब ऋतुपर्ण ने विभीतक वृक्ष के पत्तों और फलों की गणना के माध्यम से नल को संख्यान विद्या प्रदान की । जब नल को काल तथा ऋतुओं की ठीक-ठीक गणना की विधि ज्ञात हो गई तब कलि उनके शरीर से बाहर आ गया । कलि काले अनियमित बवंडरों का सूचक है ।

जब नल और ऋतुपर्ण भीम के राज्य में पहुंचे तो दमयन्ती ने रथ के शब्द को पहचान लिया, परन्तु इन्हें केवल ऋतुपर्ण और वार्ष्णेय ही दिखायी पड़े । उन्होंने अपनी सखी केशिनी को नल का पता लगाने के लिए भेजा । वापस आने पर केशिनी ने दमयन्ती को बताया कि ऋतुपर्ण का सूद बाहुक किस प्रकार प्राकृतिक तत्वों को वश में किए हुए है । किस प्रकार से बर्तनों को पानी से भरने के लिए उसने केवल उनकी ओर देखा भर था । किस प्रकार संकीर्ण मार्ग से उसके निकलते समय वह मार्ग विस्तृत हो गया । किस प्रकार से दूब को पकड़ कर धूप में करते ही वह दूब प्रज्ज्वलित हो उठी । वह अग्नि का स्पर्श करने पर भी नहीं जलता और किस प्रकार से उसके द्वारा मसले गए फूल और भी सुन्दर और सुगन्धित हो जाते हैं । तब दमयन्ती ने बाहुक को बुलवाया और दोनों परस्पर एक-दूसरे को पहचान गए । तब

नल और दमयन्ती अपने राज्य में वापस आ गए और नल ने ऋतुपर्ण से प्राप्त संख्यान विद्या के बल से पुष्कर से अपना राज्य वापस ले लिया । यहां भी पुष्कर चन्द्रदेव का द्योतक है ।

इस प्रकार श्री हैविट महोदय के अनुसार यह सम्पूर्ण कथा वायु के मार्ग तथा मानसून हवाओं वाले देशों में वायु की दिशा में होने वाले परिवर्तनों का प्रतीक है । कथा के प्रारम्भ में वसन्त ऋतु, तत्पश्चात् क्रमश: ग्रीष्म तथा वर्षा के तूफानों से अभिप्राय है, जिसमें नियामक तथा नियमों का पालन करने वाले दोनों तत्व परस्पर कुछ समय के लिए पृथक् हो जाते हैं । कथा का अन्त शरद् के अन्त में होने वाली स्थिरता का प्रतीक है । इस समय उत्तर पूर्वी हवाएं चलने लगती हैं तथा उस समय में खरीफ की फसल पक कर तैयार हो जाती है । इस प्रकार यह चन्द्रदेव पुष्कर के राज्य का अन्त है । इस प्रकार इस सम्पूर्ण कथा का निर्माण उस समय हुआ होगा जब चन्द्रमा को काल मापक के स्थान से सूर्य ने भ्रष्ट कर दिया अर्थात् काल-गणना सूर्य के हिसाब से होने लगी होगी ।

श्री हैविट ने नल-दमयन्ती कथा के आधारभूत प्राकृतिक सिद्धान्त को ही महाभारत की कथा का भी आधार स्वीकार किया है[1] ।इस प्रकार उन्होंने महाभारतीय कथा को भी नलदमयन्ती-कथा के ही समान प्रतीकात्मक रूप से समझाया है ।

श्री हैविट का यह सिद्धान्त उक्त दोनों कथाओं की ऐतिहासिकता पर गम्भीर प्रहार है । भारतीय इतिहासकार जिस महाभारत युद्ध को ऐतिहासिक प्रमाणित करते हैं[2] उसे ही श्री हैविट महोदय शरत्कालीन बवंडर तथा पुराने वर्ष की समाप्ति का प्रतीक समझते हैं ।

इनके इस महाभारतीय कथा को प्राकृतिक सिद्धान्त के प्रतीकात्मक रूप से समझने के विरोध में तो भारतीय इतिहासकारों का मत सामने आ जाता है ।

१- जरनल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड १८९० लन्दन ।

२- द्रष्टव्य: जयचन्द्र विद्यालंकार--भारतीय इतिहास की रूपरेखा, पृ०१२३

नल-दमयन्ती कथा की प्रतीकात्मकता के विरुद्ध भी कुछ ऐसे तत्त्व सामने आते हैं, जिनसे श्री हैविट का सिद्धान्त टिकने नहीं पाता । उन तत्त्वों पर विचार करने से पूर्व श्री हैविट के सिद्धान्त में ही जो कुछ बातें अस्पष्ट रह गया हैं अथवा जो निराधार हैं उन पर विचार कर लेना उचित होगा । श्री हैविट ने पुष्कर को चन्द्रमा का प्रतीक माना है । पुष्कर का अर्थ कमल और सूर्य तो मिलता है परन्तु चन्द्रमा नहीं । ऐसी स्थिति में पुष्कर का सम्बन्ध चन्द्रमा से क्यों जोड़ा गया, इस प्रश्न का यही समाधान हो सकता है कि इस रूपक को सब ओर से ठीक बनाने के लिए उन्होंने यों ही पुष्कर को चन्द्रमा का प्रतीक मान लिया हो । दूसरे आज भी भारतीय ज्योतिष में वर्षों का नियामक सूर्य नहीं है, चन्द्रमा ही है । हां । इतना अवश्य है कि चान्द्र तथा सौर संक्रान्तियों के मध्य की कालावधि के अन्तर को प्रति तीन वर्ष के पश्चात् एक अतिरिक्त मास (मलमास) के रूप में स्वीकार करके दोनों का समन्वय कर दिया जाता है । इसके अतिरिक्त इस रूपक के अनुसार जलती हुई लकड़ी के अधिदेव(कर्कोटक) का उद्धार सही मार्ग पर आया हुआ वर्ष का क्रम करेगा। नलोपाख्यान में कर्कोटक का उद्धार नल करते हैं । उनके माध्यम से कोई अन्य नहीं । इन्होंने नल को पहले तो वायु के मार्ग का तत्पश्चात् जब नल का नाम बाहुक हो जाता है तब इन्हें वायु देव का प्रतीक मानने लगते हैं । ये कष्ट कल्पनाएं यथार्थ से बहुत दूर प्रतीत होती हैं ।

श्री वेंकट सैब्बिया ने नल-दमयन्ती का ऐतिहासिकता के विषय में विशेष प्रकाश डाला है[1] । `ऋग्वेद संहिता` में एक स्थान पर `इन्द्रसेना` शब्द आया है । गेल्डनर ने इसे उसी सूक्त के अन्य मन्त्र में आए हुए `मुद्गलानी` अर्थात् `मुद्गल` की पत्नी से अभिन्न स्वीकार किया है । इस सूक्त का अर्थ कुछ अस्पष्ट है । इसलिए विद्वानों ने इसके भिन्न -भिन्न अर्थ किए हैं । श्री मैक्डानल , कीथ,गेल्डनर तथा

१- इण्डियन एण्टीक्वेरी-- जिल्द संख्या ४७- १६१८,पृ०२८०-२६४ ।

ओल्डनेर्ग ने इस सूक्त को आख्यान अथवा इतिहास सूक्त माना है। उनके अनुसार उस सूक्त में रथों की एक प्रतियोगिता का वर्णन किया गया है। इस प्रतियोगिता में मुद्गल की पत्नी ने मुख्य भाग लिया था।

श्री पार्जिटर महोदय ने मुद्गल को भृम्यश्व का पुत्र तथा ब्रध्निष्ठ को मुद्गल का पुत्र सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। इनके अनुसार इन्द्रसेना ब्रध्निष्ठ की पत्नी थीं तथा उनके पुत्र वध्र्यश्व हुए। वध्र्यश्व की पत्नी मेनका थीं जिनसे दिवोदास उत्पन्न हुए।

इस प्रकार पार्जिटर महोदय ने यह निष्कर्ष निकाला है कि मुद्गल उत्तर पांचाल वंश के कोई राजा होंगे और सम्भवत: इन्हीं का ऋषि के रूप में भी उल्लेख किया गया हो। इस प्रकार 'मुद्गलानी' मुद्गल की पत्नी हुई। इन्द्रसेना ब्रध्निष्ठ की पत्नी, अत: मुद्गल की पुत्रवधू हुईं।

उसी सूक्त में आने वाले 'केशी' सारथी का नाम था। उस रथ-प्रतियोगिता में इन्हीं केशी ने मुद्गलानी का सारथ्य किया था।

पार्जिटर महोदय के इस कथन के विरुद्ध जैसा कि गैल्डनर महोदय ने समझाया है इन्द्रसेना मुद्गल ऋषि की पत्नी प्रतीत होती है। महाभारत में इन्द्रसेना के लिए 'नारायणी' शब्द आया है। महाभारत के दाक्षिणभारतीय पाठ में इन्हीं स्थानों पर 'नारायणी' के स्थान पर नालायनी शब्द के प्रयोग से इतना स्पष्ट हो जाता है कि ये इन्द्रसेना नल की पुत्री थीं। इस प्रकार से ये इन्द्रसेना नलोपाख्यान के अन्तर्गत उल्लिखित इन्द्रसेना से अभिन्न प्रतीत होती है।

यहां पर महाभारत के आदि पर्व में आने वाली इन्द्रसेना की कथा विशेष महत्त्व रखती है। यहां द्रौपदी को ही पूर्व जन्म में इन्द्रसेना माना गया है। इस कथा के अनुसार इन्द्रसेना नल की पुत्री थीं तथा उसका विवाह मौद्गल्य[11] ऋषि के साथ हुआ था। मौद्गल्य ऋषि की आयु १००० वर्ष से भी अधिक थी। इनके शरीर में एक प्रकार की दुर्गन्ध का व वास था। वृद्धावस्था के कारण इनके केश सफेद हो गए थे और शरीर में झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। गलित कुष्ठ के कारण इनकी त्वचा और नख आदि गिरने लगे थे। इनकी सूरत देखने से भी घृणा होती थी।

ये बड़े कटु,चंचल,ईर्षालु तथा कुकोपन थे । इन्द्रसेना अपने पति का उच्छिष्ट खाती थी और बड़ी लगन से उनकी सेवा करती थी । एक दिन भोजन करते समय मौद्गल्य का अंगूठा भोजन में गिर गया ।इन्द्रसेना ने निरपेक्ष भाव से अंगूठे को निकाल कर वह भोजन खा लिया । इससे प्रसन्न होकर उसके पति ने उससे एक वरदान मांगने के लिए कहा । पति के पुन: पुन: आग्रह करने पर इन्द्रसेना ने ऋषि को अपनी इच्छा बतायी कि वे पहले पंचरूप होकर तत्पश्चात् एक होकर उनके साथ रमण करें ।

ऋषि ने अपने तपोबल तथा योगबल से इसी प्रकार इन्द्रसेना के साथ इन्द्रलोक तथा मेरु आदि स्थानों में भोग किया । इस प्रकार इन्द्रसेना अरुन्धती सीता और अपनी माता दमयन्ती आदि पतिव्रताओं में भी जैसा कि निम्नलिखित पंक्तियों से स्पष्ट है,अग्रगण्य हो गईं ।

एकपत्नी तथा भूत्वा सदैवाग्रे यशस्विनी ।
अरुन्धतीव सीतेव बभूवातिपतिव्रता ।।
दमयन्त्याश्च मातुस्सा विशेषमधिकं ययौ ।। इति ।

इस प्रकार अनेक वर्ष व्यतीत हो गए । अब ऋषि विषय भोग से विरक्त हो गये । उन्होंने इस प्रकार के भोग-विलास को त्याग कर एकान्त में तपस्या करने का अपना निश्चय इन्द्रसेना को सुनाया । इन्द्रसेना ने ऋषि से वैसा न करने के लिए प्रार्थना की क्योंकि उस समय तक उसकी कामसेवन की इच्छा पूर्ण नहीं हुई थी । ऋषि को क्रोध आ गया और उन्होंने इन्द्रसेना को शाप दे दिया कि अगले जन्म में तुम पांचाल के राजा द्रुपद की पुत्री होगी तथा तुम्हारे पांच पति होंगे ।

इस शाप के कारण दु:खी तथा इन्द्रिय सुख भोग की अपूर्ण लालसा लिए इन्द्रसेना ने भी वन में तपस्या करके शिव को प्रसन्न किया । इन्द्रसेना ने भगवान शिव से अगले जन्म में पांचपति होने का वरदान ले लिया ।

इन्द्रसेना की यह कथा महाभारत के दाक्षिणात्य पाठों में ही नहीं, कुछ उत्तर में मिलने वाले पाठों में भी उपलब्ध होती है ।

इस कथा से यह प्रमाणित हो जाता है कि इन्द्रसेना मुद्गल की पत्नी थी, पुत्रवधू नहीं ।

इन्द्रसेना के लिए कहीं मुद्गलानी और कहीं 'मौद्गल्यानी' शब्द प्रयुक्त हुए हैं परन्तु रामायण, महाभारत तथा पुराणों में ही नहीं, ऋग्वेद में भी एक ही व्यक्ति के लिए इस प्रकार के प्रयोगों का मिलना आश्चर्यविह नहीं है।[1] महाभारत में वनपर्व के अन्तर्गत एक 'मुद्गल' की कथा मिलती है। अपनी दानशीलता के कारण इन्हें सशरीर स्वर्ग जाने की सामर्थ्य मिल गयी थी परन्तु इन्होंने उसका उपयोग करना अस्वीकार कर दिया था । इन्हीं को कहीं मुद्गल और कहीं मौद्गल्य कहा गया है, यह कह सकना कठिन है कि ये मुद्गल इन्द्रसेना के पति मुद्गल से भिन्न व्यक्ति हैं अथवा अभिन्न । भागवत में मुद्गल का दिवोदास ~~के पितम~~ के पिता के लिए उल्लेख हुआ है ।

श्री सुखिया महोदय ने इस सब से यह निष्कर्ष निकाला है कि ऋग्वेद में उल्लिखित ये मुद्गल और महाभारतीय मुद्गल तथा मौद्गल्य परस्पर अभिन्न हैं । यही नहीं श्री पार्जिटर महोदय ने जिस ब्रह्मिष्ठ को मुद्गल का पौत्र स्वीकार किया है वह मुद्गल ही थे । इस प्रकार श्री हैनरी तथा पार्जिटर महोदय के मत के विपरीत मुद्गल राजा न होकर ब्राह्मण ऋषि थे ।

रथों की प्रतियोगिता में मुद्गल ऋषि के स्थान पर इन्द्रसेना ने क्यों भाग लिया था इस प्रश्न के दो समाधान मिलते हैं । एक तो यह कि मुद्गल अपने अस्वस्थ शरीर के कारण प्रतियोगिता ~~ए~~ में भाग लेने में असमर्थ रहे होंगे । इसीलिए उन्होंने उसमें स्वयं भाग नहीं लिया उनकी पत्नी इन्द्रसेना ने उनका स्थान ग्रहण किया । गैल्डनर के द्वारा प्रतिपादित इस समाधान के विपरीत श्री सुखिया महोदय का मत है । इनके अनुसार उस समय स्त्रियां इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लिया ही करती थीं । इसके अतिरिक्त अश्वहृदयज्ञ नल की कन्या होने के कारण रथों, अश्वों तथा रथ-दौड़ की प्रतियोगिताओं के विषय में ऋषि मुद्गल

१- द्रष्टव्यह इंडियन एण्टीक्वेरी , जिल्द संख्या ४७,१६१८ इन्द्रसेना

कीब अपेक्षा इन्द्रसेना का अधिक ज्ञान होना स्वाभाविक ही है । अतएव मुद्गल के स्थान पर उनकी पत्नी इन्द्रसेना ने उस प्रतियोगिता में भाग लिया होगा ।

सायणाचार्य के समान ही गैल्डनर ने भी मुद्गलानी अर्थात् इन्द्रसेना को उक्त प्रतियोगिता में रथी और सारथी दोनों ही स्वीकार किया है, इन दोनों ही आचार्यों ने उस सूक्त में आए हुए `केशी` शब्द को भी स्त्री लिंग `केशिनी` शब्द के वाचक के रूप में स्वीकार किया है । सायणाचार्य ने उस स्थल पर एक अन्य व्याख्या भी प्रस्तुत की है जिसके अनुसार यह `केशिनी` इन्द्रसेना की सारथी थी । श्री वुव्विया ने भी इसी मत का अनुमोदन किया है । इस प्रकार से उन्होंने उस केशिनी को महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत दमयन्ती की सखी के रूप में उल्लिखित केशिनी से अभिन्न स्वीकार किया है ।

ऋग्वेद के उपर्युक्त सूक्त का अर्थ करते हुए गैल्डनर ने लिखा है कि इन्द्रसेना ने उस प्रतियोगिता में विजय प्राप्त करके अपने पति को प्रसन्न किया, परन्तु अन्ततः वह सन्तुष्ट न हो सकी । महाभारतीय इन्द्रसेना ने तथा ऋग्वेद के अन्तर्गत मुद्गल की कथा में भी इन्द्रसेना ने अपने पति को प्रसन्न किया, उनसे वरदान प्राप्त किया परन्तु अन्ततः वह सन्तुष्ट न हो सकी, आए हुए इस उल्लेख से ऋग्वैदिक उल्लेख की समानता को देखते हुए जैसा कि श्री वुव्विया का अनुमान है, यही प्रतीत होता है कि इन दोनों स्थलों में उल्लिखित इन्द्रसेना एक ही हैं । श्री वुव्विया ने गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या को वध्र्यश्व की पुत्री और इन्द्रसेना की पौत्री स्वीकार किया है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर इन्द्रसेना की स्थिति उस समय होनी चाहिए जब कि ऋग्वेद संहिता निर्माणावस्था में थी अथवा इनकी स्थिति ऋग्वेद संहिता से भी प्राचीन माननी चाहिए । इस अवस्था में इन्द्रसेना के पिता नल एवं माता दमयन्ती का स्थितिकाल उससे भी पूर्ववर्ती ठहरता है । इस प्रकार यदि नल एवं दमयन्ती को पूर्व वैदिक काल में उत्पन्न माना जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी । वेदों की रचना के कितने पहले इनकी स्थिति रही होगी यह कह सकना कठिन है ।

उनकी पुत्री इन्द्रसेना का ऋग्वेद में उल्लेख यह प्रमाणित करता है कि उनकी पुत्री की रचना, से पहले रही होगी। इंद्रसेना की स्थिति ऋग्वेद संहिता इन्द्रसेना ही ऋग्वेद संहिता के से कितना प्राचीन है यह भी अज्ञात है। इस अवस्था में यदि नल एवं दमयन्ती का ऋग्वेदों में उल्लेख नहीं मिलता तो कोई आश्चर्य नहीं। वे उस समय तक इतिहास की वस्तु बन चुके होंगे।

वैदिक काल के पहले भारत में कहां और कौन सा राज्य था, वहां कौन राज्य करता था? इस विषय में कोई भी सामग्री नहीं उपलब्ध होती है। सम्भवतः इसी कारण से इतिहासकार पुण्यश्लोक नल के निषध नामक राज्य की स्थिति एवं काल के विषय मैंघ कुछ निश्चित मत नहीं दे सकते। महाभारत में महाराज नल को निषध का राजा कहा गया है[1]। तथा इस निषध देश की राजधानी का यहां उल्लेख नहीं मिलता है। यह निषध देश कहां था इस विषय में विद्वानों का सम्मत नहीं मिलता है। आप्टे महोदय ने अलकनन्दा नदी के तट पर इसकी स्थिति का उल्लेख किया है। उनके अनुसार इस देश की राजधानी अलका थी[2]। श्री जयचन्द्र विद्यालंकार ने अपने इतिहास ग्रन्थ में महाराज नल के राज्य निषध को सतपुड़ा (सतपुड़ा) पर्वत के पश्चिमी सामान्त पर स्थित एक छोटा सा राज्य स्वीकार किया है[3]। कुछ विद्वान इस निषध देश को सिन्धु नदी के तट पर स्थित स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार निषध की राजधानी नलपुर अथवा नारवार थी। यह स्थान ग्वालियर से चालीस मील दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित है[4]। लैसेन महोदय निषध को सतपुड़ा पर्वत के उत्तर पश्चिमी सीमान्त पर स्थित मानते हैं[5]। बर्गेस महोदय ने भी मालवा के दक्षिण में इस निषध राज्य की

१- म० भा० वनपर्व--७६।११, ६१।५५

२- वी०एस० आप्टे-- संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी

३- जयचन्द्र विद्यालंकार -- भारतीय इतिहास की रूप रेखा - १, पृ० १५०

४- इण्डियन एण्टीक्वेरी जिल्द संख्या ५२,१६२३,पृ०१२७

५- इण्डियन एण्टीक्वेरी-- जिल्द संख्या ५२, १६२३,पृ० १३१

स्थिति स्वीकार की है[१]।

निषध देश की भौगोलिक स्थिति के विषय में और कुछ विचार करने से पूर्व महाराज नल तथा दमयन्ती की कथा से घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले विदर्भ तथा चेदि राज्यों के विषय में भी जान लेना अधिक अच्छा होगा।

प्राचीन विदर्भ सम्भवतः आजकल के बेरार से अभिन्न रहा होगा। यह विदर्भ राज्य कुन्तल के उत्तर में स्थित था तथा इसका विस्तार कृष्णा नदी के तट से लेकर नर्मदा के तट तक रहा होगा। इसी विस्तार के कारण इसे महाराष्ट्र भी कहा गया है। कुण्डिनपुर अथवा विदर्भा इसकी प्राचीन राजधानी थी। सम्भवतः इसी कुण्डिनपुर का नाम आजकल बेदार हो गया है[२]।

कुछ लोग चेदि नगर को बुन्देलखण्ड का एक भाग[३] स्वीकार करते हैं तथा कुछ अन्य विद्वान इसे आधुनिक चन्देल से अभिन्न मानते हैं[४]।

इस प्रकार हम देखते हैं कि विदर्भ की भौगोलिक स्थिति के विषय में विद्वानों का एक ही मत मिलता है। विदर्भ से निषध देश अधिक दूर नहीं रहा होगा, क्योंकि उस समय में यातायात के अच्छे साधनों के अभाव में इतना दूर बार-बार आना-जाना कठिन होगा। महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत यह उल्लेख मिलता है कि नल तथा दमयन्ती दोनों ने हंस लोगों के मुख से एक-दूसरे का गुणाख्यान सुना। इससे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि ये दोनों देश बहुत दूर नहीं होंगे। द्यूत में पराजित नल दमयन्ती के साथ कुछ दिन वन में भटकते रहे। फिर

१- इण्डियन एण्टीक्वेरी-- जिल्द संख्या ५२: १९२३, पृ०१३२

२- वी०एस० आप्टे-- संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी

३- महाभारत का परिशिष्टांक-- सम्पादक लल्ली प्रसाद पाण्डेय, इंडियन प्रेस प्रयाग १९३६।

४- वी०एस० आप्टे -- संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी

उन्होंने दमयन्ती को विदर्भ जाने वाला मार्ग बताया । पति से परित्यक्ता दमयन्ती एक वणिक्सार्थ के साथ कुछ दिन हो में चेदि नगर पहुंच गई । इस अवस्था में यदि बुन्देलखण्ड के एक हिस्से के रूप में चेदि को माना गया है तो निषध देश को उसके आस पास ही मानना संगत प्रतीत होता है ।

इस प्रकार निषध देश की भौगोलिक स्थिति अलकनन्दा नदी अथवा सिन्धु नदी के तट की अपेक्षा सतपुड़ा पर्वत के पास अधिक समीचीन प्रतीत होती है ।

इस सम्पूर्ण विवेचन के पश्चात् महाराज नल एवं दमयन्ती को काल्पनिक चरित्रों के रूप में समझाने वाले सिद्धान्तों की अपेक्षा उन्हें सतयुग में उत्पन्न ऐतिहासिक महापुरुष एवं पतिव्रता शिरोमणि के रूप में समझने वाली भारतीय परम्परा ही अधिक समीचीन प्रतीत होती है ।

-०-

द्वितीय अध्याय

-o-

नलोपाख्यान विषयक साहित्य एवं उसके रचयिता

द्वितीय अध्याय

-o-

नलोपाख्यान विषयक साहित्य स्वं उसके रचयिता

संस्कृत साहित्य में महाभारतीय नलोपाख्यान का विकास काव्य की लगभग सभी विधाओं में उपलब्ध होता है । इस विषय में अनेक नाटक, महाकाव्य तथा चम्पू लिखे गए हैं । पुण्यश्लोक नल के लिए स्तोत्र की भी रचना मिलती है । नाटकों तथा महाकाव्यों की रचना के लिए महाराज नल स्वं दमयन्ती की पवित्र स्वं रोचक कथा की ओर कवियों की सदैव विशेष अभिरुचि रही है ।

प्रस्तुत अध्याय में नलोपाख्यान विषयक समस्त साहित्य का विवरण दिया जायगा । नलोपाख्यान विषयक नाट्य-साहित्य में कालक्रम की दृष्टि से सबसे प्राचीन नाटक नैषधानन्दम् उपलब्ध होता है ।

नैषधानन्दम्

नैषधानन्दम् नाटक क्षेमीश्वर की रचना है । कहीं-कहीं[१] इसका नाम

१- कैटलागस कैटलागोरम्, पृ० २२७६

'अभिनव नैषधानन्दम्' निर्दिष्ट किया गया है, परन्तु यह समीचीन नहीं प्रतीत होता । 'नैषधानन्दम्' की प्रस्तावना के अन्तर्गत उपलब्ध होने वाली 'कृतिरभिनवनैषधानन्दम् नाम आदि पंक्तियों के कारण ही सम्भवत: यह भ्रम हुआ होगा कि ग्रन्थ का नाम 'अभिनव नैषधानन्दम्' है । परन्तु जैसा कि 'कुंजुन्नी राजा' ने स्पष्ट कहा है[1], 'चण्डकौशिक' की प्रस्तावना में पठित 'कवेरार्यक्षेमीश्वरस्य कृतिरभिनवं चण्डकौशिकं नाम नाटकम्' पंक्ति से इसकी तुलना करने पर 'नैषधानन्दम्' नाम ही अभीष्ट प्रतीत होता है । नाटक की प्रस्तावना में नाटक का शीर्षक 'नैषधानन्दम्' ही उल्लिखित है[2] तथा पुष्पिका (Colophon) में भी 'नैषधानन्दम्' ही पठित है ।

जैसा कि नाटक की प्रस्तावना से ही स्पष्ट हो जाता है, इसके रचयिता क्षेमीश्वर थे । 'चण्डकौशिक' नामक एक अन्य नाटक भी इन्हीं क्षेमीश्वर के नाम से उपलब्ध होता है । ये क्षेमीश्वर शिव के उपासक तथा विजयप्रकोष्ठ के प्रपौत्र थे । कवि क्षेमीश्वर कन्नौज के राजा महीपालदेव की सभा में कवि थे । इन महीपालदेव की स्थिति ईस्वी की नवीं दसवीं शताब्दी में मान्य है[3] । इस प्रकार 'नैषधानन्दम्' नाटक को नवीं अथवा दसवीं शताब्दी ईस्वी की रचना माना जा सकता है ।

इस नाटक के अन्तर्गत नल दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के ~~द्वितीय~~ तृतीय अध्याय में विवेचन किया गया है ।

नलविलास

पुण्यश्लोक नल और दमयन्ती के पवित्र आख्यान के बहुमुखी विकास में जैन कवियों का बहुत हाथ रहा है । जैन कवियों ने प्राकृत काव्यों में इस कथानक

१- एनल्स आफ ओरियण्टल रिसर्च -- ५१-५२

२- 'सूत्रधार: --(सानन्दम्) आर्ये । नैषधानन्दे नाटयितव्ये क्रियतां संगीतकम्.।'
-- एनल्स आफ ओरियण्टल रिसर्च--५१-५२

३- कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर ,पृ० ६४२ .

को समुचित और विविध परिवर्तनों के साथ प्रस्तुत किया है । संस्कृत में भी रामचन्द्र सूरि ने इस ललित कथा को `नलविलास` नाटक के रूप में प्रस्तुत किया है । ये रामचन्द्र सूरि हेमचन्द्र के शिष्य थे । ये श्रीहर्ष के पुत्र ऐन्दवानन्द के रचयिता रामचन्द्र से नितान्त भिन्न व्यक्ति हैं । विक्रम की १२ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध अथवा १३ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में `नलविलास` नाटक का प्रणयन हुआ होगा[१] । कवि रामचन्द्र ने गुणचन्द्र के साथ नाट्य शास्त्र पर नाट्य दर्पण नामक एक लक्षण ग्रन्थ की भी रचना की है । ग्रन्थकार ने अपने लक्षण ग्रन्थ में रस कवियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए नानार्थक शब्दों के प्रलोभन में पड़कर रसामृत से पराङ्मुख हो जाने वाले शब्द कवियों कीनिन्दा की है[२] । कवि रामचन्द्र रस को ही नाट्य का सर्वस्व मानते हैं । नाट्य का मार्ग `रस कल्लोल संकुल` होता है, ऐसी कवि की मान्यता[३] है । अपनी इस मान्यता का कवि ने `नलविलास` नाटक में पूर्णरूप से निर्वाह किया है । नाट्यदर्पण में रामचन्द्र ने अनेक स्थलों पर दशरूपककार से अपना मतभेद स्पष्ट किया है । कवि ने अपने लक्षण ग्रन्थ में प्रतिपादित मान्यताओं को लक्ष्य ग्रन्थ `नलविलास` में घटाया है । कथा की दृष्टि से इस ग्रन्थ का विवेचन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में किया गया है ।

मैथ्री परिणयम्

नल दमयन्ती की पवित्र कथा को लेकर संस्कृत साहित्य में `मैथ्री परिणयम्` नाम से अनेक नाटकों की रचना हुई है । उन्हीं में से एक के प्रणेता श्रीनिवास रत्नखेत दीक्षित हुए हैं । ये रत्नखेत दीक्षित श्रीभावस्वामी के पुत्र `कृष्ण` के पौत्र थे । कवि श्रीनिवास दीक्षित द्वारा प्रस्तुत सायंकाल के रमणीय वर्णन[४] पर रीझ कर तत्कालीन चोल नरेश ने इन्हें रत्नखेत` विरुद दे डाला था ।

१- नलविलास प्रस्तावना, पृ० ३५

२- नाट्यदर्पण १।६

३- नाट्य दर्पण १।३

४- कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ०२३४, २३५

तब से ये रत्नखेत दीक्षित नाम से विख्यात हो गए । ये रत्नखेत दीक्षित अप्पय दीक्षित तथा गोविन्द दीक्षित के समकालीन थे[1]। अप्पय दीक्षित की स्थिति १६ वीं शताब्दी ईस्वी में स्वीकार की जाती है । उनके समकालीन रत्नखेत दीक्षित भी इसी समय के लगभग हुए होंगे, इस प्रकार इस `मैमी परिणय' नाटक का रचना-काल भी निश्चित हो जाता है । `शब्द भाषाचतुर' अद्वैत विद्याचार्य तथा अभिनवभवभूति आदि भी श्रीनिवास दीक्षित की उपाधियां थीं । दर्शन और अन्य विधाओं पर इनकी रचनाओं के अतिरिक्त इनके १८ नाटक और ६० श्रव्य काव्य मिलते हैं[2]। इनके इन अठारह नाटकों में से एक `मैमी परिणयम्' भी है । इसमें महाराज नल और दमयन्ती के विवाह तक की कथा का चित्रण किया गया है । यह नाटक अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है इस कारण इसके विषय में और कुछ भी कह सकना कठिन है ।

नलानन्द

नल-दमयन्ती की लोकप्रिय कथा के आधार पेर ईसा की सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जीवबुद्ध ने `नलानन्द' नामक नाटक का प्रणयन किया[3]। ये जीवबुद्ध `कोनेरी' के पुत्र थे। `कोनेरी' ब्राह्मण होते हुए भी शासक हो गया था । इन्हीं के वंश में पण्डितराज जगन्नाथ का आविर्भाव हुआ था[4]। नलानन्द नाटक में सात अंक हैं । यह नाटक भी अभी तक अप्रकाशित ही है[5] अतएव इसके सन्दर्भ में और कुछ भी नहीं कहा जा सकता ।

१-कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर,पृ०२३४-२३५

२- वही

३- ए०एन० जानी : क्रिटिकल स्टडी आफ श्रीहर्षाज़ नैषधीय चरितम्,परिशिष्ट-२

४- कृष्णामाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर,पृ० १८६

५- पी०पी०एस०शास्त्री : डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ संस्कृत मैनुस्क्रिप्ट्स इन तंजौर महाराजा सरफोजीज़, सरस्वतीमहल लाइब्रेरी,तंजौर,जिल्द८.।

नलाभ्युदयम्

तंजोर के राजा रघुनाथ की एक 'नलाभ्युदयम्' नामक कृति मिलती है। ये रघुनाथ तंजोर के नायक राजाओं में प्रमुख थे। इनका राज्यकाल १६१४ ईस्वी से प्रारम्भ होता है। ये स्वयं बहुत विद्वान् होने के साथ-साथ विद्वानों के संरक्षक भी थे। इनके सभापण्डित गोविन्द दीक्षित थे जो विद्वान् होने के साथ-साथ राजनीतिक भी थे। कांची के कुमार ताताचार्य इनके गुरु थे। रघुनाथ की पत्नी का नाम रामभद्राम्बा था जो कि इन्हें भगवान का अवतार मानती थीं। इन्होंने अपने पति के नाम से 'रघुनाथाभ्युदय' नामक ग्रन्थ की रचना की थी।

ये रघुनाथ कवि होने के साथ-साथ संगीतज्ञ भी थे। इन्होंने एक नवीन प्रकार की वीणा का आविष्कार किया था। इन्हीं के नाम पर उस वीणा का नाम पड़ गया। इनका 'संगीत सुधा' ग्रन्थ वाद्य संगीत और नृत्य के लिए भी उपयोगी है। 'भारत सुधा' नामक इनका एक अन्य ग्रन्थ नृत्यकला के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

पारिजात हरण, वाल्मीकि चरित, अच्युतेन्द्राभ्युदय, गजेन्द्रमोक्ष, रुक्मिणी कृष्ण विवाह, यक्षगान, तथा रामायण सार संग्रह इनके अन्य ग्रन्थ हैं[1]। यह ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। इसकी हस्तलिखित प्रति मद्रास में मिलती है[2]।

मद्रास में ही 'नलाभ्युदयम्' नामक एक आठ अंकों वाले नाटक की हस्तलिखित प्रति मिलती है, परन्तु उसमें लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है। यह रघुनाथ के नाटक 'नलाभ्युदयम्' से भिन्न है अथवा अभिन्न यह नहीं कहा जा सकता[3]।

१- कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ० २३०

२- ए०एन० जानी : क्रिटिकल स्टडी आफ श्री हर्षाज़ नैषधीय चरितम्, परिशिष्ट-३

३- कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ० १८४

नैषधानन्द

सोमेश्वर के प्रसिद्ध नैषधानन्दम् नाटक से नितान्त भिन्न एक सात अंकों वाले नैषधानन्द नाटक का हैण्डिकी महोदय ने उल्लेख किया है[1]। इसका रचना-काल भी १७ वीं शताब्दी ईस्वी ही है। यह नाटक आजकल उपलब्ध ही नहीं होता। अतएव इसके विषय में कुछ भी कह सकना कठिन है।

नलचरित्रम्

कलि कल्मष सम्प्लुत काल पर विजय प्राप्ति की इच्छा से[2] सुप्रसिद्ध नीलकण्ठ दीक्षित ने 'नलचरित्रम्' नामक नाटक की रचना की। नीलकण्ठ दीक्षित का जन्म १६१३ ईस्वी में हुआ था। ये आच्चान दीक्षित के पुत्र नारायण दीक्षित के द्वितीय पुत्र थे। नीलकण्ठ के दादा आच्चान दीक्षित सुविख्यात अप्पय दीक्षित के अनुज थे। नीलकण्ठ दीक्षित शिव के उपासक थे। १२ वर्ष की आयु में ही अपने जीविकोपार्जन के लिए ये अपनी माता के साथ मदुरा चले गए, जहां इन्होंने शास्त्रों का अध्ययन किया। मदुरा के नायकों की ३५ वर्ष तक सेवा करने के पश्चात् ये जीवन के प्रति उदासीन होकर सन्यासी रूप से ताम्रपर्णी नदी के तट पर 'पालामदाइ' नामक अपने ग्राम में शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। इन्होंने भिन्न-भिन्न विषयों पर अनेक ग्रन्थों की रचना की। शिवलीलार्णव और गंगावतरण इनके प्रमुख महाकाव्य हैं।

इनका 'नल चरित्रम्' नाटक केवल छठें अंक के नवें श्लोक तक ही उपलब्ध होता है, यह कह सकना कठिन है कि ग्रन्थकार ने इस नाटक के इतने ही भाग की रचना की थी अथवा यह पूरा लिखा गया था और आजकल उपलब्ध नहीं होता।

१- के०के० हैण्डिकी : नैषध चरित

२- नलचरित्रम्, पृ०६

कवि नीलकण्ठ ने नाटक के इतने ही अंश की रचना की थी ऐसा कुछ इस नाटक के सम्पादक महोदय ने निर्देश किया है[१]। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में इस नाटक में नल-दमयन्ती कथा के विकास का विवेचन किया गया है ।

दमयन्ती कल्याण

महाराज नल एवं दमयन्ती के परिणय तक की कथा का उपनिबन्धन `दमयन्ती कल्याण` नामक नाटक में प्राप्त होता है । नल्लन चक्रवर्ती शठगोपाचार्य ने सम्भवत: श्रीरंगम् के `पद्मसहाय` उत्सव के लिए प्रस्तुत नाटक का प्रणयन किया था । शठगोपाचार्य वत्स गोत्रीय थे । इनका जीवन-काल अठारहवीं शताब्दी ईस्वी का उत्तरार्द्ध था । `कल्याण गिरि माहात्म्य` तथा `श्रीनिवासस्तव` इनके प्रमुख ग्रन्थ है । यद्यपि यह ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है[२] परन्तु दुर्भाग्यवश प्राप्त नहीं हो सका । अप्राप्त होने के कारण प्रस्तुत प्रबन्ध में इसका उपयोग नहीं किया जा सका है ।

मंजुलनैषधम्

`मंजुल नैषधम्` नाटक श्री वेंकटरंगनाथाचार्य की कृति है । ये वेंकट-रंगनाथाचार्य विजगापट्टम के प्रमुख विद्वान् थे । `महामहोपाध्याय` इनकी उपाधि थी । तथा ये भारद्वाज गोत्रीय गुरु श्रीनिवास के पुत्र थे[३]। इनका जीवन-काल १८२२ से १९०० तक स्वीकार किया गया है । महामहोपाध्याय वेंकटरंगनाथाचार्य की रचनाओं में दो ग्रन्थ व्याकरण पर और एक ग्रन्थ दर्शन पर मिलता है ।

१- नलचरित्रम् -- नीलकण्ठ दीक्षित पर टिप्पणी

२- कृष्णामाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ० १८६

~~३- कृष्णमाचारी : ,, ,, ,, पृ०-१८५~~

३- `श्रीपरवस्तुपदांकितभारद्वाजान्वयभट्टनाथगुरुकुलतिलकस्य श्रीनिवासगुरोस्तनयो विक्टोरियाचक्रवर्तिनी प्रसादलब्धमहामहोपाध्यायविरुदांक: वेंकटरंगनाथनामा महाकवि:` । --- मंजुल नैषधम्, पृ० ८

`आंगलाधिराज -स्वागत` तथा `रुक्मिणी-विषय` ये दो इनके काव्य ग्रन्थ हैं । `नैषधीय चरित` तथा `अनर्घराघव` पर दो अपूर्ण टीकाओं के अतिरिक्त संस्कृत भाषा और साहित्य का एक विशाल विश्वकोश कवि रंगनाथ की प्रतिभा का निदर्शन है[1]। इस नाटक में सात अंक हैं । प्रस्तुत प्रबन्ध में आगे इस नाटक में नल-दमयन्ती कथा के विकास का विवेचन किया गया है ।

हर्षनैषधीयम्

नैषध नल की कथा को लेकर रामावतार शर्मा ने `हर्षनैषधीयम्` नामक नाटक की रचना की थी । ये रामावतार शर्मा भारद्वाजगोत्रीय देवनारायण पाण्डेय के पुत्र थे । इनकी माता का नाम `गोविन्द देवी` था । रामावतार शर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश के छपरा नगर में १८७८ ईस्वी में हुआ था । १९२९ में ये परलोक सिधार गए । बनारस में ही शिक्षा प्राप्त करके ये `हिन्दू कालेज` में अध्यापन कार्य करते थे । कालान्तर में ये पटना कालेज में चले गए थे । दर्शन शास्त्र पर इन्होंने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं । `मारुति शतकम्` तथा `मुद्गर दूत` इनके काव्य ग्रन्थ हैं । `हर्षनैषधीयम्` नाटक अभी तक अप्रकाशित रूप में पटनानिवासी एन० बी० शर्मा के पास है[2]। इस ग्रन्थ का उपयोग भी प्रस्तुत प्रबन्ध में नहीं किया जा सका है ।

अनर्घनल चरित्र

महाराज नल और दमयन्ती की कथा पर आधारित नाटकों की परम्परा में पंचनदीय श्री सुदर्शनाचार्य के `अनर्घनल चरित्र` नामक नाटक का उल्लेख आवश्यक है । कवि सुदर्शनाचार्य ने संस्कृत और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में

१- कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ०१८५

२- ,, ,, ,, ,, पृ०३०८ की पाद टिप्पणी ।

परमार्थ वेदान्त विषयक ग्रन्थों का प्रणयन किया । संस्कृत भाषा में विशिष्टाद्वैताधिकरण माला और अद्वैत चन्द्रिका आदि तथा हिन्दी भाषा में अल्वार चरितामृत तथा अष्टादश रहस्यभाषा आदि इनके दर्शन विषयक ग्रन्थ हैं [१] । संस्कृत नाटकों में उत्तम तथा मध्यम श्रेणी में परिगणित पात्रों द्वारा संस्कृत तथा स्त्री पात्रों तथा अधम पात्रों द्वारा प्राकृत भाषा के व्यवहार का विधान किया गया है [२] । इस प्रकार संस्कृत के लगभग समस्त नाटकों में प्राकृत भाषा का भी प्रयोग मिलता है । प्रस्तुत नाटक का वैशिष्ट्य संस्कृत और हिन्दी भाषाओं के मिश्रण में है । इस दिशा में कवि सुदर्शनाचार्य का यह प्रयत्न एक नवीन पद्धति का निरूपण करता है । प्रस्तुत नाटक १९०८ ईस्वी में प्रकाशित हुआ है । प्रकाशित होने से १० वर्ष पूर्व इसकी रचना की गयी थी [३] । इस प्रकार यह ईस्वी सन् १८९८ की रचना है ।

प्रस्तुत नाटक के समस्त गद्य भाग का उप निबन्धन हिन्दी भाषा में किया गया है परन्तु पद्य भाग का अधिकांश संस्कृत में है । इस महा नाटक में १० अंक हैं । इस ग्रन्थ का उपयोग आगे किया गया है ।

श्रीयुत सुदर्शनाचार्य ने अनर्घनलचरित्र नाटक की भूमिका में नल-दमयन्ती की कथा पर आधारित अपने एक अन्य संस्कृत नाटक का उल्लेख किया है [४] । इस नाटक से के विषय में और कुछ भी पता नहीं चलता ।

नलचरित

बनारस के कवि चक्रवर्ती देवीप्रसाद शुक्ला का `नलचरित` नामक नाटक क महाराज नल तथा दमयन्ती की कथा के आधार पर लिखा गया है [५] । यह

१-`अनर्घनल चरित` -- भूमिका, पृ० ५

२- सा० द० ६।१५८-१५९ ।

३- अनर्घनल चरित्र-- भूमिका, पृ० ५

४- ,, ,, ,, पृ० ६

५- कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिटेचर, पृ० ६७४

आधुनिक कृति है । देवीप्रसाद शुक्ला की एक और कृति `लक्ष्मीनारायण महाकाव्य' है, आधुनिक नाटक प्रकाशित हो चुका है परन्तु आजकल दुर्लभ है । अप्राप्त होने के कारण इसका उपयोग प्रस्तुत प्रबन्ध में नहीं किया जा सका है ।

नलदमयन्तीयम्

नल और दमयन्ती के प्रसिद्ध आख्यान के आधार पर कालीपद तर्काचार्य ने `नल दमयन्तीयम्' नामक नाटक की रचना की । मूलाजोड़ संस्कृत महाविद्यालय में कालीपद तर्काचार्य के `विदर्भ समागम' नामक नाटक का अभिनय किया गया था । उस समय कालीपद तर्काचार्य महामहोपाध्याय शिवचन्द्र से न्याय विद्या का अध्ययन कराते थे । इसके बहुत समय बाद `संस्कृत साहित्य परिषद् के विद्यालय में अध्ययन कार्य में नियुक्त होने के अनन्तर ग्रन्थकार ने विदर्भ समागम नामक नाटक को ही पर्याप्त परिवर्तनों के साथ `नलदमयन्तीयम्' नाम से प्रकाशित किया[१] । यह नाटक भी आधुनिक रचना ही है । इस नाटक में सात अंक हैं । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इसका उपयोग किया गया है ।

पुण्य श्लोकोदयम्

पुण्य श्लोक महाराज नल की कथा के आधार पर आधुनिक काल में श्री देवीशरण कवि चक्रवर्ती ने `पुण्यश्लोकोदयम्' नामक नाटक की रचना की[२] । यह ग्रन्थ आधुनिक होने पर भी अप्राप्य है । अतएव इसके विषय में विशेष ज्ञान नहीं प्राप्त किया जा सका ।

भैमी परिणयम्-- तीन भिन्न-भिन्न नाटक

श्री रत्नखेत दीक्षित तथा श्रीराम शास्त्री के `भैमी परिणयम्' नामक दो ग्रन्थों से भिन्न तीन अन्य इसी नाम के नाटकों का उल्लेख मिलता है । इन

१- नल दमयन्तीयम् -- निवेदनम्

२- नल विलास -- प्रस्तावना

तीनों नाटकों के रचयिता क्रमशः वेंकटाचार्य[1],अहोबालाचार्य[2] तथा राज चुडामणि हैं[3]। ये नाटक अभी प्रकाशित नहीं हुए हैं । अप्राप्य होने के कारण इनके विषय में कोई भी विशेष जानकारी नहीं प्राप्त की जा सकी ।

भैमी परिणयम्

नल एवं दमयन्ती की पवित्र कथा के आधार पर 'भैमी परिणयम' नामक एक और नाटक उपलब्ध होता है । इसके रचयिता श्रीरामशास्त्री मण्डिकल नगर के निवासी थे । ये क्रमशः श्रोत्रिय ब्राह्मण वेंकट सुब्ब के पुत्र थे । इन्होंने अपने बाल्यकाल में मैसूर में १९ वर्ष तक वेदाभ्यास किया तत्पश्चात् तीन वर्ष तक तर्क तथा व्याकरण का और फिर अद्वैत और भाष्यक्रम का अभ्यास किया था[4]।

श्रीराम शास्त्री कृष्णराज द्वितीय के आस्थान पण्डित थे[5]। कृष्णराज द्वितीय ने सम्भवतः इन्हें कालेज नामक महापाठशाला में प्रथम उपाध्याय के पद पर नियुक्त करा दिया था[6]।

'आर्यधर्म प्रकाशिका' आदि इनके अन्य ग्रन्थ हैं[7], अपनी वृद्धावस्था में कवि ने प्रस्तुत नाटक की रचना की थी[8]। इस नाटक में दस अंक हैं ।'भैमी परिणयम्' का दूसरा नाम 'नलविजयम्' भी है । प्रस्तुत प्रबन्ध में इस नाटक में नल-दमयन्ती कथा के विकास पर विचार किया गया है ।

दमयन्ती कल्याणम्

नल दमयन्ती कथा के आधार पर 'दमयन्ती कल्याणम्' नामक एक और नाटक मिलता है , इसके रचयिता श्री रंगनाथताम्रपर्णी नदी के तट पर स्थित द्रमिड देश के निवासी थे[9]।

१- भैमी-परिणयम आफ्रेट : कैटलागस कैटलागोरम्, जिल्द संख्या १,पृ० ४१६
२- वही
३- वही
४- भैमी परिणयम् १।६-१०
५- ,, ,, पृ०४
६- भैमी परिणयम्,पृ०५
७- आर्यधर्मप्रकाशिकादि ग्रन्थकर्तेति च । भै०प०,पृ०४-
८- 'सखि ! शृणु स एष कविरिदानीं परिणते वयसि वर्तमानः परमहर्षेण महर्षिं व्यास,श्री हर्षं च नैषध-कर्तारं मनसा सम्भाव्य पावन वस्तु प्रशंसिनीं कविता मारभमाणः... भै०प०,पृ०५
९- 'अस्ति खलु रंगनाथनाम्ना द्विजेन कविना अधुना विरचितं दमयन्ती कल्याणं नाम नाटकम्' तथा तत्र भवान् द्रमिड देश प्रतिवसति --दमयन्ती कल्याणम् पृ०२

त्रावनकोर के तुरिन्द्रन नगर में 'श्री-परमेश्वर' उत्सव पर इस नाटक का अभिनय किया गया था[1]। दुर्भाग्यवश यह सम्पूर्ण नाटक आजकल उपलब्ध नहीं है। मद्रास में इसकी एक हस्तलिखित प्रति खण्डितावस्था में मिलती है। इस नाटक में ५ अंक थे[2] जिनमें से एक अंक खण्डितावस्था में तथा द्वितीय अंक का अंश मात्र उपलब्ध होता है। इस नाटक के उपलब्ध अंश के आधार पर इसमें नल दमयन्ती कथा के विकास पर आगे विचार किया गया है।

नल भूमिपाल रूपक

महाराज नल की विख्यात कथा के आधार पर 'नलभूमिपाल रूपकम्' नाम से एक रूपक का उल्लेख[3] मिलता है। इस रूपक के रचयिता तथा काल के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं है। अप्राप्य होने के कारण यहाँ इस ग्रन्थ का कुछ भी उपयोग नहीं किया जा सका।

नल-दमयन्ती कथा के आधार पर एक अन्य नाटक 'विधि विलसित' नाम से प्रसिद्ध रहा होगा। दुर्भाग्यवश आजकल यह नाटक उपलब्ध नहीं होता। 'नाट्य दर्पण'[4] के अन्तर्गत अवमर्श सन्धि के प्रसंग में 'विधिविलसित' नाटक का उल्लेख मिलता है। इसी स्थल पर इस नाटक के उल्लिखित एक श्लोक[5] के आधार पर ज्ञात होता है कि यह नाटक नल तथा दमयन्ती की कथा के आधार पर बना हुआ था। तथा इसमें पांच या पांच से अधिक अंक थे[6]। रामचन्द्र गुणचन्द्र ने अपने नाट्य दर्पण में इसका उल्लेख किया है अतएव यह अनुमान किया जा सकता है कि ईसा की १२वीं शताब्दी तक इसकी रचना ~~से~~ ही नहीं ~~प्रसिद्ध~~ नहीं हो चुकी होगी।

१- कृष्णामाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ० १८६
२- वही।
३- आफ्रेंट : कैटलागस कैटलागोरम, जिल्द संख्या ३, पृ० ६०
४- हिन्दी नाट्य दर्पण -- पृ० ५६-५७
५- वार्ता पि नैव यदिहास्ति स राजचन्द्र
तैनोज्झिता विधि विमोहितचेतनेन।
देवा वने त्रिदशनाथ विलासिनीभिः
कहुं गता जगति सत्यमिति प्रवादः॥ ना० द०
६- देवलो यथा विधिविलसिते पंचमे अंके।' ना० द०

दृश्य काव्य के नाटकेतर विधाओं में नल-दमयन्ती कथा के विरल-ग्रहण के कुछ महत्वपूर्ण कारण प्रतीत होते हैं । इन पर विचार करने के लिए रूपक की नाटकेतर अन्य विधाओं के स्वरूप का विहंगावलोकन आवश्यक हो जाता है ।

दशरूपककार ने प्रकरण के लिए कल्पित अथवा लोकसंश्रय अर्थात् अनुदात्त इतिवृत्त को आवश्यक माना है[1] । प्रकरण का नायक मन्त्री, ब्राह्मण अथवा वणिक्[2] में से कोई होना चाहिए । इसके अतिरिक्त इसका नायक धीर प्रशान्त कोटि का होना चाहिए[3] । वह विघ्नों से युक्त तथा त्रिवर्ग में तत्पर होता है । सन्धि प्रवेशक तथा रसादि का समावेश प्रकरण में नाटक की ही भांति होता है ।

प्रकरण के इस लक्षण के विषय में नाट्य दर्पणकार रामचन्द्र तथा गुणचन्द्र दशरूपककार से पूर्णरूप से सहमत नहीं हैं[4] । नाट्य दर्पणकारों ने अमात्य के साथ धीर प्रशान्त विशेषण को असंगत ठहराया । ये लोग सेनापति तथा अमात्य को धीरोदात्त ही मानते हैं धीर प्रशान्त नहीं[5] । इस प्रकार यदि नाट्यदर्पण के अनुसार यह मान लिया जाय कि प्रकरण का नायक धीर प्रशान्त के अतिरिक्त धीरोदात्त भी हो सकता है तो भी महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत धीरललित रूप में वर्णित महाराज नल का चरित्र प्रकरण के लिए अधिक अनुकूल नहीं प्रतीत होता । उसके अतिरिक्त महाराज नल तथा दमयन्ती की कथा प्रख्यात और फिर उदात्त होने के कारण भी प्रकरण की रचना के लिए अनुकूल नहीं है । सम्भवत: इन्हीं कारणों से कवियों ने इस कथा के आधार पर प्रकरणों की रचना करने का अधिक प्रयत्न नहीं किया ।

१- 'अथ प्रकरणे वृत्तमुत्पाद्यं लोकसंश्रयम् ।।' द०रू० ३।३६

२- अमात्यविप्रवणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्' । द०रू० ३।३६

३- धीर प्रशान्तं सापायं धर्मकामार्थ तत्परम्' । द०रू० ३।४०

४- 'सचिवो राज्यचिन्तक: । अयं वणिग् विप्रयोर्मध्यपात्यपि धीरोदात्तधीरप्रशान्तौ प्रकरणे नेतारौ भवत: इति प्रतिपादनार्थं पृथगुपात्त: । यस्त्वमात्यं नेतारमभ्युपगम्य धीरप्रशान्तनायकमिति प्रकरणं विशेषयति, स वृद्धसम्प्रदायवन्ध्य: ।' नाट्यदर्पण २।१ ।

५- 'धीरोदात्त: सैन्येशमन्त्रिण:' नाट्यदर्पण १।७

प्रकरण रूप में नल-दमयन्ती कथा के विकास का एकमात्र निदर्शन `नलविक्रम` का उल्लेख मिलता है । दुर्भाग्यवश यह ग्रन्थ तो आजकल उपलब्ध नहीं होता, परन्तु शारदातनय ने अपने `भावप्रकाश` में तथा रामचन्द्र गुणचन्द्र ने नाट्यदर्पण में इसका उल्लेख किया है[१]। इसमें आठ अंक थे[२]। नाट्यदर्पण में उल्लिखित होने के कारण यह स्वीकार करना होगा कि यह `प्रकरण` उनके समय अर्थात् ११०० से ११७५ तक प्रसिद्ध हो चुका होगा ।

नल-दमयन्ती कथा को आधार मानकर विरचित किसी भी भाण का संस्कृत साहित्य में उल्लेख नहीं हुआ है । भाण[३] रूपक का वह प्रकार है जहां कोई निपुण पण्डित अथवा विट अपने अनुभूत अथवा किसी अन्य के द्वारा अनुभूत चरित का वर्णन करे । इसे सदैव धूर्तचरित पर आधारित होना चाहिए । भाण में सम्बोधन,उक्ति तथा प्रत्युक्ति का आकाशभाषित रूप से सन्निवेश किया जाता है । इसमें केवल एक ही पात्र होता है । सौभाग्य तथा शौर्य के वर्णन से वीर तथा शृंगार रस की सूचना दी जाती है । भाण में भारती वृत्ति को प्रधानता होती है और केवल एक ही अंक की संयोजना की जाती है । इसकी कथावस्तु कल्पित होनी चाहिए । इसमें केवल मुखसन्धि तथा निर्वहण संधि को अंगो सहित योजना की जाती है, इसमें लास्य के दसों अंगों का भी सन्निवेश किया जाता है ।

महाराज नल तथा दमयन्ती की कथा के आधार पर भाण की रचना तो बिल्कुल असम्भव ही है । कहां पुण्यश्लोक महाराज नल का चरित्र और कहां भाण के लिए आवश्यक धूर्त[४] चरित । इसके अतिरिक्त नल दमयन्ती की कथा भाण रचना के लिए इसलिए भी उपयुक्त नहीं है, क्योंकि भाण के लिए कथावस्तु को कल्पित होना आवश्यक है[५]।

१- ए०एन० जानी : क्रिटिकल स्टडी आफ श्री हर्षाज़ नैषधीय चरितम्,परिशिष्ट-३
२- वही ।
३- दशरूपक ३।४९-५१
४- `भाणस्तु धूर्तचरितम्` -- दशरूपक ३।४९
५- `वस्तु कल्पितम्` -- दशरूपक ३।५१

यही कारण है कि नल-दमयन्ती साहित्य का विकास भाण के रूप में एकदम ही नहीं पाया जाता ।

प्रहसन नामक रूपक-भेद, भाण के ही समान होता है[1]। अर्थात् इसमें भी इतिवृत्त कल्पित तथा धूर्तचरित होता है और केवल मुखसन्धि तथा निर्वहण संधि का संयोजन किया जाता है । प्रहसन में हास्य रस ही अंगी रस होना चाहिए[2] तथा यहां इस हास्य के छहों भेदों का उपनिबन्धन किया जाना चाहिए । नलोपाख्यान पर आधारित किसी भी रूपक में शृंगार ही अंगीरस हो सकता है हास्य नहीं । इसके अतिरिक्त इसके आधार पर प्रहसन की रचना में वही कठिनाइयां सामने आ जाती हैं, जिनका निर्देश भाण की रचना के प्रसंग में किया गया है । सम्भवत: इन्हीं कारणों से नल-दमयन्ती की प्रसिद्ध कथा के आधार पर प्रहसन की रचना नहीं मिलती ।

'डिम'[3] की कथावस्तु प्रसिद्ध होती है तथा इसमें कैशिकी से इतर अन्य तीन वृत्तियों का प्रयोग किया जाता है । देव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस तथा नाग आदि अथवा भूत पिशाच आदि अत्यन्त उद्धत १६ नायक होते हैं । 'डिम' में रौद्र रस अंगी रस होता है तथा शृंगार और हास्य से इतर ६ दीप्त रसों का अंग रूप से सन्निवेश किया जाता है । यह सूर्य तथा चन्द्रग्रहण और माया तथा इन्द्रजाल से युक्त विमर्श को छोड़कर अन्य चार संधियों तथा चार अंकों से युक्त होता है ।

नलोपाख्यान की कथा प्रख्यात इतिवृत्त है । परन्तु उसमें डिम के लिए अपेक्षित, कैशिकी वृत्ति का वर्जन[4], असम्भव प्रतीत होता है । कहां नल और दमयन्ती की शृंगारोज्ज्वल[5] ललित कथा और कहां डिम के लिए रौद्र रस की अपेक्षा

१- दशरूपक ३।५४-५६
२- 'रसस्तु भूयसा कार्य: षड्विधो हास्य एव तु ।' द० रू० ३।५६
३- दशरूपक ३।५७-६०
४-'डिमे वस्तु प्रसिद्धं स्याद्वृत्तय: कैशिकीं विना ।' द० रू० ३।५७
५-'रौद्ररसे ङिगनि' दशरूपक ३।५८

कहां मर्त्यलोक के धीर ललित प्राणी नल और कहां डिम के लिए मर्त्येतर प्राणियों को नायक रूप में अपेक्षा[1] । इस प्रकार यह स्पष्ट ही है कि नलोपाख्यान को कथा के आधार पर डिम की रचना लगभग असम्भव ही है । सम्भवत: इसीलिए सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में इस कथा को लेकर एक भी डिम की रचना हुई नहीं प्रतीत होती ।

व्यायोग[2] का इतिवृत्त प्रख्यात होता है तथा कोई उद्धत मनुष्य व्यायोग का नायक होता है । इसमें मुख सन्धि प्रतिमुख सन्धि तथा निर्वहण संधि का ही नियोजन किया जाता है । यहां भी हास्य और शृंगार के अतिरिक्त अन्य दीप्त रसों का ग्रहण किया जाता है । कैशिकी वृत्ति का प्रयोग इसमें भी वर्जित है । व्यायोग में एक ही अंक होना चाहिए जिसमें अस्त्री निमित्तक संग्राम का तथा एक ही दिन के चरित का चित्रण किया जाता है ।

डिम की ही भांति, साहित्य को इस विधा में भी शृंगाररस के परित्याग और दीप्त रसों के ग्रहण[3] तथा उद्धत नायक की अनिवार्यता[4], के कारण ही सम्भवत: नल-दमयन्ती को शृंगार-रस-पेशल कथा का विकास एकदम नहीं प्राप्त होता ।

`समवकार`[5] नामक रूपक-भेद में नाटक की ही तरह आमुख की योजना की जाती है । इसकी कथावस्तु देवताओं और दानवों से सम्बद्ध प्रख्यात होती है । इसमें विमर्श संधि से भिन्न, शेष सभी संधियां होती हैं । इसमें कैशिकी वृत्ति मन्द

१- नेतारो देवगन्धर्वयक्षरक्षोमहोरगा: ।।
   भूतप्रेतपिशाचाद्या: षोडशात्यन्तमुद्धता: ।। दशरूपक ३।५७-५८

२- दशरूपक ३।६०-६२

३-`दीप्ता: स्युर्डिमवद्रसा:` । दशरूपक ३।६१

४-`ख्यातोद्धतनराश्रय:` दशरूपक ३।६०

५- दशरूपक ३।६२-६८

होती है । इसके पात्र देवता तथा दानव होते हैं और संख्या में १२ होते हैं । इन सब का पृथक् पृथक् फल होता है और वे सब वीर रस से परिपूर्ण होते हैं । समवकार में तीन अंक होते हैं, जिनमें तीन बार कपट, तीन बार शृंगार तथा तीन बार भगदड़ की योजना की जाती है । प्रथम अंक में मुख तथा प्रतिमुख ये दोनों संधियां तथा १२ नालिका की कथा होनी चाहिए । द्वितीय तथा तृतीय अंक में क्रमश: ४ तथा २ नालिका की कथा होनी चाहिए । प्रत्येक अंक में वस्तु,स्वभाव तथा शत्रुओं द्वारा विहित तीन कपट तथा नगरोपरोध,युद्ध,वात,अग्नि आदि से उत्पन्न विद्रवों में से एक-एक विद्रव वर्णित होना चाहिए । इसमें धर्म,अर्थ तथा काम इन तीनों से मिश्रित शृंगार पाया जाता है । इसमें बिन्दु नामक अर्थप्रकृति तथा प्रवेशक नामक अर्थोपक्षेपक नहीं मिलता । प्रहसन के समान ही इसमें आवश्यक वीथ्यंगों की योजना की जानी चाहिए ।

नल-दमयन्ती की कथा प्रख्यात है और इसके कुछ पात्र देवता भी हैं । परन्तु दानव पात्र नहीं मिलते हैं । मुख्य बात तो यह है कि समवकार के लिए पात्रों का वीर रस से परिपूर्ण होना आवश्यक है[1] जो यहां नहीं मिलता । सम्भवत: इन्हीं कारणों से नलोपाख्यान समवकार की रचना के लिए अनुपयुक्त है ।

वीथी[2] नामक रूपक-भेद कैशिकीवृत्ति में निबद्ध किया जाता है । केवल मुख तथा निर्वहण संधियां तथा एक अंक होता है । इसमें शृंगार रस मुख्य होता है तथा अन्य रसों का स्पर्श मात्र होता है । वीथी, प्रस्तावना के उद्घात्यक आदि अंगों से युक्त होती है तथा दो एक पात्रों की ही प्रकृति का एक नायक होता है[3] । संस्कृत साहित्य में वीथी के रूप में दृश्यकाव्य की रचना का एक भी उदाहरण नहीं मिलता । इसकी रचना की ओर कवियों की रुचि ही नहीं हुई है ।

अंक[4] अथवा उत्सृष्टिकांक नामक रूपक-भेद में इतिवृत्त प्रख्यात होता है परन्तु कवि अपनी बुद्धि से उसमें परिवर्तन कर लेता है । स्थायी रस करुण होता है

१- `बहुवीररसा: सर्वे` दशरूपक ३।६४

२- दशरूपक ३।६८-७०

३- नाट्य शास्त्र

४- दशरूपक ३।७०-७२

तथा इसमें नायक सामान्य व्यक्ति ही होते हैं । 'अंक' के अन्तर्गत मुख तथा निर्वहण संधियों का नियोजन किया जाता है । इसमें केवल एक अंक होता है और अधिकांशतः भारती वृत्ति का प्रयोग होता है । वाग्युद्ध, निर्वेद वचन तथा स्त्री विलाप की भी योजना की जाती है ।

नल-दमयन्ती कथा में किसी भी प्रकार से करुण रस का प्राधान्य[1] नहीं दिखाया जा सकता । नल दमयन्ती कथा के पूर्वार्द्ध में पूर्वराग और संयोग शृंगार तथा उत्तरार्द्ध में विप्रलम्भ शृंगार का प्रसंग मिलता है । इसके अतिरिक्त नल दमयन्ती की कथा पर आधारित किसी भी रूपक में नायक होंगे महाराज नल । 'अंक रूपक' के लिए नायक का सामान्य पुरुष होना आवश्यक होता है[2], परन्तु महाराज नल सामान्य पुरुष नहीं हैं । सम्भवतः इन्हीं कारणों से नल दमयन्ती कथा के आधार पर उत्सृष्टिकांक की रचना नहीं मिलती है ।

ईहामृग[3] की कथावस्तु मिश्रित होती है । इसमें चार अंक और तीन संधियां होती हैं । ईहामृग के अन्तर्गत प्रतिनायक के दिव्य अथवा अदिव्य होने के विषय में कोई नियम नहीं होता । इसके नायक तथा प्रतिनायक दोनों इतिहास में प्रसिद्ध तथा धीरोद्धत होते हैं । प्रतिनायक भ्रान्ति के कारण अनुचित कार्य करता है । वह किसी दिव्य स्त्री को जो उसे नहीं चाहती--भगाकर ले जाना चाहता है । इस प्रकार कवि को कुछ-कुछ शृंगाराभास का भी प्रदर्शन करना चाहिए । नायक तथा प्रतिनायक के विरोध को चरम सीमा तक ले जाकर, व्याज से युद्ध का निवारण कर दिया जाता है । प्रतिनायक का वध समीप होने पर भी उसका वध कभी नहीं किया जाता ।

नल दमयन्ती की कथा के आधार पर ईहामृग की रचना के विषय में सबसे बड़ी बाधा तो यह है कि महाराज नल का धीरललित नायक के रूप में सर्वत्र

१- 'रसस्तु करुणः स्थायी' दशरूपक ३।७१

२- 'नेतारः प्राकृता नराः' दशरूपक ३।७१

३- दशरूपक ३।७२-७५

चित्रण मिलता है और ईहामृग में नायक को धीरोद्धत प्रकृति का होना आवश्यक है[1]। इस कथा का ईहामृग की दिशा में कुछ भी विकास नहीं परिलक्षित होता।

उपर्युक्त दस प्रकार के रूपकों के अतिरिक्त कुछ उपरूपक भी मिलते हैं। साहित्यदर्पणकार ने १८ उपरूपकों का उल्लेख किया है[2]। इन उपरूपकों का स्वरूप लगभग नाटकों के ही समान होता है। उपरूपकों की भी दिशा में नल और दमयन्ती की कथा का विकास नहीं मिलता है।

संस्कृत साहित्य में नलोपाख्यान विषयक महाकाव्य भी प्रचुर संख्या में मिलते हैं। कालक्रम की दृष्टि से इनमें सबसे प्राचीन महाकाव्य नल रामायण का 'डे' तथा 'दास गुप्ता' ने अपने इतिहास ग्रन्थ में[3] उल्लेख किया है। यह ग्रन्थ राजशेखर की रचना है। आजकल यह अनुपलब्ध है।

नैषधीय चरितम्

महाराज नल एवं दमयन्ती की प्रसिद्ध कथा को प्रस्तुत करने वाला सुविख्यात 'नैषधीय चरितम्' महाकाव्य महाकवि श्रीहर्ष की रचना है। इनके पिता का नाम श्री हीर तथा माता का नाम मामल्लदेवी था। इन्होंने चिन्तामणि मन्त्र का जाप किया था[4]। कान्यकुब्ज के राजा की सभा में इनका बहुत सम्मान था[5]। इन्होंने अपने पिता के प्रतिद्वन्द्वी से बदला लिया था। प्रसिद्धि है कि ये मम्मट के भांजे थे।

१- ख्यातो धीरोद्धातावन्त्यो विपर्यासादयुक्कृत् ।।' दशरूपक ३।७२
२- साहित्य दर्पण ६।४-६
३- डे तथा दास गुप्ता: हिस्ट्री आफ संस्कृत लिट्रेचर, जिल्द संख्या १,पृ०५४७
४- नै० १।१४५
५- नै० २२।१५५

नैषधकार के स्थितिकाल के विषय में यद्यपि विद्वानों में पर्याप्त मतभेद मिलता था परन्तु अब इन्हें ईसा की बारहवीं शताब्दी का कवि स्वीकार कर लिया गया है।[1] 'नैषधचरितम्' में महाकवि श्रीहर्ष ने अपने आठ अन्य ग्रन्थों का उल्लेख किया है। श्रीहर्ष ने 'दर्शन' पर भी अनेक ग्रन्थों की रचना की है। 'नैषध चरितम्' में बाइस लम्बे-लम्बे सर्ग हैं जिनमें २८३० श्लोक हैं। इतने विशाल कलेवर वाले महाकाव्य में कवि ने नलचरित के केवल एकदेश का ही वर्णन किया है। संस्कृत साहित्य के अपकर्ष काल में यह ग्रन्थ अपना विशिष्ट उज्ज्वल स्थान बनाए हैं। संस्कृत साहित्य की बृहत्त्रयी में यह ग्रन्थ अन्यतम है। यह 'नैषधचरितम्' महाकवि की प्रतिभा एवं पाण्डित्य के मंजुल समन्वय का अपूर्व निदर्शन है।

'नैषध चरितम्' जैसे क्लिष्ट महाकाव्य पर टीकाओं का बाहुल्य होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। महामहोपाध्याय पण्डित शिवदत्त शास्त्री ने इसकी तेईस टीकाओं का उल्लेख किया है।[2] इनमें से कुछ उपलब्ध हैं कुछ मुद्रित हैं और कुछ अमुद्रित। इस ग्रन्थ की टीकाओं के अतिरिक्त इसके कुछ संक्षिप्त रूपान्तर भी मिलते हैं। पण्डित कृष्णराम ने 'नैषधचरितसार' तथा 'पण्डित नरसिंह द्वारा' ने 'आर्या नैषध' के नाम से 'नैषध चरितम्' के संक्षिप्त संस्कृत रूपान्तर प्रस्तुत किए हैं।[3] इन सब से 'नैषधचरितम्' की लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है। इस महाकाव्य का नल-दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से प्रस्तुत प्रबन्ध में आगे विवेचन किया गया है।

नलाख्यान नलायनम्

जैन कवि 'माणिक्य देव सूरि' ने महाराज नल तथा दमयन्ती की प्रसिद्ध कथा के आधार पर 'नलायनम्' नामक विशाल कलेवर वाले महाकाव्य की

१- बलदेव उपाध्याय : संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ० २५६

२- पं० फणीश्वरनाथ भट्ट: नैषधीय चरितम् महाकाव्यम् -- निवेदन

३- ए०एन० जानी : क्रिटिकल स्टडी आफ श्री हर्षाज़ नैषधीय चरितम्

परिशिष्ट--३

रचना की । कुबेरपुराण तथा उदाहार[1] नलायनम् के अपर अभिधान हैं । कृष्णमाचारी ने 'पार्श्वनाथ चरित' तथा 'काव्य प्रकाश' पर संकेत नामक टीका के रचयिता माणिक्य चन्द्र में ~~नलय~~ नलायनम् के रचयिता को अभिन्न बताया किया है[2] परन्तु जैसा कि पीटर्सन महोदय ने स्पष्ट किया है[3] 'नलायनम्' के रचयिता माणिक्य सूरि वटगच्छ के निवासी थे[4] तथा ये संकेत टीका के रचयिता माणिक्य चन्द्र से नितान्त भिन्न प्रतीत होते हैं । 'माणिक्यदेवसूरि' ने सम्भवत: तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस ग्रन्थ की रचना की थी[5] । कवि ने 'यशोधर चरित्रम्' आदि अपनी अन्य रचनाओं का प्रस्तुत काव्य में उल्लेख किया है[6] ।

'नलायनम्' महाकाव्य में १०० सर्ग हैं । नयसुन्दर कृत 'नलायनोद्धार' नामक एक ग्रन्थ मिलता है । सम्भवत: यह नलायनम् का संक्षिप्त रूपान्तर होगा । नल दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से इसका विवेचन प्रस्तुत प्रबन्ध के अगले अध्यायों में किया जावेगा ।

सहृदयानन्दम्

नल और दमयन्ती की प्रसिद्ध कथा को लेकर 'सहृदयानन्दम्' नामक एक महाकाव्य उपलब्ध होता है । इस महाकाव्य के रचयिता कृष्णानन्द हैं जो पुरी के कपिंजलवंशीय ब्राह्मण थे । सम्भवत: ये वहीं के राजा के महापात्र थे[7] । कवि कृष्णानन्द ने नैषधचरित पर एक टीका की भी रचना की है[8] । इनका

१- ~~नलयानम्~~ नलायनम्, पृ० १८८

२- कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ०७५६

३- ,, ,, ,, ,, पृ०१९८

४- नलायनम् ५ २१ ८२

५- नलायनम् : प्रस्तावना, पृ०२

६- ,, पृ० ३

७- कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ०१८४

८- डे तथा दास गुप्ता : हिस्ट्री आफ संस्कृत लिट्रेचर, जिल्द संख्या १, पृ०६२७

स्थिति काल ईसा की तेरहवीं शताब्दी स्वीकार किया जा सकता है[1]। `सहृदयानन्दम्` १५ सर्गों का महाकाव्य है । नैषध के विपरीत सरल सुबोध वैदर्भी रीति में इसकी रचना की गयी है ।

नल दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से इस महाकाव्य का विवेचन आगे के अध्यायों में किया गया है ।

नल कीर्ति कौमुदी

यह महाकाव्य कवि अगस्त्य की रचना है । ये कवि अगस्त्य वरंगल के राजा प्रताप रुद्रदेव की सभा में कवि थे । राजा प्रताप रुद्रदेव का स्थिति-काल १२९४ से १३२५ ईस्वी तक स्वीकार किया जाता है[2]। इस दृष्टि से अगस्त्य तेरहवीं शताब्दी के अन्त या चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कवि ठहरते हैं । कृष्णामाचारी के अनुसार `विद्यानाथ` इनकी उपाधि थी[3]। बालभारत और प्रतापरुद्रयशो भूषण इनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएं हैं ।

नल दमयन्ती की कथा पर आधारित[4] `नलकीर्ति कौमुदी` काव्य के केवल दो सर्ग ही आजकल उपलब्ध हैं । अप्राप्य होने के कारण इस प्रबन्ध में इसका कोई विवेचन नहीं किया जा सका है ।

नलाभ्युदयम्

नल दमयन्ती की प्रसिद्ध कथा के आधार पर वामन भट्ट बाण कृत `नलाभ्युदयम्` नामक महाकाव्य मिलता है । वामन भट्ट बाण कोमटियज्वन् के पुत्र तथा वरदाग्निचित् के पौत्र थे । ये वत्स गोत्र में उत्पन्न हुए थे तथा `विद्याराम` के शिष्य थे । लगभग तीन वर्ष की अवस्था में ये कोन्दविन्दु के राजा वेमभूपाल की सभा में चले आए थे ।

१- डे तथा दास गुप्ता : हिस्ट्री आफ संस्कृत लिट्रेचर, जिल्द संख्या-१पृ०६२७
तथा
कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ० १८४

२- ,, ,, ,, ,, पृ० १२६

३- ,, ,, ,, ,, ,,

४- ,, ,, ,, ,, पृ०१००२

इन राजा का स्थिति-काल १४०३ से १४२० ईस्वी तक माना जाता है । इस प्रकार वामनभट्ट बाण की स्थिति १५ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ठहरती है[१] । इनकी अन्य कृतियों में `रघुनाथ चरित` ,`पार्वती परिणय` ,`वेमभूपाल चरितम्` तथा शृंगार भूषण प्रमुख हैं । `नलाभ्युदयम्` महाकाव्य के केवल आठ सर्ग उपलब्ध होते हैं । नल दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से प्रस्तुत प्रबन्ध में इस पर विचार किया जायगा ।

नलोदयम्

संस्कृत आलंकारिकों ने यमक तथा श्लेष के अनेक भेदों के वर्णन द्वारा काव्य को चमत्कृत तथा अलंकृत करने के प्रचुर प्रकारों का अपने ग्रन्थों में प्रदर्शन किया है । यमक तथा श्लेष अलंकारों का प्रयोग काव्य में वहाँ तक श्लाघ्य होता है, जहां तक वह काव्य के प्राणभूत रस का न तो व्याघात करे और न उसके उन्मीलन में विघ्नकारी होवे । परन्तु कवियों ने चमत्कार प्रदर्शन के लोभ में पड़कर यमक काव्यों की रचना की है । इनमें लगभग प्रत्येक पद्य चमत्कारमय होता है और रस की स्थिति गौण हो जाती है । इसी प्रकार का एक `नलोदयम्` नामक काव्य नल दमयन्ती कथा के आधार पर मिलता है ।

नल और दमयन्ती की प्रसिद्ध कथा के आधार पर विरचित यह चार सर्गों का यमक काव्य है । इसके रचयिता के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है । महाकवि कालिदास की संदिग्ध रचनाओं में से यह भी एक है[२] । कुछ लोग इसे रविदेव नामक विद्वान् की रचना मानते हैं[३] । वेंकट राम शर्मा ने यमक कवि वासुदेव की २१ रचनाओं की सूची प्रस्तुत की है जिसमें `नलोदयम्` भी एक है[४] ।

१- कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ०२१५

२- ,, ,, ,, पृ०३३७

३- वही

४- डे तथा दास गुप्ता : हिस्ट्री आफ संस्कृत लिट्रेचर, जिल्द सं०१, पृ०६२३-२४ ।

इस दशा में[1] नलोदय के रचयिता और काल के विषय में निश्चित रूप से कुछ कह सकना कठिन है ।

आत्रेय भट्ट, आदित्य सूरि, कैलासगिरि, गणेश, नृसिंह, प्रतिज्ञाकर मिश्र, भरतसेन, मुकुन्द भट्ट, रविदेव, रामर्षि तथा हरिरत्न आदि द्वारा विरचित इतनी अधिक संख्या में इसकी टीकायें इसकी लोकप्रियता एवं महत्व को स्पष्ट कर देती है ।

नैषधपारिजात

कृष्णामाचारी महोदय ने अपने इतिहास ग्रन्थ में[2] नलोपाख्यान विषयक एक और महाकाव्य का उल्लेख तो किया है परन्तु इन्होंने यह नहीं स्पष्ट किया कि यह ग्रन्थ आजकल मिलता है या अनुपलब्ध है । यदि मिलता है तो किस स्थान पर इसकी प्रति उपलब्ध होती है । इस 'नैषधपारिजात' महाकाव्य के रचयिता कवि कृष्णानन्दिन हैं । कृष्ण दीक्षित तथा अय्या दीक्षित इनके अपर अभिधान हैं । ये कृष्णानन्दिन राजा रघुनाथ की सभा में कवि थे । 'रघुनाथ भूपालीय' इनका दूसरा विख्यात ग्रन्थ है । 'नैषध पारिजात' में नल तथा पारिजात-हरण की कथायें एक साथ ही वर्णित हैं[3] । अनुपलब्ध होने के कारण नल दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से इसका विवेचन नहीं किया जा सका है ।

प्रति नैषध

नल दमयन्ती कथा पर आधारित 'प्रति नैषध' नामक महाकाव्य विद्याधर तथा लक्ष्मण की कृति है[4], यह बात कुछ विचित्र-सी लगती है कि दो व्यक्तियों ने मिलकर इस काव्य ग्रन्थ की सर्जना की । शास्त्र ग्रन्थों की बात दूसरी है पर दो व्यक्तियों का मिलकर किसी काव्य-ग्रन्थ की रचना करना असम्भव प्रतीत

१- डे तथा दास गुप्ता : हिस्ट्री आफ संस्कृत लिट्रेचर, जिल्द सं०१, पृ०१२१पादटिप्पणी

२- कृष्णामाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ०२३६

३- ,, ,, ,, पृ०२३६

४- ,, ,, ,, पृ०१८५

होता है। अतस्व मृत्यु आदि किसी विघ्न के कारण सम्भवत: दूसरे व्यक्ति ने इस महाकाव्य को पूरा किया होगा।

'प्रति नैषध' की रचना सम्वत् १७०८ (सन् १६५२) में मुगल सम्राट शाहजहां के राज्यकाल में हुई थी[1]।

'नन्द नन्दन' के नाम से एक और भी 'प्रतिनैषध' नामक महाकाव्य का उल्लेख मिलता है। जानी महोदय की धारणा है कि ये दोनों रचनाएं अभिन्न हैं,[2] ग्रन्थ के अप्राप्त होने के कारण इसके विषय में कुछ भी विचार नहीं किया जा सका है।

दमयन्ती परिणय

नल और दमयन्ती की कथा को लेकर 'दमयन्ती परिणय' नामक अनेक महाकाव्य उपलब्ध होते हैं जिनमें से एक के रचयिता 'चक्रकवि' हैं। ये चक्रकवि लोकनाथ एवं अम्बा के पुत्र तथा रामचन्द्र और पतंजलि के भाई थे। इन्होंने अपने प्रशंसकों में नीलकण्ठ अध्वरिन का उल्लेख किया है। हो सकता है कि नीलकण्ठ अध्वरिन अप्पय दीक्षित के पौत्र प्रसिद्ध नीलकण्ठ से अभिन्न हों। इस दशा में चक्रकवि की स्थिति ईसा की सत्रहवीं शताब्दी में स्वीकार की जा सकती है[3]। यह ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित है। प्राप्त न होने के कारण इसके विषय में और कुछ विवेचन नहीं किया जा सका है।

राघवनैषधीयम्

संस्कृत साहित्य में द्विसन्धान काव्यों की एक परम्परा उपलब्ध होती है। दो कथाओं का एक ही साथ श्लेष द्वारा एक काव्य में निबन्धन करने की ओर कवियों की प्रवृत्ति हुई। इस प्रकार के द्वयर्थक काव्यों को दण्डी ने 'द्विसन्धान' नाम से अभिहित किया है। कवियों ने एक ही काव्य में श्लेष द्वारा एक साथ तीन

---

१ कृष्णमाचारी :

२-ए०एन० जानी : क्रिटिकल स्टडी आफ श्री हर्षाज़ नैषधीयचरितम्, परिशिष्ट-३

३-कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ०२३८

तीन और कहीं तो चार चार कथाओं का भी प्रतिपादन किया है । ये श्लेष काव्य चमत्कार प्रदर्शन के उत्कृष्ट उदाहरण होते हुए भी रस की दृष्टि से अधिक सफल नहीं हैं ।

नलोपाख्यान पर आधारित महाकाव्यों की परम्परा के अन्तर्गत नैषध पारिजात के अतिरिक्त 'राघवनैषधीयम्' भी द्विसन्धान काव्य है । इसके रचयिता हरदत्तसूरि हैं । ये हरदत्त गार्ग्य गोत्रीय जयशंकर के पुत्र थे । राघवनैषधीयम् सम्भवत: ईसा की अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ की रचना है[1] ।

ग्रन्थकार ने स्वयं ही अपने इस ग्रन्थ की व्याख्या भी की है । इसके प्रथम सर्ग में १२६ में से १२४ श्लोक मिलते हैं । इसके द्वितीय सर्ग का अन्तिम श्लोक अपूर्ण मिलता है । सम्पूर्ण काव्य में केवल दो सर्ग हैं ।

प्रथम सर्ग के अन्तिम दो श्लोक यद्यपि नहीं उपलब्ध होते हैं परन्तु उनकी व्याख्या मिलती है । प्रथम सर्ग में राम और नल की कथा एक साथ प्रस्तुत की गयी है तथा ० द्वितीय सर्ग में केवल ऋतुवर्णन मिलता है ।

नल एवं दमयन्ती की कथा के विकास की दृष्टि से प्रस्तुत प्रबन्ध में इसका विवेचन किया गया है ।

उत्तर नैषधम्

नल और दमयन्ती के विवाह के पश्चात् की कथा के आधार पर एक षोडशसर्गात्मक महाकाव्य 'उत्तरनैषधम्' उपलब्ध होता है । 'उत्तरनैषधम्' के रचयिता का नाम वन्दारुभट्ट, अरुरभट्ट थिरि अथवा वन्दारु द्विजमाधव है । वन्दारुभट्ट का स्थिति-काल १८२५ ई० के आस पास है । ~~बन्दारुभट्ट-का~~ ये श्री नीलकण्ठ तथा श्री देवी के पुत्र थे । इनको रानी सुभद्रा ने शिक्षा दी थी । कवि वन्दारुभट्ट को बालामन्त्र की सिद्धि थी । यह मन्त्र सम्भवत: श्रीहर्ष के चिन्तामणि मन्त्र की ही भांति प्रभावशाली था । कोचीन में आकर राजसभा में

१- कृष्णामाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिटेचर, पृ०१६४

ग्रन्थकार ने प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना की थी, इससे प्रसन्न होकर राजा ने इन्हें प्रभूत धन दिया।[1] 'उत्तरनैषधम्' काव्य के लिए श्रीहर्ष का ग्रन्थ आदर्श था। यह ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित है। नल दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से प्रस्तुत प्रबन्ध में इसका विवेचन किया गया है।

दमयन्ती परिणय

नलोपाख्यान पर आधारित यह दमयन्ती परिणय महाकाव्य मलाबार में स्थित तिरुनावा के मृत्युन्जय स्वामी की रचना है।[2] इसमें नल० तथा दमयन्ती के विवाह तक की कथा वर्णित है। यह महाकाव्य अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। प्राप्त न हो सकने के कारण आगे इस पर विचार नहीं किया जा सका है।

कल्याण नैषधम्

नल-दमयन्ती की कथा के आधार पर 'कल्याण नैषधम्' नाम से एक महाकाव्य मिलता है। इसमें भी नल और दमयन्ती के विवाह तक की कथा का वर्णन मिलता है। इसके रचयिता का नाम अज्ञात है। इसमें सात सर्ग हैं।

'कल्याण नैषधम्' अभी तक अप्रकाशित है प्राप्त न होने के कारण इसके विषय में आगे कोई विचार नहीं किया जा सका है।

नल वर्णनम्

नलोपाख्यान पर आधारित नल वर्णनम् नामक महाकाव्य कवि लक्ष्मीधर की रचना है।[3] यह महाकाव्य भी अभी तक अप्रकाशित है। अप्राप्ति होने के कारण इसका भी नल दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से कोई विवेचन नहीं किया जा सका है।

१- कृष्णमाचारी: हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ०१८४-१८५
२- ,, ,, ,, ,, ,, पृ०४८८-४८९
~~३- ,, ,, ,, ,, ,, पृ०१८५-~~
४- एन०एन० जानी: क्रिटिकल स्टडी आफ श्री हर्षाज़ नैषधीयचरितम, परिशिष्ट३

कलिविडम्बन

कृष्णामाचारी ने अपने इतिहास ग्रन्थ में नारायण शास्त्री कृत 'कलिविडम्बन' काव्य का उल्लेख किया है । उनके अनुसार यह ग्रन्थ भी नल एवं दमयन्ती की कथा को ही प्रस्तुत करता है।[1] इस ग्रन्थ के विषय में और कोई भी जानकारी नहीं मिलती है । कलिविडम्बन नामक एक नाटक मिलता है, जिसके रचयिता नीलकण्ठ दीक्षित हैं तथा इसका नलोपाख्यान से कोई सम्बन्ध नहीं है । कृष्णामाचारी महोदय ने किस आधार पर इस ग्रन्थ का उल्लेख किया होगा, वह भी ज्ञात नहीं है । ऐसी स्थिति में तो इस ग्रन्थ की स्थिति ही सन्देहास्पद है ।

नलहरिश्चन्द्रीय

एक ओर से नल दमयन्ती की कथा तथा दूसरी ओर से हरिश्चन्द्र की कथा को प्रस्तुत करने वाला[2] यह 'नलहरिश्चन्द्रीय' नामक सन्धान काव्य किसकी रचना है यह अभी तक अज्ञात ही है[3] ।यह ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित है तथा इसकी उपलब्ध प्रति तेलगु लिपि में लिखी हुई है । अप्राप्त होने के कारण नल दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से इस पर विचार नहीं किया जा सका है ।

नलचरितम्

नल कथा पर आधारित 'नल चरितम्'[4] महाकाव्य के भी रचयिता कौन है, यह अभी तक ज्ञात नहीं हो सका है । यह ग्रन्थ भी अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है । अप्राप्त होने के कारण प्रस्तुत प्रबन्ध में आगे इसका उपयोग नहीं किया जा सका है ।

१- कृष्णामाचारी :हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर,पृ०१८४
२- ए०एन०जानी : क्रिटिकल स्टडी आफ श्रीहर्षाज़ नैषधीय चरितम्,परिशिष्ट-३
३- कृष्णामाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर,पृ०१८४
४- ए०एन०जानी : क्रिटिकल स्टडी आफ श्री हर्षाज़, नैषधीय चरितम्,परिशिष्ट३

नल कथार्णव

नल कथार्णव महाकाव्य के भी रचयिता के विषय में कोई जानकारी नहीं उपलब्ध होती[1]। यह ग्रन्थ भी अभी तक अप्रकाशित है। जैसा कि ग्रन्थ के नाम से ही स्पष्ट हो जाता है, इसमें सम्भवतः नल की कथा का वर्णन किया गया होगा। अप्राप्त होने के कारण प्रस्तुत प्रबन्ध में इसके आधार पर नल दमयन्ती कथा के विकास पर विचार नहीं किया जा सका है।

नल यादव राघव पाण्डवीयम्

यह तो इस महाकाव्य के नाम से ही प्रकट हो जाता है कि इसमें नल की कथा के साथ-साथ कृष्ण, राम और पाण्डवों की भी कथा का वर्णन किया गया होगा। यह महाकाव्य भी अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है, इसके भी रचयिता का नाम अज्ञात है[2]। अप्राप्त होने के कारण इस महाकाव्य में नल दमयन्ती कथा का विकास किस प्रकार हुआ, यह नहीं कहा जा सकता। इनके अतिरिक्त

इनके अतिरिक्त घनश्याम कृत 'आबोधाकार' तथा श्रीनिवासदीक्षित द्वारा विरचित 'नैषधानन्दम्' इन दो नलोपाख्यान विषयक महाकाव्यों का भी उल्लेख मिलता है[3]। ये दोनों ग्रन्थ दुर्लभ हैं।

नलोपाख्यान के आधार पर कवियों ने चम्पू काव्यों की भी सर्जना की है। चम्पू साहित्य में नलोपाख्यान पर आधारित नल चम्पू अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

१- ए०एन०जानी: क्रिटिकल स्टडी आफ हर्षाज़ नैषधीय चरितम् परिशिष्ट-३
२- आफ्रेट: कैटलाग जिल्द संख्या १

नल चम्पू

नल दमयन्ती की कथा को प्रस्तुत करने वाला यह ग्रन्थ कवि त्रिविक्रम भट्ट की रचना है । त्रिविक्रम भट्ट का जन्म शाण्डिल्य गोत्र में हुआ था । इनके पितामह का नाम श्रीधर तथा पिता का नाम नेमादित्य(देवादित्य ?) था[1] ।नौसारी के शिलालेख से त्रिविक्रमभट्ट का स्थिति काल दशवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध निश्चित है[2] ।

चम्पू काल, गद्य काव्य के युग से पश्चाद्वर्ती है । बाण,दंडी तथा सुबंधु की रचनाओं के पश्चात् ही हमें दण्डे चम्पू के दर्शन होते हैं । यही कारण है कि नल चम्पू पर बाण एवं सुबन्धु के गद्यबन्ध की स्पष्ट छाप अंकित है । नल चम्पू का दूसरा नाम दमयन्ती कथा भी है जैसा कि इसके नाम से भी स्पष्ट है यह चम्पू मात्र नहीं है । इसमें कथा के तत्व भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं ।

नल चम्पू में `हर चरण सरोज पद से अंकित सात उच्छ्वास उपलब्ध होते हैं । इसमें `नलदौत्य` तक की ही कथा वर्णित है । नल चंपू में नल दमयन्ती कथा के एक भाग मात्र के वर्णन को देखकर ही सम्भवत: पण्डितमण्डली में एक प्रवाद प्रसिद्ध है जिसका उल्लेख नल चम्पू की विभूति नामक टीका के प्रारम्भ में किया गया है । वह कथा इस प्रकार है --

त्रिविक्रम भट्ट बाल्यावस्था में अत्यन्त मूर्ख थे । इनके पिता किसी राजा केयहां सभापण्डित थे । एक बार जब वे कार्यवश बाहर गए हुए थे, दिग्विजय की लालसा से किसी विद्वान् ने राजसभा में आकर किसी पण्डित से शास्त्रार्थ करने की इच्छा की । नेमादित्य को घर से बुलाने के लिए दूत भेजा गया और उनकी अनुपस्थिति में त्रिविक्रमभट्ट से राजसभा में चलने के लिए कहा गया । त्रिविक्रमभट्ट ने देवी सरस्वती से पिता की प्रतिष्ठा रखने के लिए प्रार्थना की । सरस्वती ने आशीर्वाद दिया कि जब तक तुम्हारे पिता लौट कर नहीं आते, तब तक मैं तुम्हारे

१- नल चम्पू १।१६,२०

२- नलचम्पू-- उपोद्घात

मुख में निवास करेंगी । भारती के प्रसाद से त्रिविक्रम ने राजसभा में प्रतिपक्षी पण्डित को परास्त किया । राजा ने इनका अतिशय आदर किया । घर लौट आने पर इन्होंने नल चम्पू की रचना की । जिस दिन सप्तम उच्छ्वास समाप्त हुआ, उसी दिन इनके पिता घर लौट आए । सरस्वती इनके मुख से निकल गयीं और यह काव्य जहां तक लिखा गया था, वहीं तक रह गया ।

नल चम्पू में सात उच्छ्वास हैं । नल एवं दमयन्ती की कथा के विकास की दृष्टि से प्रस्तुत प्रबन्ध के आगे के अध्यायों में इस पर विचार किया गया है ।

नलायनी चरित

नलोपाख्यान पर आधारित एक और चम्पू 'नलायनी चरित' का कृष्णमाचारी ने उल्लेख किया है । इसके रचयिता 'नारायण भट्टाथिरि' है । इनका जन्म नेलपुतुर में हुआ था । ये नम्बुदरी ब्राह्मण थे । इनका स्थितिकाल १५६० से १६४६ ईस्वी तक माना जाता है[1]। अतएव 'नलायनी चरित' सोलहवीं अथवा सत्रहवीं शताब्दी की रचना है । यह ग्रन्थ अप्राप्य है अतएव प्रस्तुत प्रबन्ध में इसका उपयोग नहीं किया जा सका है ।

~~दमयृंती~~ दमयन्ती परिणय चम्पू

नलोपाख्यान पर आधारित 'दमयन्ती परिणय चम्पू' नामक एक चम्पू ग्रन्थ खण्डितावस्था में उपलब्ध होता है । इसके रचयिता तथा रचनाकाल के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है[2]।यह ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित ही है । ग्रन्थ के उपलब्ध अंश में किसी भी प्रकार का विभाग नहीं किया गया परिलक्षित होता । प्रस्तुत प्रबन्ध में इस चम्पू पर नल दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से विचार किया गया है ।

१- कृष्णमाचारी : हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर,पृ०२५४-२५६
२- ,, ,, ,, पृ०५१६

नल स्तोत्र

पुण्य श्लोक महाराज नल को लक्ष्य करके रचे गए एक स्तोत्र का भी उल्लेख मिलता है[1]। दुर्भाग्यवश यह स्तोत्र अभी तक प्रकाशित नहीं हो सका है। अप्राप्य होने के कारण प्रस्तुत प्रबन्ध में आगे इसका उपयोग नहीं किया जा सका है।

इनके अतिरिक्त 'नल चरित्र' नामक तीन ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां मिलती हैं, जिनके कवि क्रमश: हितरुचि[2], नयचन्द्र[3] तथा हेमचन्द्र[4] हैं। नलोपाख्यान पर आधारित 'नल दमयन्ती चरित्र' नाम से भी दो ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां मिलती हैं, व इनके रचयिता क्रमश: ऋषिवर्धन[5] तथा विनयचन्द्र[6] हैं।

नल दमयन्ती कथा पर आधारित कथा आख्यायिका की शास्त्र निर्दिष्ट शैली में निबद्ध कोई स्वतन्त्र रचना नहीं उपलब्ध होती। सम्भवत: इसका कारण कथा के इतिवृत्त की काल्पनिकता ही हो। साहित्य के अन्तर्गत आख्यान साहित्य का भी ग्रहण हो जाता है। आख्यान साहित्य अथवा कथा-साहित्य का महत्त्व उपदेश तथा मनोरंजन की दृष्टि से ही अधिक होता है। इनका काव्यात्मक महत्त्व नगण्य अथवा बहुत ही कम होता है। आख्यान साहित्य में भी नल दमयन्ती कथा का विकास दृष्टिगोचर होता है। आख्यान साहित्य के

१- ऑफ्रेक्ट पृ० ७४ ७५

२- लिस्ट आफ मैनुस्क्रिप्ट्स इन देला उपाश्रय भंडार आन फर्स्ट फ्लोर रैट - अहमदाबाद २८(१०)

३- ,, ,, ,, ,, २८ (१०) ,,

४- ,, ,, ,, ,, ,,

५- ,, ,, ,, ,, ग्राउण्ड फ्लोर रैट - अहमदाबाद३१(१३०)

६- ,, ,, ,, भंडार आफ विमलगच्छ उपाश्रय डिस्ट्रिक्ट रैट हाजा पटेल्स पोल अहमदाबाद १६(२३)।

प्राचीनतम प्रसिद्ध ग्रन्थ 'बृहत्कथा' में यह कथा अवश्य रही होगी[1]। यह 'बृहत्कथा' तो आजकल उपलब्ध नहीं है परन्तु जैनियों के 'वसुदेव हिण्डी'[2] तथा सोमदेवकृत कथासरित्सागर[3] में जो कि बृहत्कथा के ही दो विस्तृत रूपान्तर हैं नलाख्यान विस्तार से मिलता है। गुणाढ्य की रचना का क्षेमेन्द्र ने 'बृहत्कथा मंजरी' के रूप में संक्षेप किया है। बृहत्कथा मंजरी में नल दमयन्ती कथा अत्यन्त संक्षेप में दी गयी है[4]।

कथानक

निषध देश में ललित आकृति वाला राजा नल राज्य करता था। मृगया- रसिक उसने एक बार कुछ स्वर्ण हंसों को पकड़ लिया। हंसों ने नल से कहा 'हे महीपते, हम लोग वैदर्भी दमयन्ती के केलिपात्र हैं। हमें मुक्त कर दो तो हम लोग तुम्हारा प्रिय करेंगे। यह सुनकर नल ने उन्हें बन्धन मुक्त कर दिया। तब उन पक्षियों ने दमयन्ती के पास जाकर कुछ ऐसा निवेदन किया कि साकार सौभाग्य तथा प्रत्यक्ष मन्मथ के समान वे दोनों नल और दमयन्ती परस्पर गुणवर्णन सुनकर विरह क्षाम हो गए। दमयन्ती ने पिता के वचन से राजाओं के पास दूत भेजे। स्वयंवर में राजाओं के आने पर लोकपाल भी आ गए। कन्यावरण के लिए लोलुप शक्रादि ने नारद के मुख से दमयन्ती को नल में साभिलाष जानकर नल रूप ग्रहण करके स्वयंवर में प्रवेश किया। तब उन समान रूप वालों में से दमयन्ती ने अपने बुद्धि-बल से वास्तविक नल को पहचान कर उनका वरण कर लिया। प्रसन्न होकर देवों ने उन्हें वर दिए। दमयन्ती सहित नल के अपने नगर में चले जाने पर कन्या के लोभ से द्वापर के साथ आते हुए कलि को देवों के मुख से

१- नलविलास-- प्रस्तावना

२- वही

३- क० स० सा०--लम्बक ६, अलंकार वती, तरंग ६, श्लोक २३७-४२४।
(नि०सा० प्रे० १९३०)

४- बृ० क० मं० -- लम्बक १५, श्लोक ३३१- ३७१

दमयन्ती द्वारा नल के वरण का समाचार प्राप्त हुआ । क्रुद्ध होकर कलि नल में प्रविष्ट हो गया और किसी पुष्कर नामक समान गोत्र वाले शत्रु से नल को पराजित करवा कर वन में निर्वासित कर दिया । अब नल दमयन्ती के साथ निर्जन वन में पहुंचे जहां उन्होंने वस्त्र द्वारा पक्षियों को पकड़ने की चेष्टा की । कलि तथा द्वापर से निर्दिष्ट वे पक्षी नल का वस्त्र भी ले उड़े । तब एक ही वस्त्र पहने हुए नल और दमयन्ती वनान्तर में गए जहां भूमि पर दमयन्ती के सो जाने पर कलि विमोहित नल वस्त्र काट कर जाने लगे, फिर लौट आए और फिर दुखी होकर चले गए । इस प्रकार राग एवं मोह से दोलायमान चित्त वाले राजा नल ने वनान्तर में `बचाओ, बचाओ` यह शब्द सुना । वहां नल ने कर्कोट नामक नाग का दावानल से उद्धार किया और फिर उसी के विषफुत्कार से वे विवर्ण हो गए । तब ह्रस्व होकर नल अयोध्या में ऋतुपर्ण के समीप पहुंचे । नामांकित प्राप्त करके नल वहां सूद तथा सारथ्य कर्म करने लगे । प्रबुद्ध होने पर, प्राणनाथ से वियुक्त दमयन्ती ने पाषाणों को भी द्रवित करने वाला विलाप किया । अजगर द्वारा ग्रस्त विलाप करती हुई उसको एक व्याध ने रक्षा की जिसे कामातुर देखकर दमयन्ती ने शापाग्नि से भस्म कर दिया । तब दुखी होती हुई वह बाला कुछ समय पश्चात् पिता के नगर विदर्भ में पहुंची तथा नल संगम की इच्छा से वहां एक वेणीव्रत धारण करके रहने लगी । दमयन्ती ने नैषध के अन्वेषणार्थ दूत भेजे जो एक गाथा का गान करते हुए पृथ्वी पर भ्रमण करने लगे । इस प्रकार ऋतु पर्ण के नगर में विचरते हुए एक ब्राह्मण ने नल को वही गाथा सुनायी ` मनोरथ और वस्त्र को काटकर हे प्राणेश्वर । प्रिय पत्नी को विमोहित छोड़कर तुम कहां चले गए ?` ब्राह्मण के ये शब्द सुनकर बाहुक रोने लगा और बोला --` दुष्कर्म से क्षायित वाले दैवदग्धों का अपराध करुणा पूर्ण लोग सहन करते हैं । `बाहुक के वचन सुनकर अश्रुपूर्ण नेत्रों वाले ~~दैवदग्धों का अपराध करुणा पूर्ण लोग सहन करते हैं~~ । उस ब्राह्मण ने दमयन्ती को सब वृत्तान्त सुनाया । दमयन्ती ने स्वयंवर के छल से ऋतुपर्ण को एक ही दिन में अनेक योजन दूर बुलवाया । ऋतुपर्ण ने भी अपने अश्वहृदयज्ञ सारथी बाहुक पर नल की शंका की । ऋतुपर्ण से प्रविष्ट अक्षहृदय

प्राप्त करके बाहुक ने नागाङ्क की सहायता से अपनी विरूपता का परित्याग कर दिया । तब उनके शरीर से निकला हुआ, कर्कोट के विष से दग्ध कलिविरूप कलि विभीतक वृक्ष में प्रविष्ट हो गया । इस प्रकार स्वरूप हुए नल को प्राप्त करके दमयन्ती अत्यन्त प्रसन्न हुई । इधर नल ने भी अपने नगर में जाकर द्यूत में ही पुष्कर से अपना राज्य प्राप्त कर लिया ।"

महाभारतीय नलोपाख्यान के अनुसार नल ने वन में विचरते हुए अनेक हंसों को देखकर उनमें से एक को ग्रहण कर लिया था परन्तु बृहत्कथामंजरी के अनुसार नल ने एक नहीं अनेक हंसों को पकड़ लिया[1] । महाभारतीय कथा के अनुसार वह बन्धन में पड़ा हुआ हंस नल को अपना परिचय नहीं देता परन्तु बृहत्कथामंजरी में वह नल से कहता है, --" विदर्भराज भीम की सुमध्यमा सुता दमयन्ती नाम से विख्यात है, हम उसके ही केलि-हंस हैं[2] ।" इस प्रकार से वे हंस जहां एक ओर दमयन्ती के सौन्दर्य और ऐश्वर्य का प्रतिपादन करते हैं, वहीं दूसरी ओर दमयन्ती को किसी भी पुरुष के लिए आकर्षित करना उनके लिए सहज कार्य ही है इसकी ओर भी संकेत मिल जाता है । दमयन्ती के चित्त को किसी भी ओर आवर्जित करना किसी अन्य की अपेक्षा इसके अपने केलिपक्षियों के लिए कहीं सुकर है ।

नलोपाख्यान के अनुसार हंस के वचनों को सुनने से दमयन्ती की मदनावस्था दमयन्ती की सखियों ने विदर्भपति से निवेदन की । तब दमयन्ती की सखियों से पुत्री का वृत्तान्त ज्ञात होने पर विदर्भराज ने दमयन्ती स्वयंवर में निमंत्रित करने के लिए राजाओं के पास दूत भेजे । बृहत्कथामंजरी में पिता की आज्ञा से दमयन्ती स्वयंवर में राजाओं को आमंत्रित करने के लिए स्वयं ही दूत भेजती है[3] ।

१- बृ०क०मं०, १५ लम्बक, श्लो० ३३३

२- बृ०क०मं० १५ लम्बक श्लो०३३३-३३४

३- बृ०क०मं० १५ लम्बक श्लो० २३८-२३९

नलोपाख्यान में नल के उपकारक नाग का नाम कर्कोटक मिलता है जब कि बृहत्कथामंजरी[1] में कर्कोट ।

नलोपाख्यान में उपलब्ध होने वाली अनेक घटनाओं का बृहत्कथामंजरी में उल्लेख भी नहीं किया गया है । कलि के अन्तर में जाते हुए नल द्वारा देवकौशल्य संपादन, नल द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती को वन में आश्रम और तपस्वियों के दर्शन, वन में दमयन्ती का चेदिनगर जाते हुए वणिकों से भेंट, वणिकाओं का वन्य गजों द्वारा नाश, दमयन्ती का चेदि नगर में निवास तथा कुण्डिनपुर जाते हुए बाहुक की केशिनी द्वारा परीक्षा इन सभी प्रसंगों की ओर बृहत्कथामंजरी में संकेत भी नहीं उपलब्ध होता ।

कथा सरित्सागर में नल दमयन्ती कथा पर्याप्त विस्तार से उपलब्ध होती है । --

कथानक[2]

" पूर्वकाल में कभी निषध के अधिपति नल नामक राजा हुए । विदर्भाधिपति भीम की पुत्री दमयन्ती भी विख्यात थी । एक बार वे भी अपने नगर के किसी सरोवर में क्रीड़ा करने के लिए अवतरित हुई जहां उन्होंने एक राजहंस को अपने उत्तरीय से ग्रहण कर लिया । उस दिव्य हंस ने दमयन्ती से कहा " हे राजपुत्रि! मुझे मुक्त कर दो तो मैं तुम्हारा प्रत्युपकार करूंगा । राजा नल के प्रति मैं तुम्हारे लिए कामदौत्य करूंगा ।" तब "ऐसा ही हो" यह कह कर दमयन्ती ने हंस को मुक्त कर दिया और कहा " मैं नल से भिन्न और किसी का भी वरण नहीं करूंगी ।" वहां से जाकर वह हंस शीघ्र ही निषधा में जलक्रीड़ा में प्रवृत्त नल से अध्यासित सरोवर पर जा पहुंचा । उस मनोरम राजहंस को देखकर नल ने कौतुक के लिए उसे अपने उत्तरीय की सहायता से पकड़ लिया । तब उस हंस ने नल से कहा"

१- बृहत्कथामं० १५ लम्बक, श्लोक सं० ३५२ तथा ३६८

२- कथासरित्सागर

हे राजन ! मुझे मुक्त कर दो, मैं तुम्हारा उपकार करने आया हूं । विदर्भ में राजा भीम की पुत्री दमयन्ती मेरे द्वारा तुम्हारे गुण सुनकर तुममें बद्धानुराग है उसने तुम्हें ही पति स्वीकार कर लिया है, यही बताने के लिए मैं यहां आया हूं ।' यह सुनकर नल ने हंस से कहा --' पिलगौत्तम ! मैं धन्य हूं जो मुर्तिमान मनोरथ सम्पत्ति उसने मेरा वरण किया । ऐसा कह कर राजा द्वारा मुक्त किए गए उस हंस ने सब कुछ दमयन्ती से निवेदन कर दिया । अब उत्कण्ठित दमयन्ती ने माता के मुख से पिता से नलप्राप्ति के लिए स्वयंवर कराने की प्रार्थना की । भीम ने स्वयंवर के लिए पृथ्वी पर सभी राजाओं के पास दूत भेजे । दमयन्ती के स्वयंवर के लिए इधर सब राजा और उधर नारद से यह समाचार प्राप्त कर इन्द्रादि लोकपाल भी चल पड़े । वे सभी लोकपाल, दमयन्ती-स्वयंवर के लिए प्रस्थित नल से मार्ग में मिले और उन्होंने 'पांच अमरों में से किसी भी एक को वरण करो' यह सन्देश भैमी के पास पहुंचाने के लिए नल को अपना दूत बनाया । नल के मुख से देवों का आदेश सुनकर साध्वी दमयन्ती ने उत्तर दिया --'मेरे पति नल ही हैं, मुझे त्रिदशों से कोई प्रयोजन नहीं है ।' नल ने देवों से सब वृत्तान्त जैसे का तैसा निवेदन कर दिया तब प्रसन्न होकर देवताओं ने उन्हें वर दिये । दमयन्ती स्वयंवर में इन्द्रादि लोकपाल नल-रूप धारण करके नल के समीप बैठ गए । स्वयंवर मण्डप में क्रमश: अन्य राजाओं के पास से होती हुई दमयन्ती नल के समीप आयी जहां उसने ६ नलों को देखा । दमयन्ती के सत्यबल से प्रसन्न होकर पांचों लोकपालों ने अपना रूप स्पष्ट कर दिया, इस प्रकार सत्य नल को पहचान कर दमयन्ती ने उनका वरण कर लिया। भीम ने नल और दमयन्ती का विवाह- मंगल कराया । भीम द्वारा सत्कृत होकर जाते हुए लोकपालों ने दमयन्ती के लिए आते हुए कलि और द्वापर को देखकर उन्हें दमयन्ती द्वारा स्वयंवर में नल के वरण का समाचार सुनाया । इसे सुनकर क्रोध के कारण वे दोनों नल और दमयन्ती को वियुक्त करने के लिए प्रतिज्ञा करके चले गए । भीम के भवन में सात दिन रहने के पश्चात् दमयन्ती के साथ नल निषध आ गए । समय आने पर दमयन्ती ने एक पुत्र इन्द्रसेन तथा पुत्री इन्द्रसेना को जन्म दिया । एक बार पान मद से मुषित स्मृति नल के बिना पैर प्रक्षालन के सो जाने पर

विक्रान्तेकं कलि उनके शरीर में प्रविष्ट हो गया । अब नल धार्मिक आचार का परित्याग करके क्रीडादि व्यसनों में आसक्त हो गए । नल के भ्राता पुष्कर में छिद्र प्राप्त करके द्वापर उसके शरीर में प्रविष्ट हो गया । एक बार पुष्कर के भवन में सुन्दर वृष देखकर नल ने उसे पुष्कर से मांगा । पुष्कर ने कहा --" द्यूत में मुझको जीतकर तुम इसे शीघ्र ही स्वीकार कर सकते हो । तब उस वृष के लिए दोनों में द्यूत होने लगा जिसमें निरन्तर पराजित होते हुए नल अपने हाथी, बल तथा कोष आदि हार गए । नल को किसी प्रकार से भी द्यूत विमुख होता न देखकर दमयन्ती ने दोनों बालकों को पिता के घर भेज दिया। समस्त राज्य हारे हुए नल को पुष्कर ने दमयन्ती को पण करने के लिए प्रेरित किया और नल के वैसा न करने पर उन्हें अपने देश से निकाल दिया । तब दमयन्ती के साथ विदेश जाते हुए क्षुधाक्लान्त नल वनान्तर में पहुंचे जहां सरोवर के तट पर विश्राम करते हुए उन्होंने दो हंसों को देखा । उन्हें ग्रहण करने के लिए नल ने उनपर उत्तरीय फेंका जिसे लेकर वे चले गए । इसी समय नल को दिव्य वाणी सुनायी पड़ी । "वे द्यूत ही हंस रूप धारण करके तुम्हारा वस्त्र ले गए हैं ।" अब एक ही वस्त्र धारण किए हुए दुःखी नल दमयन्ती को विदर्भ अंग आदि देशों के मार्ग समझाने लगे । सायंकाल कन्दमूल खाकर उस दम्पति ने कुश शय्या का आश्रय लिया । परिश्रान्त दमयन्ती के सो जाने पर कलिविमोहित नल दमयन्ती का उत्तरीय आधा काटकर चले गए । रात्रि समाप्ति होने पर प्रबुद्ध दमयन्ती वन में पति को न देखकर विलाप करने लगी --" हा आर्य पुत्र । तुम तो शत्रु के प्रति भी कृपापर थे, हा मङ्गल । वही तुम मेरे लिए किसके द्वारा निष्करुण बना दिये गए हो । इस प्रकार शोक करती हुई दमयन्ती पति द्वारा बताए गए मार्ग पर चल पड़ी । मार्ग में अपने रक्षक परन्तु कामातुर लुब्धक को भस्म करने के पश्चात् वह किसी वणिक्सार्थ के साथ राजा सुबाहु के नगर में पहुंची । वहां दमयन्ती को राजमहल से देखकर राजसुता ने बुलवाया तथा अपने साथ रख लिया । इधर नल और दमयन्ती के अन्वेषण के लिए भीम द्वारा प्रेषित आप्तों में से सुषेण नामक सचिव सुबाहु की राजधानी में पहुंचा ।

परस्पर पहचान कर दमयन्ती और सुषेणा रोने लगे । सुषेणा से पूछने पर देवी ने दमयन्ती को अपनी भगिनी की पुत्री के रूप में पहचाना और उसे सम्मान सुषेण के साथ विदर्भ पहुंचवा दिया । इधर भीम ने जामाता के अन्वेषणार्थ चर भेजे और उन्हें नल दमयन्ती के वृत्तान्त का अभिव्यंजक एक गाथा पढ़ते हुए भ्रमण करने का आदेश दिया ।

इधर रक्षा के लिए पुकारते हुए नाग को दूर ले जाकर नल रखने लगे । परन्तु नाग के अनुरोध करने पर वे उसे उठा कर पग गणना करते हुए दस पग जैसे ही बढ़े वैसे ही नाग ने नल का ललाट पर दंशन कर लिया । सर्प-विष के कारण नल विरूप हो गए । नाग ने नल को बताया ` हे राजन् ! मुझे कार्कोट नामक नागराज जानो । मैंने तुम्हारा दंशन गुण के लिए ही किया है ।` यह कह कर नागराज ने नल को पुन: स्वरूप प्राप्ति के लिए अग्नि शौच नामक वस्त्रयुगल प्रदान किया । नागराज के चले जाने पर ह्रस्व बाहु नाम से नल कोशलाधिपति ऋतुपर्ण के यहां सूद कर्म करने लगे । सूद कर्म और रथविज्ञान में ह्रस्वबाहु की प्रसिद्धि के विषय में विदर्भ राज के चारों में से एक ने सुनकर, उनके सामने स्वामी द्वारा निर्दिष्ट आर्या का पाठ किया । ह्रस्वबाहु द्वारा प्रदत्त उसका उत्तर चार ने विदर्भ में जाकर सुनाया । पिता से मंत्रणा करके, ह्रस्व बाहु को बुलवाने के लिए दमयन्ती ने `प्रात: काल दमयन्ती का पुन: स्वयंवर होगा` यह सन्देश ऋतुपर्ण के पास कहलवा दिया । तब ब ऋतुपर्ण के अनुरोध से कुण्डिन पुर जाने के लिए ब ह्रस्वबाह ने ऋतुपर्ण के रथ को अश्वों से संयुक्त किया । ह्रस्वबाहु सारथी के चलाने पर रथ अत्यन्त वेग से बढ़ चला । रथ के वेग के कारण मार्ग में गिरा हुआ ऋतुपर्ण का वस्त्र क्षण मात्र में अनेक ब योजन पीछे छूट गया । इसे जानकर ऋतुपर्ण ने ह्रस्व बाहु से कहा --` अंग ! मुझे रथ ज्ञान दे दो उसके बदले में मैं तुम्हें अक्ष ज्ञान देता हूं ।` यह कहकर ऋतुपर्ण ने पुर:स्थित वृक्ष के फल और पत्र गिनकर बता दिए । नल के गणना करने पर ऋतुपर्ण की बताई हुई संख्या जब ठीक निकली तो नल ने ऋतुपर्ण को रथ ज्ञान देकर अक्ष ज्ञान ग्रहण कर लिया । दूसरे वृक्ष के पास जाकर उस विद्या की परीक्षा करते हुए नल के शरीर से कलि के बाहर आकर नल को बताया । ` मैं कलि हूं, ईर्ष्या के कारण मैंने

तुम्हारे शरीर में प्रवेश किया था । इसी कारण द्यूत द्वारा तुम्हारी श्री भ्रष्ट हो गई । वन में तुम्हारा दंशन करने वाले कर्कोट के विष से तुम्हारे अन्दर स्थित मैं दग्ध हो गया ।' इतना कहकर कलि तिरोभूत हो गया । तब पहले की भांति ही तेज सम्पन्न होकर नल ने ऋतुपर्ण को विदर्भ पहुंचा दिया । दमयन्ती ने चेटी की सहायता से ज्ञात किया कि सूद ह्रस्वबाहु रथ पर कोशलेश्वर को लाया है । सूद शाला में उस सूद के देखते ही चरु में जल आ गया तथा लकड़ियां अपने आप प्रज्ज्वलित हो गयी । इस प्रकार क्षण भर में ही उसने दिव्य भोजन तैयार कर दिया । अब दमयन्ती ने उस चेटी के साथ अपने दोनों बालक ह्रस्वबाहु के पास भेजे । अपने बालकों को अंक में लेकर नल बद्ध धारा प्रवाह से देर तक रोते रहे और चेटी से बोले--' ऐसे ही मेरे बालक है जो नाना के यहां रह रहे हैं उन्हें स्मरण करके मुझे दुःख हो रहा है ।' चेटी से यह सब वृत्तान्त सुनकर दमयन्ती ने अगले दिन नल को भोजन बनाने के व्याज से अपने महल में बुलवाकर पूछा --'यदि तुम सूद रूप में राजा नल हो तो चिन्ता रूप सागर से मुझे आज पार लगाओ ।' इसे सुनकर नल ने स्वीकार कर लिया कि वे नल ही हैं और दमयन्ती के पूछने पर उन्होंने कार्कोट से मैत्री से लेकर कलिनिर्गमन पर्यन्त अपना समस्त वृत्तान्त सुनाया तथा शुचि अग्निशौच नामक वस्त्रयुगल को धारण करके अपना वास्तविक रूप प्राप्त कर लिया । अपने अभिराम रूप को प्राप्त नल को देखकर दमयन्ती किसी अनिर्वचनीय आनन्द को प्राप्त हुई । परिजनों से यह समाचार प्राप्त करके विदर्भ राज ने सहसा वहां आकर नल का अभिनन्दन किया और अपने नगर में महोत्सव कराए । महाराज भीम से सत्कृत होकर ऋतुपर्ण अपने देश चले गए । कुछ दिन वहीं रहने के पश्चात् वह श्वसुर से कुछ सेना लेकर निषधा पहुंचे जहां अक्षज्ञान द्वारा पुष्कर को विनत करके , नल द्वापर से मुक्त अनुज,राज्य,धन,दमयन्ती आदि की प्राप्ति से पूर्व की ही भांति सुखी हुए ।

महाभारतीय नलोपाख्यान में नैषध नल पहले एक हंस को कौतूहल वश पकड़ लेते हैं जो अपनी मुक्ति के लिए नल से प्रार्थना करता है और फिर

मुक्त होने पर दमयन्ती को नल में अनुरक्त करने का कार्य सम्पादन करके प्रत्युपकार करता है। उधर दमयन्ती हंस को फिर नल के पास भेजती है। कथा सरित्सागर में यह घटना एकदम विपरीत रूप में उपलब्ध होती है[1]। जलक्रीड़ा के लिए सरोवर पर गयी हुई दमयन्ती ने उत्तरीय की सहायता से हंस को पकड़ लिया। फिर वह दिव्य हंस आत्ममोचन के बदले दमयन्ती का प्रत्युपकार करने का वचन देता है[2,3]। हंस के मुख से नल के प्रति काम दौत्य संपादन की बात सुनकर दमयन्ती उसे बन्धन मुक्त कर देती है। तब वही हंस निषधा में एक सरोवर पर जा पहुंचता है जहां नल उसे अपने उत्तरीय की सहायता से पकड़ लेते हैं। अब वह नल को दमयन्ती के भावानुबन्ध के विषय में सब कुछ कह सुनाता है[14]। बात यहीं नहीं समाप्त होती, वह हंस नल का हाल पुन: दमयन्ती तक पहुंचाता है।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अनुसार हंस के वचनों को सुनकर नल में अनुरक्त दमयन्ती के कामज्वर के विषय में विदर्भराज को दमयन्ती की सखियों के द्वारा ज्ञान होता है। इस दशा में वे स्वयं दमयन्ती को प्राप्त यौवना जानकर उसके स्वयंवर का आयोजन करते हैं। कथासरित्सागर के नलाख्यान में बात कुछ भिन्न प्रकार से उपलब्ध होती है[15]। यहां दमयन्ती स्वयं ही युक्तिपूर्वक माता के मुख से पिता के पास स्वयंवर के आयोजन की प्रार्थना करती है।

महाभारतीय नलोपाख्यान में दमयन्ती की प्राप्ति के लिए लोलुप केवल इन्द्र अग्नि यम और वरुण इन चार लोकपालों के विदर्भागमन तथा दमयन्ती स्वयंवर में नल रूप धारण करके पंचनली बनाने का उल्लेख मिलता है परन्तु कथासरित्सागर में[4] पांच लोकपालों के आगमन तथा य इस प्रकार दमयन्ती

१- क०स०सा०

२- क०स०सा०

३- क०स०सा०

४- क०स०सा०

५- क०स०सा०

स्वयंवर में षण्नली के उपस्थित होने का प्रसंग है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान में जब दमयन्ती अपने सत्य के बल पर स्वयंवर मण्डप में उपस्थित पांच नलों में से वास्तविक नल को पहचान कर उनका वरण कर लेती है तब देवगण प्रसन्न होकर नल को वरदान देते हैं । किन्तु कथा सरित्सागर में लोकपाल देव दौत्य सम्पादन करके लौटे हुए तथ्यवादी नल को प्रसन्न होकर दमयन्ती स्वयंवर से पूर्व ही वरदान देते हैं[1]। नलोपाख्यान के अन्तर्गत भी लोकपाल नल को ही वरदान देते हैं तथा कथासरित्सागर में भी । देवों के कार्य में यत्न करने पर भी नल को असफलता ही मिली परन्तु उन्होंने कुछ भी छिपाया नहीं और सभी कुछ सच सच बताया इससे प्रसन्न होकर उसी क्षण देवों ने उन्हें वरदान दिए यह अधिक समीचीन प्रतीत होता है, स्वयंवर के पश्चाद वर प्रदान की अपेक्षा ।

कथासरित्सागर के अनुसार स्वयंवर में दमयन्ती को राजाओं का परिचय देने वाले उनके भ्राता है जब कि महाभारत में ऐसा कोई उल्लेख नहीं मिलता ।

महाभारतीय नल कथा के अन्तर्गत केवल कलि ही नल को राज्य और भैमी दोनों से च्युत कराने की प्रतिज्ञा करता है, द्वापर नहीं । ~~अपर~~ द्वापर कलि का सहायक होता है किन्तु कथासरित्सागर में आयी हुई नल-कथा के अन्तर्गत कलि और द्वापर दोनों ही नल को भैमी से विमुक्त करने की प्रतिज्ञा करते हैं[2] तथा आगे चलकर कलि नल में और द्वापर पुष्कर में प्रविष्ट हो जाता है[3]। महाभारतीय कथा में कलि के प्रवेश के पश्चाद भी नल में दुर्गुणों के प्रादुर्भाव का उल्लेख नहीं मिलता । पुष्कर से आह्वान प्राप्त करके वे द्यूत में प्रवृत्त हो गए यही एकमात्र उनका दुर्गुण समझ में आता है परन्तु कथासरित्सागर की कथा के अनुसार

१-क०सा०स०

२- क०स०सा०

३-क०स०सा०

तो शरीर में कलिके प्रविष्ट होते ही नल में दुर्गुणों,दुर्व्यसनों की परम्परा परिलक्षित होने लगती है वे द्यूतक्रीडा,दासियों के साथ रमण,असत्यभाषण, दिवास्वप्न,रात्रि जागरण,अकारण कोप, अन्याय से धनार्जन, सज्जनों के तिरस्कार तथा दुर्जनों के सम्मान में प्रवृत्त होने लगते हैं[1]। इसी प्रकार महाभारतीय कथा में पुष्कर नल के पास आकर उनसे कलिमय वृष के लिए द्यूत क्रीड़ा के लिए कहता है । परन्तु कथासरित्सागर में नल अपने अनुज पुष्कर के गृह में दान्त नामक सुन्दर वृष देखकर उसे पुष्कर से मांगते हैं[2]। पुष्कर नल से वह वृष द्यूत में जीतकर लेने के लिए कहता है और इस प्रकार दोनों बन्धु द्यूत में प्रवृत्त हो जाते हैं[3]।एक बात और कि महाभारत में कलि ही वृष का रूप धारण करके पुष्कर के पीछे पीछे जाता है जब कि कथासरित्सागर में ऐसा कुछ नहीं है । चूंकि कलि के कारण अन्य दुर्गुण नल में दिखाए ही जा रहे हैं इसीलिए वे वृष के लिए याचक बने वह भी उचित ही है ।

महाभारतीय नल-कथा के अन्तर्गत वन में विचरते हुए पक्षियों द्वारा नल के वस्त्रापहरण की घटना उपलब्ध होती है परन्तु वे पक्षी किस जाति विशेष के थे वे ऐसा कुछ उल्लेख वहां नहीं है । पक्षियों की संख्या अवश्य ही दो से अधिक थी[3]। कथासरित्सागर में स्पष्टरूप से उल्लेख मिलता है कि वे हंस पक्षी, थे जो संख्या में दो थे[4]। वे हंस सरोवर के किनारे पर आए[5]। नल ने उन्हें पकड़ने के लिए अपना वस्त्र फेंका जिसे लेकर वे चले गए[6]।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत सुबाहु की नगरी में पहुंची हुई दमयन्ती को राजमाता अपने पास बुलवाकर बातचीत करती है,तत्पश्चात् अपनी

१- क०स०सा०

२-क०स०सा०

३- क०स०सा०

४- इष अपश्यच्छकुनास्कांश्चित -- महाभारत

५- क०स०सा०

६- क०स०सा०

पुत्री सुनन्दा की सखी के रूप में उन्हें अपने यहां रख लेती है । कथासरित्सागर की कथा के अनुसार ~~ब~~ सुबाहु के नगर में पहुंची हुई दमयन्ती को राजसुता स्वयं बुलवाकर अपने यहां रख लेती है[१]। इसी प्रकार नलोपाख्यान में दमयन्ती को चेदिपुर में खोजने वाले ब्राह्मण का नाम सुदेव उल्लिखित है जब कि कथासरित्सागर के अनुसार सुबाहु के नगर में स्थित दमयन्ती का पता लगाने वाला सुषेण नामक सचिव था[२]। नलोपाख्यान में नल के उपकारक मित्र नाग का अभिधान कर्कोटक है तो कथासरित्सागर में कार्कोट[३]। नलोपाख्यान में विकृताकृति नल ऋतुपर्ण के यहां बाहुक नाम से अश्वाध्यक्ष बन जाते हैं । जब कि कथासरित्सागर में उनका नाम ह्रस्वबाहु मिलता है तथा वे ऋतुपर्ण के यहां सूदकर्म के लिए नियुक्त होते हैं[४]।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत वन में नल द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती के अजगर द्वारा ग्रहण, तदनन्तर किरात द्वारा दमयन्ती की ~~अ~~ अजगर से रक्षा की घटना विस्तृत रूप से वर्णित है । कथासरित्सागर में रक्षक लुब्धक को दमयन्ती द्वारा भस्म किए जाने की ओर तो संकेत मिलता है[५] परन्तु अजगर द्वारा दमयन्ती को ग्रहण किए जाने का प्रसंग नहीं है ।

इसी प्रकार महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत नल द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती को वन में एक नदी के तट पर आश्रम दृष्टिगोचर होता है जहां पहुंच कर वह तपस्वियों से वार्तालाप करती है और वे मुनि दिव्यदृष्टि से ज्ञान प्राप्त करके दमयन्ती को पति के समागम का आश्वासन देते हैं । तत्पश्चात् एकाएक वह आश्रम मुनि आदि सभी अदृश्य हो जाते हैं । कथासरित्सागर में इस सम्पूर्ण घटना की ओर कोई संकेत भी नहीं किया गया है ।

१- क०स०सा०
२- क०स०सा०
३- क०स०सा०
४- क०स०सा०
५- क०स०सा०

इसी प्रकार महाभारतीय नलोपाख्यान की कथा के अनुसार वन में भटकती हुई दमयन्ती को चेदिनगर की ओर प्रस्थित एक वणिक्सार्थ का साथ हो जाता है। अर्द्धरात्रि के समय पद्म सौगन्धिक सरोवर के तट पर विश्राम करता हुआ वह सार्थ वन्यगजों के आक्रमण से नष्ट हो जाता है। कथासरित्सागर में वणिक्सार्थ के साथ दमयन्ती का सुबाहु के नगर में जाने का तो वर्णन है[1] परन्तु वन्य करिघटा द्वारा वणिक् सार्थ के विनाश की घटना की ओर कोई संकेत भी नहीं मिलता।

महाभारतीय नलोपाख्यान में ऋतुपर्ण के यहां वार्ष्णेय तथा जीवल को सारथियों का उल्लेख मिलता है परन्तु कथा सरित्सागर में ऐसा कुछ नहीं है।

महाभारतीय कथा में ऋतुपर्ण के यहां बाहुक का पता लगाने वाले चर का नाम 'पर्णाद' उल्लिखित है जब कि कथासरित्सागर में नामोल्लेख ही नहीं किया गया। महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत पिता द्वारा नलान्वेषण के लिए भेजे हुए चरों को दमयन्ती अपना गाथा निबद्ध वृत्तान्त यत्र-तत्र सुनाने का आदेश देती है परन्तु कथासरित्सागर में दमयन्ती के पिता भीम ही चरों को वह गाथा कहते हुए घूमने का आदेश देते हैं[2]।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत पर्णाद के मुख से ऋतुपर्ण के सारथी बाहुक के विषय में सुनकर दमयन्ती माता से सलाह करती है और पिता से गुप्त रखते हुए सुदेव के द्वारा ऋतुपर्ण के पास अपने द्वितीय स्वयंवर का समाचार भेजती है[3]। इसके विपरीत कथासरित्सागर की कथा के अनुसार ऋतुपर्ण के सूद ह्रस्वबाहु के विषय में चार विदर्भ आकर भार्या से युक्त महाराज भीम, तथा दमयन्ती सभी के सामने निवेदन करता है। तब दमयन्ती पिता के साथ मन्त्रणा करने के पश्चात् ऋतुपर्ण के पास वैसा संदेश भेजती है[4]।

१- क०स०सा०

२- क०स०सा०

३- अयमर्थो न संवेद्यो भीमे मातः कदाचन ।
   त्वत्सन्निधौ नियोक्ष्ये ह सुदेवं द्विजसत्तमम् ।। म०भा०

४- क०स०सा०

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत बाहुक के अपूर्व सारथ्य से चकित होकर महाराज ऋतुपर्ण भी संख्यानविद्या में अपना कौशल-प्रदर्शन करते हैं। अब नल ऋतुपर्ण द्वारा निर्दिष्ट संख्या की परीक्षा लेते हैं तथा परस्पर अश्वहृदय और संख्यानविद्या के साथ अक्षहृदय के विनिमय का प्रस्ताव रखते हैं। इस प्रकार ऋतु पर्ण उन्हें अपनी विद्याएं सिखा देते हैं तथा स्वयं अश्व हृदय का ज्ञान नल और दमयन्ती के पुनर्मिलन के बाद प्राप्त करते हैं। कथासरित्सागर में ये क्रम उलट गए हैं। नल के सारथ्य से विस्मित ऋतुपर्ण स्वयं ही अपनी अक्षविद्या के बदले रथज्ञान सीखने का प्रस्ताव रखते हैं[१]। तत्पश्चात् वे पुरःस्थित वृक्ष के फल और पर्णों की गणना करके अपना विद्याचातुर्य प्रदर्शित करते हैं[२]। ऋतुपर्ण द्वारा निर्दिष्ट संख्या के परीक्षण के अनन्तर ऋतुपर्ण उसी समय पहले नल से रथज्ञान प्राप्त करके उन्हें अक्ष ज्ञान प्रदान करते हैं[३]।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत अक्षहृदयविद् नल के शरीर से बाहर आकर कलि अपनी दुरवस्था के वर्णन के साथ-साथ नल की शरण में आकर उनको आशीर्वाद भी देता है। जब कि कथासरित्सागर की कथा के अनुसार वह केवल अपनी दुःस्थिति का वर्णन करके तिरोभूत हो जाता है[४]।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अनुसार ऋतुपर्ण के साथ कुण्डिनपुर आए हुए बाहुक की परीक्षा दमयन्ती अपनी सखी केशिनी की सहायता से लेती है परन्तु कथासरित्सागर में चेटी की सहायता से[५]।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत कुण्डिनपुर आए हुए बाहुक की भांति भांति से परीक्षा लेने के पश्चात् दमयन्ती माता-पिता की अनुमति लेकर उन्हें अपने भवन में बुलवाती हैं परन्तु कथासरित्सागर की कथा के अनुसार दमयन्ती

१- क०स०सा०

२- क०स०सा०

३- क०स०सा०

४- क०स०सा०

५- क०स०सा०

माता पिता से मंत्रणा किए बिना ही रसोई बनवाने के छल से ह्रस्व बाहु को अपने भवन में बुलवा लेती हैं[1]।

नलोपाख्यान में दमयन्ती के सम्मुख आत्मप्रकाशन के पश्चात भी बाहुक रूपधारी नल दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर के लिए उठे हुए प्रवाद के विषय में शंका करते हैं जिसका पहले मैत्री स्वन और फिर वायु देव आकाश वाणी द्वारा समाधान कर देते हैं। कथासरित्सागर में ऐसा कोई प्रसंग सही नहीं उठता।

महाभारतीय नलोपाख्यान में दमयन्ती के भालस्थित पिप्लु का यत्र तत्र उल्लेख मिलता है, चेदिनगर में गया हुआ सुदेव दमयन्ती को उसके पिप्लु के कारण ही पहचानता है[2] तथा पिप्लु देखकर ही सुबाहु की माता दमयन्ती को अपनी भगिनी की पुत्री के रूप में पहचानती है[3]। महाभारत में जिसे इतना महत्त्व प्राप्त है, ऐसे पिप्लु का कथासरित्सागर में कोई उल्लेख नहीं मिलता।

इस प्रकार नल दमयन्ती की प्रसिद्ध कथा केवल नाटकों अथवा महाकाव्यों तक ही सीमित नहीं है, वरन् इसका बहुमुखी विकास प्राय: काव्य की सभी विधाओं में परिलक्षित होता है। यही नहीं, नल-दमयन्ती की कथा विषयक ग्रन्थ बहुत अधिक संख्या में लिखे गए हैं।

– o–

१- क०स०सा०

२- अनेन वपुषा बाला पिप्लुनाऽनेन सूचिता।महाभारत

३- भगिन्या दुहिता मेऽसि पिप्लुनानेन सूचिता । महाभारत

तृतीय अध्याय

-0-

नल - दमयन्ती कथा

का

नाट्य काव्यात्मक विकास

तृतीय अध्याय

-0-

नल-दमयन्ती-कथा का नाट्य काव्यात्मक विकास

नल और दमयन्ती की पवित्र कथा का विकास काव्य की विविध प्रणालियों में हुआ है । दृश्य काव्यकारों तथा श्रव्य काव्यनिर्माताओं की इस पवित्र कथा पर युग-युग से समान आस्था रही है । श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य में देश और काल की सीमा के सम्बन्ध में विशेष भेद है । महाकाव्यों में देश और काल की कोई मर्यादा नहीं होती,महाकाव्यकार को कथावस्तु में सरसता और रोचकता की वृद्धि के लिए अवान्तर प्रसंगों की योजना की, बाह्य जगत की विविध वस्तुओं के यथेष्ट वर्णन की तथा अपने देश और काल की भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों के वर्णन की ही नहीं, अपितु महाकाव्यगत पात्रों के चरित्र के विषय में अपनी ओर से भी कुछ कहने की पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है परन्तु रूपककार के लिए देश और काल का बन्धन होता है । एक नियत काल में ही घटनाओं की संयोजना करने के लिए उसे सम्पूर्ण कथावस्तु में से मर्मस्पर्शी और महत्वपूर्ण प्रसंगों का चयन करना होता है । रूपककार अपनी ओर से कुछ भी कहने के लिए स्वतन्त्र नहीं होता । कथा के सम्यक् विकास तथा चरित्र-चित्रण के लिए उसे उपयुक्त और संक्षिप्त रंगसंकेतों और पात्रों के कथोपकथन को ही माध्यम बनाना पड़ता है । इतनी असुविधाओं के रहते हुए भी, रस-संचार के प्रसंग में सामान्यत: दृश्यकाव्य श्रव्यकाव्य की अपेक्षा अधिक सफल होता है । रघुवंश और कुमारसम्भव को पढ़कर सहृदय कुछ काल के लिए मानसिक चिन्ताओं से ऊपर उठकर अलौकिक आनन्द का अनुभव अवश्य करता है, किन्तु नाटक द्वारा सहृदय ही नहीं अपितु सर्वसाधारण मनुष्य मात्र उस अलौकिक आनन्द

का भी आकर्षण कर सकता है । रंगमंच के भिन्न-भिन्न उपकरण, संगीत,अभिनेताओं की वेश-भूषा एवं उनका कुशल अभिनय आदि नट द्वारा अनुकूल भावों को सामाजिक के हृदय में उद्बुद्ध करने में बहुत सहायता देते हैं । फलत: सामाजिक आत्म-विस्मृत होकर अलौकिक आनन्द की चर्वणा में मग्न होता है । इसीलिए भरत-मुनि ने नाटक को 'सार्ववर्णिक् वेद' माना है[१]।

नाटकों में लोकहित और लोकरंजन की विपुल क्षमता होती है । महाकाव्यों की अपेक्षा नाटकों में सामाजिकता भी अधिक होती है,क्योंकि महाकाव्यों की भांति ये एकान्त में पठनीय नहीं होते । नाटकों में भिन्न-भिन्न शास्त्रों और कलाओं का व्यापक सन्निवेश रहता है । जैसा कि भरतमुनि ने कहा ही है कि कोई भी ज्ञान,शिल्प,विद्या,कला,योग और कर्म ऐसा नहीं है, जिसका सन्निवेश नाटक में न हुआ हो[२]।

नाटकों में काव्यशिल्प का अनुकरण जीते-जागते साधनों द्वारा सम्पन्न किया जाता है । श्रव्यकाव्यों की भांति इनमें घटनाओं का वर्णन नहीं होता,वरन् वे प्रत्यक्ष घटित होती हुई दिखाई जाती हैं । उनका उद्घाटन काव्य की भावुकता और चित्र विचित्र दृश्यविधानों में चलते-फिरते सजीव पात्रों द्वारा किया जाता है । इस प्रकार वे श्रव्यकाव्यों की अपेक्षा अधिक सरलता से सामाजिक मात्र के हृदयावर्जन में समर्थ होते हैं । इसीलिए कहा जाता है --'काव्येषु नाटकं रम्यम्' । वे श्रव्य-काव्य की अपेक्षा अधिक मनोरंजक,आकर्षक,भावाभिव्यंजक तथा विषय वैचित्र्य-सम्पन्न होते हैं । अत: उन्हें श्रव्यकाव्य की अपेक्षा अधिक जनप्रिय स्वीकार करते हुए वामन ने कहा है --' संदर्भेषु दशरूपकं श्रेय:'[३]।

इस अध्याय में केवल दृश्यकाव्यों के रूप में नल-दमयन्ती कथा के विकास का निरूपण किया जायेगा ।

१- नाट्यशास्त्र १।१२

२- नाट्यशास्त्र १।११६

३- काव्यालंकार सूत्र

`दृश्यकाव्य` वह है जो अभिनेय[1] हो और यही दृश्यकाव्य रूपक भी कहलाता है, क्योंकि इसमें अभिनेताओं तथा पात्रों का स्वरूप आरोपित किया जाता है। शास्त्रकारों ने वस्तु, नेता और रस[2] के भेद से रस पर आधारित रूपकों को दस प्रकार[3] का माना है। इन दसों नाट्य-भेदों की प्रकृति नाटक[4] ही है। उसी में वस्तु नेता या रस में परिवर्तन करने से प्रकरणादि रूपकों की सृष्टि हो जाती है। नाटक में विविध रसों का पूर्ण परिपाक पाया जाता है। यही नहीं, वस्तु, नेता तथा रस के शास्त्रनिर्दिष्ट लगभग सभी लक्षण `नाटक` में उपलब्ध होते हैं[5]।

नल-दमयन्ती-कथा के विकास का झुकाव दृश्यकाव्य में भी नाटकों की ओर विशेषरूप से परिलक्षित होता है।

नल और दमयन्ती की पवित्र महाभारतीय कथा को आधार बनाकर अनेक नाटकों की रचना करने का प्रयत्न भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न कवियों ने किया है। इस कथानक को प्रस्तुत करने वाला प्राचीनतम नाटक `नैषधानन्दम्` उपलब्ध होता है।

नैषधानन्दम्

नैषधानन्दम् नाटक में सात अंक हैं, जिनके नाम क्रमश: महेन्द्र सन्देश, दौत्य दमयन्ती दर्शन, दमयन्ती परिणय, द्यूतापहृतसर्वस्व, अनलगर्भ, दमयन्ती परिदेवन तथा (उपसं-) हार हैं। कवि ने महाभारतीय नलोपाख्यान के कथानक में अधिक परिवर्तन करने की चेष्टा नहीं की है। थोड़े-बहुत ही परिवर्तनों द्वारा कवि क्षेमीश्वर ने अपने ग्रन्थ में नवीनता लाने का प्रयत्न किया है। फिर भी श्री के० कुंञ्जुन्नी राजा[6] के साथ इतना तो स्वीकार करना ही होगा कि क्षेमीश्वर को कथानक के संगठन में अपूर्व सफलता मिली है। `नैषधानन्दम्` का लगभग सम्पूर्ण

१- साहित्य दर्पण ६।१
२- दशरूपक १।११
३- दशरूपक १।७
४- दशरूपक ३।१
५- दशरूपक ३।१
६- एनल्स आफ़ ओरियण्टल रिसर्च ५१-५२

कथानक मूलकथा के समान ही है । इस स्थिति में यहां नैषधानन्दम् की कथा देने से मूल कथा की पुनरावृत्ति मात्र होगी । इसे दृष्टि में रखते हुए यहां इस नाटक की कथावस्तु न देते हुए केवल उन स्थलों पर विचार किया जायगा, जहां पर नैषधानन्दम् का कथानक मूल कथा से भिन्न रूप में आया हुआ है ।

'नैषधानन्दम्' नाटक में प्रासंगिक कथावस्तु नहीं उपलब्ध होती । नलोपाख्यान के अनुसार स्वयंवर में जाते हुए नल के पास इन्द्रादि देव स्वयं आकर उनसे दूत बनने के लिए कहते हैं[१] परन्तु 'नैषधानन्दम्' में इन्द्र का सन्देशवाहक मानलि नल को इन्द्र का दौत्य करने के लिए तैयार करता है । इस परिवर्तन का कोई विशेष कारण नहीं प्रतीत होता है । सम्भवत: कथावस्तु में कुछ नवीनता लाने के लिए ही ऐसे छोटे-मोटे परिवर्तन किए गए होंगे । वैसे इसके द्वारा नायक की वीरता दिखाना भी नाटककार का लक्ष्य हो सकता है ।

तृतीय अंक में दमयन्ती द्वारा नल के वरण से क्रुद्ध राजागण युद्ध छेड़ देते हैं । इस युद्ध में महाराज नल विजयी होते हैं । इसी प्रकार द्यूत में पुष्कर से पराजित होने के पश्चात् नल अपनी धर्मपत्नी दमयन्ती के साथ दुर्व्यवहार में प्रवृत्त पुष्कर से युद्ध करते हैं । इस युद्ध में भी महाराज नल विजयी होते हैं । नलोपाख्यान् में उस स्थान पर नल और पुष्कर के युद्ध का कोई उल्लेख नहीं मिलता । वहां तो द्यूत में पराजित नल, पुष्कर के कटु वचनों से दुखी होते हुए दमयन्ती के साथ वन में चले जाते हैं ।[२] परन्तु नैषधानन्दम् में कलि से विमोहित चित्त वाले महाराज नल यद्यपि द्यूत में पुष्कर द्वारा पराजित हो जाते हैं तथापि अपनी पत्नी के साथ किसी का दुर्व्यवहार सहन नहीं कर सकते । अतएव उन्होंने युद्ध किया । इसके अतिरिक्त क्षेमीश्वर ने अपने नाटक में महाराज नल का बहुत ही पराक्रमी नायक के रूप में चित्रण किया है । इस अवस्था में भी पुष्कर को युद्ध में पराजित कर देना उनकी अपूर्व वीरता का सूचक है । यही नहीं, नैषधानन्दम् के अन्तर्गत महाराज नल पुष्कर के साथ युद्ध में विजयी होने पर भी उससे बलपूर्वक अपना राज्य नहीं लेना चाहते ।

१- महाभारत, वन पर्व ५१।३१

२- महाभारत, वन पर्व ५८।२-८

यहां वास्तव में नाटककार ने नायक के चरित्र को बहुत ऊंचा उठा दिया है । वे किसी से पराजित होकर उसे मनमानी दुष्टता करने की छूट नहीं देते हं । कलि से विमोहित चित्त होने के कारण वे द्यूत में अवश्य पराजित हो गए, परन्तु अभी भी अपने पराक्रम में वे किसी से कम नहीं हैं । उन्हें किसी का आदेश पालन करने के लिए राज्य को छोड़कर वन में नहीं जाना पड़ता, वे स्वयं ही अपने उच्च आदर्शों के कारण राज्य को छोड़कर वन में चले जाते हैं । अपना राज्य वे द्यूत में हारे हैं, उसे वह बलपूर्वक नहीं लेना चाहते । इतना य ऊंचा आदर्श और उसका पालन धर्मभीरुता न्यायशीलता और अनासक्ति की पराकाष्ठा है । पिता दशरथ की आज्ञा-पालन के लिए राम निस्संग भाव से वन में चले गए थे । उनके वनवास की १४ वर्षों की अवधि निश्चित थी, परन्तु यहां तो महाराज नल द्यूत में विजयी होने पर भी अपने शत्रु पुष्कर को अपना समस्त राज्य और आभूषण सौंप कर अपने आदर्शों के कारण अपनी ही इच्छा से अनिश्चित अवधि के लिए वन में चले गए । इस अवस्था में महाराज नल की अनासक्ति यदि राम से अधिक नहीं तो कम भी नहीं है ।

पंचम अंक के अन्तर्गत दमयन्ती- परित्याग के अनन्तर कुछ पग आगे बढ़ते ही नल का मूर्च्छित हो जाना नाटककार की अपनी सूझ है । नलोपाख्यान में वर्णित कथा के अनुसार महाराज नल सोच-समझ कर अपनी धर्मपत्नी का परित्याग करते हैं[1] । अत: उनका चरित्र कलुषित हो जाता है, सम्भवत: इसी से नायक की रक्षा के लिए इस घटना में ईषद् परिवर्तन कर दिया गया है । चेतना रहने पर शायद वे दमयन्ती के पास वापस लौट आते परन्तु मूर्च्छा के सामने किसी का वश नहीं चलता । इस प्रकार नायक नल के चरित्र पर कुछ भी आंच नहीं आने पाती , यद्यपि वैसे भी कलि ही उनके बुद्धि विपर्यय का कारण था ।

नलोपाख्यान के अन्तर्गत वन में दमयन्ती का परित्याग करके जाते हुए नल को ही दावाग्नि दिखायी पड़ती है, दमयन्ती को नहीं[2] , परन्तु नैषधानन्दम् में दावाग्नि के धुएं से आक्रान्त होकर परित्यक्ता दमयन्ती की निद्रा भंग हो जाती है, ऐसा वर्णन मिलता है । इस परिवर्तन का कोई विशेष महत्व नहीं परिलक्षित होता ।

१- महाभारत वन पर्व ५६।३०
२- महाभारत वन पर्व ६३।१

नलोपाख्यान में नल और दमयन्ती के वियोग के अनन्तर पहले दमयन्ती का और फिर नल का वृत्तान्त वर्णित है । परन्तु 'नैषधानन्द' में उसके विपरीत दमयन्ती को त्याग करके गये हुए महाराज नल का वृत्तान्त पहले सामने आता है और उसके बाद गर्भांक[1] के माध्यम से दमयन्ती का वृत्तान्त ज्ञात होता है । इस पौर्वापर्य विपर्यय का कारण नाट्य-रचना में सुविधा ही प्रतीत होती है । कवि ने बड़े चातुर्य से एक ही स्थान पर दमयन्ती के वन-वृत्तान्त का समावेश करके पुनरुक्तिमूलक दोष से मुक्ति पाई जाती है । नाटक-कलेवर को अनावश्यक वृद्धि से बचाया है, साथ ही दमयन्ती का वृत्तान्त बताने के साथ-साथ नल को खोजने का कार्य भी संपन्न करा लिया है । इस प्रकार से उन्होंने कथावस्तु में नवीनता के आधायकस्वरूप अपने अपूर्व बुद्धि-बल का परिचय दिया है ।

नलोपाख्यान में महाराज नल द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती एक वणिक्-सार्थ के साथ चेदि पहुंचती है[2] जो उनके मौसेरे भाई का राज्य है[3] । वहां से भी दमयन्ती अपने पति के अन्वेषणार्थ चर भेजती है, परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिल पाती है । उधर दमयन्ती के पिता विदर्भाधिपति भीम द्वारा प्रेषित सुदेव नामक ब्राह्मण दमयन्ती का पता लगाकर उन्हें विदर्भ ले जाता है फिर विदर्भ से चर भेजे जाते हैं जो बाहुक का अतापता दमयन्ती को देते हैं । अब सुदेव द्वारा ऋतुपर्ण के पास दमयन्ती के द्वितीय स्वयम्बर का समाचार पहुंचाया जाता है तथा ऋतुपर्ण तथा बाहुक विदर्भ पहुंचते हैं । नैषधानन्दम् के अनुसार चेदि में ही दमयन्ती को माता का घर है जहां रहकर दमयन्ती चरों द्वारा बाहुक के विषय में जानकारी प्राप्त करती है, तदनन्तर बाहुक के परीक्षणार्थ नटी को भेजती है जो वहां दमयन्ती के वृत्तान्त को अभिनय द्वारा प्रस्तुत करके बाहुक को चित्त-विकारों के कारण प्रच्छन्न नल समझ कर दमयन्ती के भावी द्वितीय स्वयम्बर का उल्लेख करती है । ऋतुपर्ण और बाहुक नटी के साथ चेदि पहुंचते हैं । वहीं पुष्कर को द्यूत में

१- अङ्कान्तरेव चाङ्को निपतति यस्मिन् प्रयोगमासाद्य ।
बीजार्थयुक्तियुक्तो गर्भाङ्को नाम विज्ञेयः ।।इति।।हिन्दी नाट्य दर्पण पृ०६०-६१

२- महाभारत वन पर्व ६२।४५

३- महाभारत वन पर्व ६६।१३

पराजित करके महाराज नल अपना राज्य और स्वरूप प्राप्त कर लेते हैं । नाटकीय कथा में नलोपाख्यान से जो यह परिवर्तन परिलक्षित होता है, उसका कारण नाटकीय कथावस्तु का अपेक्षाकृत संक्षिप्त होना प्रतीत होता है । कथावस्तु के संगठन और अभिनय-भूमि के विस्तार की दृष्टि से भी यह परिवर्तन महत्वपूर्ण है । नलोपाख्यान में नल और दमयन्ती का पुनर्मिलन विदर्भ में होता है, जब कि वहाँ वह चेदि में ही सम्पन्न हो जाता है ।

नलोपाख्यान की भांति[१] इस नाटक में दमयन्ती केशिनी द्वारा बारम्बार बाहुक की परीक्षा नहीं लेती । महाराज नल अपने स्वरूप-लाभ के अनन्तर दमयन्ती पर क्रोध प्रकट करते हैं तब वह अग्नि-परीक्षा द्वारा अपनी पवित्रता सिद्ध कर देती है । यह भी कथावस्तु के संक्षेप का सफल प्रयत्न है

नल विलास की कथा[२]

नलविलास का कथानक मूलकथा से बहुत भिन्न है अतएव यहाँ पर उसे संक्षेप में देना आवश्यक है ।

युगादिदेव के पूजन के अनन्तर छायापूर्ण उद्यान प्रदेश में महाराज नल अपने स्वप्न की मीमांसा कराने की इच्छा से नैमित्तिक की प्रतीक्षा करते हैं । राजा के स्वप्न की मीमांसा करके नैमित्तिक उन्हें प्रत्यूहगर्भित स्त्रीरत्न का लाभ-रूप, स्वप्न-फल बताता है । नैमित्तिक के जाने के बाद वहाँ कलचुरिपति चित्रसेन का चर लम्बोदर कापालिक उपस्थित होता है । विदूषक के झगड़े में उसकी कक्षा से वस्त्र में लिपटा हुआ लेख और एक स्त्री का चित्र गिर पड़ता है । लेख का आशय था कि मेषमुख महाराज चित्रसेन से प्रणामपूर्वक निवेदन करते हैं कि आपका मनोरथ पूर्ण होने की सम्भावना है । कोष्टक के हाथ से यह प्रतिकृति ग्रहण करें । नल-परिग्रह में करङ्कवाहिनी मकरिका स्पष्ट करती है कि वह प्रतिकृति विदर्भ कुमारी दमयन्ती की है । कापालिक को कारागार में डलवा कर महाराज नल पुन:

१- महाभारत वन पर्व ७२-७३

२- नल विलास

पुन: उस प्रतिकृति का अवलोकन करते हैं और दमयन्ती के रूप-सौन्दर्य पर अत्यधिक मुग्ध होकर वे मकरिका से यह जानकर कि दमयन्ती अविवाहिता है उसे प्राप्त कर लेने का निश्चय कर लेते हैं । महाराज अपने मित्र कलहंस को तथा विदर्भ की भाषा वेश और आचार में कुशल मकरिका को दमयन्ती के पास भेजते हैं ।

मत्तमयूरोद्यान में लम्बस्तनी को ठहरने के लिये कहकर विदर्भ से लौटे हुए कलहंस और मकरिका राजसभा में उत्कण्ठित महाराज नल को उनके मनोरथ पूर्ति का उपाय बताते हैं । महाराज नल की इच्छानुसार कलहंस दमयन्ती की तनुचारिता का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करते हैं । तदनन्तर कलहंस दमयन्ती में मिलने का वृत्तान्त सुनाते हैं । नल और दमयन्ती की प्रतिकृति लेकर कलहंस मकरिका के साथ कुण्डिन पहुंच गए । वहां किसी तरह कन्यान्त:पुर में प्रविष्ट मकरिका से नल का रूपलावण्य से अलंकृत चरितवर्णन सुनकर प्रसन्न दमयन्ती ने एक बार नल के किसी अन्य प्रशंसक से मिलने की इच्छा की । अस्वास्थ्य का नाटक रचने वाली दमयन्ती से वैधरूप में कलहंस ने भेंट की । कलहंस के नल का उज्ज्वल चरित्र वर्णन कर लेने पर विदर्भचामरग्राहिणी कपिंजला ने कलहंस को अनुरूप योग चाहने वाला कहा । कलहंस के हाथ से महाराज नल की प्रतिकृति लेकर दमयन्ती बहुत समय तक देखती रही । मकरिका ने कापालिक से प्राप्त दमयन्ती की प्रतिकृति भी उन्हें दे दी । अपने हाथों बनायी गयी अपनी प्रतिकृति को मकरिका के पास देखकर दमयन्ती ने रोषपूर्वक इसका कारण पूछा, फिर अपनी प्रतिकृति पिता के पास भेजकर तथा नल की प्रतिकृति को देवायतन में स्थापित करने का आदेश देकर कलहंस को विदा कर दिया । बाद में दमयन्ती ने मकरिका को बताया कि घोरघोष नामक कापालिक ने राजा भीमरथ को सन्देश भेजा है कि दमयन्ती कलचुरिपति की पत्नी होवेगी । इस प्रकार राजा भीमरथ भी कापालिक के प्रयत्न से अपनी पुत्री का विवाह चित्रसेन से करना चाहते हैं । इसलिए दमयन्ती ने लम्बस्तनी को अनुकूल बनाने के लिए निषधाधिपति के पास सन्देश भेजा है । महाराज नल लम्बस्तनी को सर्वांगीण कनकाभरणदान द्वारा अनुकूल बना लेते हैं । युवराज कूबर कापालिक लम्बोदर को खेलने के लिये ले जाते हैं ।

विदर्भ राजपुरुष कुरङ्गक और मुकुल के वार्तालाप से चित्रसेन लम्बोदर आदि के षड्यन्त्र के खुलने तथा विदर्भ राज द्वारा उन्हें समुचित दण्ड दिये जाने की सूचना मिलती है । इस समय लम्बोदर युवराज कूबर के साथ निषधा में वास कर रहे

हैं । अगले दिन दमयन्ती का स्वयम्वर सम्पन्न होगा जिसमें सम्मिलित होने के लिए वहां पहुंचे हुए महाराज नल को रमणीय कुसुमाकरोद्यान में ठहरने के लिए स्थान दिया गया है । दूर से गायन सुनकर महाराज नल को मकरिका के द्वारा पता लगता है कि वह कपिंजला के साथ दमयन्ती का गायन है । आम्रवृक्ष की ओट में छिप कर राजा नल दमयन्ती का सखी से विस्रब्ध आलाप सुनते हैं । कुसुमाकर उद्यान में नल के ठहरने की बात जानकर ही दमयन्ती कामदेव पूजन के ब्याज से वहां आयीं । तरुनिरूपण के बहाने सब जगह खोजने पर भी उसे कोई नहीं दिखायी पड़ा । मकरिका की सहायता से दमयन्ती और नल का मिलन हो जाता है । राजा एक पत्ते पर कुछ लिख कर कलहंस को दे देते हैं । दमयन्ती लज्जा का अभिनय करती हुई पुष्प चुनना चाहती है परन्तु महाराज नल उसका पाणिग्रहण कर लेते हैं । दोनों ही परस्पर अनुराग प्रकट कर देते हैं । राजा के आदेश से कलहंस पत्र पर लिखा श्लोक सुनाते हैं जिसका तात्पर्य है कि वे दमयन्ती की शरण में हैं । उसी समय चेटी देवी की आज्ञा से दमयन्ती को बुलाने आती है । विदूषक के प्रयत्न से दमयन्ती राजा को अगले दिन पुन: मिलने का आश्वासन देती है । तथा विदूषक को कुछ पत्ते पर लिखकर देती है जिसका अभिप्राय नल में दमयन्ती की एक निष्ठा है ।

स्वयम्बर की शोभा देखने के लिए जाते हुए महाराज भीम तथा उनके अमात्य वसुदेव के वार्तालाप द्वारा लम्बस्तनी की भविष्यवाणी कि 'दमयन्ती निषधाधिपति की पत्नी होगी' का संकेत मिलता है । साथ ही 'दमयन्ती से विवाह करने वाले का राज्यभ्रंश होगा' ऐसी घोषणा की प्रतिज्ञा तथा त्रिखण्ड भरतपति से दमयन्ती के विवाहरूपी मुनियों की भविष्यवाणी की ओर संकेत मिलता है । स्वयम्बर मण्डप में महाराज नल कुछ विलम्ब से पहुंचते हैं । कंचुकी माधवसेन घूम-घूम कर स्वयम्बर मण्डप में उपस्थित सभी राजाओं का परिचय देते हैं वहां उपस्थित काशिराज,कुंकणाधिपति, काश्मीरेश्वर, कौशाम्बीपति, अवन्तिनरेश,कलिंगाधिपति ,गौडेश्वर,माहिष्मती, भूपति, मथुराधिपति व कांचीपति को अस्वीकार करके पिता तथा वृद्ध अमात्य की प्रेरणा से दमयन्ती नल को वरमाला पहना देती है और विवाह के लिए दोनों ले जाए जाते हैं ।

कूबर से द्यूत में सर्वस्व हारे हुए राजा नल साथ चलने के लिए उद्यत कलहंस तथा विदूषक को रोकते हैं । दमयन्ती, वन के लिए प्रस्थान करते समय

मकरिका से कुण्डिन जाकर सब समाचार माता-पिता को बताने के लिए कहती है। वन की प्राकृतिक छटा का वर्णन करके महाराज नल दमयन्ती का खेद कम करने का प्रयत्न करते हैं। पिपासाकुल दमयन्ती को तिलक वृक्ष की छाया में बिठाकर जल लाने के लिए जाते हुए महाराज नल को एक आश्रम में तापस दृष्टिगोचर होता है। तापस, नल के साथ दमयन्ती को न देखकर नल के पास जाता है और राजा से उसका परिचय पूछता है। नल भूपतिचर रूप से अपना परिचय देकर उससे विदर्भ जाने वाला मार्ग पूछते हैं। वह तापस नल को समझाता है कि स्त्री बन्धन होती है। वह नल से उस दशा में श्वसुर-गृह जाने में लज्जा का प्रसंग उठाता है। इस प्रकार तापस के समझाने से नल, दमयन्ती को अकेले ही कुण्डिन भेजने का निश्चय कर लेते हैं। दमयन्ती को जल पिलाकर नल उसे विदर्भ जाने वाला मार्ग दिखा देते हैं। वहाँ लेट कर क्षण भर में ही दमयन्ती सो गई। दमयन्ती-परित्याग के निश्चय के कारण आत्म भर्त्सना करते हुए नल कृपाण से दमयन्ती का वस्त्रार्ध काट कर अपने क्रूर कर्म के कारण आत्मनिन्दा करते हैं। वे देवियों और वनवासिनी माताओं से दमयन्ती को कुण्डिन जाने वाले मार्ग पर भेजने की प्रार्थना करते हैं। अन्ततः नल दमयन्ती को छोड़कर चल देते हैं। कोई अन्य पुरुष दमयन्ती को नितान्त अरक्षित रूप से सोती हुई देखकर जगा देता है।

दमयन्ती को तथा उसके परित्याग रूप अपने जघन्य कर्म को स्मरण करके आत्म भर्त्सना के अनन्तर महाराज नल के स्वगत भाषण से बीच की कथावस्तु पर प्रकाश पड़ता है। महाराज नल को उनके पिता निषध ने सर्परूप में प्रकट होकर समयानुकूल आदेश दिया। उन्होंने नल का रूप विपर्यासित कर दिया। इस प्रकार से अनुपलक्षित रूप वाले महाराज नल, अयोध्याधिपति के सूपकार कर्म में नियुक्त हैं। राजा दधिपर्ण द्वारा बुलाए जाने पर बाहुक नामधारी महाराज नल अयोध्याधिपति दधिपर्ण, अमात्य सपर्ण और जीवलक के साथ, विदर्भ से आए हुए नटों द्वारा प्रस्तुत 'नलान्वेषण' नामक नाटक देखते हैं। गन्धार और पिंगलक दमयन्ती को पति की चिन्ता त्याग कर अचलपुर जाते हुए धनदेव नामक सार्थवाह के पास चलने का आग्रह करते हैं। दमयन्ती उनकी बातों में न पड़कर चक्रवाकों से नल के विषय में पूछती है, परन्तु उसे कोई उत्तर नहीं मिलता। व्यर्थ में ही वह हस्तिनी, हरिण और मयूर से भी वही प्रश्न करती है। दमयन्ती को अपने ही

स्वर की प्रतिध्वनि से कभी 'अभी आता हूं' ऐसे वचनों का भ्रम होता है तो कभी अपनी ही छाया देखकर नल की आकृति का भ्रम हो जाता है । नाटक को देखते-देखते राजा दधिपर्ण तथा ऋतुपर्ण का मन गर्भांक के नायक नल के प्रति घृणा से भर उठता है । वे भावातिरेक के कारण नल के लिए निन्दापरक वचन कहने लगते हैं । तभी नल अपने छद्म वेश को सहसा भूलकर नल रूप से अपना पाप स्वीकार कर लेते हैं । इसके पश्चात् ही वे अपनी भूल समझ कर उसका निदान कर लेते हैं ।

पुन: नाटक में सिंह शावक को देखकर दमयन्ती उसकी ओर अग्रसर होती है । बाहुक नल सावेग उठकर साम और उसके अनन्तर आत्मदान से मृगशावक को दमयन्ती-भक्षण में प्रवृत्ति के निवारणार्थ आगे बढ़ते हैं, परन्तु दधिपर्ण द्वारा रोक लिए जाते हैं ।

सिंह शावक दमयन्ती से विमुख होकर चला जाता है । निराश होकर दमयन्ती आम्रवृक्ष में लटक कर आत्महत्या की चेष्टा करती है । परन्तु समय से पहुंचे हुए गन्धार तथा पिंगलक उसे बचा लेते हैं ।

नाटक में दमयन्ती को आत्महत्या के लिए उद्यत देखकर नल अपना स्वरूप प्रकाशित कर बैठते हैं दधिपर्ण, बाहुक-नल से उनकी उस उक्ति का वास्तविक कारण पूछते हैं । उसी समय विदर्भ से आया हुआ भद्र नामक चर अगले दिन होने वाले दमयन्ती के स्वयम्बर का समाचार देता है । एक ही रात में बाहुक नल शतयोजन वाले मार्ग को पार कर लेने का निश्चय करते हैं ।

रथ कुण्डिन के समीप पहुंच चुका है । बाहुक अश्वों के पवन तुल्य वेग का कारण स्मरण मात्र से पिता निषध द्वारा घोड़ों का अधिष्ठित होना स्वीकार करते हैं । नगर में स्वयम्बर के विरुद्ध करुण वातावरण दृष्टिगोचर होता है । एक ब्राह्मण से पूछने पर बाहुक नल को ज्ञात होता है कि प्रात: किसी वैदेशिक के राजकुल में युद्ध करने से सहकार वृक्ष के निकट बनी हुई चिता में, दमयन्ती और उसकी समीपवर्ती तीन चिताओं में दमयन्ती का परिकर लोक प्रवेश करने वाला है ।

राजा दधिपर्ण इस अवस्था में, चुपचाप लौट जाने के लिए कहते हैं परन्तु बाहुक नल, राजा को वहीं थोड़ी देर विश्राम करने की सलाह देकर स्वयं चिता के समीप पहुंचते हैं, जहां चिता में प्रवेश करने के लिए दमयन्ती, कपिंजला,

कलहंस, सरमुख और मकरिका के साथ खड़ी है । कलहंस से पूछने पर महाराज नल को ज्ञात होता है कि निषधाधिपति की मृत्यु का समाचार सुनकर दमयन्ती चिता में प्रवेश कर रही है । कपिंजला, सरमुख, कलहंस और मकरिका-- सभी दमयन्ती द्वारा प्रज्ज्वलित चिता में पहले प्रवेश करना चाहते हैं । महाराज नल वस्त्र पहन कर अपने पिता निषध के स्मरण द्वारा स्वरूप प्राप्त कर लेते हैं । दमयन्ती को रोकने के लिए भीमरथ और दमयन्ती की माता पुष्पवती का स्वर नेपथ्य से श्रवणगोचर होता है । इसी समय नल, दमयन्ती को अपना परिचय देते हैं । महाराज नल, दमयन्ती-परित्यागरूप अपने दुष्कर्म के कारण अपनी बहुत निन्दा करते हैं । महाराज नल की मृत्यु का मिथ्या प्रवाद करने वाले `मस्मक` नामधारी तापस को महाराज नल वन में दमयन्ती परित्याग की सलाह देने वाले तापस से अभिन्न पाते हैं । वह अपना वास्तविक नाम लम्बोदर बतलाता है । वही विदर्भ से निर्वासित `घोरघोण` को कूबर के समीप ले गया था । `घोरघोण` ने `कूबर` को कपट द्यूत सिखाया, जिसके कारण `कूबर` ने नल को पराजित किया । `घोरघोण` के आदेश से ही उसने वन में महाराज नल को दमयन्ती-परित्याग की प्रेरणा दी और विदर्भ आकर `नल` की मृत्यु का प्रवाद किया । नल के पूछने पर दमयन्ती ने बताया कि वन में लता पाश काटने तक का वृत्तान्त तो नाटक द्वारा प्रदर्शित ही किया जा चुका है । उसके अनन्तर सार्थवाह मुझे अचलपुर में महाराज ऋतुपर्ण के पास ले गया । वहां से यहां आकर मैंने सुना कि दधिपर्ण का सूपकार सूर्यपाक-विद्या जानता है । यह विद्या महाराज नल को ही ज्ञात थी । अतएव नाटक के अभिनय द्वारा उसके परीक्षण के लिए कलहंस, सरमुख और मकरिका को भेजा गया था । और फिर महाराज नल को यहां बुलवाने के लिए द्वितीय स्वयम्वर का प्रवाद करके वहां पुरुष भेजा गया था ।

कलहंस के पूछने पर नल, दमयन्ती-परित्याग के अनन्तर् अपना वृत्तान्त सुनाते हैं । महापुरुष मेरी रक्षा करो । इस प्रकार कहते हुए एक अजगर को उन्होंने दावानल में पड़ा हुआ देखा । जैसे ही उन्होंने उस अजगर को दावाग्नि से बाहर निकाला, उसने दंशन द्वारा नल के रूप को विकृत कर दिया । फिर स्वयं देवता का रूप धारण करके बताया कि वे नल के पिता, महाराज निषध हैं जो

दयावश वहां उपस्थित हुए हैं । निषधदेव ने बारह वर्ष बाद नल को प्रिया दर्शन होगा ऐसी भविष्यवाणी की । तभी से नल दधिपर्ण के पास सूपकार वृत्ति करते थे ।

राजा भीमरथ व रानी पुष्पवती उपस्थित होकर चित्रसेन के षड्यन्त्र का अनावरण करते हैं । `घोर घोण` दमयन्ती की कामना करने वाले कलचुरिपति चित्रसेन का मेषमुख नामक चर है,। लम्बोदर, `घोरघोण` का शिष्य तथा चित्रसेन का `कोष्ठक` नामक चर है ।

महाराज `भीमरथ` नल को विदर्भ का राज्य देते हैं और महाराज नल अपने कपट कैतव में हारे हुए राज्य को पुन: प्राप्त करने का निश्चय करते हैं ।

नलोपाख्यान में आयी हुई नल-दमयन्ती की कथा से नल विलास की कथा में प्रचुर भेद परिलक्षित होता है । महाभारतीय नल-दमयन्ती की कथा में महाराज नल वीरसेन के पुत्र हैं[१] जब कि नलविलास में नल के पिता का नाम निषध है[२]। महाभारतीय नल के भाई का नाम पुष्कर है[३] जब कि नल विलास के नायक नल के भाई कूबर हैं[४]। सम्पूर्ण नलोपाख्यान में दमयन्ती की माता के नाम की उपेक्षा की गयी है, जब कि नलविलास के अन्तर्गत उनका नाम `पुष्पवती` उल्लिखित है[५]। दमयन्ती-परित्याग के अनन्तर महाराज नल नलोपाख्यान के ही समान अयोध्याधिपति की शरण में जाते हैं, परन्तु दोनों स्थानों में उल्लिखित अयोध्याधिपति के नामों में भेद है । महाभारतीय कथा के अनुसार अयोध्याधिपति का नाम `ऋतुपर्ण` था[६]। जब कि नलविलास नाटक में उनका नाम `दधिपर्ण` आया है[७]। इसी प्रकार महाभारतीय कथा में दमयन्ती चेदि राज्य में पहुंचती है[८] परन्तु नलविलास में इसके विपरीत वह सार्थवाह द्वारा अचलपुर में महाराज ऋतुपर्ण के पास पहुंचायी जाती है[९]। नलोपाख्यान तथा नलविलास के कथानकों की तुलना से यह स्पष्ट हो

१- महाभारत वन पर्व ५०।१
२- नलविलास पृ० ६६
३- महाभारत वन पर्व ५६।१०
४- नलविलास पृ० २६
५- नलविलास पृ० ८७
६- महाभारत वनपर्व ६३।२०-२१
७- नलविलास, पृ०६७
८- महाभारत वनपर्व ६२।४५
९- नलविलास,पृ०८६

जाता है कि इस नाटक का आधार महाभारतीय प्रख्यात नल-दमयन्ती कथा ही है। यहां यह सम्भावना की जा सकती है कि गुणाढ्य की बृहत्कथा में भी यह कथा आयी हो, क्योंकि बृहत्कथामंजरी में इसका ग्रहण किया गया है। नल-विलास की रचना के लिए महाभारतीय नल और दमयन्ती की कथा को आधार न मानकर बृहत्कथा में आयी हुई कथा को आधार माना गया हो जिसमें इसी प्रकार के नाम आए हों परन्तु यह सम्भावना उचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि सोमदेवकृत कथा सरित्सागर में आयी हुई नल-दमयन्ती की कथा महाभारतीय नल-दमयन्ती कथा के समान ही है। इस प्रकार ऐसा प्रतीत होता है कि कवि रामचन्द्र ने अपनी ओर से ही कथागत पात्रों के नामों में उक्त परिवर्तन किए हैं।

'मत्स्य पुराण'[१] तथा 'वायु पुराण'[२] में कश्यप वंश में उत्पन्न होने वाले निषध के पुत्र नल तथा दूसरे वीरसेन के पुत्र नल इन दोनों का एकत्र उल्लेख किया गया है। नल-दमयन्ती कथा के नायक महाराज नल निषधा के राजा थे और उनकी 'नैषध' उपाधि विख्यात है ही। इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए उनका सम्बन्ध वीरसेन की अपेक्षा निषध से ही अधिक समीचीन प्रतिभासित होता है। सम्भवत: इसीलिए कवि रामचन्द्र ने नलविलास में महाभारतीय नलदमयन्ती कथा को आधार बनाते हुए भी नल के पिता के नाम के सम्बन्ध में यह परिवर्तन कर दिया हो।

महाराज नल के भाई पुष्कर के नाम में परिवर्तन सम्भवत: कुबेर के पुत्र 'नलकूबर' की प्रसिद्धि से प्रभावित होने के कारण किया गया प्रतीत होता है। नल कूबर यद्यपि एक ही व्यक्ति का नाम है, परन्तु यदि इससे नल के भाई के लिए कूबर नाम की कल्पना कर ली गई हो तो कोई आश्चर्य नहीं। वैदिक तथा पौराणिक साहित्य में कहीं भी वीरसेन के अथवा निषध के पुत्र के रूप में पुष्कर का उल्लेख नहीं मिलता। यही नहीं, नल के भाई के रूप में भी पुष्कर का उल्लेख प्राचीन साहित्य में नहीं मिलता। महाभारत में ही एकाएक महाराज नल के भाई का नाम पुष्कर उल्लिखित है। महाभारतीय पुष्कर की कल्पना की अपेक्षा संभवत:

१- मत्स्य पुराण १२,५२,५६

२- वायु पुराण ८८, २०२

कवि ने नल के साथ कुबर का सम्बन्ध जोड़ना ही अधिक उचित समझा होगा । और सम्भवत: इसी कारण से नलविलास में महाराज नल को द्यूत में पराजित करने वाले का कुबर अभिधान प्राप्त होता है ।

सम्पूर्ण नलोपाख्यान में दमयन्ती की माता का नाम नहीं आया है , परन्तु कवि रामचन्द्र इस विषय में मौन नहीं रह सके । नाटक में भाग लेने वाले सभी पात्रों का नामकरण किया गया तो फिर दमयन्ती की माता की ही इस विषय में क्यों उपेक्षा की जाती ? जैसा कवि रामचन्द्र के ग्रन्थों के अध्ययन से पता लगता है, उन्हें रूढ़ियों के विरुद्ध अपनी नयी बात कहने में तनिक भी संकोच नहीं होता था । दमयन्ती की माता का नाम न देने से भी यद्यपि नाटक में कोई अपूर्णता न रहती परन्तु कवि ने अपने अभ्यास के कारण उन्हें भी अपनी ओर से एक नाम `पुष्पवती` दे दिया होगा, जिसका उपयोग नल-दमयन्ती की कथा को प्राकृत भाषा में विकसित करने वाले जैन कवियों के साहित्य में पाया जाता है ।

नल विलास की कथा के अनुसार दमयन्ती-परित्याग के अनन्तर महाराज नल अयोध्याधिपति दधिपर्ण की शरण में जाते हैं । दमयन्ती अचलपुर पहुंचती है , जहां उस समय ऋतुपर्ण का राज्य था । महाभारतीय कथा के अनुसार उस समय अयोध्या में ऋतुपर्ण का राज्य था[1] । यहां यह ध्यान देना चाहिए कि अयोध्या में उस समय इक्ष्वाकु वंश का राज्य था । इक्ष्वाकुवंश में ऋतुपर्ण की स्थिति बहुत बाद ही ठहरती है । विष्णु पुराण के अनुसार ऋतुपर्ण, भगीरथ से सातवीं पीढ़ी में हुए थे[2] । श्री जयचन्द्र विद्यालंकार ने ऋतुपर्ण को भगीरथ का छठा उत्तराधिकारी स्वीकार किया है[3] । महाराज नल की इतिहास में इतनी बाद की स्थिति संभवत: कवि को मान्य नहीं होगी । दूसरी ओर महाभारतीय नलोपाख्यान तथा कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या: नलस्य च ।

`ऋतुपर्णस्य राजर्षे: कीर्तनं कलिनाशनम् ।।` के अनुसार महाराज नल की कथा में ऋतुपर्ण की स्थिति को स्वीकार करने वाले जनविश्वास को भी

१- महाभारत वन पर्व ६३।२०-२१
२- विष्णु पुराण ४।३६-३७
३- जयचन्द्रविद्यालंकार: भारतीय इतिहास की रूपरेखा पृ० १५०

पूरी तरह से न त्यागते हुए कवि ने अपने चातुर्य से नलविलास में इक्ष्वाकु वंश के राजा का नाम दधिपर्ण तथा अचलपुर के राजा का नाम ऋतुपर्ण कर दिया होगा । इसी प्रकार महाराज नल को उनके परवर्ती वातावरण में उपस्थित करने वाले महाभारत में प्रतिपादित उनके समकालिक चेदि नरेश सुबाहु का उल्लेख ही नहीं किया होगा ।

नलोपाख्यान में आने वाली कुछ घटनाओं की नलविलास में अवहेलना की गयी है और कुछ नवीन घटनायें जोड़ दी गयी हैं । जिस नल-दौत्य[१] तथा पंचनली[२] का नलोपाख्यान में ही सूत्रपात हो गया था और जिस पर उत्तरकालीन कवियों की बड़ी कृपा रही है, यहां पूर्णरूप से उपेक्षित है । नल-दमयन्ती की शृंगारोज्ज्वल महाभारतीय कथा में नायक-नायिका के संयोग और वियोग के कारणभूत स्वर्ण हंस और कलि जैसे महत्वपूर्ण पात्रों की भी कवि रामचन्द्र ने नलविलास में अवहेलना की है । दमयन्ती के स्वयम्वर में इस नाटककार ने केवल पार्थिव राजाओं की ही उपस्थिति दिखायी है[३] । महाभारतीय कथा के समान[४] वन में महाराज नल का दंशन करने वाले कर्कोटक नाग के स्थान में यहां नल के पिता निषध को प्रस्तुत किया है[५] । इसी प्रकार पक्षियों[६] द्वारा महाराज नल के वस्त्र अपहरण की घटना भी नलविलास में नहीं आती है । नाटक की सम्पूर्ण कथा में देवताओं का अवतार कहीं भी नहीं होता । इस स्थिति में देवताओं द्वारा नल को वरदान देने का प्रसंग ही नहीं उठता । इस दशा में महाराज नल के अश्व परिचालन चातुर्य आदि अलौकिक गुणों की सम्भावना के लिए कवि ने नल के द्वारा देवरूप पिता निषध के स्मरण मात्र को कारणरूप से स्वीकार किया है[७] । इतना सब करते हुए भी नाटककार ने महाराज नल की सूर्यपाक विद्या के विषय में कोई समाधान प्रस्तुत नहीं किया जो खटकता रहता है । निश्चय ही यह विद्या वन में पिता निषध से मिलने से पहले से ही नल को ज्ञात थी अन्यथा

१- म०भा० वनपर्व ५१।३१

२- म०भा० वनपर्व ५३।१०-११

३- नल विलास चतुर्थ अंक

४- म०भा० वनपर्व ६३।१२

५- नलवि० पृ०६६

६- म० भा० वनपर्व ५८।१५

७- नल विलास पृ० ७६

दमयन्ती को उसके विषय में कैसे पता होता[1]।

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि रामचन्द्र नल-दमयन्ती की इस पवित्र कथा को लौकिक स्तर पर लाकर नाटकीय रूप प्रदान करना चाहते थे। कथावस्तु के अधिक से अधिक जितने भी अलौकिक तत्वों से वे मुक्ति पा सके उतने तत्वों एवं घटनाओं की उन्होंने प्रयत्नपूर्वक अवहेलना की है। नाटक की कथा में इन्द्रादि देवताओं का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। दमयन्ती-स्वयम्वर के प्रसंग में पंचनलों को निकाल देने के पश्चात् भी कवि को बहुत सफलता मिली है। तत्कालीन राजाओं की उस प्रसंग में कल्पना करके, उनके चरित्र-वर्णन द्वारा नाटक में पर्याप्त काव्यत्व का सन्निवेश किया गया है। नायक-नायिका का संयोग कराने का मुख्य कार्य अलौकिक हंस के स्थान पर महाराज नल के सखा कलहंस और कपिञ्जलवासिनी मकरिका द्वारा ही सम्पन्न करा लिया गया है।

विप्लवकारी अलौकिक कलि का कार्य इस नाटक में कच्चुरिपति चित्रसेन द्वारा सम्पन्न होता है। वन में महाराज नल तथा दमयन्ती के वियोग के अनन्तर होने वाले पुनर्मिलन में दमयन्ती की पवित्रता सिद्ध करने के लिए नलोपाख्यान में वायुदेव द्वारा भविष्यवाणी करने का उल्लेख है[2]। परन्तु नलविलास में सम्भवतः इस भविष्यवाणी का भी अलौकिक तत्व के रूप में बहिष्कार करते हुए कवि रामचन्द्र ने बड़ी निपुणता से घटनाओं की संयोजना की है। पति के निधन का समाचार सुनकर चिता में प्रवेश करने के लिए उद्यत दमयन्ती को देखकर महाराज नल के मन में दमयन्ती की पवित्रता के विषय में सन्देह अंकुरित भी नहीं हो सकता। इस प्रकार से घटनाओं की संयोजना करते हुए कवि रामचन्द्र को वायु द्वारा दमयन्ती की पवित्रता सिद्ध कराने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी होगी। यहाँ आश्चर्य हो सकता है कि नल तथा दमयन्ती की महाभारतीय कथा के अन्तर्गत उपलब्ध होने वाली इतनी सारी अलौकिक घटनाओं का निराकरण करते हुए भी कवि, नाग रूप में निषध के उपस्थित होने[3] नल के रूप-परिवर्तन करने[4] तथा भविष्यवाणी करने का[5]

१-दमयन्ती-- अज्जउत्तं विणा न अन्नो सुरियवागविज्जं जाणादि। नलविलास पृ०८६
२-महाभारत वनपर्व ७४।४१
३-न०वि०पृ०८७
४-न०वि० पृ०८७
५-न०वि० पृ०८७

कल्पना क्यों कर बैठे ? परन्तु निर्वहण सन्धि के प्रसंग में अद्भुत रस लाने के विचार से यह कल्पना अपना विशेष महत्त्व रखती है ।

महाराज नल तथा दमयन्ती के मिलन को चित्रित करता हुआ सम्पूर्ण तृतीय अंक कवि रामचन्द्र की उर्वर कल्पना का प्रसून है । नाटक के प्रारम्भ में महाराज नल के स्वप्न[1] तथा गर्भांक[2] की कल्पनाएं भी कवि की मौलिकता की प्रतीक हैं । कवि की इन सबसे विशिष्ट सूझ निर्वहण के पत्र-प्राप्ति की कल्पना में दृष्टिगोचर होती है ।

नलोपाख्यान के अन्तर्गत मिलने वाली नल तथा दमयन्ती की कथा के दो भाग माने जा सकते हैं । महाराज नल तथा राजकुमारी दमयन्ती के परस्पर अनुरक्त होने अथवा उससे भी पहले से लेकर दोनों के विवाह तक की कथा भाग इस कथा का पूर्वार्द्ध तथा नल एवं दमयन्ती के विवाह के अनन्तर कलि के नल में प्रवेश से लेकर परस्पर विछुड़न एवं दम्पति के पुनर्मिलन तक का कथा भाग इस कथा का उत्तरार्द्ध प्रतीत होता है । वास्तव में तो कथा के ये पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध समान नायक-नायिका होने के कारण परस्पर सम्बद्ध होते हुए भी दो पृथक-पृथक इतिवृत्त मालूम पड़ते हैं । ये एक-दूसरे से पृथक होने पर भी स्वत: पूर्ण लगते हैं ।

कवियों ने इसीलिए प्रस्तुत कथा के पूर्वार्द्ध अथवा उत्तरार्द्ध इन दोनों में से अपनी रुचि के अनुकूल किसी एक को ही आधार मान कर भी काव्य-ग्रन्थों की रचना की है । नैषध में कथा के पूर्वार्द्ध मात्र का तथा उत्तर नैषधम् में कथा के उत्तरार्द्ध मात्र का वर्णन किया गया है ।

कथा के पूर्वार्द्ध में नल तथा दमयन्ती का विवाह काव्य में साध्य हो जाता है तथा फलप्राप्ति में साधारणत: देवता विघ्नकारी होते हैं । इसी प्रकार कथा के उत्तरार्द्ध में नल-दमयन्ती का पुनर्मिलन साध्य होता है तथा कलि के कारण अनेक विपत्तियां आती हैं और नायक-नायिका का विघटन कराया जाता है ।

नल-दमयन्ती विषयक परवर्ती साहित्य के लिए महाभारतीय नलोपाख्यान ही आधार बना है[3] । चूंकि नलोपाख्यान के अन्तर्गत नल और दमयन्ती

१- न०वि० पृ०५

२- न०वि०,पृ० ६७-७९

३- द्रष्टव्य--प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का प्रथम अध्याय खण्ड--ख

का सम्पूर्ण चरित्र वर्णित है अतएव इस विषय के नाटककारों ने सामान्यतः कथा के दोनों भागों को एक ही ग्रन्थ में एक साथ ही प्रस्तुत करने की चेष्टा की है । परन्तु इसमें भी कवियों ने अपनी रुचि के अनुसार कथा के पूर्व भाग को अथवा उत्तर भाग को अधिक महत्व देते हुए उसे अधिक विस्तार से निरूपित किया है । 'नलविलास' के सात अंकों में से प्रारम्भ के चार अंक कथा के पूर्वार्द्ध को तथा शेष तीन कथा के उत्तरार्द्ध को प्रस्तुत करते हैं । इसी प्रकार 'प्रेम सुधा-नैषधम्' के सात अंकों में से प्रारम्भ के तीन अंकों में कथा के पूर्वार्द्ध का तथा शेष बाकी चार अंकों में कथा के उत्तरार्द्ध का चित्रण किया है । कहीं-कहीं कथा के इन दोनों ही भागों को समान महत्व दिया गया है । अनर्घ नल चरित्र नाटक के दस अंकों में से पांच में कथा का पूर्वार्द्ध तथा शेष पांच अंकों में उत्तरार्द्ध का चित्रण किया गया है ।

जिन ग्रन्थों में नल-दमयन्ती की सम्पूर्ण कथानात्मक कथा का ग्रहण हुआ है, कार्य के विषय में सन्देह उठ सकता है । ऐसे स्थानों में क्या नल-दमयन्ती के विवाह को फल करके माना जाए । यदि नल-दमयन्ती के विवाह को फल माना जाए तो फिर समस्या उठती है, विवाह के पश्चात् नल और दमयन्ती के विघटन के कारण । एक बार नियताप्ति के बाद कार्य अवस्था आ जाने के पश्चात् विघ्नों का आना अनुचित प्रतीत होता है । इसी प्रकार यदि नल और दमयन्ती के विवाह के पश्चात् होने वाले पुनर्मिलन को कार्य स्वीकार किया जावे तो उसके लिए नाटक अथवा महाकाव्य के प्रारम्भ में बीजन्यास किया गया नहीं दृष्टिगोचर होता । ग्रन्थ के प्रारम्भ में जो अर्थ प्रकृतियाँ , अवस्थाएं तथा संधियां मिलती हैं, वे सब विवाह रूप फल की ओर ही उन्मुख प्रतीत होती है । नल तथा दमयन्ती के विवाह को कार्य मानकर विवाह के बाद से नल तथा दमयन्ती के पुनर्मिलन तक की कथावस्तु को प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ के भाग को निर्वहण सन्धि के अन्तर्गत स्वीकार करते समय दशरूपककार द्वारा प्रस्तुत फलागम का लक्षण सामने आ जाता है । दशरूपककार ने कहा है --

'समग्रफल सम्पत्तिः फलयोगो यथोदितः'[1]

१- दशरूपक १।२२

अर्थात् समग्र फल की प्राप्ति हो जाने पर ही फलागम हो सकता है, अधूरी फल-प्राप्ति होने पर नहीं । इसे स्वीकार करते हुए प्रस्तुत प्रसंग में हम नल-दमयन्ती के विवाह को नाटक अथवा महाकाव्य का फल तो स्वीकार कर सकते हैं, परन्तु यह अधूरा फल होगा । सम्पूर्ण फल होगा, नल और दमयन्ती का विवाह और सुखपूर्वक राज्य करना । नल-दमयन्ती के विवाह रूप अप्रमुख फल का पर्यवसान मुख्य फल में हो जाता है । इस दशा में विवाह रूप अप्रमुख फल के लिए उपलब्ध होने वाली बीज बिन्दु आदि अर्थ प्रकृतियां तथा आरम्भ यत्नादिक अवस्थाएं ही सम्पूर्ण फलप्राप्ति के विषय में भी स्वीकार की जानी चाहिए ।

अन्य नाटकों अथवा महाकाव्यों में भी जहां यह समस्या उठती है, इसी प्रकार उसका भी समाधान समझा जाना चाहिए ।

अर्थ प्रकृतियां

बीज

प्रारम्भ में जिसे बहुत संक्षेप में कहा जाए और आगे चलकर जो अनेक रूप से विस्तृत हो जाए वह बीज कहलाता है[1] ।

नलविलास नाटक के प्रथम अंक में नैमित्तिक राजा नल के स्वप्न की मीमांसा करते हुए कहता है --

"देव ! प्रशस्ततमोऽयं स्वप्नः । स्त्रीलाभेन, महता प्रतापेन च फलिष्यति। किन्तु प्रत्यूह --[2] ।"

नैमित्तिक के इस कथन का ही समस्त नाटक में प्रसार हुआ परिलक्षित होता है । अतएव यहां पर बीज नामक अर्थ प्रकृति है ।

बिन्दु

अवान्तर कथा के कारण विच्छिन्न हो जाने वाली प्रधान कथा के पुनः संयोजन का निमित्त बिन्दु कहलाता है[3] ।

१- द०रू० १।१७

२- नल विलास पृ०५,   ३- द०रू० १।१७

नलविलास नाटक के प्रथम अंक में दमयन्ती विषयक कथासूत्र विच्छिन्न हो जाता है। इस दशा में --

'अहो! स्त्रीरत्नं सेयं स्वप्नदृष्टा मुक्तावली'[1]

कलहंस के इस वाक्य से संयुक्त हो जाता है अत: यहां बिन्दु अर्थ प्रकृति है।

पताका

जो प्रासंगिक कथा दूर तक चलती है उसे पताका कहते हैं[2]। दशरूपककार ने पताका का स्वरूप कुछ अधिक स्पष्ट नहीं किया है। साहित्य दर्पण में व्यापक प्रासंगिक इतिवृत्त को पताका कहा गया है। पताका नायक का अपना कोई भिन्न फल नहीं होता। प्रधान नायक के फल को सिद्ध करने के लिए ही उसकी समस्त चेष्टाएं होती हैं। गर्भ अथवा विमर्श संधि में उसका निर्वाह कर दिया जाता है[3]।

पताका के स्वरूप को ठीक-ठीक समझने के लिए उसमें प्रकरी से अन्तर समझना आवश्यक है। पताका और प्रकरी दोनों ही प्रधान नायक की कार्यसिद्धि में सहायक होते हैं परन्तु पताका नायक का अपना भी कुछ स्वार्थ होता है, जब कि प्रकरी का अपना कुछ भी स्वार्थ नहीं होता। इन दोनों में दूसरा अन्तर यह है कि पताका नायक का चरित्र प्रकरी की अपेक्षा अधिक व्यापक होता है। मुख-प्रतिमुख गर्भ तथा विमर्श इन चारों संधियों में पताका नायक का चरित्र व्यापक हो सकता है परन्तु प्रकरी का चरित्र एकदम एकदेशीय होता है[4]।

नल विलास के अन्तर्गत प्रथम अंक में कापालिक के आगमन[5] से लेकर सप्तम अंक में -- 'लम्बोदर स्वामिन्.... महाभाग त्वच्चरणप्रसाद: कृत:'[6] इस वाक्य तक व्याप्त चित्रसेन का वृत्तान्त पताका प्रतीत होता है परन्तु इसे पताका मानने में

१- नलविलास पृ०१०

२- द० रू० १।१३

३- सा० द० ६।६७-६८

४- हिन्दी नाट्य दर्पण पृ० ६८-६६

५- नलविलास पृ०७

६- न०वि०,पृ०८५

सबसे अधिक बाधा पड़ती है , इसके नायक के आधिकारिक कथा के नायक महाराज नल के विरोधी होने के कारण । पताका नायक मुख्य नायक का अनुचर,भक्त, होता है । वह उसकी कार्यसिद्धि में सहायक होता है, इस दशा में नलविलास के अन्तर्गत पताका का अभाव स्पष्ट हो जाता है ।

प्रकरी

एक देशस्थ प्रासंगिक चरित को प्रकरी कहते हैं[१] । नलविलास के द्वितीय अंक में लम्बस्तनी का वृत्तान्त[२] तथा तृतीय अंक में कुरंगक और मुकुल का संवाद[३] प्रकरी है ।

कार्य

काव्य में जो साध्य होता है, जिसके लिए सब उपायों का आरम्भ किया जाता है तथा जिसकी सिद्धि के लिए सब सामग्री एकत्र की जाती है, उसे कार्य अर्थ-प्रकृति कहते हैं[४] ।

नलविलास के सप्तम अंक में नल तथा दमयन्ती का पुनर्मिलन 'कार्य' है ।

कार्यावस्थायें

फल के लिए इच्छुक नायक द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्य की पांच अवस्था होती हैं[५] --

आरम्भ

फलप्राप्ति के लिए औत्सुक्य ही आरम्भ अवस्था कहलाता है[६] । नलविलास के प्रथम अंक में दमयन्ती की प्रतिकृति के अवलोकन के पश्चात् महाराज नल

१- द०रू० १।१३

२- न०वि०,पृ०२४-२५

३- न०वि०,पृ०२८-२६

४- सा०द० ६।६६-७०

५- द० रू० १।१६

६- द० रू० १।२०

मकरिका से दमयन्ती का परिचय प्राप्त करके कहते हैं --

'विफल एव ममावतारो जगति यदेतया सह क्रीडामत्रोपवने न विहरामि ।[1]

यहां पर दमयन्ती-प्राप्ति के प्रति नल उत्सुक हैं अत: यहां आरम्भ अवस्था है ।

यत्न

फल सिद्धि न होने पर उसके लिए किए गए त्वरायुक्त व्यापार को यत्न कहते हैं[2] ।

नलविलास के अन्तर्गत दमयन्ती को प्राप्ति की इच्छा से महाराज नल कलहंस और मकरिका को दमयन्ती के पास भेजते हैं । वे कहते हैं --

'प्रेक प्रेषणाध्येनं दमयन्त्या: पार्श्वे । इयं च मकरिका विदर्भ भाषा वेषाचार कुशला सहैव यातु[3] ।'

यहां यत्न नामक अवस्था है ।

प्राप्त्याशा

जहां प्राप्ति की आशा उपाय तथा अपाय को आशंकाओं से आच्छन्न हो, किन्तु प्राप्ति की सम्भावना हो, वहां प्राप्त्याशा अवस्था होती है[4] ।

नलविलास के अन्तर्गत द्वितीय अंक में एक ओर कलहंस से दमयन्ती को अपने में अनुरक्त जान कर तथा दूसरी ओर घोरघोण की बात जानकर फलप्राप्ति आशा तथा निराशा के बीच दोलायमान स्थिति में विद्यमान है । अत: यहां प्राप्त्याशा अवस्था है ।

नियताप्ति

अपाय के दूर हो जाने पर फलप्राप्ति का निश्चय हो जाने पर नियताप्ति अवस्था होती है[5] ।

१- न०वि०,पृ० १३
२- द०रू० १।२०
३- न०वि०,पृ० १३
४- द०रू० १।२१
५- द०रू० १।२१

नलविलास के अन्तर्गत तृतीय अंक में दमयन्ती के अनुराग के विषय में जानकर तथा दमयन्ती द्वारा अगले दिन पुन: मिलने का आश्वासन प्राप्त करके फलप्राप्ति निश्चित हो जाती है । अत: यहां नियताप्ति अवस्था है ।

फलागम

जहां सम्पूर्ण फल की प्राप्ति हो, उस अवस्था को फलयोग या फलागम कहते हैं[1] ।

नलविलास के अन्तर्गत पंचम अंक में दमयन्ती के परिणयरूप फल की तो प्राप्ति हो जाती है परन्तु यहां पर फलागम अवस्था नहीं स्वीकार की जा सकती । समग्र फल की प्राप्ति तो सप्तम अंक में दमयन्ती से वियोग के अनन्तर पुनर्मिलन के अवसर पर ही मानी जावेगी ।

सन्धियां

जब बीज बिन्दु आदि अर्थ प्रकृतियां क्रम से आरम्भ, यत्न आदि अवस्थाओं से मिलती हैं तो क्रमश: मुख,प्रतिमुख,गर्भ, विमर्श तथा उपसंहृति ये पांच सन्धियां होती है ऐसा धनंजय का मत है[2]। परन्तु भरत से सन्धियों को स्पष्ट रूप से इतिवृत्त का भाग माना है[3]। विश्वनाथ ने भी नाटकीय प्रारम्भ आदि पांच अवस्थाओं के सम्बन्ध से होने वाले इतिवृत्त के पांच विभागों को क्रम से मुख,प्रतिमुख आदि पांच सन्धियां माना है[4]। इस प्रकार सन्धियां नाटकीय कथावस्तु के विभाग हैं । शास्त्रकारों ने एक प्रयोजन में अन्वित अर्थों के अवान्तर सम्बन्ध को सन्धि कहा है[5]।

१- द० रू० १।२१

२- द० रू० १।२२-२३

३- नाट्यशास्त्र

४- यथासंख्यमवस्थाभिराभिर्योगात्तु पंचभि: । पंचधैवेतिवृत्तस्य भागा: स्यु: पंचसंधय:
-- साहित्य दर्पण ६।७४

५- द० रू० १।२३

धनञ्जय बीज अर्थ प्रकृति तथा आरम्भ अवस्था के समन्वय में मुखसन्धि मानते हैं[1]। मुख सन्धि में विविध रसों को उत्पन्न करने वाली बीजोत्पत्ति मिलती है[2]।

प्रतिमुख सन्धि में किसी स्थान पर बीज कुछ-कुछ लक्ष्य होता है और कहीं अलक्ष्य। इस प्रकार से इसमें बीज उद्भिन्न होता है[3]।

जब बीज लक्ष्य होकर नष्ट हो जाए और फिर उसका पुन: पुन: अन्वेषण किया जाये उस अवस्था में गर्भ सन्धि होती है[4]।

नाटक में अवमर्श सन्धि उतने स्थान में होती है जहां क्रोध से, व्यसन से या फिर विलोभन से फल प्राप्ति के विषय में पर्यालोचन किया जाता है[5]। गर्भ सन्धि के द्वारा जब बीज पूर्णरूप से उद्भिन्न हो जाता है तब अवमर्श सन्धि होता है।

नाटक में निर्वहण सन्धि उतने स्थान में प्रयुक्त मानी जाती है, जहां नाटक में यत्र-तत्र बिखरे हुए बीजादिक अर्थों को एक प्रयोजन के लिए एकत्र किया जाता है[6]।

मुख सन्धि

नल विलास के प्रथम अंक में --`ततः प्रविशति राजा कलहंसादिकश्च परिवारः`[7] इस निर्देश से प्रारम्भ होकर अंक की समाप्ति-पर्यन्त मुख सन्धि का प्रसार है।

प्रतिमुख सन्धि

द्वितीय अंक में बीज ईषत् उद्भिन्न होता है परन्तु `घोरघोणेन च भीमरथाय सन्दिष्टम्, यथेयं दमयन्ती कलचुरिपतेर्भार्या भविष्यति`[8] इस वाक्य में

१- द० रू० १।२५
२- द० रू० १।२४
३- द० रू० १।३०
४- द० रू० १।३६
५- द० रू० १।४३
६- द० रू० १।४८-४६
७- न० वि०, पृ० ३
८- न० वि०, पृ०२२

अलक्ष्य हो जाता है । इस प्रकार द्वितीय अंक के इतने अंश में प्रतिमुख सन्धि मान सकते हैं ।

गर्भ सन्धि

इसके पश्चात् 'मुषिताः स्मः'[1] इत्यादि वाक्य से लेकर तृतीय अंक में 'इति प्रणम्य निष्क्रान्तौ'[2] इस निर्देश तक गर्भ सन्धि है ।

अवमर्श सन्धि

तृतीय अंक में 'अहो ! कान्तावतार व्यतिकरपरङ्गत्परिभोगनल्लिं जगत्'[3] इस वाक्य से प्रारम्भ होकर सप्तम अंक में 'नूणं मम वारिदं तादो अम्बा च समागच्छदि । ता लहुं पविसेमि'[4] इस वाक्य तक अवमर्श सन्धि मिलता है ।

निर्वहण

'येनाकस्मात् कठिनमनसा....'[5] इत्यादि महाराज नल के वाक्य से लेकर ग्रन्थ की समाप्ति पर्यन्त निर्वहण सन्धि है ।

१- न० वि० पृ० २३

२- न० वि०, पृ० २६

३- न० वि०, पृ० २६

४- न० वि०,पृ० १९८४

५- न० वि०, पृ० ८४ ७।८

६०

'नलचरित्रम्' का कथानक

इस नाटक की कथा तो नलोपाख्यान से बहुत भिन्न है । अत: यहां पर उसे संक्षेप में देना आवश्यक है ।

महाराज नल स्वप्न में माया के सदृश किसी वधू के दर्शन से कामव्यथा से पीड़ित हैं । वे विदूषक को बताते हैं कि वन में उन्होंने एक हेम हंस पकड़ लिया था । अवरुद्ध होने के कारण उसकी करुणा-दशा देखकर उन्होंने उसे मुक्त कर दिया । जाते-जाते उसने स्वप्न में देखे हुए रत्न को सुलभ बनाकर राजा का प्रत्युपकार करने का अपना निश्चय कह सुनाया । स्वप्न में दृष्टिगोचर होने वाली मदनमाया का परिचय प्राप्त करने के लिए उत्सुक महाराज नल विदूषक के अनुरोध से उसका चित्र बनाने के लिए तत्पर हो जाते हैं ।

विदूषक राजा के आदेश से चित्र सम्भार लाने के लिए जाता है । इसी बीच महाराज नल अपने को परिश्रान्त कह कर दर्शनार्थ आए हुए पौरजानपदों को लौटा देते हैं । केवल 'सत्याचार्य' को ठहरने का आदेश देते हैं । देवी की प्राणप्रिया, 'कलावती' के साथ विदूषक चित्र सम्भार लाता है ।

भयभीत राजा के बहाने बनाने पर भी कलावती देवी से सब कुछ निवेदन कर देने का भय दिखा कर चली जाती है । महाराज नल 'फलक' पर उस मदन माया के चित्रालेखन के अनन्तर दैवज्ञ सत्याचार्य को बुलवा कर उस वधू का परिचय पूछते हैं । सत्याचार्य गणना करके बताते हैं कि वह 'वकार' से प्रारम्भ होने वाले जनपद 'विदर्भ' या 'विराट' की राजकुमारी है । देवताओं द्वारा प्रार्थित होने पर भी सप्तद्वीपाधिपति ही उसका पति होगा । विवाह के पूर्व और पश्चात् भी विघ्न बहुत होंगे । इसके अतिरिक्त स्फुट वाणी वाला कोई पक्षी इसी समय उसका दौत्य-कर्म सम्पन्न करेगा ।

वात्स्याचार्य के चले जाने पर महाराज नल खिन्न होते हुए चित्त के विनोदनार्थ उपवन की प्राकृतिक छवि का निरीक्षण करते हैं । इसी बीच विदर्भ में महाराज भीम की भगिनी दमयन्ती के पास से भगवती सरस्वती द्वारा प्रेषित वह हेम हंस महाराज नल के पास उतरता है । वह हंस महाराज नल के लिए भगवती सरस्वती का पत्र देता है । पत्र का आशय था कि --

'अनुपम लावण्यमयी दमयन्ती का अनुरूप पति के साथ सम्बन्ध कराने के लिए पितामह ब्रह्मा से आदेश प्राप्त करके देवी सरस्वती दमयन्ती के समीप निवास कर रही है । देवी सरस्वती ने पत्र द्वारा महाराज नल को उसके अनुरूप आचरण करने के लिए आदेश दिया । हंस महाराज नल के कान में चुपचाप समझाता है कि किस प्रकार उन्हें अनुरूप आचरण करना चाहिए ।

वाचस्पति के सम्भाषण से प्रकृत्या कामुक महेन्द्र को, दमयन्ती की प्रशंसा करके, उसकी ओर प्रवृत्त कराने के नारदीय प्रयत्न की सूचना मिलती है । विदर्भ नगर का वृत्तान्त ज्ञात करके वापस आए हुए विश्वावसु से वाचस्पति वार्तालाप करते हैं -- विदर्भ में सरस्वती देवी निवास कर रही हैं । उन्होंने नल के पास हेम हंस द्वारा सन्देश भेजा है कि कुण्डिन नगर के बाह्योद्यान में कुल देवता की आराधना के व्याज से वे नल से दमयन्ती का मिलन कराएंगी । विदर्भ के राजा भीम दमयन्ती का स्वयम्वर कराएंगे ।' वे अप्सराओं द्वारा दमयन्ती की चित्तवृत्ति को इन्द्र के प्रति उन्मुख करवा कर एक तो अत्यधिक पराक्रमी नैषध से वैर नहीं मोल लेना चाहते, और दूसरे, नैषध में आसक्त दमयन्ती को इन्द्र में अनुरागिणी बना पाना इस प्रकार से सम्भव भी नहीं प्रतीत हो रहा था । इस प्रकार विचार करके वे दौत्य-कर्म में महाराज नल के ही विनियोजन का निश्चय करते हैं । रथस्थ इन्द्र कैलास, वाराणसी, प्रयाग और विन्ध्यगिरि से होते हुए कुण्डिनपुर में पहुंच कर बाह्योद्यान में ही रथ से उतर जाते हैं । नल के सन्देशवाहक भद्रमुख के रूप से विश्वावसु अपना परिचय देकर दमयन्ती की दासी से नल में दमयन्ती के गाढानुराग का अनुमान कर लेते हैं । अपने प्रति इन्द्र की कामना को जानकर नल से अपने विवाह में विघ्न की आशंका के कारण समस्त आभूषणों का परित्याग करके दमयन्ती को पल्लव-शय्या

पर भी कुछ नहीं मिल रहा है । चम्पक वन में इन्द्र नल के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं ।

इन्द्र और विश्वावसु का छलपूर्वक दमयन्ती वृत्तान्त जानने का रहस्य दमयन्ती के समक्ष उद्घाटित हो जाता है । महाराज नल प्रत्यक्षरूप से दमयन्ती को देखते हैं और पहचान लेते हैं । दमयन्ती सखियों से वार्तालाप में नल के प्रति अपने चित्ताभिनिवेश को स्पष्ट करती है । नल से मिलने के लिए व्याकुल दमयन्ती का मदनातंक और भी प्रबल हो जाता है, भगवती सरस्वती के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए महाराज नल दमयन्ती की दुरवस्था देखकर प्रकट होना ही चाहते हैं कि वहां सावित्री के साथ देवी सरस्वती आती है । भगवती सरस्वती दमयन्ती को गौरी के मन्दिर में ले जाती है, देवी सरस्वती और दमयन्ती दोनों ही गौरी को प्रणाम करती हैं । महाराज नल वृक्ष के पीछे से ही गौरी को प्रणाम करते हैं । अपने सैनिकों के निवारणार्थ इसी समय विदूषक को भेजकर महाराज नल भगवती सरस्वती आदि के सम्मुख प्रकट होते हैं । ताम्बूल देने के प्रसंग में देवी सरस्वती दमयन्ती का हाथ महाराज नल के हाथ में देकर सावित्री के साथ जैसे ही जाने के
इन्द्र महाराज नल की खोज रहे हैं, पर आज कल
लिए उद्यत होती है, वैसे ही विदूषक आ जाता है । विश्वावसु के साथ भगवती सरस्वती महाराज नल को इन्द्र से मिल आने का आदेश देकर दमयन्ती को भी अपने साथ अन्त:पुर में ले जाती है ।

महाराज नल को राज्य से बाहर गया हुआ जानकर पुष्कर नामक उनके दायाद ने नल के राज्य में अत्याचार प्रारम्भ कर दिया है । अमात्य कामन्तक ने नल के पास सन्देश भेजकर सेनापति 'चण्डसेन' को बुलवा लिया ।

महाराज नल को अपना आसन देकर इन्द्र ने विविध रूप से उनकी प्रशंसा की । तदनन्तर विश्वावसु ने महाराज नल की स्तुति करके इन्द्र की इच्छा व्यक्त की । दूत कर्म द्वारा इन्द्र के साथ दमयन्ती की संघटना कराने का कार्य महाराज नल को सौंपा गया । केवल सन्देश-कथन का कार्य स्वीकार करने वाले महाराज नल को इन्द्र तिरस्करिणी विद्या के प्रभाव से अन्त:पुर में अदृश्य रूप से प्रवेश कर सकने में समर्थ बना देते हैं ।

इन्द्र का सन्देश दमयन्ती को सुनाने के लिए अन्तःपुर द्वार पर तिरस्करिणी से आच्छन्न नल को, सावित्री अपने माहात्म्य से देख लेती है, और भैमी के नाम से देवी ~~सरस्वती~~ सरस्वती का सन्देश सुनाती है । पिता के पास विचित्र पट पर आलिखित नल के चित्र के दर्शन के समय से लेकर दमयन्ती परवश हो चुकी है । यदि नल से उसका परिग्रह न हुआ तो उसकी (दशमी दशा) मृत्यु निश्चित है । चारमुख से महेन्द्र और नल के संवाद को जानने वाली भगवती सरस्वती ने महाराज नल को दमयन्ती से महेन्द्रसन्देश कहने के लिए मना किया । भगवती सरस्वती के आदेश को स्वीकार करके प्रतिज्ञा-पालन न कर पाने के कारण विलज्जित होते हुए महाराज नल महेन्द्र के कार्य की अपूर्णता उनसे निवेदन करने के लिए विदूषक को महेन्द्र के पास भेजते हैं । महाराज नल को महेन्द्र का क्रोधपूर्ण लेख प्राप्त होता है जिसमें महेन्द्र द्वारा महाराज नल के प्रति उचित आचरण की धमकी दी गयी थी । देवी सरस्वती के मुख से नल के स्वप्न दर्शन से लेकर सावित्री संवाद तक के समस्त वृत्तान्त को जानकर उपक्रान्त स्वयंवर और महेन्द्र की भी उपेक्षा करके प्रभात-काल में दमयन्ती से नैषध का विवाह कराने का विदर्भराज ने निश्चय किया ।

भगवती सरस्वती के पास जाना होगा अथवा विदर्भ पति की प्रतीक्षा करनी होगी यह जानने के लिए विदूषक भगवती सरस्वती के पास जाता है ।

महाराज नल का दमयन्ती से विवाह हो गया । सरस्वती विश्वास के कारण खिन्न दमयन्ती के मनोविनोदनार्थ महाराज नल प्रयत्नशील हैं । महाराज भीम ने बालकों के चूडाकर्म होने तक भगवती सरस्वती को रोक लिया । ~~कौशिक दम्पति की कामक्रीडा देखते हैं ।~~ उद्यान में पांच-छः चरणन्यास से ही परिश्रान्ता दमयन्ती को महाराज नल अंक में सुला लेते हैं, दमयन्ती दुःस्वप्न देखती है कि महाराज नल उन्हें अरण्य में एकाकिनी छोड़कर चले गए हैं, महाराज नल दमयन्ती को जगा देते हैं और दोनों अन्तःपुर में सखियों के पास जाते हैं ।

भद्रबुल और कामन्तक वार्तालाप कर रहे हैं । राजा पुष्कर और शतक्रतु में मैत्री और संक्रिया सम्बन्ध स्थापित हो चुका है । राजा पुष्कर की ओर से बहुत शीघ्र ही आक्रमण की सम्भावना है । अमात्य कामन्तक को एक राजपुरुष जनपद में होने वाले क्षोभ की सूचना देता है । कामन्तक, जनपद में होने वाले क्षोभ का कारण पता लगाने के लिए सारङ्गक को आज्ञा देते हैं ।

नलोपाख्यान में आयी हुई महाराज नल और दमयन्ती की कथा के पूर्वार्द्ध मात्र का चित्रण `नलचरित्रम्` नाटक के उपलब्ध भाग में प्राप्त होता है । `नलचरित्रम्` में महाभारत के अन्तर्गत आयी हुई नल-दमयन्ती की कथा को परिवर्तनों द्वारा नवीनता लाकर उपन्यस्त किया गया है । नाटकीय कथावस्तु में भगवती सरस्वती देवी की अवतारणा विशेष महत्व रखती है । महाभारतीय नल-दमयन्ती की कथा में प्रत्युपकार मात्र के लिए नल और दमयन्ती का संयोग कराने में हैमहंस की तत्परता दृष्टिगोचर होती है[1]। परन्तु यहां वह हंस भगवती सरस्वती द्वारा इस कार्य में नियुक्त किया गया है[2]। भगवती सरस्वती को पितामह की ओर से दमयन्ती की सुयोग्य वर से संघटना कराने का कार्यभार दिया गया है[3]। वे दमयन्ती के समीप रहकर नैषध नल को ही दमयन्ती के योग्य समझती हैं । वे स्वप्न में नैषध नल को दमयन्ती का दर्शन कराती हैं[4]। इस प्रकार यहां नल के चित्तानुराग का कारण महाभारतीय गुण श्रवण[5] से भिन्न स्वप्नदर्शन है । महाराज नल स्वप्न में दृष्टिगोचर होने वाली प्रिया का चित्र बनाते हैं[6]। यह प्रसंग भी महाभारतीय नल-दमयन्ती कथा में नहीं आया है । नाटक में इस नूतन घटना के समावेश का कारण `शाकुन्तलम्` में दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला के चित्र-निर्माण की कल्पना का प्रभाव भी हो सकता है । सम्भवत: नायक को चित्रकलाविद् रूप से उपन्यस्त करके उनके चरित्र में एक गुण की वृद्धि मात्र कवि का प्रयोजन रहा हो ।

१- म०भा० वनपर्व ५०।२१
२- न० च० पृ० २७
३- न० च० पृ० ३०
४- न०च० पृ० ६-७
५- म०भा० वनपर्व ५०।१७
६- न० च० पृ० १८

सम्पूर्ण तृतीय अंक जिसमें गौरी पूजन के व्याज से दमयन्ती को उद्यान में लाकर भगवती सरस्वती नल और दमयन्ती का मिलन कराती है, कवि की मौलिकता का प्रतीक है। सम्पूर्ण नाटक में तृतीय और पंचम अंक ही संयोग शृंगार के स्थल हैं। पंचम अंक अन्य अंकों की अपेक्षा बहुत ही छोटा है। कवि की लेखिनी संयोग-शृंगार पर कम ही उठी है। तृतीय अंक में भी नल से प्रयत्नपूर्वक दमयन्ती का मिलन सम्पन्न कराते ही महेन्द्र द्वारा महाराज नल के अन्वेषण का प्रसंग उपस्थित हो जाता है[1]। जो भी हो, इस अंक के रूप में कवि की कल्पना सुन्दर बन गयी है।

महाभारतीय नल-दमयन्ती कथा में महाराज नल इन्द्र के दौत्य कर्म सम्पादन की स्वीकृति देकर उसका भरसक निर्वाह करते हैं[2]। इस प्रकार महाभारतीय नल का चरित्र अधिक उज्ज्वल हो उठता है। परन्तु 'नल चरित्रम्' में नायक नल महेन्द्र का दौत्य-कार्य सम्पन्न करने का वचन देकर भी कालान्तर में उससे विमुख हो जाते हैं[3]। एक ओर महेन्द्र को दिया हुआ वचन है तो दूसरी ओर सर्वथा उपकारिणी भगवती सरस्वती का आदेश। महाराज नल ने यद्यपि अनेक बार देवासुर संग्राम के प्रसंग में महेन्द्र की सहायता की है, फिर भी उन्हें दम्भ नहीं है, वे महेन्द्र का सम्मान करते हैं। महेन्द्र को दिए गए वचन के अनुसार वे अन्तःपुर के द्वार तक जाते हैं परन्तु इन्द्र की तिरस्करिणी विद्या का प्रभाव सावित्री के आगे स्थिर न रह सका। महाराज नल को पहचान कर सावित्री उन्हें भगवती सरस्वती का आदेश सुनाती है। अपनी ओर से महाराज नल ने प्रतिज्ञा-पालन में कोई कसर नहीं छोड़ी, परन्तु बात जब भगवती सरस्वती के आदेश से आ टकरायी और तब जब कि महेन्द्र का वही सन्देश जो दमयन्ती को सुनाने जा रहे थे, दमयन्ती पहले ही सुन चुकी थी, नायक नल का अपनी प्रतिज्ञा पर हठ करना अनुचित था। दमयन्ती तक महेन्द्र का सन्देश न पहुंचा कर भी नायक का चरित्र कलुषित नहीं होता। उनके पुण्यश्लोकत्व पर कोई आंच नहीं आने पाती। यही कवि की निपुणता है।

१- न०च० पृ० ८१
२- महाभारत वनपर्व ५२
३- न० च० चतुर्थ अंक

महाभारतीय नल-दमयन्ती कथा में चारों लोकपाल दमयन्ती-परिग्रह की कामना करते हैं[1]। परन्तु प्रस्तुत नाटक में इन्द्र के इतर अग्नि वरुण और यम की उपेक्षा की गयी है। नलोपाख्यान में दमयन्ती स्वयंवर का वर्णन बड़ी धूमधाम से किया गया है[2] परन्तु उसके विपरीत `नलचरित्रम्` में दमयन्ती के स्वयंवर की भी अवहेलना की गयी है। भगवती सरस्वती के द्वारा नैषध के स्वप्न से लेकर सावित्री से नल के वार्तालाप तक का अर्थात् नल और दमयन्ती के परस्पर प्रेम तथा उसमें भगवती सरस्वती के सक्रिय ~~मदन-का~~ प्रयत्न का वृत्तान्त जानकर विदर्भ राज स्वयंवर की उपेक्षा करके नल-दमयन्ती का परिणय सम्पन्न करा देते हैं[3]। इस तरह जब स्वयंवर चित्रण का ही अभाव हो गया तो पंचनली का प्रसंग ही नहीं उठता। इस दशा में अग्नि, यम और वरुण को कथावस्तु में स्थान देकर पात्रों की संख्या में वृद्धि करना अनावश्यक ही था। महाभारतीय नल-दमयन्ती की कथा में स्वयंवर में प्रसन्न होकर सभी लोकपाल महाराज नल को वरदान देते हैं[4]। वे वर दान ही पुण्यश्लोक नल के चरित्र में अधिकांशतः अलौकिक गुणों के मूल कारण बनते हैं। `नल चरित्रम्` में नायक नल के चरित्र को अलौकिक गुणों से अलंकृत करने में कवि का अभिनिवेश नहीं है। महाराज नल के अलौकिक गुणों का प्रयोजन कथा के उत्तरार्द्ध में अधिक है। कवि ने इस कथा के उत्तरार्द्ध का तो स्पर्श ही नहीं किया है। अतएव नाटक के नायक का चरित्र लौकिक गुणों से ही विभूषित किया गया है। जब सूर्यपाक विज्ञान आदि अलौकिक गुणों का सन्निवेश कवि को कराना ही नहीं था तब नाटक में अग्नि वरुण और यम इन तीनों देवों द्वारा दमयन्ती की कामना का प्रसंग ही नहीं उठाया गया। महाभारतीय कथा में प्रसन्न होकर वरदान देने वाले महेन्द्र के विपरीत यहां महेन्द्र का चरित्र प्रतिनायक के रूप में चित्रित किया गया प्रतीत होता है। दमयन्ती प्राप्ति के विषय में निराश होकर महेन्द्र उनकी प्रार्थना को स्वीकार करके भी कार्य-सिद्धि न कर पाने

१- म०भा० वनपर्व ५१।२४
२- म०भा० वनपर्व ५४।१-४२
३-न० च०, पृ० १०५
४- म०भा० वनपर्व ५४-३५

वाले, नैषध नल पर क्रुद्ध होकर उनके वैरी, दायाद, पुष्कर से मैत्री कर लेते हैं।[१]

महाभारतीय नल-दमयन्ती कथा में विघ्न का कारण कलि होता है, जब कि प्रस्तुत नाटक में कलि का कहीं नामोल्लेख भी नहीं है। दुर्भाग्यवश यह नाटक अपूर्ण ही मिलता है। नाटक के उपलब्ध अंश को देखने से यही आभास होता है कि कवि ने सम्भवत: कलि के स्थान पर इन्द्र द्वारा ही नल पर विपद् भार लादने का विचार किया हो।

महाभारतीय नल-दमयन्ती की कथा में महाराज नल की दमयन्ती के अतिरिक्त किसी अन्य पत्नी का उल्लेख कहीं भी नहीं मिलता। परन्तु `नलचरित्रम्` नाटक में नल की दमयन्ती से भिन्न किसी पत्नी की ओर संकेत मिलता है।[२] इस नवीन कल्पना की सहायता से कवि नीलकण्ठ कथावस्तु में न तो अधिक चारुता ही ला सके और न इसका कुछ अन्य प्रयोजन ही समझ में आता है। इसी प्रकार कवि नीलकण्ठ ने इस नाटक में दमयन्ती को विदर्भाधिपति भीम की भगिनी के रूप में प्रस्तुत किया है।[३] जब कि साहित्य में अन्यत्र कहीं भी ऐसा उल्लेख नहीं मिलता है। यह कवि नीलकण्ठ का भ्रम ही प्रतीत होता है। चतुर्थ अंक में दमयन्ती के लिए `भैमी` शब्द का व्यवहार इस बात को और भी पुष्ट करता है।[४]

पंचम अंक में दमयन्ती का दु:स्वप्न[५] और छठे अंक में कुछ राजनीतिक चर्चा कवि की अपनी सूझ है।

अर्थप्रकृतियां

बीज

`नलचरित्रम्` नाटक के प्रथम अंक में महाराज नल तथा विदूषक के सम्वाद में विदूषक का वाक्य बीजगर्भित है।

१- न०च० ६।४
२- प्रत्यूष इति प्रथमं प्रतिबुद्धा अन्त:पुर गच्छन्ती देव्यैव निद्राकलुषलोचनेन लया दृष्टा, सैव ते मदनमाया संवृत्ता।-- नलचरित्रम् पृ०१०
कलावती--भवतु देव्यै निवेदयिष्यामि-- नल चरित्रम्, पृ०१६
विदूषक-- देवीए कोपे, नलचरित्रम् पृ०१६
३- राजा -- कथं प्रियसुहृदो भीमस्यैव स्वसा तत्रभवती --नलचरित्रम्, पृ०२७
४- राजा -- भगवत्या एव भैमीव्यपदेशिन: सन्देशा: --नलचरित्रम् पृ०६३
५- न०च० पृ०११३

विदूषक कहता है :--

'यथैवं स्फलन्ते स्वप्नो भवतु'[1]।

विन्दु

आराम रामणीयक के दर्शन द्वारा विच्छिन्न कथा तन्तु हंस के वाक्य से अविच्छिन्न होता हुआ दृष्टिगोचर होता है । हंस कहता है--

'विदर्भेभ्य: दमयन्तीसकाशात् भगवत्या सरस्वत्या प्रेषित आगतोऽस्मि'[2]।

यहां विन्दु अर्थ प्रकृति है ।

पताका

'नलचरित्रम्' नाटक में दमयन्ती की कामना करने वाले इन्द्र की कथा प्रासंगिक वृत्त होते हुए भी व्यापक है । परन्तु इसे पताका नहीं मान सकते, क्योंकि इन्द्र, महाराज नल के सहायक नहीं हैं । प्रतिनायक के रूप में इनका चित्रण किया गया है । यहां ब्रह्मा द्वारा दमयन्ती का अनुकूल वर के साथ योग कराने के लिए आदिष्ट भगवती सरस्वती की कथा पताका है । सरस्वती, नल को फलप्राप्ति के विषय में सहायिका है । इस पताका में देवी सरस्वती पताका नायिका है ।

प्रकरी

'नलचरित्रम्' के अन्तर्गत दमयन्ती की कामना करने वाले इन्द्र की कथा, तथा छठे अंक में कामन्तक तथा भद्रमुख का सम्वाद प्रकरी है ।

कार्य

'नलचरित्रम्' नाटक आजकल सम्पूर्ण नहीं प्राप्त होता । इस दशा में कार्य अर्थप्रकृति के रूप में कवि को क्या अभिप्रेत था, यह ठीक-ठीक कह सकना यद्यपि

१- न० च०, पृ० १०

२- न० च०, पृ० २७

कठिन है, फिर भी नाटक के उपलब्ध अंश के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि दमयन्ती की प्राप्ति तथा नल की राज्यप्राप्ति ही सम्भवत: कार्य रूप में वर्णित होगा ।

कार्यावस्थाएं

आरम्भ   प्रथम अंक में `अस्थाने विनिपात्य...`[१] इत्यादि नल के वाक्य में आरम्भ अवस्था सूचित होती है ।

यत्न--   प्रथम अंक में ही --

`किं नु खलु मया तदनुरूपमाचरितव्यमिति`[२] इस वाक्य में यत्न अवस्था स्पष्ट है ।

प्राप्त्याशा

प्रथम अंक में `स्वमेव`[३] इस हंस के वाक्य से लेकर चतुर्थ अंक में --

जाल्मो जल्पतु नाम काममियतामर्षो न हर्ष: परं
शान्तिं यास्यति नश्विरात्परिणता दोर्दण्डकण्डूरिति ।
अस्मिन्नर्थिनि किन्तु नानुपगते प्रागाङ्गतेऽपि स्वयं
निर्व्यूढोऽस्य मनोरथो न कथमित्यद्यापि लज्जामहे ।।[४]।।

इस श्लोक तक फलप्राप्ति के विषय में कुछ निश्चय नहीं हो पाता । अत: यहां प्राप्त्याशा अवस्था है ।

नियताप्ति

चतुर्थ अंक में `उट्ठेहि वअस्स...`[५] इत्यादि वाक्य से लेकर राजा के वाक्य --

`उच्छ्वसितोऽसि । आस्थेय: पुनरपरो महान् यत्न:
अतिनेतव्या द्राघीयसीयं निशेति ।`[६] तक नियताप्ति अवस्था है ।

१- न० च० १।१३
२- न० च० पृ० ३०
३- न० च० पृ० ३०
४- न० च० ४।२७
५- न० च० पृ० १०४
६- न० च० पृ० १०५-१०६

फलागम

सम्भवत: नल तथा दमयन्ती का विवाह एवं उनका सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना फलागम होगा ।

सन्धियां

मुखसन्धि

प्रथम अंक के अन्तर्गत `अस्थाने विनिपात्य....`[1] इत्यादि वाक्य से लेकर ` यथा रोचते भवते`[2] राजा के इस वाक्य तक मुख सन्धि है ।

प्रतिमुख सन्धि

प्रथम अंक में ही --`जयतु महाराज`[3] इस हंस के वाक्य से लेकर चतुर्थ अंक में --` महेन्द्रस्तु ततस्समुत्थाय.... इत्युक्त्वा विसर्ज`[4] ।` इस वाक्य तक प्रतिमुख सन्धि का प्रसार है ।

गर्भसन्धि

चतुर्थ अंक में `सुहृद तुए... वहमण्णेमि[5] ।` से लेकर `पाल्यतां च त्वया तत्रभवती दमयन्ती`[6] इस वाक्य तक गर्भ सन्धि है ।

अवमर्श सन्धि

`सखे नाद्यापि ते परिणता बुद्धि:`[7] । इस वाक्य से प्रारम्भ होकर आगे अवमर्श सन्धि का प्रसार परिलक्षित होता है ।

निर्वहण सन्धि

`नलचरित्रम्` खण्डित अवस्था में उपलब्ध होता है । इसमें निर्वहण सन्धि के अन्तर्गत आने वाला अंश नहीं उपलब्ध होता ।

१- न०च० १।१३
२- न०च० पृ०२७
३- न०च० पृ०२७
४- न०च०,पृ०६२
५- न० च०,पृ०६२
६- न० च०, पृ० ६४
७- न० च०, पृ० ६४

मंजुल नैषधम्

'मंजुल नैषधम्' नाटक नलोपाख्यान की सम्पूर्ण कथा को प्रस्तुत करता है । नलोपाख्यान से 'मंजुलनैषधम्' की कथावस्तु समान होते हुए भी बहुत भिन्न है । अतएव यहां पर संक्षेप में इस नाटक की कथावस्तु देना आवश्यक है ।

'मंजुलनैषधम्' में महानाटक महाराज नल एवं दमयन्ती की कथा को अत्यधिक सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया गया है । इसका भी आधार यद्यपि नलोपाख्यान ही है, परन्तु इसमें बहुत अधिक परिवर्तन कर दिए गए हैं । इसी नवीनता के कारण इस नाटक की भी कथावस्तु यहां देना अनिवार्य है--

मंजुलनैषधम् की कथा[1]

मन्त्रियों के साथ बैठे हुए महाराज नल के पास नागरिक श्याल एक शिल्पी को चोर समझ कर पकड़ लाता है । शिल्पी के साथ एक कन्या की मूर्ति है जिसे देखकर श्याल को ही नहीं, महाराज नल को भी कन्या का भ्रम हो जाता है । वह विदर्भ राज की कन्या दमयन्ती की प्रतिकृति है । विदर्भ निवासी इस शिल्पी ने कभी वहां के राजा भीम के पास चित्र लिखिता दमयन्ती को देखकर वह प्रतिकृति बनायी थी । उस प्रकार के विद्या-परिश्रम का उचित मूल्यांकन महाराज नल ही कर सकेंगे, ऐसा उनका यश सुनकर ही वह प्रतिमा दिखाने के लिए लाया है । महाराज नल की आज्ञा से वह कन्यका प्रतिकृति प्रमदवनोद्यान मण्डप में स्थापित करवा दी गयी । दमयन्ती प्रतिकृति देखने के बाद से दमयन्ती में आसक्त चित्त के विनोद के लिए महाराज नल ने उद्यान में वनलक्ष्मी और वसन्त के परिणयोत्सव को देखने की इच्छा से मन्दुरापालक को अश्व तैयार करने का आदेश दिया । तदनन्तर माध्यह्निक क्रिया संपादन के लिए प्रमदवनतडाग पर चले गए ।

विदूषक सो कर उठा है । विदर्भराजदुहिता की प्रतिमा को देखने के बाद से पर्युत्सुक मन के विनोद के लिए महाराज नल प्रमदवनोद्यान में गए जहां किसी

१- मंजुल नैषधम्

हैम हंस ने आकर महाराज नल के सामने दमयन्ती के रूप और गुणों की प्रशंसा की । महाराज नल ने उस हंस को दमयन्ती के पास भेज दिया । दमयन्ती के सामने महाराज नल के रूप और गुणों की प्रशंसा करके पहले से ही दमयन्ती के महाराज नल में प्रगाढ़ानुराग को जानकर उस पक्षी ने सब कुछ महाराज नल से निवेदन कर दिया । उद्यान में दमयन्ती दर्शन के लिए व्याकुल राजा विदूषक के साथ बैठे हैं । विदूषक द्वारा प्रेरित ऐन्द्रजालिक के इन्द्रजाल के कारण एकाएक राजा नल और विदूषक को काम पीड़िता नल के दर्शन के लिए व्याकुल अवस्था में दमयन्ती और उसकी सखी केशिनी दृष्टिगोचर होती है । महाराज भीम के पास चित्रकार द्वारा लाए गए अनेक चित्रों में से महाराज नल का चित्र लाकर केशिनी दमयन्ती को देती है । केशिनी के मुख से दमयन्ती चित्रफलकस्थ राजर्षि नल से पूछती है कि वे उनके उपयुक्त हैं अथवा नहीं । दमयन्ती का वृत्तान्त देखते हुए महाराज नल दमयन्ती से वही प्रश्न करने लगते हैं । विदूषक राजा को बोध कराता है कि वह इन्द्रजाल है । ऐन्द्रजालिक यह स्पष्ट करता है कि यह इन्द्रजाल ~~ऋतम्भरा~~ प्रतारणा न होकर कुण्डिनपुर का यथार्थ वृत्तान्त है ।

नारद और पर्वत में वार्तालाप हो रहा है । कलहप्रिय नारद ने दमयन्ती स्वयम्बर में आने वाले अन्य राजाओं द्वारा महाराज नैषध को अजेय जानकर तथा नल में दमयन्ती को बद्धभाव जानकर इन्द्रादि देवों को स्वयंवर में जाने के लिए प्रेरित किया । इन्द्रादि देव महाराज नल से ही दौत्य कर्म संपादनार्थ प्रार्थना करेंगे । धार्मिक नल देवदूत बनना स्वीकार कर लेंगे । इतने से भी पूर्ण सन्तुष्ट न होने वाले नारद पुरंदरादिकों की पराङ्गना में प्रवृत्ति निवेदन करने के लिए उनके अन्त:पुरों में जा रहे हैं ।

तिरस्करिणी प्रभाव के कारण अदृश्यरूप से महाराज नल कुण्डिनपुर की रमणीयता से चकित होते हुए अन्त:पुर में पहुंचकर मदनपीड़िता दमयन्ती का सखियों से उनके नल विषयक अनुराग को व्यक्त करने वाला विस्रम्भालाप सुनते हैं । उचित अवसर पर प्रकट होकर महाराज नल दमयन्ती को देवताओं का सन्देश सुनाते हैं , अपनी ओर से भी समझाते-बुझाते हैं , परन्तु दमयन्ती नल से इतर किसी का भी वरण करना अस्वीकार कर देती है । स्वयंवर में महाराज नल के साथ देवताओं के आने पर दमयन्ती स्वेच्छा से किसी एक का वरण करेगी, देवताओं

के सन्देश का दमयन्ती ने यह उत्तर दे दिया ।

कलि संसार पर अपने अधिकार को न देखकर खिन्न है । अपने अधिकार-काल में जगत् की दशा का वर्णन करते हुए दमयन्ती का वृत्तान्त जानने के लिए प्रेषित मित्र द्वापर की प्रतीक्षा कर रहा है । नैषध से दमयन्ती का विवाह देखते रहने के कारण द्वापर विलम्ब से वापस आता है । द्वापर कलि को नारद के कलहकारी प्रयत्न, देवताओं द्वारा दमयन्ती की कामना, महाराज नल द्वारा देव दौत्य संपादन नल के रूप में चारों देवों की स्वयंवर में उपस्थिति और दमयन्ती के पातिव्रत्य से प्रभावित देवताओं के अपना अपना रूप ग्रहण कर लेने पर दमयन्ती द्वारा नैषध के वरण के विषय में बताता है। द्वापर ने उसी अवसर पर दमयन्ती में कलि की आसक्ति की घोषणा की किन्तु परिहास के अतिरिक्त कोई उत्तर नहीं मिला । नल और दमयन्ती के विघटन के लिए वह नल में प्रवेश प्राप्त करके, पुष्कर की सहायता से महाराज नल को राज्य और दमयन्ती से भ्रष्ट करने का निश्चय करता है ।

अनिर्देशप्रभवा पत्नी का अंग स्पर्श करने वाले वायु के द्वारा देह-स्पर्श होने के कारण कलुषित चित्त राजा नल के पास अनुकूल अवसर देखकर ब्राह्मण वेश में कलि अनर्थ से रक्षा की मांग करता है । वाक्छल द्वारा वह महाराज नल से प्रतिज्ञा करवा लेता है कि उनके राज्य में जिस प्रकार से जिसने उस ब्राह्मण का धन लूटा है, उसी प्रकार से उससे छीन कर वह धन उसे लौटाया जायेगा । कलि नल के दायाद पुष्कर के साथ द्यूत में सर्वस्व हार गया है और महाराज नल से उतना धन लेना उसे स्वीकार्य नहीं है । द्यूत से भिन्न किसी भी उपाय से प्राप्त किया गया धन लेना कलि ने अस्वीकार कर दिया । कलि के हठ के कारण महाराज नल अगले दिन पुष्कर से द्यूत क्रीड़ा का निश्चय करते हैं ।

रात्रि के अन्तिम प्रहर में दमन ऋषि के शान्तिकर्म के लिए काष्ठाहरण में नियुक्त शिष्य बटु से वार्तालाप करता है । दमन ऋषि के प्रसाद से विदर्भाधिपति महाराज भीम को दमयन्ती नाम की पुत्री और पुत्रों की प्राप्ति हुई । कलि द्वारा अभिलषित दमयन्ती स्वयंवर में नल की पत्नी हुई । क्रुद्ध कलि ने द्यूत के छल से नैषध को राज्य और दमयन्ती से भी भ्रष्ट कर दिया । अपने दायाद पुष्कर से

द्यूत में सर्वस्व हार कर महाराज नल दमयन्ती के साथ वन-वन भटकते रहे । वहां भी कलि के आवेश से चित्त के कलुषित होने के कारण वे निद्रावस्था में दमयन्ती को त्यागकर वनान्तर में चले गए । परित्यक्ता दमयन्ती विदर्भ के मार्ग को भी न जानती हुई उन्मत्त होकर भटक रही है । संज्ञा प्राप्त होने पर महाराज नल भी आर्त होकर दमयन्ती को खोजते हुए भटक रहे हैं । अपने प्रभाव से नल-दमयन्ती के इतने वृत्तान्त को जान कर महर्षि दमन ने उन लोगों के कल्याण के लिए `शान्तिकर्म` प्रारम्भ किया है । मलिन वेश में भटकती हुई दमयन्ती `चेदि` की ओर जाते हुए व्यापारियों के साथ हो चली । नदी-तट पर विश्राम करते हुए वे व्यापारी वन्य हाथियों द्वारा कुचल दिए गए । भयभीत दमयन्ती वहां से भाग कर वन में भटक रही है ।

दमयन्ती के लिए व्याकुल महाराज नल दमयन्ती के विषय में कभी उनके परित्यागस्थल से, कभी शार्दूल से कभी अशोक और सहकार वृक्षों से और कभी कोकिल से प्रश्न करते हैं । दमयन्ती को नष्ट जानकर विलाप करने लगते हैं । फिर इस सब को पुष्कर की चाल समझ कर उसे बुरा-भला कहते हैं । तभी रक्षा के लिए दवाग्नि ग्रस्त कर्कोटक की पुकार सुनकर वे उन्हें मुक्त करने के लिए बढ़ते हैं । नारद के शाप से कर्कोटक अचल थे और महाराज नल के प्रसाद से ही उनकी शाप से मुक्ति सम्भव थी ।

दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर के विषय में सुन कर विदर्भ पहुंचे हुए ऋतुपर्ण के आगमन का समाचार विदर्भाधिपति महाराज भीम से निवेदन करने के लिए ऋतुपर्ण का सारथी वार्ष्णेय मार्ग में केशिनी से वार्तालाप करता है । वार्ष्णेय महाराज नल का भूतपूर्व सारथी है । नल के अन्वेषणार्थ अनेक ब्राह्मण भेजे गए परन्तु उनमें से कोई भी कार्य में सफल न हो सका । अन्ततः ऋतुपर्ण के `बाहुक` नामक तुरंगशिक्षक ने दमयन्ती के गूढ़ार्थक प्रश्न का उत्तर दे दिया । उन्हीं को यहां बुलाने के लिए इस मिथ्या स्वयंवर का समाचार भेजा गया था । रूपभेद होते हुए भी `बाहुक` में महाराज नल के असाधारण चिह्न समान हैं । दोनों ही अश्वहृदयज्ञ हैं और दोनों ही सूद विद्या विचक्षण हैं ।

दमयन्ती के आदेश से 'बाहुक' को लाने के लिए भेजी गई केशिनी बाहुक का वृत्तान्त सुनाती है । कुण्डिनपुर द्वार पर पहुंच कर बाहुक ने क्षण भर के लिए आँखें बन्द कर लीं । तभी उनके सामने एक विशाल नाग ने प्रकट होकर उनका दंशन कर लिया । तदनन्तर देखते-ही-देखते 'बाहुक' महाराज नल के रूप में परिवर्तित हो गया तथा वह नाग भी दिव्यपुरुष बन गया । स्तम्भ की ओट से केशिनी ने उन दोनों का संवाद सुना । कर्कोटक नाग, महाराज नल से कह रहे थे कि पत्नी और सन्तान के साथ महाराज नल को उनके राज्य में प्रतिष्ठित कराने की उनकी कामना है । कर्कोटक नाग के विष से जलता हुआ कलि उन्हें और हानि नहीं पहुंचा सका । विकृत रूप में महाराज नल को कोई पहचान भी न सका । अयोध्या से विदर्भ आते समय मार्ग में अक्षविद्या सीख कर जब महाराज नल पत्तों की गणना कर रहे थे, कलि ने प्रकट होकर उनसे करुणा की याचना की । महाराज नल के सामने का तो क्या कहना, जहां कहीं उन लोगों की कथा भी होगी, वहां कलि का प्रभाव नहीं रहेगा । महाराज नल के प्रिया समागम के लिए उस समय को अनुचित समझ कर कर्कोटक नाग उन्हें अपनी भोगवती नगरी में ले गए हैं ।

कंचुकी सूचित करता है कि भगवान दमन ने दमयन्ती के प्रतिकूल भाग्य के शमनार्थ 'शान्तिक कर्म' प्रारम्भ किया है, उसमें दमयन्ती को बुलवाया है । दमयन्ती दमन ऋषि का आदेश पालन करती है ।

कर्कोटक नागराज का सारथी महाराज नल को रथ में लिए जा रहा है । महाराज नल कर्कोटक नाग की प्रशंसा करते हैं । अटलान्टिक महासागर पार करके सारथी महाराज नल से गन्तव्य स्थल के विषय में जिज्ञासा प्रकट करता है । दमयन्ती से मिलने की इच्छा से वे कुण्डिनपुर जाना चाहते हैं परन्तु दमयन्ती को महर्षि दमन के आश्रम में गयी हुई जानकर वे मित्र कर्कोटक के आदेश का स्मरण करते हैं कि पुष्कर पर विजय प्राप्त किए बिना तुम्हारा प्रिया से समागम हितकर नहीं है । महाराज नल सूत को निषधा चलने का आदेश देते हैं । मार्ग में विदर्भ न पड़े इसलिए वे दूसरे वन मार्ग का अनुसरण करते हैं । मार्ग में दमन मुनि का आश्रम पड़ता है । आश्रम में मुनि की आज्ञा का उल्लंघन करके मृग का पीछा करने वाले पुष्कर को रोककर कुमार इन्द्रसेन उससे पणबन्ध करते हैं । पुष्कर का बाण

काट कर कुमार इन्द्रसेन उसे दास बना लेते हैं ।

किसी रथी से कुमार इन्द्रसेन के झगड़े का वृत्तान्त सुनकर भयभीत दमयन्ती, इन्द्रसेना को भीम के पास यह समाचार सुनाने के लिए भेजती है । महाराज नल प्रकट होकर दमयन्ती को इन्द्रसेन की विजय का समाचार देते हैं। महाराज नल का द्युत में उत्साह देखकर दमयन्ती ने अनर्थ की शंका से वार्ष्णेय के साथ दोनों बच्चों को विदर्भ भिजवा दिया था । वहां से उपनयनादि संस्कारों के लिए इन्द्रसेन को महर्षि दमन के आश्रय में भेज दिया गया । वन-वन भटकती हुई परित्यक्ता दमयन्ती अपने मातामह चेदिराज के नगर में और फिर वहां से विदर्भ पहुंच गई । भगवान दमन द्वारा प्रारम्भ किए गए 'शान्ति कर्म' की प्रधान आहुति में, वहीं से इन्द्रसेना के साथ आयी हैं । मिथ्या स्वयंवर के व्याज से बुलाए गए महाराज ऋतुपर्ण को महर्षि दमन द्वारा निबद्ध दमयन्ती स्वयंवर नाटक देखने के लिए आश्रम में ही बुलवाया गया है ।

कुमार इन्द्रसेन अपना दास-पुष्कर दमन ऋषि को अर्पित कर देता है । नैषध और कर्कोटक महर्षि दमन को प्रणाम करते हैं । महर्षि दमन पुष्कर पर महाराज नल को अधिकार दे देते हैं पुष्कर क्षमा याचना करता है । महाराज नैषध पुष्कर को दास्य से मुक्त करके अपने राज्य में से पांच ग्राम दे देते हैं ।

'मंजुल नैषधम्' में नल दमयन्ती की सम्पूर्ण महाभारतीय कथा का चित्रण मिलता है । स्थान-स्थान पर कवि की ओर से नवीन घटनाओं द्वारा नाटक में नवीनता लाने के साथ-साथ रोचकता वृद्धि भी की गयी है । प्रारम्भ में ही शिल्पी के वृत्तान्त में कवि की मौलिकता झलकती है । महाभारतीय नलोपाख्यान में दमयन्ती के प्रति नल के चित्तानुराग का कारण गुण श्रवण[1] मात्र होता है जब कि 'मंजुल नैषधम्' में प्रतिकृति दर्शन[2] । इस घटना के द्वारा नायक नल के चरित्र-चित्रण में भी कवि को सहायता मिली है । महाराज नल अपने विद्या-प्रेम और विद्वानों का उचित सम्मान करने के कारण विख्यात थे[3] ।

१- म० भा० वन पर्व ५०।१७

२- म० नै० , पृ० १५

३- मं० नै०, पृ० १५

इस नाटक में एक और नवीनता दिखायी पड़ती है । वह है इन्द्रजाल का सन्निवेश[1] । द्वितीय अंक में दमयन्ती के दर्शन के लिए विह्वल राजा नल को ऐन्द्रजालिक अपने प्रभाव से कुण्डिनगता मदनार्त्ता दमयन्ती का वृतान्त प्रत्यक्ष दिखा देता है । इन्द्रजाल की सहायता से महाराज नल को दमयन्ती के प्रगाढ़ानुराग की सूचना मिल जाती है । तथा कवि को भी दमयन्ती की मदनावस्था चित्रण का उपयुक्त अवसर मिल जाता है । इसके अतिरिक्त इन्द्रजाल का और कोई प्रयोजन नहीं प्रतीत होता ।

महाभारतीय नलोपाख्यान में क्रुद्ध कलि, नल को राज्य और दमयन्ती से भ्रष्ट करने का निश्चय करके अवसर पाते ही पहले नल के शरीर में प्रवेश कर लेता है[2] और फिर पुष्कर को प्रलोभन देकर पुष्कर और नल में द्युत का प्रसंग उठाता है[3] । यही बात इस नाटक में अत्यधिक रोचक विधि से उपन्यस्त की गयी है । अनिर्दिश-प्रसवा पत्नी के समागम के कारण कलुषित चित्त वाले महाराज नल से कलि,ब्राह्मण वेश में रक्षा करने के लिए कहता है । अपने वाक्कौशल से पहले महाराज नल को प्रतिज्ञाबद्ध करके वह पुष्कर द्वारा द्युत में सर्वस्व जीत लिए जाने का मिथ्या प्रसंग उठाता है । कलि ब्राह्मण के हठ के कारण सत्यसन्ध महाराज नल को अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए पुष्कर के साथ द्युत में प्रवृत्त होना ही पड़ता है । द्युत के दुर्गुणों को जानते हुए भी , अनिच्छा होते हुए भी केवल अपने वचन को पूरा करने के लिए महाराज नल द्युत में प्रवृत्त होते हैं[4] । इस प्रकार से महाराज नल की द्युत-प्रवृत्ति दोष न होकर गुणाधायक ही है । महाभारतीय नलोपाख्यान के नायक नल द्युत में रुचि रखने वाले हैं[5] जब कि 'मंजुल नैषधम्' नाटक के नायक नल द्युत के दोषों को समझते हुए उसे बुरा समझते हैं[6] । नलोपाख्यान के नायक नल एक के बाद एक दांव हारते

१- मं० नै०,पृ० २५-३१

२- म० भा० वनपर्व ५६।३

३- म० भा० वनपर्व ५६।४-५

४- मं० नै० पृ०५६-५६

५- म० भा० वन पर्व ५०।३

६- मं० नै०,पृ० ९८

जाने पर भी पुरवासियों, मन्त्रियों और देवी दमयन्ती के निरन्तर रोकते रहने पर भी अपनी द्यूतासक्ति के कारण एक के बाद एक करके सब कुछ हार जाते हैं।[1] परन्तु 'मंजुलनैषधम्' में महाराज नल प्रतिज्ञा के अनुसार द्यूत में सर्वस्व लगा कर पराजित हो जाते हैं[2]। इस प्रकार कवि ने नायक नल के चरित्र को यथाशक्ति निर्मल बनाने का प्रयत्न किया है। कवि को अपने प्रयत्न में अपूर्व सफलता मिली है।

महाभारतीय नलाख्यान में महर्षि दमन का उल्लेख केवल दमयन्ती के जन्म के प्रसंग में ही किया गया है[3] परन्तु 'मंजुल नैषधम्' में वे एक क्रियाशील पात्र हैं। नल और दमयन्ती के संकट को अपने प्रभाव से जानकर महर्षि दमन 'शान्ति कर्म' का सम्पादन करते हैं[4]। 'शान्ति कर्म' के प्रसंग से आश्रम में सभी पात्रों को एकत्र करके महाराज नल का सबसे मिलन कराने में कवि को सुविधा के साथ नाटक में नवीनता लाने के प्रयत्न में सफलता भी मिली है। आश्रम में ही, आश्रम के नियमों का उल्लंघन करने वाले पुष्कर को, कुमार इन्द्रसेन अपना दास बना लेते हैं[5]। और इस प्रकार महाराज नल को अनायास ही अपना खोया हुआ राज्य मिल जाता है[6]। एक ही स्थान पर कवि ने अनेक घटनाओं का सूत्र ला जोड़ा है।

महाभारतीय नलोपाख्यान की कथा के अनुसार नागराज कर्कोटक वन में महाराज नल का दंशन कर लेते हैं जिसके कारण नल का रूप परिवर्तित हो जाता है। कर्कोटक दो वस्त्र देते हैं जिन्हें पहन कर नल अपना वास्तविक रूप प्राप्त करते हैं[7]। परन्तु 'मंजुल नैषधम्' में जिस प्रकार दंशन द्वारा नागराज कर्कोटक नल के रूप को विकृत करते हैं, उसी प्रकार अवसर आने पर नल के द्वारा स्मरण किए गए वे पुन: प्रकट होकर दंशन द्वारा ही उनको वास्तविक रूप प्रदान करते हैं[8]। नागराज कर्कोटक महाराज नल को अपनी 'भोगवती' नगरी में ले जाते हैं[9]। वहां

१- म०भा० वनपर्व ५६।१० तथा २०
२- मं० नै०, पृ०६३
३- म० भा० वनपर्व ५०।६-८
४- मं० नै०, पृ०६४
५- मं० नै० पृ०८५-८७
६- मं० नै०, पृ० ६८
७- म० भा० वनपर्व ७४।४७
८- मं० नै० पृ० ६६-६७
९- मं० नै०, पृ० ८०

से साथियों के साथ निषधा जाते हुए नल दमन ऋषि के आश्रम में रुक जाते हैं और वहीं उन्हें प्रिया और राज्य सब कुछ मिल जाता है[१]। कर्कोटक नाग द्वारा द्वितीय दंशन का प्रसंग बौद्धिक दृष्टि से अधिक जंचता है। प्रथम दंशन द्वारा अपना विष महाराज नल के शरीर में डाल कर उनका रूप विकृत कर दिया था, दूसरी बार दंशन द्वारा अपना विष खींचकर यदि वह उन्हें वास्तविक रूप प्रदान कर दे तो यह उचित ही जान पड़ता है। नैषध को प्रिया समागम से रोककर भोगवती ले जाने का प्रसंग भी निरर्थक नहीं है। महाराज नल और दमयन्ती के दुर्भाग्य की शान्ति के लिए प्रवर्तित शान्ति कर्म की समाप्ति से पूर्व दोनों का मिलन नहीं होना चाहिए था। इसके अतिरिक्त ऐसा करने का यह भी एक कारण प्रतीत होता है कि इस प्रकार से महर्षि दमन के आश्रम में ही सबको एकत्र करके महाराज नल का राज्यलाभ भी सुविधापूर्वक चित्रित किया जा सका। दमयन्ती को विदर्भ से आश्रम में पहुंचाना था, इसी सब को दृष्टि में रखकर महाराज नल के 'भोगवती' में जाने के प्रसंग की कल्पना नाटककार ने की होगी।

महाभारतीय नलोपाख्यान में महाराज नल द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती चराचर पदार्थों से नैषध विषयक प्रश्न करती हुई विलाप करती है। कभी वे सिंह शावक से पूछती हैं तो कभी शिलोच्चय से[२]। प्रस्तुत नाटक में इसके विपरीत नैषध को इस दिशा में चित्रित किया गया है, वे आर्त होकर अपनी कान्ता के विषय में कभी उस प्रदेश से प्रश्न करते हैं जहां दमयन्ती निद्रावस्था में ही एकाकिनी छोड़ दी गयी थीं, तो कभी शार्दूल से[३]। वे बारी बारी से अशोक और सहकार से और कभी कोकिल से अपना प्रश्न दोहराते हैं[४]। महाभारतीय नलोपाख्यान से नाटक में यह परिवर्तन अकारण नहीं है। कवि वेंकटाचार्य नैषध के चरित्र को मुख्यरूप से उज्ज्वलरूप तर रूप से प्रस्तुत करना चाहते हैं। नाटक के शीर्षक से ही यह बात सिद्ध हो जाती है। दमयन्ती के चरित्र की अपेक्षा महाराज नल के चरित्र को

१- भं० नै० सप्तम अंक
२- म०भा० वनपर्व ६१।३५-३६ तथा ३८
३- भं०नै० ५।६८
४- भं०नै०५।१०१,१०२,१०३।

अधिक चारु बनाने की आकांक्षा से ही सम्भवत: कवि ने यह परिवर्तन कर दिया ।

महाभारत के अन्तर्गत आयी हुई कथा के समान यहां देवगण महाराज नल को वरदान नहीं देते, इसी प्रकार महाराज नल की अश्वविद्या प्राप्ति की ओर तो संकेत मिलता है, पर यह विद्या उन्होंने किससे प्राप्त की, इसकी ओर कोई संकेत नहीं किया गया है । महाराज ऋतुपर्ण को अश्वविद्या सिखाने का प्रसंग भी यहां नहीं उपलब्ध होता । नलोपाख्यान में दमयन्ती बाहुक की भांति-भांति से परीक्षाएं लेती है[1] परन्तु यहां उन सब की उपेक्षा करके कवि ने सरल मार्ग अपनाया है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अनुसार चेदिराज दमयन्ती के मौसेरे भाई थे[2] परन्तु 'मंजुल नैषधम्' में वे दमयन्ती के मातामह हैं[3] ।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा सिद्ध होता है कि नाटककार को, महाभारतीय नलोपाख्यान की कथा को पर्याप्त विकसित रूप से उपन्यस्त करने में आशातीत सफलता मिली है ।

अर्थ प्रकृतियां

बीज

महाराज नल के स्वगत सम्भाषण द्वारा 'मंजुल नैषधम्' के प्रथम अंक में बीज का उपन्यास किया गया है । दमयन्ती की प्रतिभा देखकर महाराज नल उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं, वे कहते हैं --

प्रतिकृतिरियं यस्या सा भीमराज तनूभवा
न खलु सुलभा यस्माद्दूरे दृशोर्वचसामिव
स पुनरनोनायो याच्ञां ममार्हति सा पुनर्
मनसि कुरुते कं वा जाने कथं खलु तत्पुन: ।।[4]

१- म०भा० वनपर्व ७२-७४
२- म०भा० वनपर्व ६६।१४
३- मं०नै० पृ०६२
४- मं०नै० पृ० १६

बिन्दु

प्रथम अंक में ही उद्यानपाल के आगमन से दमयन्ती विषयक कथा सूत्र विच्छिन्न हो जाता है । इस अवस्था में 'अहमपि दमयन्तीप्रतिकृतिदर्शनोत्कण्ठमात्मानं विनोदयितुमुपायान्तरं न पश्यामि[1]।'

यह वाक्य कथा सूत्र को जोड़ता है । अतएव यहां बिन्दु नामक अर्थप्रकृति है ।

पताका

'मंजुल नैषधम्' में सम्पूर्ण चतुर्थ अंक में और फिर उसके आगे छठे अंक तक कलि का वृत्तान्त व्यापक है । परन्तु इसे हम पताका नहीं मान सकते, क्योंकि इसका नायक कलि, मुख्य नायक नल का सहायक न होकर प्रतिनायक के रूप में उपलब्ध होता है । इस नाटक में और कोई भी प्रासंगिक इतिवृत्त व्यापक नहीं है । अतः यहां पताका का अभाव प्रतीत होता है ।

प्रकरी

'मंजुल नैषधम्' के प्रथम अंक में राजश्याल तथा चित्रकार का वृत्तान्त तृतीय अंक के प्रारम्भ में नारद तथा पर्वत का वार्तालाप पंचम अंक में शिष्य तथा बटु का सम्भाषण तथा छठे अंक में केशिनी और वार्ष्णेय का सम्वाद प्रकरी है ।

कार्य

नल तथा दमयन्ती का विवाह, पुनर्मिलन तथा नल की राज्य प्राप्ति ये सभी कार्य हैं ।

अवस्थाएं

आरम्भ

प्रथम अंक में 'प्रतिकृतिरियं यस्याः सा....[2]' इत्यादि वाक्य में नल

१- मं० नै०, पृ० १८

२- मं० नै०, पृ० १६

का दमयन्ती के प्रति औत्सुक्य दृष्टिगोचर होता है अत: यहां आरम्भ अवस्था है ।

यत्न

प्रथम अंक में ही `जेदु जेदु महाराओ`[1] इत्यादि वैतालिक के वाक्य से प्रारम्भ होकर द्वितीय अंक में --`तदुपायान्तरं ब्रूहि`[2] इस राजा के वाक्य तक प्रयत्न अवस्था दृष्टिगोचर होती है ।

प्राप्त्याशा

`जइ एव्वं...` इस विदूषक के वाक्य से लेकर इन्द्रजाल के प्रसंग के पश्चात् चतुर्थ अंक की समाप्ति तक फलप्राप्ति के विषय में सन्देह बना रहता है । अतएव यहां प्राप्त्याशा अवस्था है ।

नियताप्ति

पांचवें अंक के प्रारम्भ से लेकर सप्तम अंक में `राजन् नैषध अयं वत्सेन्द्रसेनेन जितो मह्यमर्पितश्च । मयाचेदानीं तुभ्यं दत्त: ।`[3] इस वाक्य तक नियताप्ति अवस्था है ।

फलागम

सप्तम अंक में `अयं मम दायाद: पुष्करक:`[4] इस वाक्य से लेकर ग्रन्थ की समाप्ति पर्यन्त फलागम अवस्था है ।

सन्धियां

मुख

प्रथम अंक में `तत: प्रविशति यथा निर्दिष्टो राजा मन्त्रिणश्च`[5] इस निर्देश से लेकर द्वितीय अंक में --`कुत्रास्माकं तादृशं भागधेयम्`[6] इस वाक्य तक मुख संधि है ।

१- मं० नै०, पृ० १६
२- मं० नै०, पृ० २५
३- मं० नै०, पृ० ६८
४- मं०नै०,पृ० ६८
५- मं०नै०, पृ० ७
६- मं० नै०,पृ० २५

प्रतिमुख

द्वितीय अंक में `(नेपथ्ये) अहि हदो हदो`[1] से लेकर तृतीय अंक में -- `मन्ये देवानामपि वचनमधर्मं इति इव्यनीअमेवेति ।`[2] इत्यादि राजा के कथन तक का नाट्यभाग प्रतिमुख सन्धि के अन्तर्गत है ।

गर्भ

तृतीय अंक में --`तत: प्रविशति सह सखीभ्यां दमयन्ती`[3] इस निर्देश से लेकर पंचम अंक की समाप्ति तक गर्भ सन्धि का विस्तार परिलक्षित होता है ।

अवमर्श

छठे अंक के प्रारम्भ से लेकर सप्तम अंक में --`तदित: परं कतमं ....`[4] इत्यादि वाक्य तक अवमर्श सन्धि है ।

निर्वहण

सप्तम अंक में ही `सुत चिरविरह दुर्मनायमानां...`[5] इत्यादि वाक्य से प्रारम्भ होकर नाटक के अन्त तक निर्वहण सन्धि है ।

अनर्घ नल चरित्र

`अनर्घ नल चरित्र` नाटक नलोपाख्यान की सम्पूर्ण कथा को प्रस्तुत करने का प्रयास है । कवि ने कथावस्तु में नवीनता लाने की धुन में कुछ नयी कल्पनाओं को नाटक में स्थान दिया है । महाभारतीय नलोपाख्यानगत कथा को कहीं भी छोड़ने का साहस कवि में नहीं है । यही कारण है कि येन केन प्रकारेण कवि ने उसकी ओर कम से कम संकेत अवश्य कर दिया है । प्रथम और

१- मं०नै०,पृ०२५
२- मं०नै०,पृ० ३८-४१
३- मं०नै०,पृ०४१
४- मं०नै०,पृ० ८३
५- मं०नै०,पृ० ८३

द्वितीय अंक में दमयन्ती और महाराज नल के स्वप्नों का चित्रण है। नायक और नायिकाको स्वप्न में एक-दूसरे का साक्षात्कार होता है। इस प्रकार हंस की बात-चीत से बोया हुआ चित्तानुराग रूप अंकुर नायक और नायिका दोनों में ही अंकुरित होने लगता है। स्वप्न दर्शन के अनन्तर नाटककार ने परस्पर चित्र दर्शन की भी संयोजना कर डाली है[१]। मदनपरवशा दमयन्ती को उसकी सखियां चित्रकार के पास से अनेक राजकुमारों के चित्र ~~कर~~ ला कर दिखाती है, दमयन्ती उनमें से महाराज नल का चित्र तत्क्षण पहचान लेती है[२]। इसी प्रकार दमयन्ती में अनुरक्त महाराज नल को भी दमयन्ती की सखी मालिका द्वारा प्रेषित दमयन्ती का चित्र प्राप्त हो जाता है[3]। नायक और नायिका में परस्पर अभिलाष उत्पत्ति के लिए कवि ने हंस द्वारा गुण श्रवण, स्वप्नदर्शन और फिर चित्र दर्शन तीन तीन उपायों का निबन्धन कर डाला है। हंस संदेश को नाटक में दिखाना कठिन समझ कर कवि ने उसकी ओर संकेतमात्र कर दिया है[४], उसकी स्थानपूर्ति में समर्थ अन्य स्वप्नदर्शनादि उपायों का निबन्धन करते हुए भी वे उसकी ओर संकेत किए बिना आगे न बढ़ सके। यह कवि की दुर्बलता है जिसका प्रमाण नाटक में स्थान-स्थान पर मिलता है।

अनर्घ नल चरित्र नाटक में सम्पूर्ण द्वितीय अंक में कवि की कल्पना का चित्रण है। दमयन्ती की सखी मालिका के प्रयत्न से स्वयंवर का निमन्त्रण ले जाने वाले लोगों के साथ गायक मदन का निषधा में पहुंचना और फिर दमयन्ती की प्रशंसा करते हुए दमयन्ती का चित्र देना,[५]-- ये सब प्रसंग नलोपाख्यान में नहीं उपलब्ध होते। कवि का यह प्रयत्न किसी सीमा तक कथावस्तु की रोचकता वर्धन में सफल भी हुआ है। महर्षि नारद द्वारा महाराज नल को स्वयम्बर में सम्मिलित होने का आदेश[६] भी कवि की नूतन कल्पना है। नारद के वचनों से महाराज नल को दमयन्ती की प्राप्ति के विषय में आशा बंध जाती है। कवि ने नारद के

१- अ०न० च० पृ० १५ तथा ३०

२- अ० न० च० १।२७

३- अ०न० च० पृ० ३०

४- अ०न० च० भूमिका पृ० १८

५- अ०न०च०, पृ० २८-३०

६- अ०न०च०, पृ० ३५

आगमन की सुन्दर कल्पना की है । इसी प्रकार हम,कुण्डिन के प्रति प्रस्थान करते हुए महाराज नल के पास देवताओं द्वारा भेजे गये फलों की प्राप्ति[1] के विषय में भी समझ सकते हैं । कवि उदरीनाचार्य ने दौत्य के लिए महाराज नल को प्रलोभन देने के लिए इसकी कल्पना की है ।[2]

अनर्घनल चरित्र के तृतीय अंक में चारों लोकपालों का संदेश लेकर अप्सराओं के दमयन्ती के पास आगमन की कथा का निबन्धन किया गया है । यह कवि की मौलिकता है । उर्वशी मोहिनी, तिलोत्तमा और मेनका दमयन्ती के समक्ष स्वर्ग सुख का वर्णन करके, दमयन्ती को प्राप्त करने की देवताओं की कामना का उल्लेख करती हैं । देवताओं का प्रभाव सुनकर भी नैषध के प्रति अनुरक्त दमयन्ती का चित्त तनिक भी विचलित नहीं होता है,[3] दमयन्ती के चरित्र को निखार देने के लिए[4] कवि ने सुन्दर कल्पना की है । यह घटना नलोपाख्यान के अन्तर्गत नहीं उपलब्ध होती है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान में दमयन्ती स्वयंवर ~~पर-मिलता-है~~का विस्तार से वर्णन किया गया है[5] । यहां नाटककार ने उसे दो गर्भांक द्वारा उपन्यस्त किया है[6] । दमयन्ती की आचार्या के मुख से आगामी दमयन्ती स्वयंवर का वृत्तान्त पहले से ही जानकर दमयन्ती की सखियां दमयन्ती के समक्ष 'दमयन्ती स्वयंवर' नाटक के अभिनय द्वारा उसे प्रस्तुत करती हैं[7] । रंगमंच पर स्वयंवर दिखाना निषिद्ध है, यद्यपि वह गर्भांक द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है । शास्त्रकारों के इसी विधान को दृष्टि में रखकर कवि ने इस गर्भांक की योजना की[8] । बाल रामायण में गर्भांक द्वारा स्वयंवर चित्रण को देखकर कवि ने उपर्युक्त कल्पना की है[9] । स्वयंवर में नल का रूप धारण करने वाले लोकपालों की वास्तविकता उद्घाटन के लिए

१- अ०न० च०,पृ० ३७
२- अ०न०च०भुमिका,पृ० १६
३- अ०न०च० ३।३६
४- अ०न०च० भुमिका, पृ०१६
५- म०भा० वनपर्व ५४
६- अ०न०च०,पृ० ८६-१०४
७- अ०न०च०,पृ०१०४
८- अ०न०च० भुमिका,पृ०१६
६- अ०न०च० भुमिका,पृ०१६

इस नाटक में दमयन्ती की आचार्या के रूप में भगवती सरस्वती की अवतारणा की गई है । भावी स्वयम्वर को गर्भांक द्वारा प्रस्तुत करने के रूप में कवि का प्रयत्न सुन्दर है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान में पुष्कर और महाराज नल में होने वाले द्यूत का उल्लेख तो कई स्थलों पर मिलता है[1], परन्तु द्यूत का विवरण कहीं भी नहीं प्रस्तुत किया गया है । सुदर्शनाचार्य ने लगभग सम्पूर्ण षष्ठांक में और दशमांक के एक भाग में पर्याप्त प्रपंच के साथ द्यूत का समावेश किया है । यह प्रपंच जहाँ एक ओर कथा में अनावश्यक विस्तार का कारण सिद्ध होता है वहां यह ~~प्रपंच जहां एक ओर~~ कथा ~~के~~ प्रवाह की गति में बाधक भी होता है । नाटक के षष्ठांक में ही महाराज भीम द्वारा प्रेषित इन्द्रसेन तथा इन्द्रसेना के लिए वस्त्राभूषणों का प्रसंग[2] कवि की अपनी कल्पना है । उन वस्त्राभूषणों को भी तत्काल द्यूत में हार जाना[3] महाराज नल की द्यूत में घोरतम आसक्ति के प्रतिपादन में सहायक सिद्ध होता है । इस प्रकार कवि की यह कल्पना रोचक होने के साथ-साथ उपयोगी भी प्रतीत होती है । नाटक के सप्तम अंक में महाराज नल और दमयन्ती के वार्तालाप द्वारा महाभारतीय कथा के विपरीत अंगरूप से शान्तरस के प्रतिपादन में नाटककार का व्यक्तित्व झलकता प्रतीत होता है ।

नलोपाख्यान की कथा के अनुसार वन में महाराज नल द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती भटकती हुई एक वणिक्सार्थ से स्वयं जा मिलती है[4], परन्तु नाटक में दमयन्ती को एक स्त्री थोड़ी दुर पर स्थित व्यापारियों के शिविर का पता बताती है[5]। यहां पर स्त्री-कल्पना ~~निम~~ निष्प्रयोजन ही प्रतीत होती है । घोर अरण्य में एकाकिनी स्त्री की कल्पना कुछ समझ में नहीं आती ।

अनर्घनल चरित्र के दशम अंक में कवि ने महाभारतीय नलाख्यान को पर्याप्त परिवर्तन के साथ प्रस्तुत किया है । नलोपाख्यान की कथा के अनुसार

१- म० भा० वनपर्व ५६

२- अ०न०च०,पृ०१०८

३- अ०न०च०,पृ० ११०

४- म०भा० वनपर्व ६१,११०-१११

५- अ०न०च०,पृ० १५६

दमयन्ती बाहुक को महाराज नल ही समझ कर केवल रूपभेदजन्य संशय के निवारणार्थ उन्हें अपने भवन में बुलवाती है[1] परन्तु प्रस्तुत नाटक में दमयन्ती स्वयं ही बाहुक के पास जाती है[2]। इस परिवर्तन का कोई विशेष प्रयोजन नहीं प्रतीत होता। महाभारतीय कथा के अनुसार नागराज कर्कोटक से प्राप्त वस्त्रों को पहन कर महाराज नल अपना वास्तविक रूप प्राप्त करते हैं[3] परन्तु यहां नागराज कर्कोटक दिव्य रूप में स्वयं प्रकट होकर महाराज नल को एक ओर ले जाते हैं और वहीं किसी प्रकार से महाराज नल का रूप परिवर्तित हो जाता है[4]। नाटककार ने प्रचलित कथा में यह परिवर्तन अभिनय की सुविधा को दृष्टि में रखकर ही किया है[5]।

नलोपाख्यान के अनुसार महाराज नल कुण्डिनपुर से निषध में जाकर पुष्कर से द्यूत द्वारा अपना राज्य प्राप्त करते हैं[6]। अनर्घ नलचरित्र नाटक में महाराज नल द्वारा कुण्डिनपुर में ही पुष्कर से अपना राज्य द्यूत में जीत कर प्राप्त कर लेने की कल्पना की गयी है[7]। ग्रन्थकार ने कथा में इस परिवर्तन का कारण ग्रन्थ की भूमिका में ठीक ही स्पष्ट किया है[8] कि आगे अंक बढ़ाने मर्यादा न होने से तथा इस कथांश के अधिक चमत्कारपूर्ण न होने के कारण उन्हें कथा में यह परिवर्तन करना पड़ा। प्रस्तुत नाटक के अन्त में महाराज नल को आशीर्वाद देने के लिए इन्द्र के आने की कल्पना, महाराज नल के माहात्म्य को प्रकट करने के लिए की गयी है[9]।

महाभारतीय नल चन्द्रवंशी हैं परन्तु नाटककार ने उनकी स्थिति सूर्यवंशियों में प्रतिपादित की है[10]। सम्भवत: इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न होने वाले 'नल' को नाटककार ने नलोपाख्यान की कथा का नायक भ्रमवश ही स्वीकार कर लिया है।

१- म०भा० वनपर्व ७४।७

२- अ०न०च०,पृ० १८०

३- म०भा० वनपर्व ७४।४७

४- अ०न०च०,पृ० १८३

५- अ०न०च०,पृ०१८३ पाद टिप्पणी

६- म०भा० वनपर्व ७३।३-२०

७- अ०न०च०,पृ० १८७-१८८

८- अ०न०च० भूमिका,पृ०१६

९-अनर्घ नलचरित्र भूमिका,पृ०१६

१०- 'हाय ! आज सूर्यवंश का यश कलंकित हो गया'
अनर्घ नल चरित्र ,पृ०१४३ , तथा--
दारत्याग चरित्रं ते पश्यत्वयेष दिवाकर: ।
शुनासीर सभामध्ये पिता तेकिं वदिष्यति ।।
--अनर्घनल चरित्र,पृ०१४७

रूपककार को कथावस्तु में से सरस और मर्मस्पर्शी स्थलों का चयन करके उन्हें रोचक शैली में उपन्यस्त करना होता है । श्री सुदर्शनाचार्य ने घटनाओं का चयन ठीक नहीं किया है । अरोचक प्रसंगों द्वारा अनावश्यक रूप से नाट्य कलेवर में वृद्धि की गई है ।

अर्थ प्रकृतियां

बीज

नाटक के प्रथम अंक में नाटकीय कथाप्रपंच के बीज का उपन्यास दमयन्ती के निम्नलिखित वाक्य में हुआ है --

'क्या उस मनोहर मूर्ति का फिर भी दर्शन होगा'[1]

बिन्दु

अनर्घनल चरित्र के द्वितीय अंक में मदन गायक के आगमन से विच्छिन्न कथावस्तु --

'श्री महाराज । हम लोग श्री महाराज की सेवा में जिसके स्वयंवर का पत्र लेकर आए हैं, उसी हमारी राजकुमारी श्री दमयन्ती की यह रचना है'[2] इस वाक्य से संयुक्त हो जाता है अतएव यहां बिन्दु अर्थप्रकृति है ।

पताका

यहां इन्द्र,धर्मराज,अग्नि तथा वरुण का वृत्तान्त कुछ व्यापक प्रासंगिक इतिवृत्त है परन्तु ये देवगण नल के सहायक नहीं हैं अतएव यहां पताका नहीं मान सकते । इस नाटक में कोई भी पताका नहीं है ।

१- अ०न०च०,पृ०६

२- अ०न०च०,पृ० २६

प्रकरी

द्वितीय अंक में नारद का वृत्तान्त तथा चतुर्थ अंक व के प्रारम्भ में मदनिका वासन्ती तथा विदूषक का परस्पर सम्भाषण प्रकरी है ।

कार्य

नल द्वारा दमयन्ती तथा राज्य की प्राप्ति ही इस नाटक में कार्य है ।

अवस्थाएं

आरम्भ

जब से उस हंस ने दमयन्ती को बात सुनायी है, और यह स्वप्न देखा है तब से किसी ओर भी चित्त नहीं लगता[१] इत्यादि वाक्यों में आरम्भ नामक अवस्था है ।

यत्न

द्वितीय अंक के अन्त में दमयन्ती स्वयंवर के लिए महाराज नल का प्रस्थान यत्न नामक अवस्था को स्पष्ट करता है ।

प्राप्त्याशा

देवताओं के आदेशानुसार नल के दौत्य प्रसंग तक प्राप्त्याशा अवस्था है[२]।

नियताप्ति

पंचम अंक में 'बस बस अब आगे बढ़ने की अपेक्षा नहीं है[३] दमयन्ती के इस वाक्य से लेकर 'नल त्यज समाशङ्कामेनां[४]' इत्यादि वाक्य तक नियताप्ति अवस्था है ।

फलागम

दमयन्ती प्राप्ति तथा राज्यलाभ फलागम है ।

१- अ०न०च०,पृ०२०

२- अ०न०च०,पृ०८७

३- अ०न०च०,पृ०९८

४- अ०न०च०,पृ०१८४

सन्धियां

मुख

प्रथम अंक में 'गुणार्जनाव पाण्डुर कीर्तिभाजां....'[1] इस श्लोक से लेकर तृतीय अंक में -- 'अंशस्मैतद्विरहार्णवस्य.... विना'[2] इस श्लोक तक मुख सन्धि है ।

प्रतिमुख

मुख सन्धि के बाद से प्रारम्भ होकर चतुर्थ अंक में देवताओं के नल से दौत्यकर्मसम्पादन के लिए अनुरोध करने तक प्रतिमुख सन्धि है ।

गर्भ

चतुर्थ अंक में 'इसमें भी कुछ संदेह है'[3] इस वाक्य से लेकर पंचम अंक में गर्भांक के अन्तर्गत जहां दमयन्ती नल के कण्ठ में जयमाल पहनाना चाहती है,[4] वहां तक गर्भ सन्धि है ।

अवमर्श

पंचम अंक में 'भर्तृदारिके । ठहरो ठहरो'[5] इस वाक्य से प्रारम्भ होकर[6] दशम अंक में 'यह सब मिथ्या है'[7] इस वाक्य तक अवमर्श सन्धि है ।

निर्वहण

दशम अंक में 'आप मिथ्या बताती हैं'[8] इस वाक्य से लेकर ग्रन्थ की समाप्ति पर्यन्त निर्वहण सन्धि का प्रसार है ।

१- अ०न०च०, १।८

२- अ०न०च०,पृ०४३

३- अ०न०च०,पृ०७४

४- अ०न०च०,पृ०६८

५- अ०न०च०,पृ०६८

६- द्रष्टव्य अ०न०च०पृ०६८ की पाद टिप्पणी

७- अ०न०च०,पृ०१८२

८- अ०न०च०,पृ०१८२

नलदमयन्तीयम्

'नलदमयन्तीयम्' नाटक यद्यपि नलोपाख्यान पर ही आधारित है,तथापि इसकी कथा महाभारतीय नल-दमयन्ती कथा से पर्याप्त भिन्न रूप में आयी हुई है । इस दशा में महाभारतीय कथा से इसकी इसकी कथा की समता तथा विषमता को स्पष्ट करने के लिए यहां इस नाटक की कथा संक्षेप में देना आवश्यक प्रतीत होता है --

दमयन्ती के चित्र-दर्शन से महाराज नल काम की दुःसहावस्था को प्राप्त हो गए हैं , अपने मनोविकार को गुप्त बनाए रखने की इच्छा से वे नगर के समीपवर्ती उद्यान में आए हैं । माधवीलता मण्डप में महाराज नल को कामपीड़ित देखकर विदूषक पीछे से जाकर चुपचाप राजा के नेत्र बन्द कर लेता है । इस प्रकार नाना प्रकार के कौतुकों द्वारा वह राजा नल का मनोविनोद करना चाहता है, परन्तु उन्हें तो सम्पूर्ण जगत् ही दमयन्ती मय प्रतीत होता है । निकटवर्ती नीरोपान्त भूमि में उन्हें कोई कांचनमय वस्तु परिलक्षित होती है । निकट से देखने पर ज्ञात होता है कि वह वस्तु एक कांचन हंस है । विदूषक के अनुरोध के कारण महाराज नल हल्के हाथ से उसका ग्रहण कर लेते हैं ।

महर्षि नारद के मुख से दमयन्ती के भावी स्वयंवर का समाचार सुनकर दमयन्ती का मनोभाव जानने की इच्छा से कलि कुण्डिनपुर आता है । विदर्भ में सर्वत्र सत्य का प्रभाव देखकर वह कलियुग में होने वाली संसार की अवस्था का वर्णन करता है । कलि,को दमयन्ती में महाराज नल के अनुराग का बोध था, परन्तु दमयन्ती महाराज नल में अनुरक्त है या नहीं, इसे पता लगाने के लिए वह कामदेव को बुलाता है । कामदेव कलि से अभयदान प्राप्ति के अनन्तर नल का वृत्तान्त सुनाता है -- दमयन्ती के चित्रदर्शन के अनन्तर विदूषक के साथ उद्यानवापी वन का सेवन करते हुए उन्होंने महाराज नल को एक स्वर्ण मराल मिला । पक्षिभाषा मर्मज्ञ नल ने कातर स्वर में की गयी हंस की प्रार्थना को समझ कर उसे भोजन पानादि के द्वारा सन्तुष्ट किया । इस सबसे प्रीतात्मा उस हंस ने दमयन्ती के रूपातिशय

वर्णन द्वारा महाराज नल के दमयन्ती विषयक अनुराग को दृढ़तर किया । तदनन्तर दमयन्ती को उसी प्रकार क से महाराज नल में प्रगाढ़ रूप से अनुरक्त करा दिया । यह हेम हंस, ब्रह्मा द्वारा दमयन्ती के प्रति महाराज नल को आवर्जित करने के लिए भेजा गया था । दमयन्ती के स्वयंवर में सम्मिलित होने के लिए कुण्डिनपुर जाते हुए महाराज नल से पुरन्दर, वह्नि, यम और वरुण दमयन्ती के प्रति दौत्यकर्म संपादन करने की याचना करते हैं । महाराज नल के देवकार्य स्वीकार कर लेने पर आकाश से पुष्पवृष्टि होती है । कलि का संचित क्रोध महाराज नल पर उमड़ पड़ता है । वह निषधा को विनष्ट करने की, तथा महाराज नल को राज्यच्युत करने की प्रतिज्ञा करता है । कलि, देवकृत्य संपादन के लिए दमयन्ती के समीप पहुंचे हुए महाराज नल के चित्त को विकृत करने का आदेश कामदेव को देता है और स्वयं महाराज नल से शून्य निषधापुरी में अपना प्रभाव जमाने चला जाता है । हंस से महाराज नल के विषय में सुनने के बाद से कामपीड़िता दमयन्ती, गौरी पूजन के लिए अपनी सखी कल्पलता के साथ पुष्पावचयन कर रही हैं । देव प्रभाव से अन्तर्हित महाराज नल मन में उज्जृम्भमाण काम विकार का संयमन करके, दोनों सखियों का वार्तालाप सुनते हैं । अवसर देखकर महाराज नल प्रकट होकर दमयन्ती को देवताओं का सन्देश सुनाते हैं । दमयन्ती को किसी भी स्थिति में देवताओं का वरण करना स्वीकार्य नहीं होता । देवताओं द्वारा मनोरथपूर्ति में बाधा डाली जाने पर पतिव्रता दमयन्ती देवताओं को पतिरूप में स्वीकार करने की अपेक्षा आत्मघात कर लेना अधिक श्रेयष्कर समझती है । महाराज नल उन्हें समझाते हैं कि दमयन्ती के प्राण त्याग करने पर भी देवताओं की ही विजय होगी' इस प्रकार से अपने को निरवलम्ब समझ कर दमयन्ती मूर्च्छित हो जाती है । कल्पलता के अनुरोध से महाराज नल समीपवर्ती सरोवर से पद्मपत्र में दमयन्ती के लिए जल लाते हैं । कल्पलता महाराज नल को देवताओं के लिए प्रति सन्देश देती है कि 'दमयन्ती महाराज नल में संक्रान्तहृदया है अतएव वे अन्य किसी का वरण नहीं कर सकतीं । देवगण प्रसन्न होकर उसका मनोरथ पूर्ण करें ।' देवदूत वापस चले जाते हैं और वे सखियां महाराज नल के रूप में उन्हें पहचान नहीं पाती हैं ।

महाराज नल ने देवों को अपने दौत्य का पूरा वृत्तान्त सुनाते हैं। देवताओं से अनुमति प्राप्त करके महाराज नल स्वयंवर सभा में उपस्थित होते हैं। प्रकारान्तर से दमयन्ती की परीक्षा लेने के लिए चारों लोकपाल भी वहां महाराज नल की आकृति में उपस्थित होते हैं। महाराज नल को प्राप्त करने के लिए ही आग्रहपूर्वक याचना करती हुई दमयन्ती पर प्रसन्न होकर चारों लोकपाल अपने लक्षणों को व्यक्त कर देते हैं और दमयन्ती नल का वरण करके पति के साथ दाम्पत्य-सुख का भोग कर रही है। पुष्कर द्वारा द्यूत में पराजित होकर किए गए महाराज नल मैत्री के साथ वन में जा रहे हैं।

कलि और पुष्कर में वार्तालाप हो रहा है। पुष्कर, महाराज नल का औरस भ्राता है जिसे महाराज नल से द्यूत क्रीड़ा के लिए कलि से प्रेरणा मिली थी। पुष्कर को साम्राज्य में गोपूजन और ब्राह्मण पूजन का निषेध कराने का आदेश देकर कलि स्वयं मैत्री से महाराज नल के विघटनार्थ प्रस्थान करता है। समस्त नगरवासी नल एवं दमयन्ती के साथ चल देते हैं।

विवेक प्रकट होकर पुष्कर को उपदेश देता है, जिससे प्रभावित होकर वह महाराज नल को वापस बुला लाने के लिए उद्यत हो जाता है उसी समय कलि प्रकट होकर पुष्कर को उपदेश देता हुआ अन्तःपुर में ले जाता है। वन में प्रवेश करके नैषध दमयन्ती का कष्ट देखकर दमयन्ती को विदर्भ पहुंचा देने के लिए कहते हैं परन्तु दमयन्ती महाराज नल के साथ ही वहां जाना स्वीकार करती है, जिसे महाराज नल उचित नहीं समझते। नागरिकों को वापस भेजकर महाराज नल के वन की ओर प्रस्थान करते समय, कलि के क्रोध को व्यक्त करने वाली भविष्यवाणी सुनायी दी थी। इस प्रकार कलि को पुष्कर के आकस्मिक भाव परिवर्तन का कारण समझकर पुष्कर के प्रति दमयन्ती का क्रोध विलीन हो जाता है। गगनभेदी वृक्षपर चढ़कर महाराज नल फल-संग्रह कर पाने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं तभी किरातवेषधारी कलि को देखकर वे फलों के छोटे वृक्षों के के विषय में प्रश्न करते हैं। कलि महाराज नल को समझाता है कि एक वृद्ध राजा के अधिकार में यहां एक ऐसा वृक्ष है, जो इच्छामात्र से ही फल ला देता है। स्वर्णभूमि में दो स्वर्ण-पक्षी प्रतिदिन कौतुक करते हैं, जो व्यक्ति उन्हें पकड़ कर राजा को देगा, उसे

ही उस वृक्ष के फल प्राप्त होंगे । इसके अतिरिक्त वन में और कहीं भी फल प्राप्त नहीं हो सकते, ऐसा किरात वेशधारी कलि से सुनकर महाराज नल आत्या दमयन्ती के साथ वहीं जाते हैं ।

माया पक्षियों को पकड़ने के लिए महाराज नल ने अपना परिधान उन पर फेंका, जिसे लेकर वे पक्षी उड़ गए । महाराज नल दमयन्ती से बारम्बार विदर्भ जाने का अनुरोध करते हैं ।

जब पिपासाकुल दमयन्ती नल के साथ समीपवर्ती निर्मल जल से पूर्ण सरोवर के निकट जाती है तो वह रक्तमांस मय तथा भुजंगमय हो जाता है । एक वृक्ष के नीचे आत्मपरित्याग की शंका करके भयभीत दमयन्ती अन्तत: नल की उरू पर सिर रखकर सो जाती है । मोह आ कर नैषध को पत्नी- त्याग का उपदेश देता है और नल पास पड़े हुए खड्ग से दमयन्ती का आधा वस्त्र काट कर जाने के विषय में संकल्प-विकल्प करते हैं तभी दवाग्नि में जलता हुआ कर्कोटक नाग रक्षा के लिए पुकारता है ।

निद्रावस्था में दमयन्ती को छोड़कर नल कर्कोटक का रक्षा करने जाते हैं । निद्रा टूटने पर नल को अपने पास न पाकर दमयन्ती मूर्च्छित हो जाती है ।

अपनी सफलता का वर्णन करने के अनन्तर कलि ऐसी विषम अवस्था में भी परोपकार में रत महाराज नल का वृत्तान्त जानने के लिए चल देता है ।

तीन किरात परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं । अमावस्या तिथि है और इस दिन रणचण्डिका को मांस और रुधिर की बलि देनी है । प्रथम किरात मृगपोत पर और तदनन्तर गोहा पर बाण चलाता है परन्तु उसे सफलता नहीं है-+ मिलती तब द्वितीय किरात उन्हें मृग-कानन में चलने की सलाह देता है । एक किरात देवी रण चण्डिका की पूजा के लिए सामग्री एकत्र करने समीपवर्ती कानन में गया था, वहां देखते-देखते दवाग्नि लग गई । दवाग्नि ग्रस्त किसी सर्प ने करुण स्वर से अपनी रक्षा के लिए पुकार की । किसी राज सदृश आकृति वाले मनुष्य ने अग्नि में प्रवेश करके सर्प को बाहर निकाल लिया । उस पुरुष के दसवां चरण-न्यास करते ही सर्प ने उसका दंशन कर लिया । वह मनुष्य जिस वन की ओर से आया था

उधर देखकर रोने लगा ।

उन्मत्त वेश में दमयन्ती नल के लिए विलाप करती है, उनके विषय में पर्वत से प्रश्न करती है और फिर मूर्च्छित हो जाती है । कर्कोटक के विष से दग्ध होकर भी कलि अपने प्रयत्न में संलग्न है । संज्ञा प्राप्त होने पर दमयन्ती नल विषयक प्रश्न वृक्ष से करती है । इसी समय एक कृष्ण सर्प दमयन्ती को दौड़ाता है और वह मूर्च्छित हो जाती है । उस स्थल पर तीन किरात आ पहुंचते हैं । उनमें से एक बाण से सर्प की जीवन लीला समाप्त कर देता है । दो किरात दमयन्ती को खोजते हैं और तीसरा उसे अनुचित समझ कर चला जाता है । दमयन्ती पर किसका अधिकार है यह निर्णय करने के लिए ये दोनों परस्पर युद्ध करते हैं, जिसमें दूसरे को लता-पाश से बांधकर प्रथम किरात भूमि पर पड़ी दमयन्ती के निकट जाता है । वह किरात अपने को किरात राज का सेनापति तथा दमयन्ती का चेट कहकर दमयन्ती को स्पर्श करना चाहता है, उसी समय किरातराज उपस्थित होकर दमयन्ती की रक्षा करता है । कार्य छोड़कर अशरणा स्त्री को तंग करने के अपराध में उसे शूली द्वारा अथवा अग्नि द्वारा मृत्यु का दण्ड दिया जाता है, द्वितीय किरात, प्रथम को इस दुष्कर्म से रोकने के कारण अपनी बन्धनवाली अवस्था समझाता है परन्तु किरातराज उसे भी मृत्यु-दण्ड देते हैं । किरात राज अपनी धर्म पुत्रिका के रूप में दमयन्ती को अपनी पुत्री के निकट ले जाता है । दमयन्ती किरात राज से अनुरोध करके दोनों किरातों को जीवनदान दिला देती है ।

विवेक किरातराज द्वारा दमयन्ती को भविष्य में विदर्भ पहुंचाने का समाचार देता है । अपने प्रयत्न की निष्फलता के कारण ~~खिन्न~~ खिन्न मोह अपने प्रभु से वार्तालाप करने चल देता है ।

विदूषक पथिक वेश में अयोध्या पहुंचता है । किरातराज ने दमयन्ती को विदर्भ पहुंचा दिया । दमयन्ती नल के वियोग में व्याकुल है । नल को प्राप्त करने के लिए ही दमयन्ती ने द्वितीय स्वयंवर की चर्चा की है ।

विकृत वेश में महाराज नल आत्मभर्त्सना करते हैं । विदूषक महाराज नल का अतिथि बनता है । महाराज नल को अश्वविद्या में चातुर्य,शरीर और

स्वर संयोग आदि से पहचान कर दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर की बात छेड़ता है। महाराज नल को एकाएक स्वयंवर की बात पर विश्वास नहीं होता। भीम द्वारा कल होने वाले स्वयंवर की सूचना इतनी देर से भेजने का कारण भी स्पष्ट करता है। कि भीम को ऋतुपर्ण के उस सारथी के विषय में ज्ञान है जो एक मास में पार करने योग्य मार्ग को एक ही दिन में पार कर लेता है। क्षुधा पीड़ित विदूषक महाराज नल को आगे कर के पाकशाला में जाता है।

मलिनवेश में कलि उपस्थित होता है। महाराज नल के धर्म के तेज से विदग्ध और फिर कर्कोटक के विष से जर्जर कलि ने महाराज नल को मुक्त कर दिया। तुरंग विद्या के विनिमय में ऋतु पर्ण से प्राप्त पादपपर्ण संख्यान विद्या की सामर्थ्य से कलि नल के शरीर में न रह सका। कलि को सम्मुख देख कर महाराज नल ने उसे मारने के लिए खड्ग उठाया परन्तु कलि को अनुनय-विनय के कारण उसे जीवनदान दे दिया। कलि ने दमयन्ती को भी आशीर्वाद दिया कि दमयन्ती आदि के चरित्र का आलोचन मात्र करने वालों के समीप भी कलि न ठहरेगा।

उज्ज्वल वेश में नल प्रवेश करके अपनी अवस्था पर शोक तथा नारी चरित्र की चंचलता पर आश्चर्य करते हैं। शरीर से कलि के निकलते ही नल को अपना वास्तविक रूप प्राप्त हो गया। स्वयं के प्रकट होने से स्वयंवर में बाधा होगी पर सोचकर नल तब तक का समय एकान्त में व्यतीत करना चाहते हैं।

स्वयंवरण की शोभा से युक्त दमयन्ती को, गौरी के मन्दिर में जाती हुई देखकर महाराज नल अत्यधिक खिन्न हो जाते हैं। रक्त वस्त्रों को धारण किए हुए कुमार इन्द्रसेन की क्रुद्ध महिष से रक्षा के लिए लोग चिल्लाते हैं। कुमार को अभय देते हुए महाराज नल अपना वास्तविक नाम प्रकट कर देते हैं।

क्रीडोद्यान में गए हुए इन्द्रसेन के प्रति विदूषक ने ही नल को बुलाने के लिए महिष का प्रयोग किया था। इससे महिष के वारण में इन्द्रसेन की सामर्थ्य भी प्रकट हो गई और पिता-पुत्र का सुसम्बन्ध भी।

इन्द्रसेन अपने को धनुर्वेद विद् कहता है, यही नहीं, वह महाराज नल का पुत्र है, उसके लिए भैंसे को रोकना तो छोटी-सी बात है। महाराज नल के मुख

से नल की निन्दा सुनकर इन्द्रसेन क्रुद्ध हो जाता है और बात युद्ध तक बढ़ जाती है। दमयन्ती मन्दारक और वृद्ध जयन्धर के साथ राजा भीम जाकर उन्हें युद्ध से निवृत्त करते हैं।

महाराज भीम नल को दोष न देकर दैव को ही दोष देते हैं और देश-विदेश से आये हुए राजाओं की सभा में द्वितीय स्वयंवर को दमयन्ती द्वारा नलान्वेषण का उपाय बताते हैं।

महाराज नल दमयन्ती इन्द्रसेन और विदूषक से मिलकर महाराज भीम सुर नाग गन्धर्व किन्नर सिद्ध और साध्य आदि से पूर्ण सभा में ऋतुपर्ण से वंचनाकृत अपराध के विषय में क्षमायाचना करते हैं। ऋतुपर्ण नल से क्षमा मांगते हैं।

महाराज भीम विदर्भ के राज्यसिंहासन पर मैत्री सहित नल का राज्याभिषेक करने की इच्छा करते हैं परन्तु नल उसे स्वीकार नहीं करते।

कलि अपनी योजना में पुष्कर की प्रवृत्ति को स्पष्ट करके महाराज नल की वसुन्धरा का साम्राज्य ग्रहण करने का आदेश देता है। पुष्कर महाराज नल के चरणों पर गिर कर क्षमा याचना करता है और कुमार इन्द्रसेन को यौवराज्य देकर महाराज नल से साम्राज्य ग्रहण करने के लिए कहता है। महोत्सव की पूर्ति करने के लिए महाराज नल की इच्छानुसार इन्द्रसेन किरात राज को बुला लाता है। दमयन्ती, महाराज नल और पुष्कर उसका आदरपूर्वक अभिवादन करते हैं।

महाराज नल का राज्याभिषेक होता है। किरात राज को सभी किरातों का अधिपति बनाया जाता है और विदूषक को निषध के सीमान्त का राज्य दिया जाता है।

विवेक से अनुसृत धर्म प्रवेश करके महाराज ऋतुपर्ण को, इतने समय तक महाराज नल को प्रश्रय देने के कारण शाश्वत लोक देता है, इसके अतिरिक्त किरात राज,मन्दारक पुष्कर और इन्द्रसेन को आशीर्वाद देता है।

नलदमयन्तीयम् नाटक में नलोपाख्यान के समान ही हंस के प्रयत्न से महाराज नल में दमयन्ती के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है, परन्तु नाटक में हंस से

भेंट होने से पूर्व ही महाराज नल दमयन्ती का चित्र देखते हैं और तभी से वे दमयन्ती का ध्यान करते रहते हैं[1]। महाराज नल द्वारा दमयन्ती के चित्र को देखने की कल्पना सम्भवत: कवि ने कथानक में कुछ ~~न्यूनता~~- नूतनता लाने के अभिप्राय से की होगी ।

द्वितीय अंक में कलि और कामदेव का वार्तालाप तथा कलि द्वारा कामदेव से सहायता मांगना नाटककार की अपनी कल्पना है ।

कलि ने देवकृत्य का संपादन करते हुए महाराज नल पर कामदेव को आक्रमण करने का आदेश दिया[2]। इतना सब होते हुए भी महाराज नल ने अपने दिए गए वचन का भली भांति निर्वाह कर लिया । पुष्पावचयन करती हुई सुन्दरी दमयन्ती को अपने में अनुरक्त जान कर भी उन्होंने संयमपूर्वक रहकर देवताओं का सन्देश सुनाया । यही नहीं,[3] उन्होंने भांति-भांति से दमयन्ती को देवताओं को वरण करने के लाभ समझाए । नलोपाख्यान के अनुसार देवदूत बने हुए महाराज नल अपना वास्तविक परिचय दे देते हैं[4] परन्तु नलदमयन्तीयम् में दमयन्ती की सखी और दमयन्ती किसी प्रकार से भी यह नहीं जान सकी कि देवताओं के दूत के रूप में उपस्थित होने वाला पुरुष नल ही था[5]। यही कारण है कि महाराज नल द्वारा दमयन्ती के चित्र-दर्शन की कथा के साथ दमयन्ती द्वारा महाराज नल के चित्रदर्शन की कहीं भी कल्पना नहीं की गयी । कामदेव पर भी विजय प्राप्त करके अपना दौत्य कार्य सावधानी से सम्पन्न करने से नायक का चरित्र अधिक उज्ज्वल हो जाता है ।

देव दौत्य संपादन में प्रवृत्त महाराज नल से वार्तालाप करती हुई दमयन्ती अपने पातिव्रत्य को अक्षुण्ण बनाए रखने में अपने आपको असमर्थ समझती है । उस दशा में वह मूर्च्छित हो जाती है और कल्पलता के अनुरोध से महाराज नल एक दौने में समीपवर्ती वापी से जल लाते हैं[6]। इस नवीन कल्पना के माध्यम से

१- न०द०,पृ०१०
२- न०द०,पृ०३४
३- न०द० द्वितीय अंक
४- म०भा० वनपर्व ५२।२३
५- न०द०,पृ०५३-५४
६- न०द०,पृ०५१-५२

कवि दमयन्ती के पातिव्रत्य की ओर संकेत करते हुए कथावस्तु में चारुता वृद्धि करने में सफल हुआ है।

'नलदमयन्तीयम्' नाटक में नलोपाख्यान के विपरीत विवेक और मोह जैसे पात्रों की कल्पना की गयी है। द्यूत में पराजित, नैषध नल के वन गमन के अवसर पर, विवेक पुष्कर को उपदेश देता है[1]। इसी प्रकार वन में एकाकिनी दमयन्ती के परित्याग का उपदेश भी मोह ही देता है। दमयन्ती परित्याग के लिए तत्पर महाराज नल शस्त्र से दमयन्ती का अर्ध वस्त्र काटना ही चाहते हैं कि विवेक उन्हें समझाता है, विवेक उन्हें उस अमानुषिक कृत्य से निवृत्त करने की चेष्टा करता है। महाराज नल विवेक की सलाह पर ध्यान देकर जैसे ही शस्त्रत्याग का उपक्रम करते हैं नेपथ्य से मोह का उपदेश सुनायी पड़ता है[2]। विवेक और मोह की पात्रों के रूप में कल्पना करके कवि ने नायक की मनःस्थिति का महाराज नल के अन्तर्द्वन्द्व का सुन्दर चित्रण किया है। इसी प्रकार अपने सगे भाई नल को वन में जाता देखकर पुष्कर भाव की एक तरंग के साथ किस प्रकार उन्हें वापस ले आने के लिए उद्यत हो जाता है और फिर कलि के प्रभाव से वह अपने विचार को कार्यान्वित नहीं कर पाता[3] उस सब के चित्रण में कवि ने विवेकादि पात्रों की सहायता ली है।

महाभारतीय नलोपाख्यान में क्षुधा से पीड़ित महाराज नल वन में स्वर्ण पखों वाले अनेक पक्षियों को विचरता देखकर आहार और धन प्राप्ति की आशा से उन पर अपना उत्तरीय वस्त्र फेंकते हैं, जिसका वे पक्षी अपहरण कर लेते हैं[4]। इसी प्रसंग में कालीपद तर्काचार्य ने एक नितान्त नवीन घटना की संयोजना की है। वन में गगनचुम्बी फल-वृक्ष हैं जिनसे फल संग्रह करने में महाराज नल असमर्थ हैं। उसी समय किरात वेषधारी कलि प्रवेश करता है। महाराज नल उससे किसी नीचे फल-वृक्ष के विषय में पूछते हैं। किरात वेष में वह कलि इच्छामात्र से फल देने वाले एक वृक्ष के विषय में बताता है। यह वृक्ष वृद्ध

१- न०द०,पृ०६०-६१

२- न०द०,पृ० ८४-८७

३- न० द०,पृ०६१

४- म० भा० वनपर्व ५८।१३

राजा के अधिकार में है तथा उसका फलप्राप्ति करने के लिए स्वर्ण भूमि में जाने वाले स्वर्ण पक्षियों को पकड़ कर राजा को देना पड़ता है । महाराज नल उन पक्षियों को ग्रहण करने के लिए अपना परिधान उन पर फेंकते हैं , वे माया पक्षी नल का वस्त्र लेकर उड़ जाते हैं ।[1]

इसी प्रकार से चतुर्थ अंक में तृषा से व्याकुल दमयन्ती और महाराज नल के देखते देखते निर्मल जल वाले सरोवर का रुधिर मांसमय सरोवर के रूप में परिणत हो जाना[2] भी कवि की मौलिक कल्पना है । उक्त दोनों ही घटनाओं के द्वारा नाटककार ने महाराज नल की विपत्ति का और कलि के प्रयत्न का सुन्दर चित्रण किया है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान में दमयन्ती को त्याग कर वन में बढ़ते हुए महाराज नल को वनान्तर से कर्कोटक का स्वर सुनायी देता है[3] । परन्तु नल-दमयन्तीयम् नाटक में महाराज नल विवेक और मोह द्वारा प्रेरित होकर दमयन्ती परित्याग के विषय में निश्चय नहीं कर पा रहे हैं तभी कर्कोटक का स्वर सुनकर वे उसकी रक्षा करने के लिए चल देते हैं[4] । इस प्रकार से नाटककार ने महाराज नल को दमयन्ती परित्याग के लिए पूर्णरूप से दोषी नहीं बनाया । महाराज नल कुछ भी निश्चय नहीं कर पाए थे, उसी अनिश्चय की अवस्था में वे कर्कोटक नाग की रक्षा के लिए प्रयत्न करने लगे, इस प्रकार दमयन्ती वन में अकेली छूट गई । कवि नलोपाख्यान की कथा में बहुत थोड़ा-सा परिवर्तन करके अधिक फल की सिद्धि करने में सफल हुआ है ।

नलोपाख्यान में एक ही किरात दमयन्ती की अजगर से रक्षा करता है तदनन्तर वह दमयन्ती द्वारा भस्मसात कर दिया जाता है[5] । नलदमयन्तीयम् के पंचमांक में तीन किरातों का प्रसंग है । अजगर से संत्रस्त दमयन्ती मूर्च्छित हो जाती है । एक किरात अपने बाण से अजगर की जीवन लीला समाप्त कर देता है । दमयन्ती की कामना से दो किरातों में युद्ध होता है, एक किरात दूसरे किरात का

१- न०द०,पृ० ७२-७४
२- न०द०,पृ० ७६-७७
३- म०भा० वनपर्व ६३।१-२
४- न०द०,पृ० ८७-८८
५- म०भा० वनपर्व ६०।२६-३५

लता पाश से संयमन करके दमयन्ती का स्पर्श करना चाहता है । इसी समय किरात राज उपस्थित होकर दमयन्ती की रक्षा करता है । किरात राज दोनों किरातों को मृत्यु दण्ड देता है, परन्तु दमयन्ती उन्हें जीवनदान दिलवाती है[1] । नाटककार की इस नवीन कल्पना से एक ओर दमयन्ती के पातिव्रत्य के साथ दयालुता का भी प्रदर्शन हो जाता है तो दूसरी ओर उसके द्वारा कथावस्तु अधिक रोचक हो जाती है । अभिनय की दृष्टि से किरात को भस्मसात् करना कठिन था, अतएव उस प्रसंग से अनायास मुक्ति भी मिल जाती है । दमयन्ती के वणिक्सार्थ के साथ चेदि तक जाने की तथा चेदि में दमयन्ती के निवास की कथा[2] अधिक सरस नहीं प्रतीत होती है । नाटककार ने इस कथा को छोड़ दिया है । कथा के प्रवाह को भी अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए नाटककार ने मुक्तिनाथ नामक किरात राज की कल्पना की । किरात राज की सहायता से दमयन्ती सीधे विदर्भ पहुंच जाती है[3] ।

नलोपाख्यान में महाराज भीम नलान्वेषण के लिए ब्राह्मणों को भेजते हैं जिनमें से पर्णाद नामक ब्राह्मण बाहुक के विषय में दमयन्ती को बताता है । फिर दमयन्ती अपनी माता से सलाह करके सुदेव द्वारा अपने द्वितीय मिथ्या स्वयंवर का समाचार ऋतुपर्ण के पास भिजवाती है[4] । इतने प्रपंच में अभिव्यक्त होने वाली कथा को नाटककार ने पर्याप्त संकुचित रूप में प्रस्तुत किया है । दमयन्ती नलान्वेषण के लिए विदूषक को भेजती है जो बाहुक को दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर की सूचना देता है[5] । इस प्रकार से कवि को कथा के अनावश्यक प्रसार का निराकरण करने में सफलता मिली है ।

नलोपाख्यान में कलि से विनिर्मुक्त होकर भी महाराज नल का रूप कर्कोटक के प्रभाव से जैसा विकृत हो गया था वैसा ही रहता है । दमयन्ती के सम्मुख महाराज नल ने जब कर्कोटक द्वारा दिए गए वस्त्रों को धारण किया तब उन्हें वास्तविक रूप प्राप्त हुआ[6] । इसके विपरीत नलदमयन्तीयम् में कलि से मुक्ति

१- न०द०,पृ० ६८-१०३
२- म०भा० वनपर्व ६२।४५-७२
३- न०द०,पृ०१२६
४- म०भा० वनपर्व ६७।६८
५-न०द०,पृ०११३
६-म०भा० वनपर्व ७४।४७

प्राप्त होते ही महाराज नल को अपना पूर्व रूप प्राप्त हो जाता है[१]। इस परिवर्तन के द्वारा भी कवि ने कथा में संकोच लाने का सफल प्रयत्न किया है।

महाराज नल से दमयन्ती के पुनर्मिलन के प्रसंग में भी कवि ने अपनी मौलिकता का प्रदर्शन किया है। महाभारतीय कथा में दमयन्ती बाहुक की भांति भांति से परीक्षाएं लेती है। बाहुक नल ही है, यह विश्वास हो जाने पर भी वह रूप-भेद विषयक सन्देह के निवारण के लिए बाहुक को अपने महल में बुलवाती है[२]। इस सब कथा-प्रसार के स्थान पर नाटककार ने विदूषक के प्रयत्न से क्रीडोद्यान में गए हुए कुमार इन्द्रसेन पर महिष के आक्रमण की कल्पना की है। कुमार की रक्षा करने के लिए महाराज नल अपना नाम प्रकट कर देते हैं। कुमार इन्द्रसेन को अपनी धनुर्विद्या में प्रवीणता का और महाराज नल के पुत्र होने का गर्व है। नल नैषध नल के चरित्र में दोष निकालते हैं जो कुमार को सहन नहीं होता और इसलिए दोनों में युद्ध होने लगता है। उन्हें युद्ध में निवृत्त करने के लिए दमयन्ती महाराज भीम और विदूषक आदि जाते हैं[३]। इस प्रकार नाटक में नल-दमयन्ती का पुनर्मिलन एकदम नवीन रीति से सम्पन्न कराया गया है। महाराज नल और कुमार इन्द्रसेन, दोनों की वीरता के प्रदर्शन के साथ साथ कवि कथावस्तु को सरस बनाने में भी सफल हुआ है।

नलोपाख्यान के अनुसार महाराज नल निषधा जाकर पुष्कर से पुन: द्यूतक्रीड़ा करते हैं। द्यूत में हारा हुआ अपना राज्य द्यूत द्वारा ही प्राप्त करते हैं[४] परन्तु 'नलदमयन्तीयम्' में पुष्कर स्वयं विदर्भ आता है। विनय और आग्रहपूर्वक वह महाराज नल का राज्य उन्हें वापस देता है। कलि भी महाराज नल को अपना राज्य वापस ले लेने का आदेश देता है[५]। इस प्रकार कथावस्तु में अनपेक्षित प्रसार न करते हुए भी नाटककार ने महाभारतीय नलोपाख्यान की सम्पूर्ण कथा को बहुत कुछ मौलिक रूप से प्रस्तुत किया है।

१- न०द०,पृ०११६-११७

२- म०भा० वनपर्व ७२-७४

३- न०द०,पृ० ११८-१२५

४- म०भा० वनपर्व ७८

अर्थप्रकृतियां

बीज

प्रस्तुत नाटक के प्रथम अंक में विदूषक की उक्ति के अन्तर्गत बीज का उपन्यास किया गया है। दमयन्ती का वर्णन करते हुए महाराज नल से विदूषक कहता है -- `भो वयस्य, यद्येवं तद् किमेवं पर्य्याकुलो भवान् ? अतिनिपुण्यसम्पदधिकारिणा राजचक्रवर्तिना भवता ननु सुलभैव सा भविष्यति।`[1] यहां तक बीज अर्थप्रकृति मानी जा सकती है।

बिन्दु

विलासोद्यान की रमणीयता के आलोकन से विच्छिन्न हुआ कथासूत्र राजा के --

सुषमा कुसुम निरुद्धा, यदि दयिता सा भवेदस्मिन्। [1]
कांचनमिव मणिबद्धं वनमिदमद्धा कान्तीयम् ।। [2]

वाक्य से संयुक्त हो जाता है अतएव यहां पर बिन्दु अर्थप्रकृति स्वीकार की जा सकती है।

पताका

पंचम अंक से प्रारम्भ होकर ग्रन्थ की समाप्ति पर्यन्त व्यापक किरात राज का वृत्तान्त पताका है। इसका नायक किरातराज है।

प्रकरी

प्रथम अंक में वनपाल तथा वनपालिका का वार्तालाप तथा तृतीय अंक में पुष्कर से कंजपुरुष का सम्भाषण प्रकरी है।

१- न०द०,पृ०१६

२- न०द०,पृ०१६

कार्य

महाराज नल तथा दमयन्ती का मिलन एवं उन्हें राज्यप्राप्ति ही इस नाटक में कार्य है ।

अवस्थाएं

आरम्भ

प्रथम अंक में महाराज नल के स्वगत सम्भाषण--

प्रिया प्रथमदर्शनात्प्रभृति चित्रशिल्पे नवे
मनो मधुरवासना रसविशेषमुग्धायितम् ।
अहो बत पद पदे हृदयभागविद्रावणे
प्रयत्न विनियोजना सपदि किं विमिश्रायते ।।[1]

में प्रारम्भ अवस्था दृष्टिगोचर होती है ।

यत्न

तदद्य कं वा शरणमुपगच्छामि[2] इत्यादि राजा के वाक्यों में यत्न अवस्था परिलक्षित होती है ।

प्राप्त्याशा

देवानां दूतकृत्ये फलविरहवशादस्मि खिन्नान्तरात्मा[3] इत्यादि वाक्य में प्राप्त्याशा है ।

नियताप्ति

सप्तम अंक में कुमार इन्द्रसेन के साथ नल के युद्ध के निवारणार्थ आए हुए भीम के वचनों में नियताप्ति अवस्था मिलती है । महाराज भीम कहते हैं--

---

१- न०द०,पृ०१०

२- न०द०,पृ०११

३- न०द०,पृ०५३

ततः नल स्वयं प्रयाकृत्याण:.... तत्रभवतीमन्यथा मा मंस्था:[3]।

फलागम

सप्तम अंक में महाराज नल की कृतकृत्यता तथा राज्य का प्राप्ति होना फलागम है ।

सन्धियाँ

मुख

'ततः प्रविशति राजान्वेषणपरो विदूषकः'[2] इस निर्देश से लेकर प्रथम अंक के अन्त तक मुख सन्धि है ।

प्रतिमुख

द्वितीय अंक के प्रारम्भ से लेकर 'देव श्रूयताम्' अद्य यावद्देवाखो पुरन्दरादिभिः सम्प्रार्थितो नितरां दमयन्तीगृहीतहृदयोऽपि बहुकृत्वः आत्मानमात्मानं मन्यमानः मानन्दमेव दौत्यमङ्गीकृतवान्, तावदेव तदुपरि पतिता गगनात् सिद्धनिसृष्टा कुसुमवृष्टिः'[3] इस वाक्य तक प्रतिमुख सन्धि मिलती है ।

गर्भ

इसके पश्चात् 'नूनं: सत्यमा देवी:'[4] इत्यादि वाक्य से प्रारम्भ होकर 'तृणनामनि श्लोऽपि त्वदधिकमाशंकमाना त्वरामाकी'[5] इत्यादि वाक्यों तक गर्भ सन्धि है ।

अवमर्श

'अहो ! श्रोत्रामृतं वचनमस्याः'[6] इस राजा नल के वाक्य से लेकर 'अहो ! जानात्येव सुनिपुणा देवीति, तदद्य देव्यामपनाती मे मानसदोषप्रसूतौ विकल्पमार्गाः'[7] इस वाक्य तक अवमर्श सन्धि माना जा सकता है ।

१- न०च०,पृ०१२५
२- न०च०,पृ०११
३- न०च०,पृ०३२
४- न०च०,पृ०३२
५ ७- न०च०,पृ०४४
६-७- न०च०,पृ०४४
७- न०च०,पृ०१२५

निर्वहण

'अहो प्रत्युज्जीवितोऽस्मि'[१] नल के इस वाक्य से लेकर ग्रन्थ की समाप्ति पर्यन्त निर्वहण सन्धि मिलती है ।

मैत्री परिणयम्

इस नाटक में १० अंक हैं । 'मैत्री परिणयम्' नाटक की कथा और मूलकथा में बहुत भेद है अत: यहां उसकी कथा देना आवश्यक है --

शतकूट पर्वत की उपत्यका पर वरदा तट की वनभूमि के उद्यान में साक्षात् और फिर स्वप्न में महाराज नल को दमयन्ती का दर्शन प्राप्त होता है । दमयन्ती में आसक्त महाराज नल को वन में विहार करते समय सिद्धिमती योगिनी के आगमन का समाचार मिलता है । सिद्धिमती योगिनी को शतस्तम्भ प्रासाद में ठहराने का आदेश देकर महाराज नल घूमते हुए सरोवर के पास जाते हैं, जहां उन्हें सोता हुआ स्वर्ण हंस दृष्टिगोचर होता है । महाराज नल चुपचाप बढ़कर उसे पकड़ लेते हैं , वह हंस मानुषी वाणी से करुण स्वर में अपनी दीनदशा को स्पष्ट करता है । करुणाभिभूत चित्त वाले महाराज नल उसे बंधन से मुक्त कर देते हैं । दमयन्ती से महाराज नल की संघटना का वचन देकर, दमयन्ती का वर्णन करता हुआ वह हंस चला जाता है ।

सिद्धिमती रूपधारिणी केशिनी दमयन्ती का चित्र भूल जाती है । चित्रांकित दमयन्ती राजा की नामांकित अंगुलीयक धारण किए हैं, सिद्धिमती बताती है कि दमयन्ती को महर्षि दमन ने आशीर्वाद दिया था । दमयन्ती महाराज नल में अनुरक्त है तथा दमयन्ती को वरण करने वाला देवों से भी अधिक प्रभावशाली होगा , इस प्रसिद्धि के कारण मनुष्य देव और गंधर्व आदि भी उसकी कामना करते हैं ।

१- न०द०,पृ०१२५

स्वयंवर में नलागमन से एक दिन पूर्व कलह दर्शन की इच्छा से नारद विदर्भ में उतर कर कलह वृष्टि का उद्योग करते हैं। इन्द्र, अग्नि, यम और वरुण में कलह के बीज डालकर वे कलि के अन्वेषणार्थ स्वर्ग से अवतरित होते हैं। वरदा तट पर माध्यन्दिन नियमों को सम्पन्न करके वे पाताल लोक में चले जाते हैं। नारद के द्वारा ही मार्गस्थ नल की लोकपालों से भेंट, महाराज नल के एक दिन के प्रैष्यभाव फिर स्वयंवर में उपस्थिति और दमयन्ती के वरण की सूचना मिलती है।

उद्यान में प्रच्छन्न रूप से उपस्थित महाराज नल दमयन्ती की अधीरता को देखकर सन्तुष्ट होते हैं। केशिनी के वृत्तान्त को न समझते हुए महाराज नल दमयन्ती को अन्यासक्त समझकर चिन्तित होते हैं, परन्तु अगले ही क्षण उनका सन्देह दूर हो जाता है। लोकपालों द्वारा भेजी गयी रम्भा उर्वशी मेनका और तिलोत्तमा द्वारा लोकपालों के सन्देश सुनकर दमयन्ती उनका मज़ाक बनाती है। चेटी विमला के मुख से महेन्द्र और विष्णु के वरण का प्रस्ताव सुनकर दमयन्ती उनका भी निराकरण कर देती है। सभी अप्सराएं दमयन्ती के पातिव्रत्य से प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद देती है।

महाराज नल अदृश्य रूप में ही स्थित होकर दमयन्ती के और अपने चित्र से युक्त चित्रफलक को देखते हैं। दमयन्ती की सखी केशिनी द्वारा ही सिखा पढ़ाकर वह स्वर्ण हंस महाराज नल को इस प्रकार से प्रोत्साहित करने के लिए भेजा गया था तथा सिद्धिमती का रूप धारण करने का केशिनी का रहस्य यहां प्रकट हो जाता है। महाराज नल प्रकट होकर यत्किंचित् वार्तालाप करते हैं।

दमयन्ती की कामना करने वाला राजा पुष्कर स्वयंवर में असफल होने पर आसुरी विधि से दमयन्ती का अपहरण करने के लिए उद्यत होता है। स्वयंवर में ही पुष्कर और दमयन्ती के भाई दमन में कुछ विवाद होने लगता है। स्वयंवर में दमयन्ती की सखी ,अमात्यपुत्री शारदा, दमयन्ती को राजाओं का परिचय देती है। स्वयंवर मण्डप में पहुंचकर दमयन्ती वहां उपस्थित राजाओं को प्रणाम करती है। शारदा काम्भोज कुन्तलाधिपति नेमीश्वर, मगधाधिपति श्रीसिंह और केरलाधिपति का वर्णन करती है। पुष्कर भी वहां उपस्थित होता है। दमयन्ती सभी राजाओं का निराकरण कर देती है। इसी अवसर पर विदर्भ राज से अनुगम्यमान

कांचुकी के साथ नल प्रविष्ट होते हैं । शारदा नैषध सार्वभौम का वर्णन करती है और विदर्भ राज दमयन्ती को अभिमत वर को वरण करने का आदेश देते हैं । दमयन्ती नैषध के कण्ठ में वरमाला डालने को ही वाली होती है कि विदर्भ राज और कंचुकी से युक्त युक्त द्वितीय नल प्रविष्ट होते हैं । ये द्वितीय विदर्भ राज पुर्वागत प्रथम वाले को इन्द्रजाल बताते हैं । इस प्रकार द्वितीय नैषध को ही तात्त्विक नल समझ कर दमयन्ती उनके वरणार्थ अग्रसर होती है तभी उसी प्रकार से तृतीय नैषध प्रवेश करते हैं । ये तृतीय विदर्भ राज भी पुर्वागत दोनों विदर्भ राजाओं को माया जन्य कहते हैं और दमयन्ती के भाई दमन को अन्त:पुर भेजकर देवी नन्दा से भगवान दमन की प्रसन्नता की द्योतक समस्त माया की निवारक औषधियों से युक्त रविप्रभ नामक अंगूठी व मंगवाते हैं । इस प्रकार से दमयन्ती को विश्वास दिलाकर ये तृतीय विदर्भराज उसे तृतीय नल के वरण का आदेश देते हैं । तृतीय नल के वरण के लिए उद्यत दमयन्ती को युवराज दमन के आने तक रुकने को कहते हैं । इसी समय उसी प्रकार चौथे नल प्रवेश करके चतुर्थ विदर्भ राज पर अपने समान रूपवाले तीन अन्य पुरुषों को देखकर क्रोध प्रकट करते हैं । ये अपने अपमान के कारण स्वयंवर मण्डप से जाने की धमकी देते हैं । चौथे वैदर्भ उन्हें समझा कर बिठा लेते हैं । उनको जाने की धमकी के कारण दमयन्ती उनका वरण शीघ्र ही करना चाहती है और चतुर्थ वैदर्भ भी उसे इस कृत्य के लिए प्रोत्साहित करते हैं, परन्तु युवराज दमयन्ती को ठहरने का आदेश देते हैं । इसी समय पांचवें नल भी उसी प्रकार से प्रवेश करते हैं । ये पांचवें वैदर्भ चार अन्य वैदर्भों और नलों द्वारा पांचवें नल के अपमान का प्रसंग उठाकर खिन्न हो रहे हैं । पांचवें नैषध के वरण के लिए उद्यत दमयन्ती को शारदा ही रोक देती है । पांच नल में से दमयन्ती समझ लेती है कि चार लोकपाल ही हैं । दमयन्ती उनकी स्तुति करती है । स्तुति से सन्तुष्ट होकर देवगण अपना स्वरूप स्पष्ट कर देते हैं और दमयन्ती को अभिमत वर के वरण की आज्ञा देते हैं । उसी अवसर पर दमन रविप्रभ अंगूठी ले आता है जिसे महाराज भीम नल को और महाराज नल दमयन्ती को पहनाते हैं ।

ब्राह्मणों के वार्तालाप से नल और दमयन्ती के विवाह की सूचना मिलती है । महाराज नल की माता राजा भीम की मौसेरी बहिन है[1]। युवराज दमयन्ती के स्नेह के कारण दमयन्ती के साथ ही चले जाते हैं परन्तु दमन को विदर्भ राज दमयन्ती के साथ नहीं जाने देते ।

कलि और द्वापर में वार्तालाप हो रहा है कि नारद के प्रयत्न से कलि दमयन्ती से विवाह करने के लिए स्वयंवर में पहुंचा परन्तु उसे विलम्ब हो गया । दमयन्ती का अपहरण करने के लिए वह निषधा पहुंचा । वहां दमयन्ती के अकेली बाहर निकलने की निष्फल प्रतीक्षा करता हुआ वह बहुत समय तक विभीतक वृक्ष पर निवास करता रहा । तब कभी सदाचार आलवाल के सोते रहने पर ही नल और दमयन्ती के विवेक -नाश के लिए कलि ने भ्रम प्रमाद आलस्यादिक अपने पक्ष वालों को नियुक्त करके नल के प्रतिकूल पुष्कर को प्रोत्साहित किया ।

द्वापर कलि को इस दुष्कर्म से निवृत्त करने का प्रयत्न करता है । कलि चिढ़कर द्वापर को मारने के लिए उद्यत हो जाता है, द्वापर घबड़ा जाता है और कामदेव द्वारा मारे गए शम्बर के अस्थिखण्डों से मायावी मय द्वारा विनिर्मित सदैव विजयकारी चार पासे कलि को देता है । नल के पास जाते हुए पुष्कर के लिए कलि के पासे भिजवा देता है ।

महाराज नल अपने मुख्य अमात्य से परामर्श कर रहे हैं । महाराज नल ने दु:स्वप्न देखा है कि एक भयंकर आकार वाले पुरुष ने उन्हें पर्वत शिखर से गिरा दिया है । दमयन्ती इसके शमन के लिए शतरुद्रीय आदि का पाठ करवाती हैं ।

पुष्कर नल के पास आकर अपने को कुण्डिन से लौटने के बाद से हृदयशूल का रोगी बताता है और वह कहता है कि वैद्यों ने उसे स्वास्थ्य के लिए एक ही जगह न रहने का आदेश दिया है । पुष्कर महाराज नल को चार पासे देकर उन

१- भगवन्माताऽस्माकं भवति खलु मातृष्वसृसुता । नं०प० ४।१५

पासों की विशेषता बतलाता है । पुष्कर और नल दोनों के ही कुलकूटस्थ वनायु के वे पासे थे । उन पासों को प्राप्त करके महाराज नल पुष्कर से द्यूत क्रीड़ा के लिए आग्रह करते हैं । पुष्कर के कथनानुसार प्रथम पण में महाराज नल की विजय हुई , इसी प्रकार नल ने द्यूत में पुष्कर के कटक भी जीत लिए परन्तु उसके उपरान्त वे अपना गृह,राज्य,रथ,घोड़े,मणि,कनक, अम्बरादिक सभी चर वस्तुएं हार जाते हैं । यहां तक कि महाराज नल द्यूत में अपने को भी हार जाते हैं । पुष्कर के आग्रह करने पर भी वे दमयन्ती को बाजी लगाने के लिए नहीं तैयार होते । पुष्कर नल को वन में चले जाने की आज्ञा देते हैं , दमयन्ती वार्ष्णेय के साथ अपने पुत्र इन्द्रसेन और पुत्री इन्द्रसेना को पिता के घर भेज देती है । इन्द्रसेन माता से पाथेय मांगता है परन्तु कुछ भी देने में असमर्थ दमयन्ती उन्हें मार्ग में फल तोड़ कर खाने ~~नहीं~~ और नदी का जल पीने की सलाह देती है ।

नल और दमयन्ती वन में भ्रमण करते हुए एक सहकार, वनोदुम्बर वृक्ष के अनन्तर विन्ध्य पर्वत का दर्शन करते हैं । राजा नल द को कनकमय पक्षी दृष्टिगोचर होते हैं । उन्हें देवी का मन:कौतूहलकारी समझ कर ग्रहण करने की इच्छा से नल उन पर पीताम्बर फेंकते हैं । पक्षी नल का वस्त्र लेकर उड़ जाते हैं । नल एक शिला-तल पर सोयी हुई दमयन्ती के परित्याग के विषय में संकल्प - विकल्प कर रहे हैं तभी वे अपने कन्धों पर पिशाच का भार अनुभव करते हैं । एकाकिनी दमयन्ती को त्याग कर नल चले गए । अर्धरात्रि में विनिद्र दमयन्ती नल को अपने समीप न प्राप्त करके तथा वस्त्र छिन्न होने के कारण अपने को परित्यक्ता समझ कर एक बार आत्मघात करने का भी विचार करती हैं । वे वृक्षों से सिंह और कभी मेघ से नल-विषयक प्रश्न करती हैं ।

वन में ग्रसन करने में प्रवृत्त अजगर से दुर्गसिन दमयन्ती की रक्षा करता है । मुग्ध हरिण को ग्रहण करने की इच्छा से महाराज पुष्कर ने किरातों को प्रोत्साहित करने के लिए दुर्गसिन को नियुक्त किया था । दुर्गसिन दमयन्ती को पुष्कर से विवाह करके उनकी प्रिया दमयन्ती की सपत्नी बन जाने की सलाह देता है । इस विषय में दमयन्ती की अनिच्छा देखकर दुर्गसिन बलपूर्वक दमयन्ती पर अधिकार करने का प्रयत्न करता है परन्तु तत्काल ही वज्रपात होने से उसकी मृत्यु हो जाती है ।

दमयन्ती को अनुकूल करने के लिए पुष्कर साम दानादि का निष्फल प्रयोग करता है । उसी समय महर्षि वामदेव के आगमन से पुष्कर उस स्थल से चला जाता है । महर्षि वामदेव दमयन्ती को अंगराग,पुष्प,फल और पीताम्बर प्रदान करते हैं । उन्होंने बताया कि एक बार कुश आनयन के लिए वनान्तर में गए हुए उनके सामने अन्तरिक्ष गत कुछ पक्षियों ने उस सामग्री को गिरा दिया था । दिव्यदृष्टि से नल और दमयन्ती का पूर्ण वृत्तान्त जानकर उन्होंने आप्तोर्याम व्रत प्रारम्भ किया है और पतिव्रता सन्निधि रूप अवभृत पूर्ण करने के लिए वे दमयन्ती के समीप आये हैं । इतना बतला कर महर्षि वामदेव चले गए ।

दमयन्ती की मित्रादिनी नामक एक स्त्री से भेंट होती है जो उन्हें अपना वृत्तान्त सुनाती है । वह महाराज पुष्कर के भवन में बहुत समय तक समस्त अन्त:पुर की अधिकारिणी थी । एक बार पुष्कर ने उसे कुण्डिनपुर जाकर अपने उक्ति चातुर्य द्वारा भैमी को पुष्कर में अनुरक्त करने के कार्य में नियुक्त किया । भैमी के भवन में प्रवेश प्राप्त न कर सकने पर भी धन के लोभ से उसने पुष्कर को मिथ्या आशा बंधा दी थी । दमयन्ती को स्वयंवर में न प्राप्त कर पाने के कारण क्रुद्ध पुष्कर ने उसके नाक,कान काट कर उसे नगर से बहिष्कृत कर दिया । वन मार्ग में एकाकिनी वह चिरकाल तक एक किरात के साथ रही । वह किरात वज्रपात से काल-कवलित हो गया । तब उस किरात की पत्नी ने उसे निकाल दिया । मार्ग में एक किरात ने उसका सर्वस्वापहरण कर लिया । सन्ध्या,कर्म सम्पादन के लिए दमयन्ती चली जाती है और मित्रादिनी एक कुंज में दो पर्ण शय्या की रचना करके दमयन्ती की प्रतीक्षा करती है । इसी समय पुष्कर वहां पहुंच कर दमयन्ती के भ्रम के कारण मित्रादिनी से वार्तालाप करता है ।

उधर दमयन्ती एक वणिक् सार्थ के शिविर के निकट पहुंच जाती है । कामदास वणिक् को देखकर भयभीत दमयन्ती वृक्ष के पीछे छिपने का प्रयत्न करती है तथा कामदास उन्हें चोर समझता है । दमयन्ती सार्थ के साथ चेदिपुर जाने की इच्छा प्रकट करती है । कामदास दमयन्ती को अपने घर ले जाने की इच्छा से उन्हें धन का लोभ देता है । उसमें भी असफल होने पर वह उन्हें बलपूर्वक अपहरण करने

की धमकी देता है । क्रुद्ध होकर दमयन्ती उसे बान्धव सहित विनष्ट होने का शाप देती है । कामदास 'चोर-चोर' इस प्रकार का शब्द करके लोगों को उस स्थल पर एकत्र कर लेता है । वह दमयन्ती को बांध कर शिविर में ले चलने की आज्ञा देता है । इसी अवसर पर नेपथ्य से वन्य गजों द्वारा धनदास की मृत्यु और अन्य जनों की कष्टदशा की सूचना मिलती है । वन्य गज कामदास आदि का भी पीछा करते हैं । किरातों के भय से दमयन्ती वनान्तरालस्थित महाकाली के मन्दिर में देवी की प्रतिमा के पीछे छिप जाती हैं । उसी मन्दिर में कुछ किरात आदशवर्षीय बंधे हुए बालक को कूटयन्त्र से निकाल कर देवी पर बलि देने के लिए खड्ग उठाता है । इसी समय किरातों में बालक की बलि के प्रकार के विषय में मतभेद हो जाता है । कोई उसे जलती हुई लौह शलाका से भेद कर अग्नि-कुण्ड में तपाने के अनन्तर देवी को समर्पित करना चाहता है । कोई देवतोत्सवार्थ गाड़े गए यन्त्रमण्डप के स्तम्भों से लटका कर उसे मारने का प्रस्ताव करता है । कोई जीवितावस्था में ही बालक की त्वचा निकाल कर उसको बलि चढ़ाने के पक्ष में है । एक अन्य किरात कुल क्रमागत रीति से एक ही प्रहार में बालक को निष्प्राण करके शिर पर दीप आरोपित करने की सलाह देता है । सभी किरात उसकी सलाह स्वीकार कर लेते हैं । किरातों में परस्पर वार्तालाप होता है कि यदि अभी भी दमयन्ती महाराज पुष्कर में अनुरक्त हो जाएं तो वे इस बालक को मुक्त कर देंगे परन्तु वह तो प्राण त्याग करके भी सचरित से विचलित नहीं होंगी । दमयन्ती देवी की प्रतिमा के हाथ से खड्ग खींच कर प्रकट हो जाती हैं । वे बालक को आश्वासन देती हैं । दमयन्ती के काजल हरिद्रा आदि के द्वारा विकृत रूप के कारण भय से सभी किरात भाग जाते हैं और बालक की इच्छा से दमयन्ती वह खड्ग उसे दे देती है । बालक उन किरातों का पीछा करता है । इसी अवसर पर मित्रादिनी मन्दिर में प्रविष्ट होकर दमयंती को अपना वृत्तान्त सुनाती है । दमयन्ती के प्रत्यागमन में विलम्ब होता देखकर वह उनका अन्वेषण करने गयी मार्ग भूल जाने के कारण वनान्तर में भटकती हुई वह किरातों को देखकर गुल्म के अन्दर प्रविष्ट हो गई । वहां एक तलवार लेकर किरातों का पीछा करता हुआ एक बालक दृष्टिगोचर हुआ । युद्ध में बालक की तलवार भग्न हो गई परन्तु उसने एक वृक्ष की शाखा से ही उन सब को बहुत मारा । उसी समय दो अश्वारोही युवक वहां पहुंचे । उनसे वार्तालाप में बालक ने बताया कि वह

आखेट के लिए अपने उन दोनों मामाओं के साथ आया था परन्तु वन में वह कहीं दूर चला गया था जहां पुष्कर द्वारा भेजे गए व्याधों ने उसे बलपूर्वक पकड़ लिया और बलि देने के लिए कालिका के समक्ष ले आये। देवी ने प्रकट होकर बालक को तलवार दी जिसे लेकर वह किरातों का पीछा कर रहा था। वे दोनों अश्वारोही उसे अपने साथ नगर ले गये। इस वृत्तान्त को सुनकर दमयन्ती ने मित्रादिना को अपने वामहस्त का रत्नवलय पुरस्कार रूप में दिया। मित्रादिना के अनुरोध से दमयन्ती चेदिपुर में उसके घर चली गयी।

चेदिराज से विवादी धनसेन निवेदन करता है कि उसकी पड़ोसिन नैषधी उसके साथ बहुत समय तक रहने के बाद वस्त्राभरणों को साथ लेकर किसी अन्य व्यक्ति के साथ चली गयी। वन-मार्ग में वह लोगों द्वारा पकड़ी गयी परन्तु पुनः वह धनसेन को मारपीट कर अन्यत्र चली गयी। झगड़े में उसके पीताम्बर का एक खण्ड और एक कटक धनसेन के हाथ आ गया। उसके गवाह रूप से वह भाण्डायन को उपस्थित करता है। धनसेन इतने समय के पश्चात् पकड़ी गयी नैषधी को वस्त्राभरण सहित अपने आधीन करवाने का निवेदन करता है। मित्रादिना और चण्डसेन के प्रयत्न से व्यवहार में दमयन्ती का पक्ष एकदम ढीला होने लगता है। धनसेन धन लेकर भी दमयन्ती को छोड़ना नहीं स्वीकार करता। दमयन्ती अपनी माता का नाम लेकर विलाप करती है। सभा में स्थित सुदेव नामक ब्राह्मण दमयन्ती को उनके स्वर से तथा भ्रूमध्यगत पिल्लु से पहचान लेता है। वह चेदिराज को बताता है कि दमयन्ती, उनकी मौसी नन्दा की पुत्री है। चेदिराज दमयन्ती से क्षमा मांगते हैं। भयभीत मित्रादिनी समस्त यथार्थ वृत्तान्त सुना देती है। सन्ध्या वन्दनादि के लिए दमयन्ती के चले जाने पर मृगया के लिए आये हुए पुष्कर ने उसे भांति भांति से आश्वासन देते हुए परिगृहवापी परिसर पर जाकर जब उसे दीपक के प्रकाश में देखा तब वह शस्त्र से अवशिष्ट नाक कान काटने के लिए उद्यत हो गया। उसी ने दमयन्ती से मिलन सम्पन्न कराने पर १०० ग्राम देने का वचन दिया। उसे स्वीकार करके ही मित्रादिनी छलपूर्वक दमयन्ती को अपने घर ले आयी थी। दमयन्ती की कामना करने वाले धनसेन ने मित्रादिनी से दमयन्ती द्वारा प्रदत्त को क्रय

करके एक हजार रुपए दिए । दमयन्ती से संघटन की कामना से धनसेन ने इस मिथ्या व्यवहार की कल्पना की थी । किसी मधु-विक्रेता व्याध को विंध्याटवी में दवाग्नि दग्ध भूमि में वह पीताम्बर खण्ड प्राप्त हुआ था । यह सब जानकर राजा धनसेन भाण्डायन और मित्रादिनी को सर्वस्व अपहरण करके राज्य से निकाल देने की आज्ञा देते हैं परन्तु दमयन्ती उन तीनों को क्षमा कर देती है । इसी अवसर पर चेदिराज की माता छान्दा दमयन्ती से मिलने की इच्छा प्रकट करती है ।

महाराज नल कोशलाधिपति ऋतुपर्ण के यहां बाहुक नाम से सारथी हो गए । अश्वों को चराते हुए बाहुक अयोध्या से दूर निकल आए । एक हरेभरे क्षेत्र में अश्वों को बांधकर वे किंचित् आगे बढ़ जाते हैं जहां उनकी भेंट अपने अमात्य प्रजाशेखर से होती है । ये अमात्य इस समय सत्यव्रत नाम से अतिथि सेवा पर होकर अतिथि के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे । सत्यव्रत कृषि कार्य भी करते थे । उसी अवसर पर एक वृद्ध का अनुसरण करते हुए अनेक अतिथि वहां पहुंचते हैं । यह वृद्ध तीर्थव्रत नैषध के वन में जाते ही निषधा को छोड़कर नाना तीर्थों का सेवन करता हुआ वृद्धावस्था में वाराणसी पहुंचता है । उनके साथ में निषधा के नगरवासी थे जो तत्कालीन जनता की दुरवस्था देखने में असमर्थ होकर वन में चले आए थे । तीर्थव्रत सत्यव्रत को बतलाता है कि वन में नैषध द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती अनेक कष्ट झेलती हुई चेदिपुर पहुंच गयीं जहां के राजा सुबाहु ने उन्हें विदर्भ पहुंचा दिया । निषधा के नगरवासी नवीन राज्य के दोषों का वर्णन करते हैं ।

इसी अवसर पर वहां नवीन वस्त्राभरणों से विभूषित पर्णाद नामक ब्राह्मण पहुंचता है जो कुण्डिनपुर में सम्पन्न होने वाले दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर के लिए ऋतुपर्ण के पास गया था ।

दमयंती के द्वितीय स्वयम्वर को लेकर बाहुक और पर्णाद में विवाद होने लगता है जिसमें सत्यव्रत मध्यस्थता करते हैं । दमयन्ती स्वयंवर में पहुंचने के लिए उत्सुक ऋतुपर्ण ने बाहुक को बुलवाया ।

एक याम मात्र में बाहुक ने ऋतुपर्ण को विदर्भ की राजधानी के निकट पहुंचा दिया । ऋतुपर्ण के हाथ से वस्त्र गिर जाता है जिसे पकड़ते पकड़ते रथ एक योजन आगे निकल गया । ऋतुपर्ण के पूछने पर बाहुक ने बताया कि उन्होंने बाल्यकाल

में समस्त कलाओं का अभ्यास करके महास्त्रविद्या प्राप्त करने के लिए महर्षि अगस्त्य की बहुत समय तक सेवा की । एक बार विवाह के लिए धन की इच्छा करने वाले, वहां आए हुए महर्षि बाष्कल को प्रभुत धन प्रदान करके उनसे द्युत विद्या और सूद विद्या प्राप्त की थी । ऋतुपर्ण अपने कुलगुरु वसिष्ट से प्राप्त अक्षविद्या रहस्य और गणित विद्या रहस्य के बदले में अश्वविद्या का रहस्य जानने की इच्छा प्रकट करते हैं । महाराज नल अक्षविद्या का रहस्य समझ कर गिरि-शिखरस्थ विभी तक वृक्ष के पत्तों और फलों की ऋतुपर्ण द्वारा बतायी गयी गणना के प्रति जिज्ञासा से, उस वृक्ष को काट देते हैं । उसी समय विरूप कलि प्रकट होकर अपना परिचय देता है वह नल को आशीर्वाद देता है कि उनकी कीर्ति अमर होगी तथा उनका नाम लेने वालों को कलि से कुछ भी भय न होगा ।

बृहत्सेना और दमयन्ती में वार्तालाप हो रहा है -- बाहुक की परीक्षा लेने के लिए दमयन्ती ने केशिनी को भेजा है तथा दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर के विषय में भीम को कुछ भी ज्ञान नहीं है । महाराज भीम, ऋतुपर्ण से उनके अतर्कित आगमन का कारण पूछते हैं । ऋतुपर्ण ने बताया कि वे आखेट के लिए आये थे वहीं से महाराज भीम को दर्शनार्थ चले आए हैं । उसी दिन प्रात: काल स्वयंवर का समाचार सुनकर पुष्कर भी कुण्डिन आ पहुंचा होता है, उसी के स्वागतार्थ नगर अलंकृत किया गया है । बाहुक की परीक्षा लेकर निवृत्त केशिनी उस सूत में नल के अन्य चिह्नों की भी प्राप्ति का उल्लेख करती है । भीम से भेंट करके निवृत्त ऋतुपर्ण ने बाहुक को हार मुक्ताहार मालाएं और पुष्पमालाएं देकर भोजन लाने का आदेश दिया । सूत के कर स्पर्शमात्र से वे पुष्प सुगन्ध से पूर्ण हो गए । उसकी इच्छा मात्र से पात्र जल से पूर्ण हो गए । उसके करस्पर्श मात्र से पात्रस्थ पदार्थ सिद्ध हो गए । केशिनी बाहुक द्वारा सिद्ध किए गए पदार्थ ले आती है जिन्हें देखकर दमयन्ती को विश्वास हो जाता है कि उनको बनाने वाले व्यक्ति नल ही हैं । दमयन्ती बाहुक से मिलने जाती है और उनसे पूछताछ करती है । केशिनी की सलाह से बाहुक की पुन: परीक्षा लेने के लिए दमयन्ती इन्द्रसेन और इन्द्रसेना दोनों को बाहुक के समीप भेजती है । बच्चों के देखकर बाहुक के असामान्य व्यवहार के कारण दमयन्ती बाहुक को पहचान लेती है ।

इस अवसर पर अतिथियों के मनोरंजनार्थ महर्षि वामदेव द्वारा प्रणीत रूपाहरण नाटक का अभिनय किया गया । वन में महर्षि वामदेव से दमयन्ती ने नल की अवस्था के विषय में प्रश्न किया था उस प्रश्न का उत्तर देने के लिए ही महर्षि वामदेव ने इस नाटक का प्रणयन किया । दमयन्ती-परित्याग के अनन्तर खिन्न-मना नल के आगमन से इस नाटक का प्रारम्भ होता है । नल रूपधारी नट नाना प्रकार से विलाप करता है । एक बार आत्मघात का भी विचार उनके मन में जन्म लेता है परन्तु उसे अनुचित समझ कर वे इसे त्याग देते हैं । इसी समय वे एक नागराज का विलाप सुनकर उसे दावाग्नि से उठाकर एक वृक्ष की छाया में रख देते हैं । नल नाग पर अपने जीर्ण - शीर्ण वस्त्र से हवा करके उससे दंशन करने का अनुरोध करते हैं । नाग नल के पैरों में दंशन कर लेता है जिससे नल मूर्च्छित हो जाते हैं । संज्ञा प्राप्त करने पर वहाँ से नाग अदृश्य हो चुका होता है तथा नल का शरीर विकृत हो जाता है । निराश होकर नल उसी दवाग्नि में प्रवेश करके प्राण त्याग के लिए उद्यत होते हैं । इसी अवसर पर एक दिव्य पुरुष प्रवेश करता है । वह कर्कोटक नागराज हैं । द्वापर द्वारा विज्ञप्त, इन्द्र की प्रेरणा से उन्होंने सर्प रूप धारण करके नल का दंशन किया था । उन्होंने नल को समझाया कि विष के कारण विकृत शरीर से निगूढ़ निवास में सहायता मिलेगी । कर्कोटक नाग नल को दो वस्त्र प्रदान करते हैं जिनमें से एक को धारण करके और अन्य को रक्षा करते हुए उन्हें बाहुक नाम से ऋतुपर्ण के समीप जाने का आदेश देते हैं । कर्कोटक ने बताया कि घोररूप के त्याग के लिये नल को दूसरा वस्त्र पहनना होगा । उन वस्त्रों को ग्रहण करके नल अपने पीताम्बर खण्ड को दवाग्नि दग्ध भूमि पर फेंक देते हैं ।

इस नाटक को देखकर ऋतुपर्ण बाहुक से क्षमा याचना करते हैं । नल कर्कोटक प्रदत्त द्वितीय वस्त्र को धारण करके वास्तविक रूप को प्राप्त हो जाते हैं । दमयन्ती नल को माला पहनाती है और आकाश से पुष्प वृष्टि होती है ।

नल दमयन्ती को पण बनाकर पुष्कर को द्यूत क्रीडा के लिए अन्यथा युद्ध के लिए ललकारते हैं । पुष्कर से द्यूत में नल, समस्त राज्य जीत लेते हैं । पुष्कर नल से क्षमा याचना करता है । राजा नल दयावश पुष्कर को उसका कुल क्रमागत राज्य दे देते हैं । विदर्भ में राजा नल का पुन: महाभिषेक होता है और वामदेव

महाराज नल को आशीर्वाद देते हैं।

महाभारतीय नलोपाख्यान में नल और दमयन्ती में परस्पर पूर्वानुराग के उत्पादन में हंस सहायक होता है[१]। परन्तु मैषीपरिणयम् में सर्वप्रथम तो महाराज नल को शतकूट पर्वत की उपत्यका तथा वरदा तट की वनभूमि के उद्यान में दमयन्ती का साक्षात्कार होना सूचित किया गया है[२], तदनन्तर उन्हें स्वप्न में दमयन्ती का दर्शन होता है[३]। इसी प्रकार दमयन्ती में अनुरक्त नल वन में विहार करते हैं जहां उन्हें सिद्धिमती महायोगिनी के आगमन का समाचार मिलता है। महाराज नल शतस्तम्भ प्रसन्न प्रासाद में उनके निवास का प्रबन्ध करवा देते हैं[४], वन-विहार करते हुए महाराज नल एक सरोवर के समीप पहुंचते हैं जहां उन्हें सोता हुआ स्वर्ण हंस दृष्टिगोचर होता है। महाराज नल उसे पकड़ लेते हैं[५]। महाभारतगत कथा में हंस नल का प्रिय करने का वचन देता है तब नल उसे मुक्त करते हैं[६] परन्तु यहां करुणा से अभिभूत होकर महाराज नल उसे यों ही बन्धन मुक्त कर देते हैं[७]। सिद्धिमती योगिनी द्वारा विस्मृत दमयन्ती-चित्र से युक्त चित्रफलक की प्राप्ति होती है। चित्रगता दमयन्ती महाराज नल की नामांकित अंगुलीयक धारण किए हैं[८]। नाटक में यह सब केशिनी की चाल है। दमयन्ती की सखी केशिनी ही सिद्धिमती महायोगिनी का रूप धारण करके नल के समीप गई थी[९]। महाराज नल में दमयन्ती के प्रति अनुरक्त होने का समाचार वह स्वयं नल को देती है। तदनन्तर जानबूझकर दमयन्ती का चित्र वहां छोड़ आई। इसके अतिरिक्त केशिनी ने ही हंस को उस प्रकार से सिखा पढ़ाकर महाराज नल के समीप भेजा था[९]। हंस दमयन्ती का गुणगान करके दमयन्ती में पहले से ही अनुरक्त महाराज नल को अधिक प्रोत्साहित करता है[१०]।

१- म०भा० वनपर्व ५०
२- नै० प० , पृ० १५-१६
३- मै०प०, पृ०१२-१३
४- मै०प०, पृ०११
५- मै०प०, पृ०१८-१६
६- म०भा० वन पर्व ५०।२०-२३
७- मै०प०, पृ०२०
८- मै०प०, पृ०२३
६- मै०प०, पृ०६३-६४
१०- मै०प०, पृ०६३-६४

इस प्रकार से नाटककार ने कहीं कहीं नितान्त मौलिक प्रकार से नवीन घटनाओं का सन्निवेश किया है तो कहीं कथा की किसी घटना को भी अपनी मौलिकता से आरंजित करके उपन्यस्त किया है । हंस द्वारा दौत्य के पीछे केशिनी के हाथ की कल्पना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होती है । सम्पूर्ण घटना सुन्दर है और नवीन कल्पना है ।

नलोपाख्यान में इन्द्र के भवन में पहुंचे हुए नारद इन्द्र की जिज्ञासा की शान्त करने के लिए दमयन्ती और उनके भावी स्वयंवर का उल्लेख करते हैं[1] परन्तु यहां दमयन्ती स्वयंवर के लिए विदर्भ में महाराज नल के आगमन से एक दिन पूर्व वहां नारद पहुंचते हैं । कलहप्रिय नारद दमयन्ती को निमित्त बनाकर कलह सृष्टि का उद्योग करते हैं । वे जानबूझकर इन्द्राग्नियम और वरुण की दमयन्ती में रुचि उत्पन्न करते हैं तदनन्तर अपने प्रयत्न को सफल करने की कामना से वे कलि का अन्वेषण करते हुए स्वर्ग से पहले वरदा पर उतर कर माध्यन्दिन कृत्य सम्पन्न करके पाताल जाते हैं[2] । मैथ्री परिणय में नारद का जो इतना वृत्तान्त उपन्यस्त किया गया है वह सब कवि की अपनी कल्पना है । नारद की कलहप्रियता सर्वत्र प्रसिद्ध है ही । उसी के आधार पर कवि ने इस वृत्तान्त की कल्पना की है । महाभारतीय कथा के अनुसार कलि स्वयं दमयन्ती की कामना करता है । वह दमयन्ती को स्वयंवर में ही प्राप्त करने की इच्छा से विदर्भ जा रहा था । कलि को ईषत् विलम्ब हो गया और मार्ग में ही स्वयंवर से प्रत्यावर्तित लोकपालों से उसे नल और दमयन्ती के विवाह की सूचना मिलती है । कलि अपने रोष के कारण नल का अनिष्ट करने की प्रतिज्ञा कर लेता है[3] । मैथ्री परिणय में भी कलि का लगभग यही वृत्तान्त है[4] केवल कलि को नारद के द्वारा प्रोत्साहन की प्राप्ति नाटककार की मौलिक उद्भावना है । प्रख्यात कथा के अनुकूल ही कलि को प्रतिनायक के स्थान पर अधिष्ठित करते हुए कवि ने नारद से भी उनकी प्रकृति के अनुकूल कार्य सिद्ध करवा लिया है ।

१- म०भा० वनपर्व ५१।१६-२२

२- मै०प०,पृ० ३७

३- म०भा० वनपर्व ५५।१-१४

४- मै०प०पृ०१०८-११२

नलोपाख्यान के अनुसार लोकपाल दमयन्ती के पास केवल नल को ही दौत्य में नियुक्त करते हैं[१],परन्तु मैत्री परिणय कार ने लोकपालों द्वारा अप्सराओं के प्रेषण की भी कल्पना की है । अदृश्य रूप से उद्यान में दमयन्ती के समीप ही महाराज नल उपस्थित हैं, उसी अवसर पर इन्द्र अग्नि यम और वरुण द्वारा क्रमश: प्रेषित रम्भा उर्वशी मेनका और तिलोत्तमा दमयन्ती को लोकपालों में से किसी एक के वरणार्थ प्रोत्साहित करती है । दमयन्ती अप्सराओं को निषेधपरक उत्तर देती है । अन्त में सभी अप्सराएं दमयन्ती के पातिव्रत्य से प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद देती हैं[२], दमयन्ती के पातिव्रत्य को उज्ज्वलतर रूप से प्रस्तुत करने के लिए कवि ने इस घटना का समावेश किया है ।

महाभारतीय कथा में पुष्कर नल का भाई है[३] परन्तु मैत्री परिणय में वह दमयन्ती के कामुक एक नृप हैं । महाराज नल और पुष्कर दोनों के ही कुलकूटस्थ वनायु हैं । वनायु के पुत्र धृति से महाराज नल के कुल की और प्रवर्ष से पुष्कर के कुल की उत्पत्ति हुई है[५] । इसी प्रकार से महाभारतीय नलोपाख्यान में महाराज नल की माता और विदर्भ नरेश भीम में किसी पूर्व सम्बन्ध का निर्देश नहीं किया गया है परन्तु मैत्री परिणयम् में महाराज नल की माता को महाराज भीम की मौसेरी भगिनी स्वीकार किया गया है[६] । यही नहीं, यहां दमयन्ती की माता का भी नामोल्लेख किया गया है । महाभारत में दमयन्ती की माता का नाम निर्देश नहीं किया गया है । यहां उनका नाम `नन्दा` मिलता है[७] ।

नलोपाख्यान के अनुसार स्वयंवर मण्डप में दमयन्ती को नल के समान रूप वाले पांच पुरुषों का एक साथ ही दर्शन होता है[८] । मैत्री परिणय में इस प्रसंग को विस्तृत रूप से उपन्यस्त किया गया है । स्वयंवर मण्डप में अन्य राजा और राजकुमार पहले से ही उपस्थित हैं, परन्तु महाराज नल को लाने के लिए

१- म०भा० वनपर्व ५१।३१
२- मै०प०,पृ०५२-६१
३- म०भा० वनपर्व ५६।७
४- मै०प०,पृ० ७३
५- मै०प०,पृ०१२०
६- मै०प०,पृ०४।१५
७- मै०प०,पृ०८७ तथा २१६
८- म०भा० वनपर्व पृ०५४-२०

दमयन्ती के पिता महाराज भीम गए हुए हैं । विदर्भ राज से अनुगम्यमान कंचुकी के साथ महाराज नल स्वयंवर मण्डप में प्रविष्ट होते हैं । दमयन्ती नैषध सार्वभौम को वरमाला पहनाने के लिए उद्यत होती है उसी समय पूर्ववत् ही विदर्भराज और कंचुकी के साथ द्वितीय नल प्रवेश करते हैं । इसी प्रकार एक - एक करके पांच नल स्वयंवर मण्डप में प्रविष्ट होते हैं । प्रत्येक नल रूपधारी व्यक्ति के साथ विदर्भ राज और कंचुकी भी पृथक्-पृथक् हैं[1] । इस प्रकार नाटककार ने न केवल पंचनली की कल्पना की है अपितु पांच विदर्भ राज और पांच कंचुकी की भी कल्पना कर ली है । इसी प्रसंग में नाटककार ने रविप्रभ नामक मुद्रिका की नूतन कल्पना प्रस्तुत की है । यह रविप्रभ मुद्रिका समस्त माया-निवारक औषधियों से युक्त है । महर्षि दमन के प्रसाद स्वरूप महाराज भीम को यह मुद्रिका प्राप्त हुई थी[2] । महाराज नल को स्वयंवर सभा में लाने के लिए जाते समय महाराज भीम ने वह अंगुलीयक दमयन्ती की माता देवी नन्दा को पहनायी थी । स्वयंवर मण्डप में उपस्थित होने वाले तृतीय विदर्भ राज दमन को वह अंगुलीयक माता से ले आने का आदेश देते हैं । उधर देवताओं के षड्यन्त्र को समझ कर दमयन्ती देवताओं की स्तुति करती है जिससे प्रसन्न होकर चारों लोकपाल अपने अपने लक्षण स्पष्ट कर देते हैं और दमयन्ती को अभिमत वर के वरण की अनुमति प्रदान कर देते हैं । भीम वैदर्भ से अनुमोदन प्राप्त करके दमयन्ती नल का वरण करती है । इसी अवसर पर रविप्रभ अंगुलीयक के साथ दमन वहां प्रविष्ट होता है[3] । कवि ने परिवर्तनों द्वारा घटना को अधिक नाटकीय रूप प्रदान किया है परन्तु रविप्रभ अंगुलीयक की कल्पना का कोई विशेष प्रयोजन नहीं परिलक्षित होता है । मैथी परिणय में पुष्कर द्वारा द्यूत में पराजय से पूर्व महाराज नल एक दु:स्वप्न देखते हैं, जिसके विषय में वे मुख्य अमात्य से परामर्श करते हैं, स्वप्न में एक भयंकर

१- मै०प०,पृ०८४-६०

२-

३- मैप०,पृ० ६२-६३

आकार वाले पुरुष ने महाराज नल को पर्वत शिखर से गिरा दिया है । इस स्वप्न के दुष्परिणाम के शमनार्थ दमयन्ती शतरुद्रीय आदि का पाठ करवाती है[१]। नलोपाख्यान में इस प्रकार का कोई प्रसंग नहीं है । भावी अनिष्ट की सूचना देने के लिए कवि ने इस नवीन प्रसंग की कल्पना की है ।

नलोपाख्यान के अनुसार कलि द्वापर को पाशों में प्रवेश करने की आज्ञा देता है । तदनन्तर वे पासे पुष्कर को देकर वह उसे नल के समीप द्यूत क्रीड़ा के लिए भेजता है । पुष्कर महाराज नल से द्यूत में प्रवृत्त होने के लिए पुन:-पुन: आग्रह करता है और तब महाराज नल पुष्कर के साथ द्यूत क्रीड़ा के लिए मान जाते हैं । द्यूत में महाराज नल की निरन्तर पराजय ही होती है[२]। भैमीपरिणय में इस घटना को कुछ परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया गया है । कलि और द्वापर में वार्तालाप हो रहा है । कलि बतलाता है कि नल तथा दमयन्ती के विवेक नाश के लिए भ्रम प्रमाद आलस्यादि अपने पक्ष वालों को नियुक्त करके उसने नल के अपकर्ष के लिए पुष्कर को उनके प्रतिकूल प्रोत्साहित किया है । द्वापर, कलि को इस दुष्कर्म से निवृत्त करने का प्रयत्न करता है । द्वापर के इस प्रयत्न से चिढ़कर कलि उसे मारने को उद्यत हो जाता है । इससे घबराया हुआ द्वापर उसे चार पासे देता है । द्वापर कलि को बताता है कि कामदेव ने शम्बर को मारा था । शम्बर के अस्थि-खण्डों से मायावी मय ने उन्हें बनाया था । किसी कपट प्रौढ़ि परीक्षा में प्रथम उत्तीर्ण होने वाले द्वापर को मय ने वे पासे पुरस्कार रूप में प्रदान किए थे । उन पासों को लेने वाले की द्यूत में सदैव विजय होती है । द्वापर कलि को सलाह देता है कि वह उन पासों को पुष्कर के पास पहुंचा दे । नल के समीप पुष्कर जा रहा है । कलि उसके पास वे पासे भिजवा देता है महाराज नल के समीप पहुंचकर पुष्कर उन्हें बताता है कि कुण्डिनपुर से लौटते समय से लेकर वह किसी हृदयशूल से पीड़ित हैं-। वैद्य वैद्यों

१- भै०प०,पृ० ११७-११८

२- म०भा० वनपर्व पृ०५५-५६

ने उसे एक ही स्थान पर न रहने का आदेश दिया है । इसी कारणवश वह इस समय महाराज नल के पास आया है । कुशल प्रश्नों के अनन्तर पुष्कर नल को चार पासे देता है । वह महाराज नल को उन पासों का इतिहास बताता है कि उनके कुलकूटस्थ वनायु ने उन पासों का प्रयोग किया था इसी गौरव से कुल के लोग उन पासों की रक्षा करते आये हैं । पुष्कर अपने को अक्षविद्या से अनभिज्ञ महाराज नल को अक्षविद्या में प्रवीण बताकर वे पासे महाराज नल को दे ~~दिया~~ देता है । पुष्कर के आग्रह करने पर महाराज नल उन्हें स्वीकार कर लेते हैं । महाराज नल पुष्कर से उन पासों द्वारा अक्षक्रीड़ा की इच्छा प्रकट करते हैं । पुष्कर द्यूत की निन्दा करता है, उसे अनर्थकारी कहता है, परन्तु महाराज नल ही उससे द्यूत क्रीड़ा के लिए पुन: पुन: आग्रह करते हैं । अन्तत: दोनों द्यूत में प्रवृत हो जाते हैं । द्यूत में पहले दो बार महाराज नल विजयी होते हैं,तदनन्तर वे शनै: शनै: सर्वस्व और स्वयं को भी हार जाते हैं[१]। मैथिलीपरिणयकार ने इस प्रकार महाभारतीय कथा में परिवर्तन करके नाटकीय कथावस्तु को अधिक चारु बनाया है ।

महाभारतीय कथा में महाराज नल के सर्वनाश की शंका से दमयन्ती इन्द्रसेन और इन्द्रसेना को अपने सारथी वार्ष्णेय के साथ कुण्डिनपुर भेज देती है[२]। मैथिलीपरिणयम् में महाराज नल के सर्वनाश के उपरान्त नल से पूछकर दमयन्ती दोनों बा० बच्चों को सारथी के साथ कुण्डिनपुर भेजती है[३]। इसी प्रसंग में माता और पुत्र का वार्तालाप अत्यधिक हृदयग्राही है[४]। सप्तवर्षीय बालक इन्द्रसेन माता से मार्ग के लिए पाथेय मांगता है । पुत्र को वह भी देने में असमर्थ दमयन्ती उसे मार्ग में वृक्षों से तोड़कर फल खाने और नदी से जल पी लेने के लिए समझा देती है । नाटककार को रस की दृष्टि से घटनाओं में इच्छानुसार संकोच और प्रसार को

१- मै०प०,पृ०१२२-१२६

२- म०भा० वनपर्व ५७।२०

३- मै०प०,पृ०१२६-१३०

४- मै०प०,पृ० १३०-१३४

सम्बद्धता रखती ही है । इस घटना का नाटक में विस्तृत रूप में प्रदर्शन नाटककार की इसी सम्बद्धता का प्रतीक है । इस प्रसंग में नाटककार ने करुण और वीर रस का पुट देने का प्रयत्न किया है । नायक और नायिका की तत्कालीन दयनीय अवस्था का चित्रण भी इसके कारण अधिक सुन्दर हो गया है ।

महाराज नल द्वारा वन में परित्यक्ता दमयन्ती की अजगर से एक किरात रक्षा करता है और अन्त में दमयन्ती के शाप के कारण वह भस्म हो जाता है[१] । ऐसी महाभारतीय कथा है । नैषधपरिणय में इस किरात को पुष्कर से सम्बद्ध बताया गया है । मुग्ध हरिण को ग्रहण करने की इच्छा वाले पुष्कर ने इस दुर्मसेन नामक किरात को अन्य किरातों को प्रोत्साहित करने के लिए नियुक्त किया था । किरात दुर्मसेन दमयन्ती को पहले पुष्कर की रानी बन जाने का सुझाव देता है और अन्त में दमयन्ती के विरोध करने पर वह उन्हें बलपूर्वक अपने अनुकूल बनाने की चेष्टा करता है, इसी समय वज्रपात होने से उसकी मृत्यु हो जाती है[२] । दमयन्ती की रक्षा करने वाले और अन्त में अपने दुर्व्यवहार के कारण काल का ग्रास बनने वाले किरात का पुष्कर से कोई सम्बन्ध दिखा देना ठीक ही है । नल और दमयन्ती के अनिष्ट की कामना करने वाले कलि और पुष्कर के समान ही यह किरात भी है । अतएव इसे पुष्कर का अनुचर दिखा दिया गया है । दमयन्ती के पातिव्रत्य की शक्ति के साथ-साथ उनके स्वभाव की कोमलता की रक्षा करते हुए नाटककार ने दमयन्ती के शाप के कारण किरात की मृत्यु के स्थान पर वज्रपात द्वारा किरात की मृत्यु की कल्पना की है ।

वन में एकाकिनी दमयन्ती से पुष्कर की भेंट तथा पुष्कर द्वारा उन्हें अनुकूल बनाने के लिए प्रयत्न करना[३] नैषधपरिणयकार की अपनी कल्पना है । इसी समय वहां महर्षि वामदेव का आगमन होता है । महर्षि वामदेव को वहां देखकर

१- म०भा० वनपर्व ६०

२- नै०प०,पृ० १५६-१६७

३- नै०प०,पृ० १६७-१७३

पुष्कर वहां से चला जाता है । महर्षि वामदेव दमयन्ती को आराम ,पुष्प, फल और पीताम्बर देते हैं । महर्षि वामदेव ने आग्नीयमि व्रत प्रारम्भ किया था, जिसके सम्बन्ध में वे पतिव्रता सन्निधि रूप अवभृत पूर्ण करने आए थे[१] । इस नवीन घटना के सन्निवेश द्वारा नाटककार ने नायिका के उज्ज्वल चरित का सम्यक् चित्रण किया है । अत्यन्त दीन अवस्था में, पति द्वारा घोर वन में अकारण ही परित्यक्ता होने पर भी दमयन्ती पुष्कर के प्रस्ताव को ठुकरा देती है । इसी अवसर पर महर्षि वामदेव के आगमन से पुष्कर से दमयन्ती के वार्तालाप का प्रसंग समाप्त किया गया है । तदनन्तर महर्षि वामदेव के वचनों से भी दमयन्ती के पातिव्रत्य पर प्रकाश पड़ता है ।

वन में मित्रादिनी का वृत्तान्त तथा किरातों द्वारा अन्वेषण के निरोध का वृत्तान्त नलोपाख्यान में नहीं उपलब्ध होता है । मैथीपरिणयम् में ये नवीन घटनायें हैं । वन में दमयन्ती की भेंट मित्रादिनी नामक स्त्री से होती है । वही दमयन्ती को समीपवर्ती मार्ग से वणिक् सार्थ के आवागमन की सूचना देती है । दमयन्ती को मित्रादिनी अपना पूरा वृत्तान्त सुनाती है । संध्या करने के लिए दमयन्ती के वहां से चले जाने पर वहां पुष्कर आता है । पुष्कर भ्रमवश मित्रादिनी को दमयन्ती समझ बैठता है और दोनों में वार्तालाप होता है । उधर दमयन्ती वणिक्सार्थ के शिविर के निकट पहुंच जाती है । वहां कामदास और दमयन्ती में वार्तालाप होता है । कामदास दमयन्ती को अपने घर ले जाना चाहता है, दमयन्ती उसका विरोध करती है और अन्त में उसे शाप देती है कि उसका सर्वनाश हो जाये । कामदास क्रुद्ध होकर 'चोर चोर' चिल्लाने लगता है । उससे एकत्र हुए लोगों को वह दमयन्ती को बांधकर शिविर में ले चलने की आज्ञा देता है । इसी समय वन्यगजों द्वारा वणिक् सार्थ की कष्ट दशा की सूचना प्राप्त होती है । वन्यगज सभी लोगों का पीछा करते हैं, केवल दमयन्ती का अनिष्ट नहीं करते । किरातों के भय से दमयन्ती वनान्तरालगत कालीमन्दिर में देवी की प्रतिमा के

१- मै०,प०,पृ० १७६

पीछे छिप जाती है । उसी मन्दिर में किरातों का समूह एक द्वादश वर्षीय बालक की बलि देना चाहता है । किरातों के वार्तालाप से प्रतीत होता है कि इन्द्रसेन का बन्धन भी पुष्कर के दमयन्ती के प्रति क्रोध का ही परिणाम है । बालक के विलाप से दमयन्ती उसे पहचान लेती है । बालक की रक्षा के लिए तथा साथ ही साथ पराजयमूलक शीलभंग से अपनी रक्षा के लिए दमयन्ती दीप के काजल, हरिद्रा कुंकुम आदि से अपने रूप को विकृत करके देवी के हाथ से तलवार लेकर सामने आ जाती है । सभी किरात भयभीत होकर भाग जाते हैं और दमयन्ती बालक को तलवार दे देती है । बालक इन्द्रसेन किरातों का पीछा करता है । इसी अवसर पर मन्दिर में मित्रादिनी प्रवेश करती है । मित्रादिनी दमयन्ती को उस बालक का वीरता तथा मातुल के साथ उसके वापस नगर चले जाने का समाचार सुनाती है । प्रसन्न होकर दमयन्ती उसे अपना रत्नवलय प्रदान करती है । मित्रादिनी दमयन्ती को विश्वास दिलाकर चेदिनगर में अपने घर ले जाती है[१]।

चेदिराज के आस्थान मण्डप में धनसेन नामक व्यापारी दमयन्ती पर भाँति भाँति के मिथ्या आरोप लगा कर दमयन्ती के प्रतिकूल व्यवहार प्रस्तुत करता है । वह दमयन्ती को उनकी सम्पत्ति के साथ अपनाने का प्रयत्न करता है । उसके षड्यन्त्र में मित्रादिनी और माण्ढायन सम्मिलित हैं । नाटक में व्यवहार का चित्रण बड़े प्रपंच से किया गया है । अन्तत: व्यवहार में धनसेन का पक्ष पक्ष प्रबल होने लगता है । दमयन्ती अपनी माता का नामग्रहण करके विलाप करती है । सभा में स्थित सुदेव नामक ब्राह्मण दमयन्ती को पहचान कर चेदिराज को दमयन्ती का वास्तविक परिचय देता है । भयवश मित्रादिनी सम्पूर्ण वृत्तान्त सच सच बताती है । पुष्कर ने दमयन्ती से संगम होने पर मित्रादिनी को १०० ग्राम देने की प्रतिज्ञा की थी । इसी पुरस्कार के लोभ से वह दमयन्ती को अपने घर ले आई थी । तदनन्तर पड़ोसी धनसेन ने उसे १०००) रुपए देकर दमयन्ती को प्राप्त करने का प्रयत्न किया । चेदिराज धनसेन मित्रादिनी और माण्ढायन को सर्वस्व छीन कर

१- नै० प० पृ० १७७-२००

राष्ट्र से निकाल देने का आदेश देते हैं परन्तु दमयन्ती कटक और पीताम्बर खण्ड धनसेन को ही देकर उन तीनों को दण्ड-मुक्त करवा देती है[1]।

लगभग यह सम्पूर्ण घटना नाटककार की मौलिक कल्पना है । नाटकीयता की दृष्टि से सम्भवत: नाटककार ने इसकी कल्पना की है । वणिक् सार्थ के विनाश के सम्बन्ध में नाटककार ने नलोपाख्यानगत वणिक्सार्थ के विनाश में ईषत् परिवर्तन कर दिया है । वहां वणिक् गणों में कोई भी दमयन्ती से अनुचित कामना नहीं करता है तथा विश्राम करते हुए यात्रियों पर वन्यगजों के कारण एकाएक संकट उपस्थित हो जाता है । कुछ वणिक् दमयन्ती को ही इस अनर्थ का कारण समझते हैं जिससे भयभीत दमयन्ती कहीं छिप जाती है । अन्त में उसी सार्थ का अनुसरण करती हुई वह चेदिनगर पहुंचती है जहां चेदिराज की माता उसे शरण देती है[2]। यहां वणिक् कामदास दमयन्ती से अनुचित बातें करता है जिससे क्रुद्ध होकर दमयन्ती उसे बान्धव सहित विनष्ट हो जाने का शाप देती है । इसी शाप के फलस्वरूप वन्यगजों के एकाएक आक्रमण कर देने से वणिक् सार्थ की भीषण क्षति होती है[3]। दमयन्ती के चरित्र-चित्रण की दृष्टि से यह परिवर्तन प्रभावोत्पादक एवं उपयोगी प्रतीत होता है ।

चेदिनगर में दमयन्ती का मित्रादिनी के घर में रहना भी मूलकथा में परिवर्तन है । मूलकथा में वणिक् सार्थ का अनुसरण करके चेदिनगर में पहुंची हुई दमयन्ती चेदिराज की माता के आश्रय में निवास करती है । जहां कालान्तर में सुदेव उन्हें पहचान कर विदर्भ ले जाता है[4]। परन्तु यहां वह मित्रादिनी के साथ चेदिनगर में उसके घर पहुंच कर वहीं रहती है । मित्रादिनी और धनसेन के षड्यन्त्र से चेदिराज के दरबार में वणिक् धनसेन दमयन्ती के प्रतिकूल व्यवहार करता है । वहीं सभा में स्थित महाराज भीम द्वारा दमयन्ती के अन्वेषणार्थ प्रेषित सुदेव दमयन्ती को पहचान लेता है और तब चेदिराज की माता दमयन्ती से मिलने को

१- मै०प०,पृ०२०१-२१६

२- म०भा० वनपर्व ६१।६२

३- मै०प०,पृ०१८६-१६०

४- म०भा० वनपर्व ६५-६६

इच्छा करती है [1]। मूलकथा में यह परिवर्तन नाटकीयता की दृष्टि से किया गया प्रतीत होता है ।

बाहुक रूपधारी नल की सत्यव्रत नामधारी अमात्य प्रज्ञाशेखर से भेंट भी मूलकथा में अनुपलब्ध नवीन घटना है । सत्यव्रत अतिथि की प्रतीक्षा कर रहे हैं उसी समय बाहुक अश्वों को चरने के लिए छोड़कर वहां पहुंच जाते हैं । दोनों में वार्तालाप होता है । इसी बीच एक वृद्ध का अनुसरण करते हुए निषधापुरी के नगरवासी वहां आते हैं । वृद्ध तीर्थव्रत वन में नल द्वारा परित्यक्ता देवी दमयन्ती के चेदिपुर होते हुए विदर्भ पहुंच जाने तक की सूचना देता है । निषधा के नगरवासी नगर में प्रवृत्त दोषपूर्ण राज्य प्रणाली का सविस्तार वर्णन करते हैं । वृद्ध पर्णाद भी वहीं पहुंच कर दमयन्ती के भावी द्वितीय स्वयंवर की सूचना देता है । दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर के औचित्य अनौचित्य को लेकर पर्णाद और नल में विवाद होता है जिसमें प्रज्ञाशेखर मध्यस्थता करते हैं [2]। इस घटना का प्रयोजन महाराज नल की राज्यप्रणाली की उत्कृष्टता और पुष्कर की राज्यप्रणाली की निकृष्टता को स्पष्ट करना प्रतीत होता है । घटना की नवीनता से नाटक में रोचकता की दृष्टि से भी सफल प्रतीत होती है ।

नलोपाख्यान में महाराज नल को सूतविद्या और सूदविद्या दोनों में निपुण [3] तथा ऋतुपर्ण को अक्षविद्याविशारद [4] तो बताया गया है, परन्तु इन विद्याओं की प्राप्ति के विषय में वहां कुछ भी नहीं उपलब्ध होता है। मैथी परिणयम् में बाहुक रूपधारी महाराज नल ऋतुपर्ण को अपनी सूतविद्या के सम्बन्ध में बताते हैं कि बाल्यकाल में समस्त कलाओं का अभ्यास करने के अनन्तर महाश्व विद्या प्राप्त करने की इच्छा से उन्होंने भगवान् वृषभध्वज के शिष्य महर्षि अगस्त्य की चिरकाल पर्यन्त सेवा की । एक बार वहां महर्षि बाष्कल का आगमन हुआ । महर्षि बाष्कल को विवाह के लिए धनार्थी जानकर उन्होंने उन्हें प्रभूत धन प्रदान

१- मै०प०,पृ० २००-२१६

२- मै०प०,पृ० २२१-२३७

३- म०भा० वनपर्व ५०।१तथा ७३।२२

४- म० भा० वनपर्व ६३।२०

किया । महर्षि बाष्कल से ही उन्हें सूतविद्या और सूदविद्या प्राप्त हुई[1]। ऋतुपर्ण ने बाहुक को बताया कि उन्हें कुलगुरु वशिष्ठ से अक्षविद्या और गणित विद्या का रहस्य ज्ञात हुआ है[2]। सम्भवत: नाटक को अधिक पूर्णता प्रदान करने के लिए ही नाटककार ने इन विद्याओं को सिखाने वाले गुरुओं के सम्बन्ध में भी दर्शकों की जिज्ञासा शान्त करने का प्रयत्न किया है ।

नल-दमयन्ती की महाभारतीय कथा के अनुसार दमयन्ती के भावी द्वितीय स्वयंवर की सूचना केवल महाराज ऋतुपर्ण को प्राप्त होती है और राजाओं में वह अकेले ही कुण्डिनपुर पहुंचते हैं[3] परन्तु भैमीपरिणयम् में दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर को कहीं से पुष्कर ने भी सुन लिया और वह प्रात:काल ही कुण्डिनपुर पहुंच गया है । दमयन्ती के वार्तालाप के मध्य में बृहत्सेना यह सूचना देती है[4]। नाटक में सम्पूर्ण नलोपाख्यान की कथा को प्रस्तुत किया गया है । महाराज नल पुष्कर से अपना राज्य जीत कर पुन: प्राप्त करते हैं । इसके लिए मूलकथा में महाराज नल को निषधा तक की यात्रा का प्रसंग है । निषधा में पहुंचकर महाराज नल पुष्कर के साथ द्यूतक्रीड़ा करते हैं[5]। नाटक में यात्रा दिखाना वर्जित है सम्भवत: इसी कारण से नाटककार ने बड़ी सुन्दरता से मूलकथा में ईषत् परिवर्तन करके अपना कार्य सिद्ध कर लिया है । पुष्कर कुण्डिनपुर में ही उपस्थित है जहां महाराज नल उसके साथ द्यूत खेल कर अपना खोया हुआ राज्य प्राप्त कर लेते हैं[6]।

कुण्डिनपुर आये हुए बाहुक की केशिनी के माध्यम से भांति-भांति से परीक्षा लेने के अनन्तर दमयन्ती अपनी माता की अनुमति प्राप्त करके बाहुक को अपने प्रासाद में बुलवाती है[7]। इस मूलकथा के विपरीत भैमी परिणयम् में प्रासाद के अन्दर की मन्दुरा में अश्वों के लिए घास लेने आए हुए बाहुक से दमयन्ती स्वयं जा करके भेंट करती है[8]।मूलकथा में किए गए इस परिवर्तन का कोई विशेष प्रयोजन

१- भै०प०,पृ०२३६
२- भै०प०,पृ० २४०
३- म०भा० वनपर्व ७१
४- भै०प०,पृ०२४४
५- म०भा० वनपर्व ७६
६- भै०प०,पृ०२५६-२५७
७- म०भा० वनपर्व ७२-८ ७४
८- भै०प०,पृ०२४६

नहीं परिलक्षित होता है ।

नल और दमयन्ती की मूलकथा में दमयन्ती से भेंट होने पर जब पति के अनुचित व्यवहार का वर्णन करते हुए दमयन्ती अश्रु बहाने लगती है तब बाहुक रूपधारी महाराज नल अपना वास्तविक रूप प्राप्त कर लेते हैं[1]। इसके विपरीत मैत्री परिणयम् में महर्षि वामदेव द्वारा विरचित रूपाहरण नामक नाटक का अभिनय अतिथियों के मनोरंजनार्थ प्रस्तुत किया जाता है । गर्भांक के माध्यम से वन में दमयन्ती का परित्याग करने के बाद से लेकर कर्कोटक द्वारा महाराज नल के रूप-परिवर्तन, अलौकिक वस्त्र प्राप्ति तथा ऋतुपर्ण के पास जाने तक के समस्त वृत्तान्त का चित्रण किया गया है । रूपाहरण नाटक को देखकर सभी दर्शक महाराज नल को पहचान लेते हैं । इस समय महाराज नल कर्कोटक द्वारा प्रदत्त वस्त्र धारण करके अपना वास्तविक रूप प्राप्त कर लेते हैं । देवी दमयन्ती महाराज नल को हार पहनाती है[2]। इस प्रकार से बाहुक के महाराज नल रूप से प्रकट होने के प्रसंग को अत्यधिक रोचक बनाया गया है ।

इस प्रकार मैत्रीपरिणयम् में नाटककार ने पग-पग पर अपनी मौलिकता का पुट दे कर नाटक को अत्यधिक चारु एवं रुचिकर बनाया है ।

अर्थ प्रकृतियां

बीज

मैत्री परिणयम् नाटक के प्रथम अंक में दमयन्ती में बद्धभाव नल विचार कर रहे हैं कि कौन भाग्यवान युवक वैसी सुन्दर स्त्री को प्राप्त करेगा । इसी समय उनका मित्र अशोक कहता है --

'सखे ! त्वमेव तां प्रियां प्राप्स्यसि ।'[3]

यहां पर बीज अर्थ प्रकृति है ।

१- म०भा० वनपर्व ७४

२- मै०प०,पृ० २४६-२५६

३- मै०प०,पृ० १७

बिन्दु

प्रथम अंक में ही जयन्धर के आगमन से तथा विह्मितोऽपवारिणी केशिनी के सहसा चले जाने की घटना के कारण विच्छिन्न कथा सूत्र--

सखे ! कासौ आकस्मिकी सुधावृष्टि: । पश्चान्न शैलोऽ यं शतकूट...[1]

चित्तलुण्ठनकलापण्डित्यपारङ्गता ।

राजा के इस कथन से पुन: संयुक्त हो जाता है । अत: यहां पर बिन्दु अर्थप्रकृति है ।

पताका

सप्तम अंक में नाटक की समाप्ति पर्यन्त व्यापक महर्षि वामदेव की कथा पताका है । ये महर्षि वामदेव, नायक नायिका के सहायक हैं ।

इसके अतिरिक्त नवें अंक में आयी हुई सत्यव्रत की कथा भी पताका है ये सत्यव्रत, नल के अमात्य प्रज्ञाशेखर ही थे, जो नल के भक्त और सहायक हैं ।

प्रकरी

द्वितीय अंक में अमात्य तथा सेनापति का वार्तालाप तथा नारद का वृत्तान्त, तृतीय अंक में चण्डसेन और पृथुसेन का वार्तालाप और चतुर्थ अंक में ब्राह्मणों का वार्तालाप कस्ल प्रकरी है ।

कार्य

नल और दमयन्ती का मिलन तथा नल की राज्यप्राप्ति इस नाटक में कार्य है ।

अवस्थाएं

आरम्भ

दृष्ट्वा स्वर्णविभूषणोज्ज्वलपदां कन्यार्हवेषांच तामाशापाशनियन्त्रि-[2]

तस्य मम तच्चेतोपि नीतं तथा ।।

१- मै०प०,पृ०२२-२३

इस श्लोक में नल की दमयन्ती के प्रति औत्सुक्यमूलक आरम्भावस्था है।

यत्न

प्रथम अंक में ही `किं वा याचेय महीपतिं... कान्मइगलदीपिकाम्`[1] इन श्लोकों में ह यत्न अवस्था है।

प्राप्त्याशा

द्वितीय अंक में `वयस्य। प्रसथ शृणु...`[2] इस वाक्य से लेकर --

निर्दिश्य मयि निरस्ते हृष्टस्य हृदो महानयं खेद:।
विद्युत्प्रकाशभाज: पुनरपि गाढान्धकार इव दृष्टे:॥[3]

तक प्राप्त्याशा है।

नियताप्ति

द्वितीय अंक में `सुमुखि। दमयन्ति। किमेवं ....`[4] वाक्य से लेकर `सखि। ज्ञातं रूपान्तरप्राप्तिकारणम्`[5] इत्यादि वाक्य तक नियताप्ति अवस्था है।

फलागम

दमयन्ती से नल का मिलन और प्रकार से राज्यप्राप्ति होने पर फलागम अवस्था है।

सन्धियाँ

मुख

मैत्री परिणयम् नाटक के प्रथम अंक में तत: प्रविशति... कन्चुकीयश्च`[6] ~~इस-कथन-तक-मुख-सन्धि-मिलती-है~~ इस निर्देश से लेकर -- ·

१- मै०प० १।५८-५६
२- मै०प०,पृ०३१
३- मै०प० २।४३
४- मै०प०,पृ०६०
५- मै०प०,पृ०२५६
६- मै०प०,पृ०७

राजन् । स्वस्ति भवते, इष्टेन युज्यस्व`[1] इस वाक्य तक मुख सन्धि मिलती है ।

प्रतिमुख

प्रथम अंक में ही --

`सखे । खलु भगवतो...[2] इत्यादि वाक्य से लेकर द्वितीय अंक में --

`स्वान्त नास्त्यत्र विषये उन्यथाप्याशावकाशः`[3] इस वाक्य तक प्रतिमुख सन्धि है ।

गर्भ

इस नाटक में गर्भ सन्धि का प्रारम्भ द्वितीय अंक में ह--

`सखि। समाश्वस्य..... मे मतिः[4] से मिलता है ।

`अहो । दृढ संकल्पेयमिन्द्रादीनपि नानुमन्यत इति ज्ञायते[5]। `इस वाक्य तक गर्भ सन्धि का विस्तार है ।

अवमर्श

`मुग्धे । न तथा । शृणु .... करिष्यसि`[6] इस वाक्य से लेकर `उभौ क्रीडतः`[7] इस निर्देश तक अवमर्श सन्धि है ।

निर्वहण

ऋतुपर्ण के वाक्य--

`अहो । जितं जितं महाराज नलसार्वभौमेण`[8] से प्रारम्भ होकर नाटक की समाप्तिपर्यन्त निर्वहण सन्धि मिलती है ।

१- मै०प०,पृ०३०
२- मै०प०,पृ०३०
३- मै०प०,पृ०४६
४- मै०प०,पृ०४६
५- मै०प०,पृ०५०
६- मै०प०पृ० ५०
७- मै०प०,पृ०२५७
८- मै०प०,पृ०२५७

दमयन्ती कल्याणम्

महाराज नल तथा दमयन्ती की कथा को प्रस्तुत करने वाला दमयन्तीकल्याणम् नाटक खण्डित अवस्था में उपलब्ध होता है । नाटक के उपलब्ध अंश में ही नलोपाख्यान से प्रभूत भेद परिलक्षित होता है । इस अवस्था में यहां पर प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु को देना अनिवार्य ही हो जाता है ।

इन्द्र द्वारा विनिर्मित व्योमयान में स्थित महाराज नल और हंस स्वर्ग की मनोहरता के विषय में वार्तालाप कर रहे हैं । स्वर्ग के कल्पद्रुम,कामधेनु अप्सराएं, ऐरावत,अमृत और अमरावती आदि पदार्थों का हंस-वर्णन करता है । शत्रुओं को दमन करने के लिए इन्द्र के बुलाने पर महाराज नल स्वर्ग गए थे । इस समय वे स्वर्ग से लौट रहे हैं । नारद को देखकर वे लोग विमान रोक देते हैं । महाराज नल नारद का अभिवादन करते हैं । नारद, कैलाश पर्वत पर भगवान् शिव के दर्शन के लिए जाने की इच्छा करते हैं । महाराज नल को आशीर्वाद देकर और शीघ्र ही पुनरागमन का वचन देकर नारद चले जाते हैं ।

विमान से जाते हुए महाराज नल और हंस नभस्थल के वैचित्र्य की चर्चा करते हैं । कोई स्त्री वीणा वादन कर रही होती है तो कोई महाराज नल का गुणगान|धीरे धीरे विमान पृथ्वी के समीप पहुंच जाता है और कुण्डिनपुर में एक आश्चर्यरूपा प्रभा परिलक्षित होती है । शनैःशनैः वह एक असामान्य रूपवती स्त्रीरूप में व्यक्त हो जाती है । हंस बताता है कि वह विदर्भ राज भीम की गुणवती कन्या दमयन्ती है ।

सखियों से परिवृता दमयन्ती मृग-शावक को दुर्वांकुर खिला रही है। अन्य सखियों द्वारा दिए गए दुर्वांकुर को वह शावक न ग्रहण करके इधर-उधर देखता है । विमान के अधोभाग में जड़े हुए इन्द्रोपलों की कान्ति को मृगशावक दुर्वांकुर के भ्रम से देख रहा है । सखियां राजा को देखकर लज्जित हो जाती हैं ।

दमयन्ती के रूप-लावण्य पर महाराज नल मुग्ध हो जाते हैं और स्वर्ण हंस दमयन्ती की प्रशंसा करता है ।

इधर महाराज नल को देखकर व्याकुल दमयन्ती के स्वेदादि भाव स्पष्ट हो जाते हैं। महाराज नल के प्रति अभिलाषा के कारण वे परवश हो जाती हैं। दोनों पर ही कामदेव का समान प्रहार परिलक्षित होने लगता है।

महाराज नल में संक्रान्त चित्त वाली दमयन्ती पुरःस्थित मृग को भी नहीं देख पा रही हैं।

रानी की आज्ञा से चेटी दमयन्ती को बुला ले जाती है। जाते जाते दमयन्ती मृगशावक के व्याज से महाराज नल को शीघ्र ही वापस आने का आश्वासन देती है। विमान से वायु द्वारा गिराए गए एक पारिजात पुष्प को लेकर दमयन्ती अपनी अभिलाषा व्यक्त करती है। मृगशावक के व्याज से महाराज नल के प्रति दमयन्ती के वचन न तो महाराज नल को ही श्रवणगोचर हो सके और न हंस को ही। हंस की इच्छानुसार महाराज नल व्योमयान से अपने नगर के लिए प्रस्थान करते हैं।

कांचुकी के स्वगत सम्भाषण से अवगत होता है कि महाराज नल के स्वर्ग से लौटते ही शत्रु मालव राज्य को घेरने लगे। महाराज नल ने तीक्ष्ण बाणों से उन सब को मार डाला।

स्वर्ग से लौटते समय वश्यौषधि के समान विदर्भ कन्या को महाराज नल ने जब से देखा है वे काम सन्तप्त हो रहे हैं। महाराज नल ने बहुत प्रकार से अपने विकार को गुप्त रखना चाहा परन्तु परिलेप के समय लगाया गया गीला चन्दन भी शरीर पर तत्क्षण सूखकर अन्तः परिताप को व्यक्त कर देता है। वे हार-विहार सभी से विमुख हो गए हैं।

महादेवी की परिचारिका विलोभिका से कंचुकी वार्तालाप करता है। विलोभिका भट्टिनी की आज्ञा से नारायण ब्राह्मण को बुलाने के लिए गयी थी। कंचुकी महाराज नल के आदेश से उद्यान प्रासाद को ठीक करने-जा रहा है। विलोभिका कंचुकी से महाराज नल की अस्वस्थता का कारण पूछती है। कंचुकी मालवों के सम्मर्दन जन्य परिश्रम को महाराज नल की अस्वस्थता का कारण बताता है। विलोभिका महाराज नल के अस्वस्थता के कारण के रूप में किसी प्रसिद्ध वृत्तान्त

का उल्लेख करती है, जिसे कंचुकी जानने की जिज्ञासा प्रकट करता है ।

नलोपाख्यान में महाराज नल और दमयन्ती के परस्पर अनुराग में हंस का प्रयत्न कारण है ।[1] दमयन्ती कल्याणम् में स्वर्ग से व्योमयान द्वारा वापस आते हुए महाराज नल दमयन्ती का प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं । दमयन्ती को प्रत्यक्ष देखकर उनके हृदय में अनुराग का अंकुर उत्पन्न होता है और इसी प्रकार उसी अवसर पर दमयन्ती भी महाराज नल का दर्शन करती है और उनमें अनुरक्त हो जाती है ।[2] नलोपाख्यान में नल दमयन्ती के अनुराग के सम्बन्ध में प्रतिष्ठित हंस का यहां भी निराकरण नहीं किया गया है । स्वर्ण हंस महाराज नल को दमयन्ती का परिचय देता है और फिर नल के सम्मुख दमयन्ती का गुणगान करके उनके हृदय में अंकुरित अनुराग को उद्दीप्त करता है ।[3] इस प्रकार महाभारतीय कथा को यहां इतने परिवर्तित रूप में उपन्यस्त किया गया है कि वह पूर्णत: नवीन-सी प्रतीत होने लगती है । नाटककार की यह कल्पना अत्यधिक चारु है ।

महाराज नल इन्द्र की सहायता करके इन्द्र द्वारा सम्मानित होकर व्योमयान से वापस आ रहे हैं/स्वर्ग से लौटने पर अपने शत्रु मालवों का उन्होंने सम्मर्दन किया ।[4] इस सब से नायक नल की वीरता का प्रतिपादन किया गया है । ये घटनाएं नलोपाख्यान के अन्तर्गत नहीं प्राप्त होतीं । यह नाटककार की मौलिक सूझ है । इन प्रसंगों की सहायता से नाटककार ने नायक के चरित्र पर प्रकाश डाला है ।

विमान से जाते हुए महाराज नल की नारद से भेंट भी नलोपाख्यान से नवीन प्रसंग है । नारद का महाराज नल अभिवादन करते हैं और वे प्रसन्न होकर नल को आशीर्वाद देते हैं । इसी आशीर्वाद के कारण महाराज नल, को दमयन्ती के दर्शन होते हैं । इस प्रकार दमयन्ती से महाराज नल के साक्षात्कार रूप फल के मूल कारण के रूप में सम्भवत: नाटककार ने नारद से महाराज नल की भेंट की कल्पना की है । इसका कोई अन्य विशेष प्रयोजन नहीं परिलक्षित होता ।

१- म०भा० वनपर्व ५०

२- द०क०

३- द०क०

४- द०क०

मृगशावक को दूर्वांकुर खिलाती हुई दमयन्ती[१] की कल्पना सुन्दर बनी है। नलोपाख्यान में ऐसा कोई भी प्रसंग नहीं मिलता है। इसके अतिरिक्त माता की आज्ञा से जाती हुई दमयन्ती द्वारा मृगशावक के व्याज से महाराज नल को पुनर्मिलन का आश्वासन देना[२] यह भी सुन्दर कल्पना है। इनके माध्यम से नायिका की प्रकृति में रुचि की अभिव्यंजना के साथ-साथ नाटकीय कथावस्तु में अपूर्व चारुता और सरसता का सन्निवेश किया गया है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत साहित्य में नलोपाख्यान विषयक नाटक बड़ी संख्या में लिखे गए हैं। इस विषय पर आधारित भिन्न-भिन्न नाटक भिन्न-भिन्न दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। कुछ नाटक परम्परागत कथा को उसी रूप में उपन्यस्त करने के कारण प्रस्तुत कथा के विकास की दृष्टि से अधिक महत्व नहीं रखते। परन्तु ऐसे नाटक कम ही हैं। उदाहरण के लिए 'नैषधानन्दम्' को लीजिए। इसमें लगभग वे ही घटनाएं उसी क्रम से प्राप्त होती हैं, जिनका वर्णन नलोपाख्यान में उपलब्ध होता है। फिर भी यह नाटक कथानक के संघटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। कथा का विकास, मूल कथा की कुछ घटनायें छोड़कर अथवा उनको संक्षेप में ग्रहण करके, कुछ नवीन घटनाएं जोड़कर अथवा कुछ संक्षिप्त घटनाओं को विस्तार देकर किया गया है। कहीं पर ये परिवर्तन नायक अथवा नायिका के चरित्र को उज्ज्वल बनाने के लिए अथवा मूल कथा में वर्णित उनके चरित्रगत दोष के परिमार्जन के लिए किए गए हैं और कहीं पर कथावस्तु को नवीनता प्रदान करने के लिए/कहीं रस के परिपाक की दृष्टि से किसी प्रसंग को विस्तृत रूप से उपन्यस्त किया गया है और कहीं पर अमुख्य रसों की योजना के लिए किसी घटना-विशेष को कथावस्तु में स्थान दिया गया है। कहीं-कहीं पात्रों के नाम ही उलटे-पलटे दृष्टिगोचर होते हैं। किस दृष्टि से उन परिवर्तनों का कितना महत्व है, इसी बात पर उनका औचित्य निर्भर करता है। नाटककारों ने कहीं-कहीं किसी विशेष प्रयोजन के अभाव में भी मूल कथा में परिवर्तन किए हैं, ऐसा प्रतीत होता है। सम्पूर्ण नाटक साहित्य को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि नाटकों के रूप में नल तथा दमयन्ती की महाभारतीय कथा का पर्याप्त तथा सुन्दर विकास हुआ है।

-0-

१- द०क०   २- द०क०

चतुर्थ अध्याय

-o-

नल-दमयन्ती-कथा

का

महाकाव्यात्मक विकास

चतुर्थ अध्याय

-0-

नल-दमयन्ती-कथा का महाकाव्यात्मक विकास

महाराज नल और दमयन्ती की प्रसिद्ध कथा के आधार पर संस्कृत साहित्य में भिन्न-भिन्न काल में अनेक महाकाव्यों की रचना हुई है । यह उपाख्यान जितना दृश्य काव्यों के लिए लोकप्रिय हुआ है, उतना ही श्रव्यकाव्यों के लिए भी ।

नाटक द्वारा रस के आस्वादन में रंगमंच के विविध उपकरण ,संगीत अभिनेताओं की विविध वेशभूषा तथा उनके अभिनय आदि तत्व सहायक हो जाते हैं । नाटकीय घटनाओं को रंगमंच पर प्रत्यक्ष देखकर सामाजिकों के हृदय में सहज ही रसोन्मेष हो जाता है । इसके विपरीत महाकाव्य में केवल शब्दों के ही माध्यम से घटनाओं का वर्णन पढ़कर सहृदय पाठक रसास्वादन कर सकते हैं । यही कारण है कि नाटकों से सर्वसाधारण को अलौकिक आनन्दानुभूति हो जाती है जब कि महाकाव्य द्वारा रसास्वादन के लिए पाठक की सहृदयता अनिवार्य तत्व है । इस प्रकार से नाटक की अपेक्षा महाकाव्य की रचना अधिक दुष्कर है । नाटकों के अभिनय के लिए विविध सामग्री एकत्र करनी होती है जब कि सहृदय को एकान्त में भी महाकाव्य द्वारा अलौकिक आनन्द की उपलब्धि हो जाती है । अभिनेय दशरूपकों की अपेक्षा काव्य के और अभिनेताओं की अपेक्षा कवि के महत्व को स्वीकार करते हुए भोजराज ने लिखा है --

"अतोऽभिनवैतुभ्य: कविमेव वक्ष्यन्यामहे, अकिर्वेन्दुर लाञ्छनिति ।"

नैषधीय चरितम्

नल-दमयन्ती की कथा पर आधारित महाकाव्यों की परम्परा के अन्तर्गत 'नैषधीय चरितम्' सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ है । 'नैषधीय चरितम्' का कथावस्तु यद्यपि मूलकथा पर आधारित है परन्तु इसमें कवि ने अनेक परिवर्तन कर दिए हैं । उन पर विचार करने के लिए यहाँ 'नैषधीय चरितम्' की कथा संक्षेप में देना आवश्यक प्रतीत होता है । 'नैषधीय चरितम्' की कथा इस प्रकार है[1] :--

पुण्यश्लोक महाराज नल का यश तथा प्रताप विश्वव्यापी था । उनके शासनकाल में धर्म स्थिर था । संग्राम में उनके समक्ष शत्रुओं की प्रतापाग्नि प्रशान्त हो जाती । महादानी नल के समक्ष कल्पवृक्ष भी तुच्छ था । नल का समय काव्यों और शास्त्रों के अध्ययन में व्यतीत होता था । शैशव की समाप्ति होने तक नल ने के दिग्विजय कर ली । युवा नल का सौन्दर्य त्रिभुवन में अद्वितीय था । विदर्भ की राजकुमारी दमयन्ती के हृदय में भी शनै:शनै: नल के प्रति अनुराग बढ़ चला । कभी दमयन्ती निषध देश से आए हुए दूत, ब्राह्मण, बन्दी या चारण से नल के गुणों को सुनकर अन्यमनस्क हो जाती और कभी चित्रभित्ति पर नल के समान रूपवान पुरुष और अपने समान रूपवती स्त्री का सम्मिश्र चित्र बनवा कर देखा करती ।

इसी प्रकार दमयन्ती के गुणों को सुनकर नल के हृदय में भी दमयन्ती के प्रति अनुराग जगा । काम-पीड़ा की अभिवृद्धि होने पर भी मानो नल ने विदर्भ राज से उनकी कन्या नहीं माँगी । काम-चिह्नों के गोपन में अपने को असमर्थ समझकर उपवन-विहार के बहाने निर्जन स्थान में जाने की अभिलाषा से, वे कुछ विश्वस्त

१- नैषधीय चरितम्

मित्रों के साथ अश्वारूढ़ होकर उपवन की ओर चल पड़े । उपवन में उपवन रक्षक द्वारा प्रत्येक फल-फूल का परिचय प्राप्त करते हुए वे उपवन की रमणीयता की सराहना करने लगे । क्रीडा सरसी की लहरों की ध्वनि तथा पिक एवं भ्रमरों के शब्दों द्वारा विरचित संगीत नल के लिए दुखदायी था और शीतल मन्द सुगन्धित पवन उनकी सेवा कर रहा था । यह सब होते हुए भी वैदर्भी विरह के कारण नल और भी अधिक विह्वल हुए ।

उसी उपवन में नल ने एक अत्यन्त मनोहारी सरोवर देखा । सरोवर के समीप विचरते हुए एक अद्भुत स्वर्ण हंस को देखकर उन्हें कुतूहल हुआ ।

उसी समय उस अद्भुत पक्षी ने निद्रित मुद्रा बना ली । अश्व से अवतीर्ण होकर नल ने हंस को पकड़ लिया । उड़ने का निष्फल प्रयत्न करने के बाद वह पक्षी करुण शब्द करता हुआ पुन: पुन: नल के हाथों को काटने लगा । करुण स्वर से विलाप करते-करते हंस मूर्च्छित हो गया । करुणार्द्र चित्त नल के अश्रुओं से क्लिन्न होकर हंस ने पुन: संज्ञा प्राप्त की । नल ने उसे मुक्त कर दिया । हंस को बन्धनमुक्त देखकर उसके बन्धु आनन्दाश्रु बहाने लगे ।

मुक्त होने पर सर्वप्रथम हंस ने पंखों को व्यवस्थित किया, और फिर नल के हाथ पर बैठकर कहने लगा -- हे राजन् ! अर्थशास्त्रों में राजा के लिए आखेट उचित ही कहा गया है , उस पर भी आपने मुझे छोड़ दिया , यह आपकी अनुकम्पा है । मैं पक्षी होकर आपका भला क्या उपकार कर सकता हूं ? फिर भी मैं आपका प्रत्युपकार करना चाहता हूं । विदर्भ राज महाराज भीम की दम नामक ऋषि की कृपा से प्राप्त 'दमयन्ती' नाम की अनुपम सुन्दरी कन्या है । उसके लिए जगत के सभी युवक मुझे अयोग्य प्रतीत हुए परन्तु दमयन्ती तुम्हारे ही योग्य है । मैं दमयन्ती के समक्ष तुम्हारी उस प्रकार से प्रशंसा करूंगा जिससे वह सुन्दरी हृदय से तुमपर ही अनुरक्त हो जाये ।" नल ने दमयन्ती विषयक अपनी काम व्यथा व्यक्त करके उस मित्र पक्षी से शीघ्र ही अभीष्ट सम्पादन करके शीघ्र ही वहां पुन: मिलने का अनुरोध किया ।

नल से विदा लेकर अति वेग से उड़ता हुआ हंस शीघ्र ही कुण्डिनपुर पहुंच गया । दमयन्ती के क्रीड़ावन में हंस ने सखियों से परिवृता राजकुमारी दमयन्ती का दर्शन किया ।

दमयन्ती के समीप ही हंस उतर गया और फुदकता हुआ वह दमयन्ती को लताओं के समीप तक ले गया । एकान्त देखकर उसने दमयन्ती से मानुषी बोली में कहा -- ' हे सुन्दरि ! मेरी गगन में भी गति है और तुम्हारी गति केवल पृथ्वी तक ही सीमित है । तुम मुझे ग्रहण करने के लिए व्यर्थ ही क्यों परिश्रम कर रही हो । मैं ब्रह्मा के वाहन भूत हंस का वंशज हूं । हम लोग ब्रह्मा की आज्ञा से नल का क्रीडा सरोवर देखने आये थे । मैं अकेला पृथ्वी लोक दर्शन के कौतूहल-वश चला आया । मैं दिव्य पक्षी हूं जिसका बन्धन कोई भी नहीं कर सकता । इसके पश्चात उसने नल की प्रशंसा करके कहा कि सम्भव है तुम्हारा नल से ही विवाह हो । ब्रह्मा का विमान वहन करते समय एक बार नल की वधू के विषय में मेरे जिज्ञासा करने पर ब्रह्मा ने जो शब्द कहे थे,वे तुम्हारे नाम जैसे ही थे । हे सुन्दरि ! मैंने तुम्हें परिश्रान्त कर दिया है अतएव मैं अपने अपराध का परिमार्जन करना चाहता हूं । तुम बताओ मैं तुम्हारा क्या प्रिय करूं ।' दमयन्ती ने घुमा-फिराकर नल से अपने विवाह की इच्छा व्यक्त की । हंस ने फिर कहा सुन्दरि ! किसी कारण से यदि तुमने नल से भिन्न किसी पुरुष का वरण कर लिया तो नल को मेरे ऊपर विश्वास नहीं रह जाएगा । अन्ततः दमयन्ती ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह नल पर अनुरक्त है और उसने हंस से कहा -- ' हे पक्षिराज ! अब तुम शीघ्र ही जाकर नल से यह निवेदन करना । इस सब को कामदेव का प्रयत्न मानकर हंस ने नल की कामदशा का वर्णन किया । इसी अवसर पर दमयन्ती की सखियां आ पहुंची । हंस दमयन्ती से विदा होकर सरोवर के तट पर अशोक वृक्ष के नीचे प्रतीक्षा करते हुए नल के पास पहुंचा और उन्हें समस्त वृत्तान्त कह सुनाया ।

प्रिय के विरह में दमयन्ती की कामपीड़ा निरन्तर बढ़ती ही जाती थी। उसके अंगों की स्वाभाविक कान्ति मलिन हो गयी। अन्ततः सुन्दरी दमयन्ती सखियों से वार्तालाप करते-करते मूर्च्छित हो गई। दमयन्ती की मूर्च्छा का समाचार पाकर सम्भ्रान्त विदर्भ राज पुत्री के अंतःपुर में आए और वैद्यों तथा वहां के अधिकारियों से दमयन्ती की मूर्च्छा का कारण ज्ञात करके उन्होंने दमयन्ती के स्वयंवर का निश्चय किया।

दमयन्ती स्वयंवर के लिए विदर्भराज भीम ने राजाओं को आमन्त्रित करना प्रारम्भ कर दिया। इसी समय इन्द्र के दर्शन के लिए नारद और पर्वत मुनि स्वर्ग पहुंचे। प्रसंग आने पर नारद ने दमयन्ती के रूप गुण की प्रशंसा करके उसके भावी स्वयंवर की बात इन्द्र को बतायी। नारद के चले जाने पर दमयन्ती को प्राप्त करने की इच्छा से इन्द्र ने भी दमयन्ती स्वयंवर में जाने का निश्चय किया और वे अग्नि वरुण तथा यम के साथ पृथ्वीलोक की ओर चल पड़े। मार्ग में अतिशय रूपवान् नल को देखकर वे सभी लोकपाल अपने अभीष्ट की प्राप्ति में निराश हो उठे। इन्द्र ने नल को अपना तथा अन्य लोकपालों का परिचय देकर कहा --" हे राजन्। हम लोग आपके पास याचक बनकर आए हैं। नल ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार सब कुछ देने की प्रतिज्ञा कर दी। तब इन्द्र ने नल को अपना अभीष्ट बताकर उनसे दौत्य कर्म सम्पन्न करने के लिए कहा। नल ने देवराज को समझाया कि दमयन्ती ने पहले ही नल को पति मान लिया है। इस स्थिति में नल देवों के दौत्य कर्म के लिए सर्वथा अयोग्य हैं। देवताओं ने नल की एक न सुनी और अन्ततः अगत्या नल ने उनका दौत्य कर्म स्वीकार कर लिया। इन्द्र ने उन्हें इच्छानुसार अदृश्य हो सकने की शक्ति प्रदान की। कुण्डिनपुर में पहुंचकर नल ने अदृश्य रूप से अन्तःपुर में प्रवेश किया। अन्तःपुर में सुन्दरियों से टकराते हुए नल घूमते-घूमते परिश्रान्त होकर जब विश्राम करने जा रहे थे तभी उन्हें माता को प्रणाम करके लौटती हुई दमयन्ती का दर्शन हुआ। नल एकाएक यह निश्चय न कर सके कि उन्हें दिखायी देने वाली यह दमयन्ती वास्तविक है या भ्रान्तिजन्य है। उधर दमयन्ती ने अदृश्य रूप में स्थित नल को न देख पाने पर भी

कल्पना प्रसूत नल के कण्ठ में माता से प्रसाद रूप में प्राप्त पुष्पमाला डाल दी जो वास्तविक नल के कण्ठ में पड़ गई। वहां नल की वास्तविक स्थिति से अनभिज्ञ दमयन्ती अपने भवन में चली गई। घूमते-घामते नल भी अन्तत: वहीं पहुंच गये। अग्नि वरुण तथा यम की दूतियों के पश्चात् इन्द्र की दूती भांति-भांति से इन्द्र की प्रशंसा करने लगी तथा दमयन्ती की सखियां भी इन्द्र दूती के प्रस्ताव का समर्थन करने लगीं। दमयन्ती ने इन्द्र द्वारा भेजी गई पारिजात माला को विनयपूर्वक स्वीकार करके दूती से कहा -- " मैं मन-ही-मन पहले से ही नल को आत्मसमर्पण कर चुकी हूं। इस दशा में पातिव्रत्य धर्म से प्रतिकूल तुम्हारी बातें मुझे असह्य हैं। दमयन्ती के वचन सुनकर दूती वहां से चली गई और नल के अधीर मन को कुछ आश्वासन मिला।

अब सखियों से परिवृत दमयन्ती के सम्मुख नल ने प्रकट होने की इच्छा की। अन्त:पुर में नल के समान रूपवान पुरुष को देखकर दमयन्ती और उसकी सभी सखियां चकित हो गयीं। दमयन्ती ने नल का स्वागत किया और उनका परिचय मांगा। नल ने लोकपालों की सभा से आने वाले सन्देशवाहक के रूप में अपना परिचय दिया। एक-एक करके चारों लोकपालों का सन्देश सुनाकर नल ने अपनी ओर से भी दमयन्ती से चारों देवों में से अन्यतम का वरण कर लेने का सुझाव दिया।

लोकपालों के संदेश पर ध्यान न देकर दमयन्ती ने नल का नाम, कुल आदि जानने की इच्छा व्यक्त की। नल ने कहा कि दूत के विषय में जानने से कोई लाभ नहीं होता। उन्होंने अपने को चन्द्रवंशी स्वीकार किया। दमयन्ती ने दूतीमुख से नल प्राप्ति की अपनी इच्छा, और उसके निष्फल हो जाने पर किसी भी प्रकार से अपनी आयु समाप्त कर लेने का निश्चय कह सुनाया। नल ने दमयन्ती को पुन: समझाया कि आत्मघात करके वह लोकपालों को ही प्राप्त होगी। अपने दौत्य धर्म की रक्षा करते हुए नल दमयन्ती को पुन: पुन: देवों की सामर्थ्य का बोध कराने लगे। नल को याद करके दमयन्ती करुण-विलाप करने लगी जिससे विचलित होकर नल ने अन्तत: दमयन्ती के सम्मुख आत्म प्रकाशन करते हुए उसे सान्त्वना दी। क्षण भर बाद अपने कार्य पर विचार करके उन्हें घोर पश्चात्ताप

होने लगा । इसी अवसर पर स्वर्ण हंस ने आकर नल को आश्वासन दिया साथ ही दमयन्ती को और अधिक निराश न करने की सलाह दी । हंस के चले जाने पर नल ने दमयन्ती से कहा -- ' सुन्दरि ! देवगण तुम्हारी कामना करते हैं और तुम मेरा भी वरण कर सकती हो । सोच-विचार कर आगे बढ़ना जिससे तुम्हें बाद में पश्चात्ताप न हो । दमयन्ती के अनुरोध करने पर स्वयंवर में आने का वचन देकर नल दौत्य की विफलता के कारण लज्जित होते हुए देवताओं के समीप पहुंचे और उन्हें समस्त वृत्तान्त यथावत् सुना दिया ।

दमयन्ती-स्वयंवर में देश-देश से राजकुमार आए थे । तीनों लोकों के निवासी वहां उपस्थित थे । इन सभी आगन्तुकों के चरित्र और गोत्र का परिचय देने के कार्य को मानवी शक्ति की सामर्थ्य से बाहर समझ कर विदर्भराज चिन्तित थे । भगवान विष्णु की आज्ञा से भगवती सरस्वती ने इस कार्य का भार वहन करना स्वीकार किया ।

देवी सरस्वती दमयन्ती को लेकर देव, ब्राह्मण राजा, गन्धर्व, विद्याधर, यक्ष तथा नागों के पास से होती हुई मध्यभूमि के नृपतियों के निकट पहुंची । पुष्कर द्वीप का प्रभु सवन, शाक द्वीप का स्वामी हव्य, क्रौंचद्वीपाधिपति द्युतिमान कुश द्वीप के अधिपति ज्योतिष्मान, शाल्मलद्वीप के प्रभु वपुष्मान तथा प्लक्ष द्वीप के अधिपति मेधातिथि में से कोई भी दमयन्ती के मन को न लुभा सका । तदनन्तर सरस्वती ने जम्बु द्वीप के नृपतियों का परिचय दिया । अवन्तिनाथ गौडेन्द्र, मथुराधिपति, काशिराज, अयोध्याधिपति, पाण्ड्येश्वर, महेन्द्राधिपति, कांचीपुर-नरेश, नेपाल के अधिपति, मलय के स्वामी, मिथिलाधिपति, कामरूप के राजा, उत्कल के अधिपति तथा कीकटाधिपति की प्रशंसा सुनकर भी दमयन्ती विचलित नहीं हुई । अन्तत: शिविका वाहक दमयन्ती को नल के समान रूप वाले ५ पुरुषों के समीप ले गए । देवी सरस्वती ने क्रम से इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण और नल का इस प्रकार से श्लेषमय वर्णन किया कि दमयन्ती किसी भी तरह से यह निश्चय न कर सकी कि उनमें वास्तविक नल कौन से हैं । दमयन्ती ने देवताओं को प्रसन्न करना ही आवश्यक समझा अतएव उसने देवों

की पूजा की । देवगण प्रसन्न हुए और परिणामस्वरूप देवी सरस्वती द्वारा किया गया श्लेषोक्ति का वर्णन दमयन्ती को स्पष्ट हो गया । देवताओं ने भी कपट रूप त्याग कर अपना अपना रूप स्पष्ट कर दिया । देवताओं से अनुमति प्राप्त करके दमयन्ती ने नल को जयमाल पहना दी । देवताओं ने वर और वधू को वरदान दिए और फिर सरस्वती के साथ उन्होंने स्वर्ग लोक के लिए प्रस्थान किया । दमयन्ती ने अपने पिता से कहकर स्वयंवर में आए हुए तथा दमयन्ती को न प्राप्त कर सकने के कारण क्षुब्ध सभी राजाओं को अपनी एक सुन्दरी सखी दिलवायी ।

वरयात्रा के लिए रथ पर जाते हुए नल के दर्शन की इच्छा से राजमार्ग पर नगर की सुन्दरियां एकत्र हो गयीं । शुभ मुहूर्त में नल और दमयन्ती का विवाह सम्पन्न हुआ । विवाह के अनन्तर पांच-छ: दिन विदर्भ राज के घर रह कर नल ने वधू के साथ निषध देश के लिए प्रस्थान किया । महाराज भीम अपने राज्य की सीमा तक बेटी और जामाता को छोड़ने आए । दु:खी हृदय से उन्होंने बेटी को बिदा किया । अपने नगर के समीप नल के मन्त्रियों ने उनका स्वागत किया और नगर की स्त्रियों ने महलों से लाज की वर्षा की ।

स्वर्ग की ओर जाते हुए देवताओं ने मार्ग में सेना सहित आते हुए कलि को देखा । इसी समय किसी ने वैदिक नास्तिकवाद का खण्डन करते हुए चार्वाक मत का प्रतिपादन करना प्रारम्भ किया । देवताओं को बहुत रोष हुआ और उन्होंने वैदिक मत की सत्यता प्रमाणित की । देवताओं से दमयन्ती - स्वयंवर का वृत्तान्त सुनकर ~~क्रुद्ध~~ क्रुद्ध कलि ने प्रतिज्ञा की कि " मैं नल को दमयन्ती तथा राज्यलक्ष्मी दोनों से रहित कर दूंगा ।" द्वापर के साथ कलि नल के राज्य में पहुंचा परन्तु उस धार्मिक राज्य में उसे तनिक भी स्थान नहीं मिला । अन्तत: नल के उद्यान में स्थित बहेड़े के वृक्ष का आश्रय लेकर वह बहुत समय तक अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा करता रहा । इधर सम्पूर्ण राज्य का भार मन्त्रियों पर सौंप कर नल दमयन्ती के साथ विषय भोग में निरत थे । रात्रि समाप्त हुई और प्रभात काल आ पहुंचा । प्रभात स्नान करके नल रथ पर घूमने गए । प्राभातिक क्रियाओं को सम्पन्न करके नल प्रिया के साथ रमण करने लगे । दमयन्ती ने प्रणयमान किया और नल ने

प्र[illegible]ओं को भंग किया । मध्याह्न होने पर नल स्नान करने चल दिये । सामन्तों से मिलकर और राजकुमारों को अस्त्र-शस्त्र विद्या का अभ्यास करवा कर नल ने स्नान सन्ध्योपासना करके पूजा-गृह में प्रवेश किया । सूर्य, शंकर और विष्णु की स्तुति करने के पश्चात् उन्होंने समाधि लगा कर विष्णु का साक्षात्कार किया । ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर नल ने भोजन किया । दमयन्ती भी भोजन करके पति के समीप जा पहुंची । सखियों ने वीणा वादन किया । सायंकाल में नल ने संध्योपासना की और फिर प्रिया को अंक में लेकर संध्या का वर्णन करने लगे ।

महाभारतीय नल-कथा में नल और दमयन्ती दोनों ही एक-दूसरे के विषय में लोगों से सुनते हैं और परस्पर अनुरक्त हो जाते हैं[1] परन्तु नैषधीय चरितम् में दूतों, द्विजों आदि के मुख से नल के गुणों के विषय में सुनकर पहले दमयंती के हृदय में नल के प्रति अनुराग अंकुरित होता है तदनन्तर नल-दमयन्ती के विषय में सुनते हैं और उनके हृदय में दमयन्ती के प्रति अनुराग उत्पन्न हो जाता है[2] ।

महाभारत में उपलब्ध होने वाली नल-दमयन्ती कथा के अन्तर्गत नल के क्रीडोद्यान में किसी सरोवर का उल्लेख नहीं हुआ है । दमयन्ती की विरह-वेदना के अपनोदनार्थ नल अपने क्रीडोद्यान में विहार कर रहे हैं । उसी समय उन्हें वन में विचरते हुए कुछ स्वर्णिम हंस दृष्टिगोचर होते हैं । कुतूहलवश नल उनमें से एक का ग्रहण कर लेते हैं । वह हंस राजा से कहता -- "राजन् ! मैं हन्तव्य नहीं हूं । मैं आपका प्रिय करूंगा । दमयन्ती के सम्मुख मैं उस प्रकार से आपकी प्रशंसा करूंगा कि वह आपसे भिन्न पुरुष को कभी भी स्वीकार नहीं करेगी[3] । इसी घटना को नैषधकार ने अत्यधिक प्रभावोत्पादक रूप में उपन्यस्त किया है । जल में विहरणशील पक्षी हंस की कल्पना सरोवर के समीप अधिक स्वाभाविक प्रतीत होती है । महाकाव्य में सरोवरादिकों का वर्णन यों भी वांछनीय ही होता है । नैषधकार ने हैम हंसों की कल्पना

१- म०भा०वनपर्व ५०।१६-१७

२- नै० १।३३-४८

३- म०भा० वनपर्व ५०।२१

क्रीडोद्यानगत सरोवर के निकट की है । महाराज नल के करपंजर में अवरुद्ध हंस पहले तो आत्ममोचन का पूर्ण प्रयास करता है । परन्तु इस प्रकार अपनी मुक्ति सम्भव न देखकर वह राजा को उनके इस निर्दय कार्य के लिए धिक्कारता है और फिर अन्त में करुण विलाप करने लगता है । अपनी मृत्यु के अनन्तर माता पत्नी और बच्चों की दयनीय अवस्था की कल्पना करके वह करुण विलाप करता है । प्रिया-विरह से कातर राजा का चित्त दयार्द्र हो उठता है और वे उस पक्षी को मुक्त कर देते हैं । मुक्त होकर हंस अपने पंखों को व्यवस्थित करता है और पक्षी-सुलभ स्वाभाविक चेष्टाएं करने लगता है । तदनन्तर वह पुन: राजा के हाथ पर आ बैठता है और उनसे उपकार करने की बात कहता है । वह नल के सम्मुख दमयन्ती का वर्णन करता है और दमयन्ती को नल में अनुरक्त करने का कार्यभार संभाल लेता है[1] ।महाभारतीय घटना को इस नवीन रूप में विस्तृत करके श्रीहर्ष ने एक ओर नायक के चरित्र को उदात्त बनाने में सहायता प्राप्त की है और दूसरी ओर घटना अधिक स्वाभाविक और सरस बन गयी है । विप्रलम्भ शृंगार के प्रसंग में हंस के करुण रुदन से व्यंजित करुण रस का पुट सोने में सुहागा हो गया है ।

नलोपाख्यान में देवदूत नल का अन्त:पुर में दमयन्ती स्वागत करती है । नल दमयन्ती को अपना वास्तविक परिचय दे देते हैं और दमयन्ती को लोकपालों में से किसी एक का वरण कर लेने का सुझाव देते हैं[2] । नैषध में देवदूत नल विदर्भराज के अन्त:पुर में अदृश्यरूप से प्रवेश करते हैं । वहां इधर-उधर घूमने पर भी उन्हें दमयन्ती के दर्शन नहीं हो पाते । परिश्रान्त हो जाने पर वे प्रासाद की अट्टालिका में विश्राम करने के लिए ~~चले-जाते-हैं~~ जा रहे थे उसी समय माता को प्रणाम करके आती हुई दमयन्ती का उन्हें दर्शन हो जाता है । नल उस ~~का~~ सत्य दमयन्ती को भी अपनी कल्पित दमयन्ती से पृथक् न समझ सके । दमयन्ती यद्यपि वास्तविक नल

१- नै० प्रथम तथा द्वितीय सर्ग

२- म०भा० वनपर्व ५२।२३-२४

को नहीं देख पा रही थी फिर भी उन्होंने जो पुष्पमाला उद्भ्रान्ति में दृष्टिगोचर होने वाले नल के गले में पहनाई थी वह [illegible] वास्तविक नल के कण्ठ का अलंकार बन गया । दोनों का मिलन हुआ परन्तु दोनों ही यथार्थता से अनभिज्ञ रहे[1] । ऐतिहासिक घटना में इस प्रकार से परिवर्तन करके श्री हर्ष ने अनेक प्रयोजनों की सिद्धि की है[2] । एक तो नल की प्रिया विरह जन्य उन्मादावस्था स्पष्ट हो जाती है और दूसरे इस प्रकार से नल को माला पहना कर दमयन्ती नल के लिए परकीया नहीं रह जाती जिससे उदात्त चरित्र नल दमयन्ती का नख-शिख वर्णन करके भी परकीयोपभोगजन्य दोष के भागी नहीं हुए ।

महाभारत में देवदूत नल अन्तःपुर में दमयन्ती को अपना वास्तविक परिचय दे देते हैं[3] परन्तु नैषध में वे दमयन्ती के पुनः पुनः आग्रह करने पर भी अपना यथार्थ परिचय नहीं देते । अपने नाम के अक्षरों और उनका क्रम बताने की अपेक्षा वे वार्तालाप के लिए युष्मद् और अस्मद् को ही पर्याप्त बताते हैं । मात्र देवदूत के रूप में आत्म परिचय देकर वे दमयन्ती की निवृत्ति को परिवर्तित करने की चेष्टा करते हैं । दमयन्ती के निश्चय को बदलना सहज नहीं था । नल ने शुद्ध दूतधर्म के परिपालन में कोई कमी नहीं रहने दी । देवों की सामर्थ्य और नल की तुच्छता का भांति-भांति से उल्लेख किया । अन्ततः प्रिय की प्राप्ति को असम्भवप्राय समझकर दमयन्ती करुण विलाप करने लगी । इस अवस्था में नल अपने को अधिक न संभाल सके और विवश होकर उन्होंने अपना वास्तविक परिचय दे दिया । नल को अपने दूत धर्म के पूर्ण निर्वाह न कर पाने पर ग्लानि हो रही थी । इसी अवसर पर नैषधकार ने प्रेमदूत हंस के पुनरागमन की कल्पना की है । दिव्य हंस ने नल से कहा कि तुम निरपराध हो और दमयन्ती को अधिक निराश करोगे तो वह प्राण-त्याग कर देगी[4] । इस प्रकार दिव्य हंस से आश्वासन पाने की नवीन घटना की योजना

१- नै० सर्ग ६

२- नैषध परिशीलन, पृ०७०

३- म०भा०वनपर्व ५२।२३

४- नै० सर्ग ६

निष्प्रयोजन नहीं है । दौत्य कर्म में विफल होने पर भी उसके कारण नल का चरित्र मलिन नहीं होने पाता । महाभारत में दमयन्ती के स्वयंवर का अति संक्षिप्त वर्णन किया गया है[1] परन्तु नैषध में उसी को ५ सर्गों में अत्यधिक विस्तृत रूप प्राप्त हुआ है[2] । महाकाव्यों की परम्परा के अनुसार ही स्वयंवर के प्रसंग का यहां प्रायः बड़े विस्तार से किया गया है । कवि ने इस प्रसंग को चमत्कार-प्रदर्शन के लिए भी उपयुक्त समझा और पंचनली आदि का निबन्धन चमत्कारपूर्ण रीति से किया है । महाभारतीय कथा में दमयन्ती को स्वयंवर-मण्डप में उपस्थित राजाओं का परिचय देने वाले का कोई महत्त्व नहीं परिलक्षित होता है । वहां एकत्र राज समाज छोटा ही था परन्तु नैषध में अवस्था इससे भिन्न थी । देवलोक,नागलोक और भूलोक त्रैलोक्य के नायक दमयन्ती की कामना से स्वयंवर में उपस्थित थे । उन सब का परिचय दे पाना मनुष्य की सामर्थ्य से परे था । इस अवस्था में भीम ने भगवान का ध्यान किया और इस प्रकार सरस्वती देवी ने राजसमाज का परिचय देने का कार्यभार संभाल लिया[3] । परिचय देने वाली भगवती सरस्वती थीं ,जिनका परिचय देना था वे छद्मवेषधारी लोकपाल थे और जिसे समझाया जा रहा था वह विदुषी दमयन्ती थी । ऐसे उपयुक्त प्रसंग की प्रयत्नपूर्वक संयोजना श्रीहर्ष ने किसी प्रयोजन से ही की थी और वह था चमत्कार प्रदर्शन के लिए अनुकूल अवसर बनाना । श्री हर्ष ने यहां श्लिष्टार्थक श्लोकों का अवसरोचित निबन्धन किया है ।

अर्थप्रकृतियां

दमयन्ती के हृदय में लोकनायक के साथ नल के अद्भुत रूप तथा गुणों को दूत, द्विज,बन्दी तथा चारणों से सुनकर तथा नल के हृदय में दमयन्ती के लोकोत्तर गुणों को लोगों से सुनने के कारण परस्पर अनुराग का उत्पन्न होना[4] बीज अर्थप्रकृति है ।

१- म०भा० वनपर्व ५४

२- नै० सर्ग १०-१४

३- नै०सर्ग १०

४- नै० सर्ग २ ?

दमयन्ती के विरह के कारण अनंग चिह्नों के गोपन में असमर्थ नल उपवन में गए और वहाँ हंस का प्रसंग आ गया जिससे उनकी विरह-व्यथा क्षण भर के लिए विस्मृत-प्राय हो गई।[1] परन्तु हंस ने उस नारी की चर्चा करके विच्छिन्न कथावस्तु को पुनः संयुक्त कर दिया अतएव यहाँ 'बिन्दु' अर्थप्रकृति प्रतीत होता है।

'नैषधीय चरितम्' में किसी पताका का निबन्धन किया गया नहीं प्रतीत होता है। डा० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल ने इन्द्रादि देवों की दमयन्ती प्राप्ति के लिए की गयी चेष्टा को एक दूरव्यापी कथानक होने के नाते पताका स्वीकार किया है।[2] दूर व्यापी प्रासंगिक कथा पताका कहलाती है।[3] दशरूपक में ही इस पताका लक्षण की वृत्ति में धनिक ने स्पष्ट किया है--'पताकेव नायकस्य नायक-चिह्नवदुपकारित्वात्'[4] अर्थात् पताका दूर व्यापिनी होने के साथ-साथ मुख्य नायक तथा आधिकारिक कथावस्तु की पोषक होती है। दशरूपककार ने पताकानायक अथवा पीठमर्द का लक्षण देते समय यह बात और भी स्पष्ट कर दी है। यह पताका नायक मुख्य नायक का सहायक होता है।[5] धनञ्जय ने पताकानायक का लक्षण इस प्रकार से किया है --

'पताकानायकस्त्वन्यः पीठमर्दो विचक्षणः।
तस्यैवानुचरो भक्तः किंचिदूनश्च तद्गुणैः॥'[6]

साहित्यदर्पणकार ने भी पीठमर्द(पताका नायक) का लक्षण कुछ इसी प्रकार से किया है।[7]

इस सब से यह स्पष्ट हो जाता है कि पताका का नायक मुख्य नायक का अनुचर, भक्त तथा सहायक होता है।

'नैषधीयचरितम्' के अन्तर्गत देवताओं का चित्रण प्रतिनायक के रूप में

---

1. नै० सर्ग 2
२-नैषध परिशीलन,पृ०४४
३- द०रू० १।१३
४- द०रू० १।१३ की वृत्ति
५-सहायानाह ६,द०रू०,पृ०६२
६-द०रू० २।८.
७-सा०द० ३।३९

उपलब्ध होता है[१]। इस अवस्था में देवताओं को पताका नायक मानना अथवा देवताओं के वृत्त को पताका मानना असंगत प्रतीत होता है।

'नैषधीयचरितम्' के अन्तर्गत देवताओं का वृत्त 'प्रकरी' प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त नारद इन्द्र संवाद भी प्रकरी है।

स्वयंवर में नल का वरण तथा दमयन्ती से नल का विवाह कार्य है।

कार्यावस्थायें

हंस के वचनों से नल तथा दमयन्ती दोनों ही के हृदयों में परस्पर प्राप्ति की उत्सुकता 'आरम्भ' अवस्था है।

दमयन्ती की विरह के कारण दुरवस्था देख कर भीम द्वारा दमयन्ती स्वयंवर करने का निश्चय करना[२] 'यत्न' अवस्था है।

नल के, देवदौत्य स्वीकार करने और उसके निर्वाह करने तक 'प्राप्त्याशा' अवस्था मिलती है।

स्वयंवर में दमयन्ती के प्रयत्न से प्रसन्न देवगण जब अपने चिह्नों को प्रकट कर देते हैं और दमयन्ती को वास्तविक नल का ज्ञान हो जाता है तब 'नियताप्ति' अवस्था मिलती है।

दमयन्ती द्वारा नल को वरमाला पहनाना तथा दोनों का विवाह फलागम अवस्था है।

सन्धियाँ

'नैषधीय चरितम्' के प्रथम तीन सर्गों में मुख सन्धि प्राप्त होती है।

१- नैषध परिशीलन, पृ० २३६

२- नै० सर्ग ४

चतुर्थ एवं पंचम सर्गों में प्रतिमुख सन्धि का विस्तार मिलता है क्योंकि यहां नल के प्रति अनुरागिणी दमयन्ती की मदनावस्था देखकर भीम स्वयंवर का आयोजन कर रहे हैं । इस प्रकार बीज कुछ उद्भिन्न होता है परन्तु उसी समय नल के देवदौत्य स्वीकार कर लेने से बीज पुन: अलक्ष्य हो जाता है ।

छठें, सातवें, आठवें और नवें सर्ग में गर्भ सन्धि का विस्तार है । यहां प्रतिमुख सन्धि के अन्तर्गत दृश्य होकर अदृश्य हो जाने वाले बीज का पुन: अन्वेषण किया गया है ।

दशम सर्ग से लेकर चतुर्दश सर्ग में स्वयंवर के प्रसंग में देवताओं द्वारा अपने अपने चिह्न प्रकट कर देने तक अवमर्श सन्धि है ।

दमयन्ती द्वारा नल को जयमाल पहनाने से लेकर ग्रन्थ की समाप्तिपर्यन्त निर्वहण सन्धि का प्रसार है ।

नलायनम्

नल-दमयन्ती की कथा पर आधारित यह काव्य आकार में बहुत बड़ा है । यद्यपि यह भी महाभारतीय नलोपाख्यान पर ही आधारित है परन्तु इसमें मूल कथा से बहुत अधिक विभिन्नतायें मिलती हैं । इस स्थिति में मूल कथा से नलायनम् की कथा के भेदों की समीक्षा से पूर्व प्रस्तुत महाकाव्य की कथा का संक्षेप में उपादान आवश्यक प्रतीत होता है ।

'नलायनम्' की कथावस्तु इस प्रकार है[1] --

भरतक्षेत्र के अन्तर्गत निषधा में सर्वगुणसम्पन्न सर्वावयवसुन्दर 'नल' राज्य करते थे । वीरसेन के पुत्र षोडश वर्षीय नल के राज्य करने पर धर्म अर्थ और काम से सम्पन्न मही अत्यधिक सुशोभित हुई । शैशव में ही नल ने उद्दाम दिग्विजय करके अपने कोश को अगाध कर लिया था । मन्त्रियों पर राज्यतन्त्र का भार सौंपकर

१- नलायनम्

राजा नल स्वतन्त्र होकर क्रीडा करने लगे । मेघ-गर्जना से युक्त प्रावृट्काल में आर पर आए हुए वृद्ध मुनियों ने राजा से कहा कि भगवान् शिव के प्रसाद से चारों वेदों तथा शिवशासन के ज्ञाता राजा कच्छ और महाकच्छ के वंश में हमारा जन्म हुआ है । दुर्दैव से प्रेरित क्रौंचकर्ण नामक निशाचर हमसे द्रोह करता है अतएव उससे आप हमारी रक्षा करें । नल ने वहां जाने के लिए थोड़े से परिवार के साथ, चतुर घोड़े पर आरोहण किया । पस- पुरी की परिसरस्थली में नल ने कज्जलाकार मेघ के सदृश उस निशाचर को देखा । निशाचर क्रौंचकर्ण से नल का घोर युद्ध हुआ । अन्तत: वह मायावी *निशाचर* वराह रूप धारण करके भागने लगा । १३ योजन तक उसका पीछा करके राजा नल ने उसका वध कर दिया । किसी निशाचर ने नल के असामान्य लक्षणों से प्रभावित होकर उन्हें आशीर्वाद दिया । तीर्थयात्री ने राजा नल को बताया कि " मैं नासिक गया और फिर दण्डकारण्य गया । दण्डकारण्य की कथा सुनाने के पश्चात् उसने कहा कि वहां से अपने देश की ओर चलता हुआ मैं किसी न्यग्रोध वृक्ष के नीचे बैठ गया । वहां मैं ने धरातल पर अद्वितीय किसी राजकुमारी को देखा । उस बाला के मस्तक पर बालारुण के सदृश कान्तिमान् तिलक है । जैसे आपने मुझसे पूछा है, इसी प्रकार उसने भी किसी औदीच्य पथिक से किसी उदीचीन राजा की श्लाघा सुनी । वह पथिक राजकुमारी से कह रहा था कि तुम दोनों का संयोग होने से विधाता का श्रम सफल हो जाएगा । यह सुनकर वहराजकुमारी पुलकित हो उठी । दक्षिण दिशा में उसके और इस देश में आपके परिचय से मैं पूर्णकाम हो गया हूं अब मुझे घर जाने की आज्ञा दें ।" पथिक को पुरस्कृत करके राजा ने भेज दिया और उसी राजकुमारी का ध्यान करते हुए अपने भवन से लौट आए ।

इसी अवसर पर नवरात्रोत्सव के समय देवी शारदा क्रीडा के लिए मेरुगिरि पर गयीं । शारदा के वाहन बालचन्द्र नामक मराल को विलम्ब हो जाने के अपराध के कारण देवी शारदा ने "तुम्हारा नित्य भूमिवास हो" ऐसा शाप दे दिया । उन्होंने बताया कि हंस की शाप से मुक्ति तभी होगी जब वह देवासुर और नर सभी से अनुल्लंघ्य किसी कार्य का सम्पादन कर लेगा , इतना कहकर देवी द्वितीय हंस को वाहन बनाकर चली गयी । हंस ने अपनी प्रिया को बताया " दक्षिण दिशा के राजा भीम की सुन्दरी ~~कथा~~ कन्या दमयन्ती के स्वयंवर में देवासुर नर

और उरग सभी आये । देवों ने उस उत्सव के योग्य रूपकों की रचना करके उन्हें भरत को दे दिया है । [illegible] के पुत्र [illegible] ने मुझे बताया है कि मैं भी नल में अनुरक्त है । वन्दियों द्वारा [illegible] निषधनृपति के विषय में सुनकर और स्वप्न में नल को देखकर [illegible] से अनुविद्ध दमयन्ती का नल में प्रगाढ़ अनुराग है । पथिक के मुख से विदर्भराज की पुत्री के विषय में सुनकर निषधपति भी उसमें बद्धभाव है । मैं भैमी को वीरसेन के पुत्र में इस प्रकार से अनुरक्त कर दूंगा कि फिर उसे कोटि कोटि [illegible] यहां गन्धर्व ~~की~~ भी प्रतारित नहीं कर सकेंगे ।

अब चन्द्रमुखी [illegible] शरदृतु का आगमन हुआ । नल का ~~पुरोपवन में नल~~ विरहानल पुनः उद्दीप्त हो उठा । मनोविनोद के लिए वे पुरोपवन में गए ~~व~~ जहां मृणाल लतिका नामक वनपालिका की सहायता से पशु-पक्षियों की क्रीड़ाओं आदि का अवलोकन करते हुए राजा नल ने करोड़ों राजहंसों के बीच बालचन्द्र को देखकर पकड़ लिया । बालचन्द्र ने मानुषी वाणी में राजा की स्तुति की । हंस की पत्नी कोमलता हंसी भांति भांति से हंस के मोचनार्थ प्रार्थना करने लगी । इसी अवसर पर दिव्य आकाशवाणी हुई 'महाराज ! मोह त्याग कर राजहंस को छोड़ दें । यह आपकी प्रिया दमयन्ती के प्रति दौत्य करेगा । राजा ने हंसी को आश्वासन देकर हंस को मुक्त कर दिया । प्रसन्न होकर हंस ने राजा की स्तुति करके उन्हें दमयन्ती के जन्म की कथा सुनाई और बताया कि स्वजनों ने कन्या को 'दमयन्ती' नाम से बुलाया परन्तु पिता ने उसका नाम 'दवदन्ती' रक्खा । सभी विद्याओं और कलाओं में प्रवीण होकर वैदर्भी यौवनावस्था को प्राप्त हुई ।

हंस के वचन सुनकर विरह-व्याकुल राजा नल मूर्च्छित हो गए । हंस ने राजा से कहा, 'हे राजन् ! आपके प्रसाद से भैमी को आपके अधीन कर देना मेरे लिए कठिन कार्य नहीं है । आप मुझे शीघ्र ही कुण्डिनपुर भेजिए । यदि मेरे समझाने के पश्चात् भी वह कन्या आपसे भिन्न किसी का वरण करे तो मुझे यह हंसी मत अर्पित कीजियेगा ।' राजा को इस प्रकार आश्वासन देकर हंस नगनगरादिकों को पार करता हुआ कुण्डिनपुर में दमयन्ती के समीप भूमि पर उतरा । हंस-ग्रहण की इच्छा से पीछा करती हुई दमयन्ती को एकान्त में ले जाकर हंस बोला 'मनस्विनि ! यह प्रयास क्यों कर रही हो ? मैं राजा नल का क्रीडा हंस हूं । युद्ध

में नल के सामने मर्त्य का या राक्षस कोई भी नहीं ठहर सकता । देवी पार्वती ने प्रसन्न होकर हम लोगों को बल को सौंप दिया । हे कल्याणि ! तुम कुछ कहो या फिर कुछ पूछो ।" हंस की मानुषी भाषा के कारण चकित कनकवती ने हंस से नल के परिचय की प्रार्थना की । हंस ने कहा, " स्त्रीपराङ्मुख उस निषधनाथ सिंह का चरित्र सुनो --

आर्यावर्त जनपद की निषधानगरी के राजा वीरसेन की रूपवती नामक भार्या थी । उसका पुत्र नल पृथ्वी पर मूर्तिमान् गुणराशि के समान है । एक बार अश्व द्वारा अपहृत होकर वह घोर वन में जा पहुंचा । परिश्रान्त होकर उसने किसी सरोवर के तट पर घोड़े से उतर कर स्नान किया । उन्हें कोई करुण ध्वनि सुनायी पड़ी जिसके अनुसार जाने पर उन्होंने अष्टांग कीलित मुनि और उनके पास रोते हुए शिष्य तथा एक कन्या को देखा । नल के पूछने पर शिष्य ने बताया " श्रीमान् श्रीधर सम्मेतशिखर पर जा रहे थे । कोई विद्याधर इस राजपुत्री का अपहरण करके गगनमार्ग से ले जा रहा था । उसी कन्या के लिए किसी अन्य से उस विद्याधर का युद्ध होता देखकर यह जालन्धराधिराज की कन्या कनकावली मुनि की शरण में आ गई और मुनि ने इसकी रक्षा की । राजपुत्री को प्राप्त करने में असमर्थ उस विद्याधर ने मुनि को कीलित कर दिया । पुण्डरीकाचल पर नागनिर्मूलिनी नामक औषधि को यदि ३२ लक्षणों से युक्त युवा राजकुमार इस प्रहर की समाप्ति से पूर्व ही ले आए तभी हम तीनों के प्राणों की रक्षा हो सकती है ।" नल को सभी विशेषताओं से युक्त देखकर मुनिशिष्य ने उन्हें तक्षकहृदयाभिध मन्त्र का उपदेश दिया । इसकी सहायता से २०० योजन दूर पुण्डरीकाचल पर वे यामार्द्ध में ही पहुंच गए । औषधि द्वारा मुनि श्रीधराचार्य को उत्कीलित करके नल ने मुनि के प्रसाद से जृम्भकास्त्र प्राप्त किए । फिर नृपकुमार नल से विदा लेकर शिष्य और मुनि के चले जाने पर नल ने कनकावली को पिता के घर भेज दिया ।

जालन्धराधिराज के अनुरोध से नल का कनकावली के साथ विवाह हो गया । दसलाख वर्ष तक राज्य करके के अनन्तर जब राजा वीरसेन ने नल का राज्याभिषेक किया । वनवास के लिए जाते हुए पिता को किसी-किसी प्रकार से

विदा करके कुंडिनपुर [illegible] दिग्विजयी वीर राजा नल राज्य कर रहे हैं ।" दमयन्ती के अनुरोध करने पर हंस ने नैषध का चित्र अंकित किया । चित्रदर्शन से मन्त्रमुग्धा दमयन्ती ने अपना हार हंस को पहना दिया । दमयन्ती के मुख से उसके नल के प्रति अनुराग को सुनकर हंस ने नल की विरह-दशा का वर्णन किया और फिर वह नल के पास जाने के लिए उड़ चला । नल को उपायन रूप से प्राप्त हार देकर कार्य सिद्धि का शुभ समाचार सुनाया । हंस के वचनों को सुनकर नल का विरहानल और भी उद्दीप्त हो उठा । अगले दिन रात्रि में राजा से बिना पूछे ही हंस ने अपने यूथ के साथ [illegible] के लिए प्रस्थान कर दिया । इधर विरह-विह्वला भैमी की दशा देख कर भीमभूपति ने दुहिता का शीघ्र ही स्वयंवर कराने का निश्चय किया । क्रमशः [illegible] ने चारों दिशाओं में पृथ्वीपतियों को स्वयंवर में आमन्त्रित करने के लिए दूत भेजे । आर्यावर्त में सभी राजाओं को आमन्त्रित करते हुए भीम के दूत ने नल को विशेष रूप से निमन्त्रित किया ।

हेमाद्रि पर पहुंचे हुए नारद से इन्द्र ने पृथ्वी पर होने वाले रणोत्सव का कारण पूछा । नारद ने कहा -- "पुरन्दर ! भीमभूपत की कन्या त्रैलोक्य और त्रिकाल में अनुपम है । उसी भैमी के स्वयंवर में सभी राजा जा रहे हैं ।" इतना कह कर नारद स्वयंवर में कदाचित् कलह-दर्शन से [illegible] आशा से पृथ्वी पर उतर आए । सभी दिक्पाल स्वयंवर-विलोकन की इच्छा से नारद के पीछे-पीछे चल पड़े ।

इसी बीच रेवातट तथा विन्ध्याचलोदेश के दर्शन का आनन्द लेते हुए नल को देवताओं ने देखा [illegible] नल को देखकर शक्रादि [illegible] स्तम्भित हो गयी ।

कुशल प्रश्नों के अनन्तर सुनासीर ने नल पर भैमी के प्रति दौत्य का संपादन रूप कार्य सौंप दिया । इसे सुनकर नल का चित्त कम्पित हो उठा । नल के विरोध करने पर भी दिक्पालों ने उन्हें इस कार्य के लिए विवश किया ।

दौत्य के लिए विचारमग्न नल के पास दमयन्ती द्वारा प्रेषित पुष्कराक्ष दूत और एक किन्नर युग्म पहुंचा । पुष्कराक्ष ने बताया कि वैदर्भी की प्रिय सखी केशिनी विद्याधरेन्द्र की दुहिता है ।

प्रातःकाल उपस्थित होने वाले पुष्करादि और किन्नरों के साथ रथ पर आरूढ़ होकर नल कुण्डिनपुर आए ।

राजा नल ने अपने मन्त्री सुमुख के साथ भैमी के लिए वस्त्राभरण भेजे और फिर दिक्पालों के कार्यार्थ अन्तर्हित होकर स्वयं भैमी की सभा में प्रविष्ट हुए ।

प्रलम्ब कुटिल केशपाश से युक्त सुन्दरी दमयन्ती को देखकर कठिनाई से कम्प का निग्रह करके राजा नल दृश्य हुए ।

सौम्य नल को सम्मुख देखकर राजकुल कन्यकाओं के साथ-साथ भैमी भी आलेख्य लिखित-सी हो गई । दमयन्ती ने चाटुगर्भ वचनों में नल से उनका परिचय पूछा ।

दमयन्ती के ललित स्निग्ध वचनों से भी अविचलित नल ने दमयन्ती से कहा "मदिरेक्षणे ! मुझे दिक्पालों के पास से आया हुआ अपना अतिथि जानो । तुम्हारी वियोगाग्नि से सन्तप्त अग्निदेव और वरुण, तुम्हारे स्वयंवर का समाचार सुनकर पृथ्वी पर आए हैं । वैदर्भि ! तुम इनमें से किसी एक का वरण कर लो ।" इस पर नल से अपने प्रश्नों का उत्तर न प्राप्त कर सकने के कारण खिन्न होकर दमयन्ती ने भी नल के प्रश्नों का उत्तर देना अस्वीकार कर दिया । नल बोले कि इतने समय से मेरी प्रतीक्षा करने वाला वासव अब किस प्रकार धैर्य धारण करेगा ? तब दमयन्ती ने भक्तिपूर्ण वचनों में दिक्पालों के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया । देवदूत नल दमयन्ती को उत्साहित करने के लिए पुनः बोले "यह तो नवीन बात सुनी है कि कोई मानुषी, देवताओं की इच्छा न करे ।" दीर्घ निःश्वास लेकर भैमी ने कहा "हन्त ! तुम्हारी यह निर्मल वाणी तप्त अयः सूचि के समान कानों में प्रविष्ट होकर मेरे प्राणों का हरण कर रही है ।" देवदूत के वचनों से खिन्न दमयन्ती ने सखी केकिनी के माध्यम से उत्तर दिया कि क्या देवगण तत्व को जानकर भी परस्त्री की कामना करते हैं । वह पहले ही सौभाग्यसिन्धु नल का वरण कर चुकी है तथा हर प्रकार से वह उसी पंचम लोकपाल का वरण करेगी ।

दमयन्ती की अभ्यर्थना सुनकर भी नल अपने प्रयत्न से विमुख नहीं हुए। उन्होंने कहा कि दिक्पाल विघ्न भी उपस्थित कर सकते हैं। उनके रुष्ट हो जाने पर दमयन्ती को कोई भी शरण नहीं देगा।' परन्तु दमयन्ती को नल किसी भी प्रकार से अपने निश्चय से न डिगा सके।

त्रिदशकार्यार्थी नल ने अब देवताओं की सामर्थ्य का प्रतिपादन करते हुए दमयन्ती को बताया कि आत्मघात द्वारा भी वह लोकपालों की अधीनता से नहीं बच सकती। निराश होकर दमयन्ती करुण विलाप करने लगी। विलाप करती हुई दमयन्ती को देखकर नल अपने दूतकृत्य को भूल गए और दमयन्ती को आश्वासन देते हुए बोले' अधिदेवि। यह नैषध तुम्हारे चरणों पर लोटता है।' आत्मप्रकाशन का बोध होने पर नल को मन में ग्लानि होने लगी। परन्तु इसी बीच बालचन्द्र ने उपस्थित होकर नल तथा दमयन्ती दोनों को ही आश्वासन दिया। वह नल से बोला स्वामिन। इस गर्हित कर्म से विरत होकर शीघ्र ही आवास में जाइए, रात्रि निकट है। पक्षी के चले जाने पर नल भी अन्तर्हित हो गए।

ऐसा कोई भी नहीं था जो उस स्वयंवर में न आया हो। इसी समय क्रौंचकर्णनिषूदन श्रीमान् नल ने स्वयंवर मण्डप में महामंच को सुशोभित किया। नल प्रिया भैमी की प्राप्ति की कामना से शक्रादि दिक्पालों ने भी नलरूप बना लिया। स्वयंवर-महोत्सव में देव असुर नर और नागों के समाज को देखकर भीम भूपति को उनके गोत्र संकीर्तन कार्य के विषय में चिन्ता हुई। भीम नृपति ने इस कार्य के लिए देवी शारदा की स्तुति की। प्रसन्न होकर देवी ने यह कार्य संभाल कर वैदर्भी जनक की चिन्ता दूर की।

इसी समय दम दमन और दान्त से अनुगत दमयन्ती ने स्वयंवर मण्डप में प्रवेश किया। सभी राजलोक भैमी को देखकर आकुल हो उठा तथा नरेश्वर सुता की प्राप्ति के विषय में उस समय त्रैलोक्य में किसी को भी दृढ़निश्चय नहीं था।

अब हेमदण्ड से युक्त भगवती सरस्वती ने दमयन्ती को उस नरामरमयी सभा का परिचय दिया। यक्ष गन्धर्व नाग, विद्याधर दैत्य और देवों का परिचय देने के अनन्तर देवी राजलोक के प्रति उन्मुख हुई।

देवी सरस्वती ने अयोध्यापति ऋतुपर्ण, तक्षशिलापुरीपति आदि समस्त प्रेमाकुल राजलोक का परिचय दिया।

उसी समय नलांक को देखकर देवी सरस्वती ने श्लेषमय वाणी द्वारा उनका भी परिचय दिया । देवी के वर्णन से दमयन्ती किसी भी प्रकार से यह निर्णय न कर सकी कि उनमें से कौन से वास्तविक नल हैं । तब दमयन्ती ने देवताओं को प्रसन्न करके नैषध का पता लगाने की इच्छा से देवताओं की स्तुति की और अन्त में दिक्पालों के परितोष से सत्य नल का ज्ञान प्राप्त कर लिया । चारों लोकपालों को प्रणाम करके दमयन्ती ने नैषध का वरण किया । प्रसन्न होकर देवताओं ने नवदम्पति को वर दिए । इसी समय वाक्चन्द्र हंस ने आकर श्री शारदा के चरणपीठ को अलंकृत किया ।

नल और दमयन्ती का विधिवत् विवाह हुआ । एक मास तक विदर्भराज के साथ रहने के पश्चात् नैषध भैमी के साथ अपनी राजधानी में आ गए ।

दमयन्ती-स्वयंवर से वापस आते हुए शक्र ने मार्ग में चार्वाक मतवर्ती कुछ मनुष्यों को उपदेश दिया । देवशक्ति से भयभीत होकर उस चार्वाक मतानुगामी वैतालिक ने शक्र के पैरों पकड़कर उन्हें कलि माया दिखाई । कलि ने आगे बढ़कर देवताओं का स्वागत किया । कलि ने देवताओं को बताया कि वे लोग भैमी का स्वयंवर में वरण करने जा रहे थे । देवताओं ने वहां का सब वृत्तान्त सुना कर उसे लौट जाने के लिए प्रेरित किया परन्तु कलि ने क्रुद्ध होकर नलका उच्छेद करने की प्रतिज्ञा की । कलि से नल की पराभवता में नल की रक्षकता के लिए परस्पर वार्तालाप करते हुए देवताओं ने कहा -- वीरसेन का बान्धव पातालवासी कर्कोटक, नल की रक्षा करेगा । इधर ए नल के राज्य में ठहरने का स्थान खोजते हुए कलि ने नगर से बाहर एक अक्षवृक्ष का आश्रय लिया ।

6000 वर्ष तक बिभीतक वृक्ष पर रह कर प्रतीक्षा करने पर भी कलि नल में प्रवेश न प्राप्त कर सका । इसी बीच दमयन्ती से नैषध के एक पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुई । एक दिन सन्ध्याकाल में पादप्रक्षालन के समय नल के अंगुलि-सन्धिरन्ध्र में जल न पहुंचने पर कलि ने नल के शरीर में प्रवेश कर लिया ।

नल में प्रविष्ट होकर कलि ने दुरोदर नामक द्यूताधिदेवता को नल के दक्षिण हस्त में प्रवेश करने की आज्ञा दी । तब राजा नल, कूबर नामक अपने भाई को द्वन्द्व द्यूत के लिए निमन्त्रित करके द्यूत क्रीड़ा करने लगे । द्यूत में सब कुछ

भूले हुए नल जब दमयन्ती के भवन में गए तो रानी ने उन्हें बहुत समझाया । द्यूत के दोष समझाती हुई रानी ने कद्रू और विनता की कथा सुनाई । दमयन्ती के समझाने पर राजा नल ने उन्हें फिर कभी द्यूत न खेलने का वचन दिया । परन्तु अगले दिन मध्याह्न होते ही अपना वचन भूलकर राजा नल पुनः द्यूत में प्रवृत्त हो गए । द्यूत को बन्द कराने के लिए देवी दमयन्ती स्वयं उस सभा में गई । वहां राजा नल के धृष्टतापूर्ण व्यवहार को देखकर दमयन्ती ने कूबर को कुलापरोधार्थ उपदेश दिया । नल को द्यूत में विराम सह्य न था उन्हें द्यूत-क्रीडा के लिए अधीर देखकर दमयन्ती अपने प्रासाद में आकर अश्रु बहाने लगी । केशिनी ने उन्हें सान्त्वना दी । तब देवी ने राजकुल के मन्त्रियों को बुलवाकर उनसे सलाह की ।

देवी दमयन्ती ने बाहुक नामक सेनानी के साथ इन्द्रसेन तथा इन्द्रसेना को कुण्डिनपुर भिजवा दिया । राजा की घोर पराजय की आशंका से दमयन्ती ने अपनी सखियों के साथ रत्नमाणिक्यादि कोश सार भी कुण्डिनपुर भेज दिया । इधर कूबर ने राजा नल का समस्त राज्य तथा दमयन्ती को भी द्यूत में जीत लिया ।

राज्यभ्रष्ट महात्मा नल को कूबर ने राज्य से निकाल दिया । कूबर ने कनकावलि आदि किसी भी रानी को नल के साथ जाने की अनुमति नहीं दी परन्तु भैमी को वह नहीं रोक सका । पुरी नारियों से विदा लेकर भैमी नल के साथ चल पड़ी । नल ने किसी सरोवर के तट पर एक गड़े हुए विशाल स्तम्भ को उखाड़ कर फिर स्थापित कर दिया । उस स्तम्भ पर एक प्रशस्ति लिखी थी कि भावी त्रिखण्डभरता-धिपति इस स्तम्भ को उखाड़ कर रख देगा ।

दमयन्ती के साथ बढ़ते हुए राजा नल गंगा के किनारे आए । तीन दिन वहां रहने के पश्चात् उन्हें अपने सामन्तों द्वारा प्रेषित सर्वसामग्री से युक्त कांचन रथ मिला । रथ पर जाते हुए नल को मार्ग में किरातों ने लूट लिया । तदनन्तर स्वर्णपक्षियों को ग्रहण करने के प्रयत्न में नल अपना उत्तरीय को खो बैठे । उत्तरीय लेकर उड़ते हुए पक्षियों ने बताया कि वे द्यूत ही हैं । नल को खिन्न देखकर दमयन्ती ने उन्हें श्वशुर कुल को अलंकृत करने की प्रेरणा दी ।

परन्तु कलि के प्रभाव के कारण नल ने दमयन्ती के परित्याग का निश्चय किया । प्रिय-विरह के शंका मात्र से त्रस्त दमयन्ती को नल ने किसी प्रकार आश्वासन देकर स्वस्थ किया ।

पति को भुजाओं में समेट कर दमयन्ती निःशंक होकर सो गयी। इधर संकल्प-विकल्प में पड़े हुए नल ने अपने रुधिर से दमयन्ती के लिए वाचिक लिखा और वहां से चले गए । नल ने ज्वालाभिभूत वन प्रदेश से राजन् ! नल ! नल ! इस प्रकार का शब्द हुआ । उस प्रदेश में पड़े हुए नाग की नल ने रक्षा की । नाग ने नल का दंशन करके उनका रूप विकृत कर दिया और फिर उसने मनुष्य रूप धारण कर लिया । नल ने अपने पितृव्य वज्रसेन के रूप में उसे पहचान लिया । उस मनुष्य ने नल को बताया " वत्स ! मैं तुम्हारा पितृव्य ही हूं जो कर्मयोग से जन्मान्तर में कर्कोटक नामक नाग हुआ हूं । अवधिज्ञान बल से तुम्हारे इस कष्ट को जानकर मैं यहां उपस्थित हुआ हूं । जब तुम अपना पूर्व रूप चाहो तो इन वस्त्राभरणों को धारण कर लेना । " नल अब भृंगेश्वर के पुत्र ऋतुपर्ण के नगर में गए ।वहां नल ने भूरिवसु सेठ की पुत्री को लेकर भागते हुए हाथी को वश में किया । राजा ऋतुपर्ण ने नल को बुलवाकर उनके विषय में जानने की इच्छा की। नल ने बताया कि वह निषधाधिपति के सूत थे । ऋतुपर्ण ने उन्हें ~~बताया कि वह निषधाधिपति~~ के ५०० ग्राम प्रदान करके मित्र बना लिया ।

प्रभातकाल में दुःस्वप्न देखकर दमयन्ती की निद्रा भंग हुई । नल को व्यर्थ ही इधर -उधर खोजती हुई दमयन्ती मूर्च्छित हो गई । संज्ञा प्राप्त होने पर बहुविध विलाप करती हुई दमयन्ती ने नलनृप द्वारा विलिखित वर्णपंक्ति देखी । दमयन्ती के शाप के कारण कलि विकल था । इधर प्रिय के आदेशानुसार कुण्डिनपुर की ओर जाती हुई दमयन्ती किसी वृक्ष के नीचे सो गई ।

निद्रित दमयन्ती किसी अजगर की पकड़ में आ गई । दमयन्ती का करुण-रोदन सुनकर एक वनचर ने उनकी रक्षा की । बाद में उस किरात को

कामेच्छु जानकर दमयन्ती ने उसे धर्मोपदेश देने का प्रयत्न किया परन्तु उसके दुर्व्यवहार से रुष्ट होकर अन्त में दमयन्ती ने सहायतार्थ हरि का स्मरण करके उसे तत्काल भस्म कर दिया । तदनन्तर विदर्भ मार्ग पर जाती हुई दमयन्ती का एक वणिकसार्थ से संगम हो गया। रात्रि में वनभिल्लों द्वारा वणिक्सार्थ के भिन्न हो जाने पर अकेली ही चलती हुई भैमी को किसी मुनिमण्डल का दर्शन हुआ ।

चारणश्रमणों के पूछने पर दमयन्ती ने उन्हें अपना परिचय दिया । चारणश्रमणों ने दमयन्ती को आश्वासन देते हुए शकुन्तला और कलावती की कथायें सुनायीं ।

दमयन्ती को अनन्त मुनि ने शान्ति की सिंहासनस्थ प्रतिमा की आराधना करने की, तथा किसी के मांगने पर वह प्रतिमा देकर विदर्भ चले जाने की सलाह दी । इस प्रकार दमयन्ती वहां तप करती रही । एक बार वहां एक मुनि का आगमन हुआ जिन्होंने दमयन्ती को केशिनी का परिचयात्मक कथा सुनायी । विद्याधराधीश वृहद्रथ की कन्या केशिनी के कारण खेचरेन्द्र से केशिनी के पति महाबल का युद्ध हुआ । केशिनी के प्रमाद के कारण महाबल को शत्रु ने नागपाश से बांध लिया । अब महाबल को आश्वस्त करने के लिए केशिनी भैमी का दासत्व करते हुए उसके भावी नल-संगम की प्रतीक्षा कर रही है । मुनि को वह प्रतिमा समर्पित करके दमयन्ती कदाचित् दक्षिण चम्पा नामक पुरी के पास पहुंची जिसका उत्तरद्वार बन्द था । द्वार बन्द रहने का कारण प्रसिद्ध था कि उस नगरी में भिक्षुक धनदत्त और इसकी अर्हती आर्या सुभद्रा रहती थी । एक बार सुभद्रा ने पुरी के तीन द्वार खोलकर अपने शील की परीक्षा दी तथा चतुर्थ उत्तर द्वार खोलने के लिए बौद्धों से कहा, जो उस समय तक खुल न सका था । श्रीवर्धनपुर में दमयन्ती की मौसी की दासियों ने दमयन्ती की गोधा से रक्षा की और उन्हें रानी चन्द्रमती के पास ले गईं । देवी चन्द्रमती के आग्रह करने पर वह कुछ दिन के लिए वहीं सुनन्दा के साथ रहने लगी ।

राजा भीम ने पुत्री और जामाता के अन्वेषणार्थ दूत भेजे, जिनमें से सुदेव और शाण्डिल्य ने दमयन्ती को पहचान कर सब को उनका वास्तविक परिचय

दे दिया । मातृस्वसा चन्द्रमती से सम्मानित होकर भैमी विदर्भ पहुंची । महाराज भीम ने पुत्री को आश्वासन दिया और नलान्वेषण के लिए प्रयत्नशील हो गए ।

नल संकेत से सम्बद्ध गाथाएं सुनाने का आदेश देकर दमयन्ती ने दूतों को चारों ओर भेजा । दूतों ने दमयन्ती को आश्वासन देने के लिए उन्हें तिलकमंजरी की कथा सुनायी +-दमयन्ती के दूत अयोध्या में कुब्ज रूपधर नल के पास पहुंचे । नल ने उन्हें अपने घर ले जाकर उनसे दमयन्ती का कुशल पूछा ।

भैमी के दूतों ने दमयन्ती का चित्रगोचर वृत्त प्रदर्शित किया । चित्रदर्शन काल में नल व्याकुल हो उठे । कुंडिनशाण्डिल्य को नल ने सूर्यपाक द्वारा भोजन बनाकर खिलाया । यह सब वृत्तान्त दूतों ने जाकर दमयन्ती को बताया ।

महाराज भीम ने दमयन्ती को समझाया " वत्से । विभ्रम छोड़ो,कहां राजा नल और कहां यह कुब्ज?" तब माता की सलाह से दमयन्ती ने कुरुवक नामक दूत को अयोध्या में ऋतुपर्ण के पास भेजकर अगले दिन प्रात: होने वाले अपने स्वयंवर का समाचार कहलाया ।

दूतमुख से दमयन्ती के स्वयंवर के विषय में जानकर ऋतुपर्ण और कुब्ज सामान्य प्रतीत होने वाले अश्वों के रथ में जोत कर चल पड़े । अत्यधिक वेग से रथ को बढ़ता हुआ देखकर ऋतुपर्ण ने अक्षवृक्ष के फलों की गणना करके बता दी । नल ने उसकी परीक्षा के लिए सब फल गिराए । उसी समय कलि ने नल के शरीर से निकल कर उनसे क्षमा याचना की और फिर वह अक्षवृक्ष में प्रविष्ट हो गया । नल और ऋतुपर्ण ने परस्पर संख्यान विद्या और अश्व विद्या विनिमय कर ली ।

कुण्डिनपुर पहुंचे हुए कुब्ज रूप धर नल की परीक्षा के लिए दमयन्ती ने केशिनी को भेजा । केशिनी के साथ इन्द्रसेन को देखकर नल का चित्त चंचल हो उठा तथा अवसर होने पर उन्होंने सूर्यपाक द्वारा भोजन बनाया ।

महाराज भीम की अनुमति से दमयन्ती की माता ने परीक्षण के लिए नल को बुलवाया ।

दमयन्ती के पुन: पुन: आग्रह करने पर भी पहले तो कुब्ज रूप धर नल ने अपना वास्तविक परिचय नहीं दिया परन्तु बाद में दयिता की मृत्यु की शंका

से उन्होंने वास्तविकता स्पष्ट कर दी । इसी समय देववाणी द्वारा दमयन्ती की पवित्रता सिद्ध हो जाने पर नल ने भी कर्कोटक द्वारा प्रदत्त वस्त्र धारण करके स्वरूप प्राप्त किया ।

नल से गारुड शृंगार प्राप्त करके केशिनी ने अपने पति को मुक्त किया । केशिनी अपने पति और सम्बन्धियों के साथ नल की सेवा करने लगी । पश्चिम उत्तर और फिर पूर्व दिशा की विजय करके नल आर्यावर्त में पहुंचे । पुष्कर ने नल को आया हुआ सुनकर कहा कि द्युत के द्वारा जीता गया राज्य पुन: द्युत के द्वारा ही लेना चाहिए । ऋतुपर्ण ने नल को उत्तम द्युत का उपदेश दिया । इसी समय ऋतुपर्ण ने नल को अश्वविद्याप्राप्ति का स्रोत बताया । ऋतुपर्ण कहने लगे , " एक बार पत्नी मालिनी के साथ में परमेष्ठी को प्रणाम करने गया था । पत्नी द्वारा उपहसित अतएव रुष्ट क्षेत्रपाल के भय से त्रस्त मुझे शंकराचार्य ने यह अश्वहृदय मन्त्र सिखाया। तदनन्तर नल और कूबर में द्युत हुआ जिसमें कूबर पर विजय प्राप्त करके नल सिंहासन पर सुशोभित हुए ।

नल ने पुष्कर को अपना राज्यार्द्ध दे दिया । एक बार कल्याणिक महोत्सव पर परमेष्ठी को प्रणाम करके लौटते हुए नल ने मार्ग में एक ध्यानावस्थित मुनि को देखा । मुनि श्रुत सागर नल और दमयन्ती के पूर्वजन्मों की कथा इस प्रकार सुनाते हैं ," पहले एक मम्मण नामक राजा था जिसकी प्रिया वीरमती थी । एक बार आखेट के लिए गए हुए राजा ने एक सार्थ में जाते हुए मुनि को पकड़ कर कुत्तों से फड़वा दिया । रानी वीरमती के कहने पर फिर राजा ने मुनि का कष्ट दूर करने के लिए प्रयत्न किया । मुनि ने धर्मदेशना के अनन्तर राजा को बताया " महाभाग ! अष्टापद पर्वत के शिखर पर अर्हतों की मूर्ति है । उस प्रतिमा तक पहुंचनना बहुत कठिन है । हम लोग उस पर्वत तक जा रहे थे ।" राजा ने मुनि को सार्थ के साथ कर दिया ।

इधर वीरमती के तप से प्रसन्न होकर शासनदेवता उन्हें अष्टापद गिरि पर ले गई जहां वीरमती ने मूर्तियों के भाल पर नानारत्नमय तिलक लगाए ।

अगले जन्म में ये दोनों धन्य और धुसरी दम्पती हुए । एक बार वर्षाकाल में धन्य ने कायोत्सर्ग करते हुए मुनि के सिर पर छत्र रख दिया । पुन: उन्हें अपने मंदिर तक ले चलने के लिए मार्ग दिखा दिया । परिणत वय होने पर दोनों ने शरीर त्याग दिया । ये ही धन्य और धुसरी अगले जन्म में हैमवत क्षेत्र में उत्पन्न हुए । यहां उनका नाम धीर और डिण्डीर था । अगले जन्म में यही नल और भैमी हुए । मुनि को सार्थ से वियुक्त करने के कारण नल और भैमी का वियोग और फिर मुनि को सार्थ से संयुक्त कराने के कारण नल का प्रिया से पुनर्मिलन हुआ । मुनि के ऊपर छत्र रखने से एकच्छत्र राज्य, क्षीरधि-ललाट पर तिलक-रचना से भैमी के भाल पर तिलक और पांच जन्मों में बस दाम्पत्य रहने के कारण नल और भैमी में अद्भुत प्रीति हुई ।

नौ हजार वर्ष तक नल, भैमी के साथ नित्य नवीन मदनोत्सव मनाते रहे । एक बार एक कुशीलवाचार्य ने नल को राजसभा में शूकर का नृत्य प्रस्तुत किया । नृत्य से विरत होने पर शूकर पंक में प्रविष्ट हो गया । नल शूकर के व्यवहार की निन्दा करने लगे । कुशीलवाचार्य ने अन्तर्हित होकर बताया कि वे नल के पिता हैं जो उन्हें प्रबोध देने के लिए आए थे । प्रबोध होने पर नल संसार में विरक्त हो उठे और उन्होंने प्रबोध तपोवन में जाने का निश्चय किया । भैमी के साथ राजा नल मुनि की सेवा द्वारा अपने को पवित्र करने लगे ।

इन्द्रसेन का राज्याभिषेक करके तपोवन में कठोर तप करते हुए नल को देखकर इन्द्र को भय हुआ । इन्द्र के आदेश से केशिनी और वैदर्भी का रूप धारण करके मेनका और रम्भा वहां आईं । घोर राक्षस वेषधारी चित्ररथ से पीड़ित भैमी रूपिणी रम्भा का विलाप सुनकर नल ने उनकी रक्षा की । छद्म दमयन्ती ने नल का आलिंगन किया । इसी समय नल ने इस माया को समझ कर आत्म संयम कर लिया । दमयन्ती ने भी तप किया और अवसर आने पर दोनों साधर्म को प्राप्त हुए ।

पुण्यश्लोक नल अगले जन्म में उत्तर दिक्पति हुए और भैमी उनकी पत्नी हुई । महाबल केशिनी ऋतुपर्ण और पुष्कर उनके भृत्य हुए । कुबेर ने कुलाक्षत चैत्यगृह में प्रवेश करके भगवान परमेष्ठी की वन्दना की ।

'नलायनम्' महाकाव्य के नायक महाराज नल धीरललित ही नहीं हैं। धीरोदात्त नायक के गुण भी उनमें उपलब्ध होते हैं। षोडश वर्ष की अल्पावस्था में ही उन्होंने राज्य-भार संभाल लिया[1]। मुनियों के अनुरोध पर महाराज नल ने वराह रूपधारी क्रौंचकर्ण निशाचर का १३ योजन पर्यन्त पीछा करके वध किया[2]। महाभारतीय नल-कथा के विकास में यह नलायनकार का मौलिक प्रयास है। नायक के चरित्र की दृष्टि से यह विकास महत्त्वपूर्ण है।

प्राचीन महाकाव्यों के समान 'नलायनम्' में भी उपकथाओं का जमघट देखने को मिलता है। अवान्तर कथाओं की संयोजना में कवि ने कहीं भी प्रमाद नहीं किया है। उदाहरण के लिए दण्डकारण्य की[3] शकुन्तला की[4] और कलावती की[5] कथाएं हैं। सम्भवतः ग्रन्थ का प्रयोजन धर्म-प्रचार का था। जैनधर्म के आचार्य कवि ने इस ग्रन्थ को अधिक से अधिक रोचक बनाने के प्रयत्न में विविध उपकथाओं का समावेश किया है। पुराणों और उनकी कथाओं के विषय में लोगों की विशेष रुचि को ध्यान में रखते हुए ग्रन्थकार ने इसे उपकथाओं से भर कर पुराण का रूप ही नहीं 'कुबेर पुराण' संज्ञा भी दे डाली। वास्तव में उपकथाओं के सहारे ग्रन्थ को अधिक जनग्राह्य बनाने में कवि को सफलता मिली है।

अवसर मिलते ही कवि ने साधारण सी बात के लिए भी नवीन कथाओं को प्रस्तुत किया है। महाभारतीय कथा के अनुसार[6] नल और दमयन्ती के प्रेमदूत हंस के विषय में कोई कथा नहीं मिलती। परन्तु 'नलायनम्' में प्रेमदूत हंस को और उसके इस दौत्य कर्म के कारण को केन्द्र बना कर कथा को एक सुन्दर घुमाव के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस प्रेम के दूत हंस का नाम बालचन्द्र है जो देवी सरस्वती का वाहन है। नवरात्रोत्सव के अवसर पर मेरु गिरि पर आयी हुई देवी शारदा

१- नलायनम् १।१।२८

२- नलायनम् १।३

३- नलायनम् १।४

४- नलायनम् ५।८-१२

५- नलायनम् ५।१३।१८

६- म०भा० नलोपाख्यान

के कार्य में पत्नी के कारण विलम्ब कर देने के अपराध से रुष्ट होकर देवी ने अपने वाहन बालचन्द्र को शाप दे दिया । इसी शाप के कारण उसे यह दौत्यकर्म सम्पन्न करना पड़ा[1] । महाभारतीय कथा को इसी प्रकार जगह-जगह सजा-संवार कर प्रस्तुत करते हुए कवि ने उसकी रोचकता में पर्याप्त वृद्धि की है ।

महाभारतीय कथा में नल द्वारा अवरुद्ध हंस स्वयं ही अपनी मुक्ति के लिए नल से प्रार्थना करता है[2] 'नलायनम्' में हंस की पत्नी सोमकला कहती है' हहा। रक्षक से ही हमें भय हुआ है । क्या कहीं चन्द्र से अंगारवृष्टि होती है ? महाराज । मेरे जीवितेश्वर को छोड़ दीजिए । निषधाधीश । मुझे पति की भिक्षा दीजिए[3] । हंस के विलाप से अधिक हृदयद्रावक हंसी का रुदन होगा । अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना से अधिक प्रभावोत्पादक पति की मुक्ति के लिए पत्नी का प्रार्थना होगी । इधर सोमकला पति की मुक्ति के लिए नल से प्रार्थना कर रही है और उधर आकाशवाणी सुनायी देती है । मूलकथा में हंस स्वयं नल से कहता है कि यदि वे उसे मुक्त कर दें तो वह दमयन्ती के प्रति उनका दौत्य करेगा[4] परन्तु नलायन में यह आकाशवाणी होती है[5] । हंसी का विलाप और आकाशवाणी सुनकर महाराज नल ने हंस को मुक्त कर दिया । अब हंस ने सर्वप्रथम तो नल की स्तुति की तदनन्तर दमयन्ती का वृत्तान्त सुनाया और अन्ततः हंसी को नल के पास ही छोड़कर वह कुण्डिनपुर में दमयन्ती को नल के प्रति अनुरागिणी बनाने के लिए चल पड़ा । नल को विश्वास देने के लिए उसने यहां तक कह दिया ' यदि मेरे समझाने के पश्चात् भी दमयन्ती आपसे भिन्न किसी का वरण करे तो मुझे यह हंसी मत अर्पित कीजिएगा[6] । इस प्रकार कथानक को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिए ग्रन्थकार ने मूलकथा में यह परिवर्तन किया है ।

१-नलायनम १।६

२-म०भा० वनपर्व ५०।२०

३-नलायनम १।८।१२-१४

४- म०भा०वनपर्व ५०।२०-२२

५- नलायनम् १।८।१६-२०

६- न० १।११।१५

नलोपाख्यान में और समस्त संस्कृत साहित्य में नल की पत्नी का नाम दमयन्ती ही उपलब्ध होता है परन्तु प्राकृत साहित्य में दवदन्ती । 'नलायनम्' में दमयन्ती के जन्म के विषय में बताते हुए हंस बालचन्द्र नल को बताता है कि दमयन्ती के स्वजनों ने कन्या का नाम दमयन्ती रक्खा परन्तु पिता ने उसे दवदन्ती नाम दिया[1]। जैन धर्म का अधिकार साहित्य प्राकृत भाषा में उपलब्ध होता है । नलायनम् संस्कृत में निबद्ध जैन ग्रन्थ है अतएव ग्रन्थकार ने नायिका के दोनों ही नाम स्वीकार करके दोनों ओर अपनी रुचि प्रदर्शित की है ।

'नलायनम्' में दमयन्ती के सम्मुख महाराज नल का परिचय देते हुए हंस ने बताया[2] कदाचित् अश्व द्वारा अपहृत नल महावन में पहुंच गए जहां सरोवर के तट पर स्नान करने के अनन्तर उन्होंने कोई करुणध्वनि सुनी । ध्वनि का अनुसरण करने पर नल ने रोदन करते हुए शिष्य तथा एक कन्या से अन्वित सर्पदंष्ट कौशिक मुनि को देखा । मुनि की प्राणरक्षा के लिए पुण्डरीकाचल से मायानिर्मूलिनी औषधि लाने के लिए उद्यत नल को मुनि शिष्य ने अश्वहृदयाभिध मन्त्र प्रदान किया । उस औषधि के प्रभाव से स्वस्थ कौशिक मुनि ने प्रसन्न होकर नल को कुम्भकाञ्ज दिए । नल ने राजपुत्री कनकावली को उनके पिता जालन्धराधिराज चन्द्रबाहु के पास भेज दिया । और कुछ दिन बाद चन्द्रबाहु ने नल और कनकावली का विवाह करवा दिया । इस प्रकार नाटककार ने मूलकथा में एक नवीनता लाने के साथ-साथ नायक नल की अपूर्व वीरता और दायकता का भी अंकन किया है बत्तीस लक्षणों से युक्त हुआ नल मुनि की रक्षा के लिए पुण्डरीकाचल से मायानिर्मूलिनी औषधि लाने के लिए तैयार हो गए परन्तु उस प्रहर की समाप्ति के पूर्व ही उस औषधि द्वारा मुनि की रक्षा की जा सकती थी । इतने शीघ्र नल उसे लाने में असमर्थ थे इस दशा में मुनिशिष्य ने उन्हें अश्वहृदयाभिध मन्त्र का उपदेश किया । इसप्रकार मूलकथा में तो केवल उन्हें अश्वहृदयवेत्ता मान लिया गया है[3] परन्तु नलायनम् में नल के अश्वहृदयाभिध

१- न० १।१०।१७-१८

२- न० १।१३।१२-५५ तथा १।१४।१-५

३- म०भा० वनपर्व ५०।१

होने के रहस्य का भी उद्घाटन किया गया है । इसके लिए कवि को कुछ नूतन कल्पना प्रस्तुत करना पड़ी है ।

नलोपाख्यान की कथा के अनुसार प्रेमदूत हंस कुण्डिनपुर में भैमी के निकट जाकर उसके सम्मुख नल का वर्णन मात्र प्रस्तुत करता है[1] परन्तु 'नलायनम्' में वह दमयन्ती के अनुरोध पर नल का चित्र भी अंकित कर देता है[2] । केवल वर्णन से अनुराग उतना उद्दीप्त नहीं हो सकता, जितना चित्र-दर्शन से । दमयन्ती नल के चरित्र को सुनकर तथा उनके अतुल सौन्दर्य की चित्र-रेखाओं के भीतर झलक प्राप्त करके मदनार्त हो उठी । उसमें सात्त्विक भाव प्रकट हो चले और उसने शीघ्र ही अपना हार हंस के कण्ठ में पहना दिया । मूल कथा के समान वह नल से उसी प्रकार अपने लिए कहने का आग्रह करके ही विरत नहीं हो जाती, अपितु प्रिय के लिए अपने कण्ठ का हार भेजकर उनमें अपनी आसक्ति को व्यक्त करने के लिए प्रमाण भी प्रस्तुत कर देती है । इसी प्रकार देवदौत्य के लिए दमयन्ती के सम्मुख उपस्थित होने से पूर्व नल ने भी भैमी के लिए अपने अनुराग के प्रदर्शनार्थ श्लोकरत्न भेजे[3] ।

नलोपाख्यान में देवदूत नल भैमी के प्रश्नों का उचित उत्तर देने के पश्चात् देव उसे देवताओं का सन्देश सुनाते हैं परन्तु 'नलायनम्' में दमयन्ती के पुन: पुन: पूछने पर भी नल प्रयत्नपूर्वक अपना नाम धाम गुप्त रखकर केवल देवताओं के कार्यसम्पादन के प्रति तत्पर रहते हैं[4] । भांति-भांति के तर्कों द्वारा भी जब नल भैमी को उसके अटल निश्चय से न विचलित कर सके तब अन्तत: करुण विलाप करती हुई प्रिया के सम्मुख वे अनायास ही आत्मप्रकाशन कर बैठे[5] । अगले ही क्षण अपनी भ्रान्ति का अनुभव करके उन्हें ग्लानि होने लगी[6] । इसी अवसर पर प्रेमदूत बालचन्द्र हंस ने उपस्थित होकर

१- म०भा० वनपर्व ५०।२८-३०

२- नलायनम् १।१४।३६-३७

३- नलायनम् २।८।३

४- नलायनम् २।१०-११

५- न० २।१५।२४

६- न० २।१५।२५-२८

नल और दमयन्ती दोनों को ही आश्वासन दिया तथा नल से निज आवास में लौट जाने के लिए कहा[1]। इस प्रकार मूल कथा के इस संक्षिप्त प्रसंग को नलायनकार ने विस्तारपूर्वक व्याख्यात किया है। इस प्रकार से कथा को विकसित करके कवि ने एक ओर नायक नल के चरित्र की दृढ़ता, अविचलिता प्रदर्शित की है तो दूसरी ओर उनके चरित्र को भावनाओं तथा सुकुमार भावों से भी अलंकृत किया है। नल को आत्मग्लानि की अवस्था से उठाने के लिए तारचन्द्र को पुन: उपस्थित करके कवि ने नायक के चरित्र की दृष्टि से उचित ही किया।

मूलकथा में नल में कलि के प्रवेश प्राप्त कर लेने के अनन्तर कलि के प्रयत्न से नल का भाई पुष्कर नल से द्यूत क्रीड़ा के लिए पुन: पुन: आग्रह करता है[2] परन्तु 'नलायनम्' में कलि द्वारा अभिभूत नल के दक्षिण हस्त में कलि की आज्ञा से दुरोदर नामक द्यूताधिदैवत प्रविष्ट हो जाता है[3]। इस दशा में नल ने अपने अनुज कूबर को द्यूत के लिए निमन्त्रित किया[4]। कलि की अतिशयप्रभावशालिता को प्रदर्शित करने के लिए ही सम्भवत: मूल कथा में यह परिवर्तन किया गया है।

'नलायनम्' में यत्र-तत्र पात्रों के नामों के विषय में मूल कथा से भेद परिलक्षित होता है। 'नलोपाख्यान' में नल के भाई का नाम पुष्कर मिलता है[5] परन्तु 'नलायनम्' में उसी के लिए कूबर[6] और पुष्कर ये दो नाम प्राप्त होते हैं कूबर नाम का प्रयोग अधिक हुआ है और पुष्कर का कम[7]। जैन कवियों द्वारा उपनिबद्ध नल-दमयन्ती साहित्य में नल के भाई का 'कूबर' अभिधान ही उपलब्ध होता है[8] तथा संस्कृत साहित्य में पुष्कर। सम्भवत: दोनों ही परम्पराओं में सामञ्जस्य रखने के लिए कवि ने दोनों अभिधानों का ग्रहण कर लिया है। इसके अतिरिक्त महाभारतीय परम्परा[9] के प्रतिकूल 'नलायनम्' में नल के सेनानी बाहुक के साथ

१- न० २।१६।१२-१४

२- म०भा० वनपर्व ५६।३-७

३- न० ४।५।५-६

४- न० ४।५।६

५- म०भा० वनपर्व ७६।२५

६- न० ४।५।६तथा४।७।५२,५४ इत्यादि

७- न० ८।२।३,२१

८- नलविलास

९- म०भा०वनपर्व५७।२२-२३

दमयन्ती अपने बालकों को कुण्डिनपुर भेजती है[१] और इस अवस्था में कर्कोटक के विष के कारण कुब्ज नल की दशा बाहुक न होकर 'कुब्ज' ही उपलब्ध होता है[२]।

महाभारतीय कथा के अनुसार[३] वन जाते हुए नैषध के साथ दमयन्ती के भी वन में जाने का उल्लेख मिलता है। 'नलायनम्' में भी कथा कुछ इसी प्रकार है। वन में नल के साथ केवल दमयन्ती के ही जाने की कथा यहां भी मिलती है[४]। मूल कथानक में नल की एक ही पत्नी दमयन्ती का उल्लेख मिलता है[५] परन्तु 'नलायनम्' महाकाव्य में नल की दमयन्ती से इतर कनकावती इत्यादि अनेक पत्नियों का उल्लेख मिलता है[६]। परन्तु द्यूत में सर्वस्व हार कर वन जाते हुए नैषध के साथ जाने के लिए नल की किसी भी पत्नी को कूबर ने आज्ञा नहीं दी अपितु उन्हें उनके पिता के घर पहुंचवा दिया[७]। केवल नलप्रिया पतिप्रिया देवी एक दमयन्ती को कूबर न अवरुद्ध कर सका[८]। दमयन्ती ने पति के साथ वन के लिए प्रस्थान किया। ग्रन्थ के प्रारम्भ से ही उपकथाओं के प्रसंग में नल को कनकावती आदि स्त्रियां स्वीकार करने के अनन्तर वन में नल के साथ दमयन्ती से इतर स्त्रियों को प्रदर्शित करना ग्रन्थकार को अभीष्ट नहीं था। सम्भवत: इसी कारण से कवि ने कूबर की आज्ञा के सहारे यह प्रयोजन बड़ी सफलता के साथ सिद्ध कर लिया है।

महाभारतीय कथा के अनुसार पुष्कर ने वन जाते हुए नल की सहायता न करने की आज्ञा दी और फिर किसी भी सामन्त ने नल की सहायता करने का प्रयत्न नहीं किया था[९] परन्तु 'नलायनम्' महाकाव्य में कथावस्तु में इस स्थान पर ईषत् परिवर्तन परिलक्षित होता है। राज्यभ्रष्ट नल ने वन में दमयन्ती के साथ जब तीन दिन व्यतीत कर लिए तब उन्हें शस्त्र वस्त्र धन, रथ और स्वाद से समन्वित

१- न० ४।७

२- न० ७।२।४८

३- म० भा० वनपर्व ५८।८

४- न० ४।८।४६

५- म०भा० नलोपाख्यान

६- न० ४।८।६

७- न० ४।८।६

८- न० ४।८।१२

९- म०भा० वनपर्व ५८

तुरगोऽह्वय कांचन रथ प्राप्त हुआ । यह रथ नल के सामन्तों द्वारा भेजा गया था[1] । इस प्रकार भोजन करके प्रिया के साथ रथारूढ़ होकर नल चल पड़े । एक पर्वत प्रदेश में पहुंचने पर नल पर कुछ किरातों ने आक्रमण किया । कलि-कोप के कारण संमोहनास्त्र आदि शस्त्र तत्क्षण ही नल को छोड़कर चले गए । इस दशा में नल वह रथ वहीं छोड़कर भैमी के साथ पैदल ही चल पड़े[2] । मूल कथा में प्रस्तुत परिवर्तन द्वारा जहां एक ओर नल में सामन्तों का दृढ़ानुराग झलक जाता है वहीं दूसरी ओर कलि का भीषण प्रभाव और नल-दमयन्ती की विपत्ति का और भी अधिक घोर चित्रण हो जाता है । वैभव के पश्चात् आने वाली विपत्ति अधिक कठिन होती है साथ ही निर्धन को धन प्राप्त हो फिर वह खो जाए यह और भी अधिक कष्टदायी है । राज्यभ्रष्ट नल की ऐसी ही स्थिति का प्रदर्शन करके कवि ने कथावस्तु को और भी अधिक मर्मस्पर्शी बनाने का प्रयत्न किया है ।

मूल कथा के अनुसार कलि द्वारा अभिभूत नल दमयन्ती को वन में छोड़कर चले जाते हैं[3] । 'नलायनम्' में भी कथावस्तु इसी प्रकार से उपलब्ध होती है परन्तु उस दुरवस्था में भी नल को प्रिया के जीवन के विषय में आशंका हो उठती है और वे यों ही चुपचाप नहीं चले गए । अपनी जंघा छेदकर रुधिर से उन्होंने अपनी प्रिया दमयन्ती के लिए वाचिक लिखा । इसमें उन्होंने दमयन्ती से क्षमा-याचना की और निषधा तथा कुण्डिनपुर का मार्ग निर्दिष्ट कर दिया[4] । इस प्रकार ग्रन्थकार ने दमयन्ती में नल के दृढ़ानुराग के साथ-साथ दमयन्ती के चरित्र को भी उज्ज्वलतर बनाया है । वन में पतिपरित्यक्ता एकाकिनी दमयन्ती जो प्राणधारण किए रही वह उसके चरित्र का दूषण न होकर भूषण हो गया । पतिव्रता स्त्री के लिए

१- न० ४।६।१६-१७

२- न० ४।६।१८-२७

३- म०भा० वनपर्व ५६

४- न० ४।११।३०-३४

पति के आदेश के पालन से अधिक किसी भी बात का महत्त्व नहीं है । इस दशा में पति के आदेश के अनुसार [illegible] जाकर मेना ने पातिव्रत्य धर्म का ही निर्वाह किया ।

नल दमयन्ती की महाभारतीय कथा के अनुसार वन में दमयन्ती का परित्याग करके जाते हुए नल को कर्कोटक नाग ने दंशन द्वारा विकृत रूप वाला बना दिया था । कर्कोटक नाग और नल में किसी सम्बन्ध-विशेष का निर्देश यहाँ नहीं मिलता है[1] । परन्तु 'नलायनम्' महाकाव्य के अनुसार दोनों पात्र परस्पर सम्बद्ध हैं । कर्कोटक नाग वास्तव में नल के पितृव्य [illegible] हैं जो कर्मदोष के कारण लोकान्तर में नागरूप से उत्पन्न हुए हैं[2] । इस प्रकार कर्कोटक नाग ने विपद्ग्रस्त नल का रूप विकृत करके अकारण ही उपकार नहीं किया अपितु वे नल के पितृव्य थे जिन्होंने अवधिज्ञान बल द्वारा नल के समस्त कष्ट का ज्ञान प्राप्त करके अवसर पर सहायता की[3] । ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारतीय कथा में इस परिवर्तन द्वारा ग्रन्थकार ने पुनर्जन्म के सिद्धान्त को भी प्रतिपादित करने की चेष्टा की है ।

नलोपाख्यान के अनुसार कर्कोटक ने नल को ऋतुपर्ण के राज्य में जाने की सलाह दी थी । बाहुक नल ने ऋतुपर्ण के राज्य में जाकर सूत कार्य संभाल लिया[4] । 'नलायनम्' में यहाँ पर कथावस्तु कुछ भिन्न है । कर्कोटक ने नल को आगामी कर्तव्य का कुछ भी उपदेश नहीं दिया । कर्कोटक के अन्तर्धान होने के अनन्तर नल स्वेच्छा से अपने बालमित्र भृंगेश्वर के पुत्र ऋतुपर्ण के राज्य में गए[5] । उस समय[6] ऋतुपर्ण के नगर में भूरिवसु की पुत्री को लेकर भागते हुए मत्त हाथी के कारण हाहाकार मचा हुआ था । कुब्ज-नल ने देखते ही-देखते उस मत्त वारण को वश में कर लिया[7] । ऋतुपर्ण ने प्रसन्न होकर नल को प्रिय मित्र समझा और उन्हें ५०० ग्राम प्रदान किए[8] ।

१- म०भा० नलोपाख्यान
२- न० ४।१२।५६
३- न० ४।१२।६०
४- म०भा० वनपर्व ६३।२०-२२
५ - न० ४।१३।१ ७२-७४
६- न०४।१३।८
७- न० ४।१३।१६
८- न० ४।१३।३१

मूलकथा में इस नवीन प्रसंग को जोड़कर कवि ने नायक नल को केवल अश्वहृदयविद् ही नहीं हस्तिहृदयविद् के रूप में भी उपन्यस्त किया है । साथ ही साथ इस प्रकार कुब्जरूप में ऋतुपर्ण से प्रथम भेंट में ही जो नल ने उन्हें अपनी ओर इतना आकर्षित कर लिया, उसको भी एक पुष्ट आधार मिल गया ।

'नलोपाख्यान' में किरात को भस्म करने के अनन्तर नलान्वेषण के लिए इधर-उधर घूमती हुई दमयन्ती की कुछ तपस्वियों से भेंट का उल्लेख है । दमयन्ती को वन में एक आश्रम दृष्टिगोचर हुआ । आश्रम में तपस्वियों ने दमयन्ती से बातों ही बातों में नल के वह असीम ऐश्वर्य और पत्नी से उनके भावी संगम की घोषणा की ऐसा उल्लेख मिलता है । आश्रम के अदृश्य हो जाने पर दमयन्ती को एक वणिक्सार्थ का साथ हो जाता है । मत्त वारणों द्वारा वणिक्सार्थ का नाश होता है और तब दमयन्ती चेदि नगर में पहुंचती है[1] । 'नलायनम्' में कुछ पौर्वापर्य के साथ ही यही कथा प्रस्तुत की गयी है । काननकिरात को भस्म करके घूमती हुई दमयन्ती को वणिक्सार्थ दृष्टिगोचर होता है[2] । तदनन्तर पर्वत-मार्ग से जाती हुई दमयन्ती का एक मुनि-मण्डल से साक्षात्कार हुआ । कथा में इस पौर्वापर्य का कोई विशेष प्रयोजन नहीं प्रतीत होता । चारण श्रमणों ने दमयन्ती को आश्वासन देने के लिए 'शकुन्तलाख्यान'[3] और फिर कलावती की कथा[4] सुनायी । इस प्रकार दमयन्ती के दुःखी चित्त को कुछ शान्त करके मुनियों ने दमयन्ती को शान्ति का जिनाधीश प्रतिमा की आराधना करने का उपदेश दिया । यह परिवर्तन एकान्ततः धार्मिक दृष्टि से ही किया गया प्रतीत होता है । मूल कथा में अधिक परिवर्तन न करते हुए भी कवि ने अपना प्रयोजन सिद्ध कर लिया है । उपाख्यानों को जोड़कर भी धर्म-प्रचार की दृष्टि से कवि ने ग्रन्थ को लोकप्रिय बनाने की चेष्टा की है ।

१- म०भा० वनपर्व ६०-६२

२- न० ५।६।६

३- न० ५।८।१६ से ५।१२।४७

४-न० ५।१३।६ से ५।१८।५६

मुनियों ने दमयन्ती को बताया कि वे चारण श्रमण हैं जो कैलाशपर्वत से इस तीर्थ का वन्दना करने के लिए आए हुए हैं[1]। पृथ्वी पर चक्री पंचम है और परमेष्ठी सोलहवें। इसके पश्चात् शान्ति नाम वाला स्वामी उत्पन्न होगा[2]। इस प्रकार जैन धर्म की छाप ग्रन्थकार ने यत्र-तत्र डाली है। चारण श्रमणों के आदेशानुसार शान्ति की शिलामयी प्रतिमा की दमयन्ती वहीं रहकर आराधना करने लगी[3]। एक बार वहां एक चारण श्रमण का आगमन हुआ जिसने दमयन्ती के भावी नल संगम की घोषणा करके उसकी सखी विद्याधरी केशिनी का पूर्ववृत्तान्त सुनाया[4]। इस प्रकार एक और कथा जोड़ने में ग्रन्थकार का धर्मप्रचारार्थ ग्रन्थ को अधिक रोचक बनाना ही प्रयोजन रूप से स्फुट है।

'नलायनम्' की कथावस्तु में एक अन्य नवीन घटना की संयोजना की गई है। विदर्भ मार्ग पर जाती हुई दमयन्ती 'दक्षिण चम्पा' नामक पुरी के समीप पहुंची[5]। इस नगर का उत्तर किवार बन्द था। इसके कारण रूप में सुभद्रा नामक अर्हती की शील कथा प्रस्तुत की गयी है[6]। वास्तव में बौद्ध धर्म की अपेक्षा जैन धर्म की उत्कृष्टता प्रदर्शित करने के लिए ही ग्रन्थकार ने इस घटना और कथा की कल्पना की होगी, ऐसा प्रतीत होता है।

महाभारतीय कथा के अनुसार वणिक्सार्थ के साथ दमयन्ती चेदि नगर में पहुंची जहां का राजा सुबाहु था और राजमाता दमयन्ती की मातृष्वसा थी। नगर में बालकों से परिवृत दमयन्ती को पगली समझकर राजमाता ने अनुकम्पा के कारण दमयन्ती को आश्रय दिया, जहां वह राजकुमारी सुनन्दा के साथ रहने लगी[7]। लगभग यही कथा कुछ परिवर्तन के साथ नलायनम् में भी उपलब्ध होती है। यहां दमयन्ती चेदिनगर में न पहुंचकर श्रीवर्द्धनपुर में पहुंचती है, जहां की रानी चन्द्रमती

१- न० ५।७।५

२- न० ५।७।६

३- न० ५।२०।१

४- न० ५।२०।१२-४६

५- न० ५।२१।४

६- न० ५।२१।६-५२

७- म०भा० वनपर्व ६२

दमयन्ती की मातृष्वसा है[१]। चेदिपुर के द्वार पर स्थित वापी के तट पर क्षण भर विश्राम करने के लिए बैठी दमयन्ती के चरणांगुष्ठ को गोधा ने ग्रहण कर लिया। क्रीडा के लिए वहां आयी हुई, रानी की बालिकाओं ने दमयन्ती की रक्षा की। दासी से दमयन्ती के विषय में सुनकर रानी ने दमयन्ती को अपने पास बुलवाया और भैमी को आग्रहपूर्वक अपने पास रख लिया, इस प्रकार दमयन्ती वहां राजकुमारी सुनन्दा के साथ रहने लगी[२]। ग्रन्थकार ने चेदिपुर के स्थान पर गोवर्धनपुर नाम क्यों प्रयोग किया है, इसका कोई विशेष कारण परिलक्षित नहीं होता। दमयन्ती की मातृष्वसा से भेंट के विषय में जो कवि ने नूतन कल्पना की है वह सम्भवतः कथावस्तु में स्वाभाविकता आपादन की दृष्टि से ही की गयी प्रतीत होती है यद्यपि इसमें भी कोई विशेष चमत्कार नहीं समझ पड़ता है।

'नलोपाख्यान' की अपेक्षा 'नलायनम्' में तिलकमंजरी की कथा का ग्रहण भी एक नवीनता है। नलान्वेषणार्थ जाते हुए दूतों ने दमयन्ती को आश्वासन देने के लिए तिलकमंजरी की कथा सुनायी[३]। जैन-धर्म प्रचार की दृष्टि से ही इस कथा का सन्निवेश किया गया प्रतीत होता है[४]।

मूलकथा में नलान्वेषणार्थ भीम द्वारा प्रहित दूत दमयन्ती की बतायी हुई गाथाएं सुनाते थे। इस प्रकार पर्णाद नामक एक ब्राह्मण अयोध्या में पहुंचा। बाहुक से उसका जो कुछ भी वार्तालाप हुआ उसने दमयन्ती को बताया। तब दमयन्ती ने माता से सलाह करके सुदेव नामक ब्राह्मण को ऋतुपर्ण के पास भेजकर अपने द्वितीय स्वयंवर का समाचार कहलाया[५]। 'नलायनम्' महाकाव्य में यही कथा थोड़े-बहुत परिवर्तित रूप में प्रस्तुत की गयी है। भीम द्वारा प्रहित दूतों में सुदेव-शाण्डिल्य ने अयोध्या पहुंचकर कुब्ज नृप नल आदि के सम्मुख नल और भैमी का चित्रलिखित चरित्र प्रदर्शित किया[६]। वास्तव में कथा मात्र सुनाने से उतना प्रभाव नहीं डाला जा

१- न० ५।२१।४४

२- न० ५।२१।५२-७७

३- न० ६।३।१३-७६

४- न० ६।३।२६-३२,३४,७८

५- म०भा० वनपर्व ६७-६८

६- न० ६।६।१-१८

[illegible] जितना उसे सचित्र बनाकर प्रदर्शित करने से । दमयन्ती का वृत्त सुनने मात्र से नल के मनोविकार सम्भवतः स्फुट न भी हों, परन्तु साथ-साथ चित्रदर्शन करके तो मनोविकारों का उपगूहन असम्भव ही हो गया । इस प्रकार से चित्रदर्शन के प्रसंग को उठा कर कवि ने कथावस्तु को अधिक प्रभावशाली बनाने का प्रयत्न किया है ।

महाभारतीय कथा में केवल इतना ही उल्लेख मिलता है कि नल ने अश्वविद्या का रहस्य ऋतुपर्ण से सीखा था[1] परन्तु 'नलायनम्' में उसके साथ-साथ ऋतुपर्ण को यह अश्वविद्या कहां से उपलब्ध हुई, इस विषय पर एक कथा भी बताई गई है[2] । इस नवीन कथा की कल्पना के मूल में भी ग्रन्थकार की धर्म प्रचार भावना ही प्रतीत होती है[3] ।

पुष्कर पर विजय प्राप्त करके पुत्र-पुत्री और रानी दमयन्ती के साथ सुखपूर्वक नल राज्य करने लगे, यहां तक की कथा 'नलोपाख्यान' में उपलब्ध होती है[4] । 'नलायनम्' में इसके आगे भी कथावस्तु का विस्तार किया गया है । मुनि श्रुतसागर ने नल और दमयन्ती को उनके तीन पूर्वजन्मों की कथा सुनाई[5] । पूर्वजन्मों के किन कर्मों का उन्हें इस जन्म में किस प्रकार फल भोगना पड़ा है इसका भी विवरण श्रुतसागर ने प्रस्तुत किया[6] । यही नहीं, नल को प्रबोध देने के लिए उनके पिता वीरसेन का प्रयत्न[7], नल का घोर तप और उसे भंग करने के लिए व इन्द्र का प्रयत्न[7][8] और अन्ततः नल और दमयन्ती का उत्तर दिक्पति कुबेर दम्पति के रूप में अवतार[9] तक इस कथा का विस्तार 'नलायनम्' में किया गया है । नलचरित का आदि से अन्त तक वर्णन करने के साथ-साथ जैन धर्म के सिद्धान्तों के प्रतिपादन करने के रूप में कवि का उद्देश्य स्फुट हो है । किस प्रकार कर्मों के अनुसार मनुष्य को जन्म मिलता है और वह पूर्व कर्मों का फल भोगता है आदि सिद्धान्तों की कथाओं

१- म०भा० वनपर्व ७०।२६

२- न० ८।२।२७-५०

३- न० ८।२।२७,३२-३५ इत्यादि

४- म०भा० वनपर्व ७६-७७

५- न० ६।१-४

६- न० ६।४।२६-३०

७- न० १०।१।५-२०

८- न० १०।३।८-३३

९- न० १०।४

के द्वारा अलंकृत करके प्रस्तुत करने के लिए इस प्रकार से ग्रन्थकार को पर्याप्त अवकाश मिल गया है । साथ ही `कुबेरपुराण` यह नाम भी नल के कुबेरावतार के साथ सार्थक हो गया है । विविध उपकथाओं के कारण जो इस महाकाव्य को `पुराण` संज्ञा दी गयी वह समीचीन ही है ।

`नलायनम्` महाकाव्य की अपेक्षा पुराण ही अधिक लगता है । इसमें नल के पांच जन्मों की कथा मिलती है[1] । नल और दमयन्ती के चार अन्य जन्मों की कथा बहुत संक्षेप में आयी हुई है और नल-दमयन्ती के रूप में उनकी कथा विस्तार से मिलती है । इस स्थिति में इस ग्रन्थ के अन्तर्गत अर्थप्रकृतियों, अवस्थाओं एवं सन्धियों का स्वरूप बताना सम्भव नहीं प्रतीत होता है ।

सहृदयानन्दम्

`सहृदयानन्दम्` की कथावस्तु मूल कथा से बहुत कुछ भिन्न है । मूलकथा से `सहृदयानन्दम्` की कथा की तुलना से पूर्व यहां संक्षेप में प्रस्तुत महाकाव्य की कथावस्तु का ज्ञान लेना अपेक्षित है । `सहृदयानन्दम्` की कथा इस प्रकार है[2] --

निषध देश का राजा वीरसेन सहजकान्ति सम्पन्न तथा अनन्यसाधारण वीरसेना से युक्त था । क्षीरसागर से कल्पवृक्ष की भांति उस राजा के पुत्रजन्म के समय आंगन की सीमा पर पुष्पवृष्टि हुई । सागर रूपी मेखला वाली पृथ्वी का यह भोक्ता होगा ऐसा शब्द आकाश में सुनायी दिया । अन्तःपुरस्थित होकर भी वह राजकुमार प्रजा का मनोरंजन उसी प्रकार से करने लगा जैसे पर्वतों के पीछे से पूर्वदिशामुखों को प्रकाशित करता है । जात कर्म आदि संस्कार सम्पन्न हो जाने के पश्चात् यह अर्थ और काम का अर्जन करते हुए कभी पाप में लीन न होने पर यह

१-नलायनम्

२- सहृदयानन्दम्

विचार करके उसका नाम नल रक्खा गया । शनै: शनै: मानो राजा की आनन्द लक्ष्मी से स्पर्धा के कारण नल का शरीरयष्टि दिनोंदिन बढ़ने लगी । सभी विद्याओं में नल ने इस प्रकार परिश्रम किया कि संशयित अर्थ में गुरुओं का समूह नल को ही निश्चयात्मक मानता था । एक बार आखेट के लिए नल, अपने बालमित्रों और मंत्रि-पुत्रों के साथ अश्व पर सवार होकर पर्वत के समीप हरिणों से युक्त स्थल में पहुंचे । तदनन्तर कुछ कृष्णसारों का पीछा करते हुए नल एक वन में पहुंचे जहां पशुओं का आखेट करके भ्रमण करते हुए उन्हें एक सरोवर दृष्टिगोचर हुआ । उस सरोवर तट पर सुख से सोते हुए व हंसों के मध्य क्रीडा करते हुए हिरण्मय हंस को अविचल रूप से ग्रहण करने के लिए नल ने जैसे ही तूणीर से बाण निकाला उन्हें वन देवियों का शब्द श्रवणगोचर हुआ । बेदर्द वनदेवियों की आज्ञानुसार नल के बाण हटा लेने पर वह हंस नल के समीप बैठकर बोला " राजन् ! भगवान विष्णु आपका कल्याण करें । मेरे पिता ब्रह्मा के विमान के धुर्याधिपति हैं । तुमसे मैत्री करने के लिए मेरी इच्छा मन को तरल बना रही है, यदि तुम्हें भी कौतुक हो तो हमारी मैत्री कुसुम बाण और बसन्त की जैसी हो जाए । नल ने हंस के उस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया । वार्तालाप करते हुए वे वहां मुहूर्त भर ठहरे और फिर हंस राजा से अनुमति लेकर आकाश में उड़ गया । राजधानी लौटे हुए नल पर राज्यभार सौंप कर वीरसेन ने नल के पुन: पुन: रोकने पर भी तपस्वियों के चिह्नों को धारण किया । तपोवन में जाकर वीरसेन ने तपस्या से सिद्धि और नल ने राज्य लक्ष्मी प्राप्त की ।

ब्राह्मणों ने नल का विधिवत् अभिषेक किया । नल का यश तीनों लोकों में चारों ओर घूमता रहता था परन्तु उनकी मन्त्रणा कभी पास रहने वालों के भी कानों तक नहीं पहुंचती थी । मित्र मदन ! अपने बाण रहने दो ,मैंने ही आज समस्त संसार को कोकिल कूजित के बहाने से जीत लिया है ऐसा बसन्त कहने लगा । एक बार अपनी मानसिक व्यथा को दूर करने के लिए नल गृहदीर्घिका पर गए थे, जहां वह स्वर्णमय विहंग भी आ पहुंचा । आकाशगंगा के जल से शीतल उस पक्षी को गोद में बिठा कर राजा ने प्रेमपूर्वक अपने हाथ से उसे बिसांकुर खिलाया । पक्षी ने नल से कहा -" आपके मन को अपने में आसक्त जानकर भी जो मैं इतने समय तक आपको छोड़कर घूमता रहा उसका कारण सुनिए-- आपकी रूपसम्पत्ति के अनुकूल स्त्री को इन्द्रपुरी में न प्राप्त कर सकने के कारण मेरे मन में चिन्ता हो

गई । एक बार इन्द्र के पूछने पर कामदेव के मुख से मैंने विदर्भपुरी के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती के सौन्दर्य के विषय में सुना । कामदेव कह रहा था कि वह कृशोदरी अभी अभी ही मेरे मित्र यौवन द्वारा अलंकृत की गई है । मेरे बाणों को सहन कर लेने वाले तथा अन्त:करण को वश में रखने वाले लोग भी इसके विलास-विभ्रम से धैर्य हीन हो गए हैं । दमयन्ती का वर्णन सुनकर देवगण अधीर हो उठे, सुरस्त्रियां लज्जित हो गयीं और तुम्हारे कार्य के विचार से हम लोग स्वर्ग से उतर कर विदर्भा की ओर गए । विदर्भा नगरी में पहुंचकर मुझे विलास सरोवर के मध्य तक स्फटिक मय आगार दृष्टिगोचर हुआ जहां प्रिय सखियों द्वारा लाए गए मणिभूषणों को विक्षेप करती हुई भैमी आलेख्ययुक्त फलक देख रही थी । दमयन्ती के भाव को समझ कर मैं वहीं पास में विलास हंसों के साथ क्रीडा करता रहा । मनुष्यवाणी वाले मेरे प्रति वह कुछ कौतूहलवती हुई । उसी अवसर पर किसी सखी ने उससे कहा, 'ग्रीष्म ऋतु में सूर्य किरणों द्वारा क्षीण हो गयी कुल्या की भांति तुम और अधिक कृश क्यों हो रही हो ?' इस प्रकार सखी के बहुत कुछ कहने पर भी दमयन्ती ने उत्तर नहीं दिया परन्तु दूसरी सखी ने उसका भाव समझ कर सखी से कहा 'पुत्री के अनुकूल वर की खोज करते हुए पिता ने सभी राजाओं के चित्र बनवाए थे । तीनों लोकों में अभिनन्दनीय किसी युवा का चित्र देखकर दमयन्ती उसपर आसक्त हो गई है, इसी से इसकी यह दशा है । शिशिरोपचार के होते हुए भी उसके दुर्वार ताप को देखकर पक्षपुटांचल से उसपर व्यंजन करते हुए मैंने कहा 'स्पृहणीय जन्म वाला एक ही तरुण है जो बड़ा यशस्वी है । वही तुम्हारे प्रेम के पल्लवन में निपुण है । दाक्षिण्य के कारण प्रिया को देववृक्ष की आपिंजर मंजरियों से अलंकृत करने के लिए आधी दूर हाथ फैला कर इन्द्र तुम्हारी चिन्ता के कारण मन्धाता को प्राप्त होते हैं । यदि तुम शंकर की वामांगी पार्वती से स्पर्द्धा करती हो तो निश्शंक कहो मैं तुम्हें शीघ्र ही उनकी दक्षिणांगी बना देता हूं । मुझे प्रियवादी क्रीडाशुक के समान मत समझो, मैं ब्रह्मा का वैमानिक हूं, सप्तलोक में मेरे लिए कुछ भी दुष्कर नहीं है ।' मुझपर विश्वास करके उसने तुम्हारे चित्र से युक्त फलक को हृदय पर रख लिया तब मैंने भैमी से कहा 'तुम चन्द्रिका हो और यह चन्द्र । तुम दोनों का सम्बन्ध अभिनन्दनीय है ।' मेरे आकाश में उड़ने से पूर्व भैमी ने मुझे

यह हार दिया , जिसे अब तुम रक्खो । नल ने उस हार का पुन: पुन: परिरम्भण किया । तब हंस से बोले ," जब से तुम्हारे वचनामृत का पान करके मेरे श्रवण शीतल हुए हैं, तभी से यह कामाग्नि मुझे जला रहा है । बताओ ! मैंने क्या कभी अपने कुलगुरु चन्द्र का अपकार किया है जो इस प्रकार निष्कृप हो कर वह विषाक्त जीवापहारी किरणें मेरे प्रति बिखेर रहा है । राजा के इस प्रकार कहने पर निद्रा ने दयावश क्षण के लिए उन्हें राजकुमारी का दर्शन करा दिया । जागने पर प्रिया को समीप न प्राप्त करके वे प्रिया को सम्बोधित करके बोले " मेरी इन व्यर्थ ही में बढ़ी हुई भुजाओं ने अपकार किया जो तुम्हें वलयित करके चिरकाल के लिए अपने मध्य नहीं रोक लिया । निश्चय ही तुम यहीं कहीं चन्द्रिका में छिपी हुई हो ।" इस प्रकार राजा के प्रलाप को सुनकर हंस बोला ," हे निषधेन्द्र ! धैर्यपूर्वक रात्रि के अन्त तक और प्रतीक्षा करो, प्रात: मैं तुम्हारे अभीष्ट की सिद्धि के लिए प्रयास करूंगा ।

क्रमश: रात्रि क्षीण हो गई । उदीयमान सूर्य की किरणों से अंधकार का निराकरण हो जाने पर भी भैमी-विरहाग्नि से उत्पन्न नल का अन्धकार बढ़ गया । कुछ ही दिन पश्चात् भैमी से युक्त नल के दर्शन का आश्वासन देकर हंस विदर्भ की ओर उड़ गया । इसी बीच पुत्री के स्वयंवरार्थ भीम द्वारा निमन्त्रित राजा नल विदर्भनगरी की ओर चल पड़े । राजा नल ने विदर्भपुरी के निकट ही सेना शिविर बनाया । नारद से भैमी स्वयंवर का समाचार प्राप्त करके इन्द्रादिलोकपाल भी विदर्भपुरी की ओर चल पड़े । मार्ग में अतीव रूपवान नल को देखकर भैमी के प्रति मन्द आशा वाले वे लोकपाल परस्पर मन्त्रणा करके नल से बोले " निर्मल किरणों से चन्द्र जग का मालिन्य उस प्रकार से नहीं दूर कर पाता है जैसे तुम्हारा यश:वितान करता है । तुम भैमी के सम्मुख हमारी उस प्रकार से प्रशंसा करो कि वह हम लोगों में से किसी एक को स्वीकार कर ले ।" देवों के कार्य के लिए नल किसी भी प्रकार भैमी को निश्चय से न डिगा सके । देवों ने विदर्भजा की निश्चितवृत्ति और नल की विशुद्ध वृत्ति को समझ कर दोनों का वरदान देकर अभिनन्दन किया । स्वयंवर में दमयन्ती ने नल का वरण किया । महाराज भीम,पुत्री के विवाहमंगल की सम्भार रचना के लिए उत्सुक हो उठे । प्रसाधिका ने दमयन्ती को यथाविधि अलंकृत किया ।

विवाह के अनुकूल वेषवाली, अलंकृता और कौतुकसूत्र धारण किए हुए उस वधू को अन्तःपुर की सुन्दरियों ने मंगल देवता [illegible] । भीम के बुलवाने पर उनके गृह की ओर जाते हुए नल के दर्शन के लिए मार्गों में नागरिकों की भीड़ हो गई । वातायन के सामने वाले मार्ग से नल के जाने पर किसी मुग्धांगना ने कान के सदृश दीर्घ अपांगों को वक्र चलने की शिक्षा दी । उधर नल ने महाराज भीम के धवल भवन में प्रवेश किया उधर कन्या दमयन्ती ने पति के प्रणय की वृद्धि के लिए पार्वती की उपासना की । नल के हाथ में दमयन्ती का हाथ रखकर जब तक गुरु उसमें जल डालें तब तक परस्पर स्पर्श के कारण वह स्वेद जल से भर गया । सायंकाल पर्याप्त मनोरथोदय वाले नल ने प्रिया के साथ कौतुक मन्दिर में प्रवेश किया । कुछ दिन तक विदर्भ में रहने के पश्चात् भीम से अनुमति लेकर नल पत्नी सहित अपने राज्य में आए ।

नए-नए गुणों से एक-दूसरे को चकित करते हुए उन दोनों का प्रेम रति और काम की भांति निरन्तर बढ़ता ही गया । एक बार भैमी के साथ बैठे हुए नल केक पास हंस ने आकर कहा " राजन् ! दुर्बल वैरियों के भी ~~स्वयं के कारण~~ प्रति प्रमाद मत करो क्योंकि वे भी मत्सर के कारण छल से युद्ध कर सकते हैं ।" नल ने हंस का अभिनन्दन किया और फिर उसे जाने की अनुमति दे दी । इसी समय ग्रीष्म ऋतु आ पहुंची । भ्रमरों से युक्त अपने पुष्प समूह के कारण पाटली ने नीललोहित शरीर धारण किया । तब ग्रीष्मकाल में सूर्य के दुःसह हो जाने पर नल भी भैमी के साथ विहार करने के लिए समीपवर्तिनी नदी पर गए । नल ने मणिमण्डप में स्थित प्रिया से कहा " वैदर्भि ! तरंगवात से बिखेरे गए जलकणों से शीतल, पक्षियों की स्त्रियां वेतस कुंजों में कूजन कर रही हैं ।" पग-पग पर प्रतिहारियों द्वारा बताए जाते हुए मार्ग वाले राजा ने मणिमय भवन को छोड़कर भैमी के साथ जल-विहार किया । उधर इन्द्रादिक देवों का अनादर करके जब से स्वयंवर में भैमी ने नल का वरण किया था तभी से कलि नल से रुष्ट था ।

तापस का वेष धारण करके और द्वापर को साथ लेकर कलि नल के भाई राजा पुष्कर के पास गया । पुष्कर से सत्कृत होकर कलि ने कहा, " मेरे विघ्नरहित उपाय से नल पर विजय प्राप्त करके तुम कुल में श्रेष्ठ होओ ।" इस प्रकार कह कर

छद्म मुनि के मौन हो जाने पर पुष्कर ने विनयपूर्वक कहा, " सर्प से मणि, सिंह से उसके मुख में रक्खा हुआ मांस और नल से साम्राज्य भला कौन छीन सकता है ?" इस प्रकार पुष्कर को पौरुषहीन देखकर छद्म कलि ने कहा, " तुम्हारी कायरता देखकर मुझे आश्चर्य होता है । उद्यम के बिना तो तेजस्वियों का भी तेज नहीं फैलता । मैं नल के हृदय में प्रवेश करके उसे इस प्रकार मोहित करूंगा कि वह तुम्हारा वशंवद हो जाए । अग्नि के लिए वायुवत् मेरा मित्र द्वापर इन पासों में अधिष्ठित होकर तुम्हारा कल्याण करेगा ।" इतना कहकर कलि ने अपना वास्तविक रूप धारण कर लिया । उस मायावी को प्रणाम करके अक्षों के साथ पुष्कर नल से द्यूत क्रीडा के लिए नल के समीप पहुंचा । नल के चरणों में शीश झुकाकर पुष्कर ने रत्ननिर्मित सारी उपहारस्वरूप दी । राजा नल की दृष्टि उस रत्नसारी पर पहुंच कर जाल में अवरुद्ध हरिणी की भांति फंस गई । उसी समय कलि ने नैषध में प्रविष्ट हो कर उन्हें अपना वशंवद बना लिया । द्यूत क्रीडा करते हुए नल के पास आभूषणों से शून्य भैमी और अपनी देहयष्टि केवल यही दो वस्तुएं और अवशिष्ट रहीं । समस्त पृथ्वी पुष्कर को देकर नल वन की ओर चल दिए क्योंकि प्राय: सज्जनों का पराई वस्तु लेने का मन नहीं होता है । कुत्ते के गले में डाली गई, नयी-नयी मालती माला के समान नल की श्री पुष्कर के पास शोच्य हो गयी ।वनान्तरों में जहां-जहां ये घूमें वहां का मृग होना भी सौभाग्य है । इस प्रकार विह्वल मंत्रि समूह की बातें सुनते हुए नल पत्नी के साथ घर से निकल कर राजमार्ग को प्राप्त हुए । राजोचित वेश का परित्याग करके वनवासोचित वस्त्र पहने हुए उन दोनों को देखकर लोगों की आंखों में आंसू भर आए ।" हे वनस्थलि! तुम अपने कण्टकाग्रों को इस प्रकार से कुण्ठित कर लेना जिससे, तुम पर विचरणशील दमयन्ती को कष्ट न होवे ।" इस प्रकार की ,नागरिकों की अश्रु-व्याकुल वाणी से उन दोनों को जितना कष्ट हुआ उतना मार्ग के परिश्रम से भी नहीं हुआ । धूप-ताप से खिन्न होकर वे दोनों एक निकुंज में बैठ गए । अत्यन्त खिन्न भैमी तथा भयंकर वन को देखकर दमयन्ती को विदर्भ पहुंचाने की इच्छा से नल ने कहा, " सम्पत्ति ने अच्छा किया जो मेरा परित्याग करके तभी चली गई थी , मेरे पीछे वन-वन में भटकती हुई तुम क्यों कष्ट उठाती हो । इसके पश्चात् नल भैमी को विदर्भ का मार्ग समझाने लगे । राजा की इस प्रकार की वाणी सुनकर अश्रु-जल से विरल

कपोलपाली वाली दमयन्ती ने अंजलि बांध कर कहा" राजन् ! मुझे धिक्कार है । पूर्वार्जित पापों में इतना दुष्कर तो कोई भी नहीं था जिसके कारण तुम्हारे द्वारा कहे गए ऐसे वचनों को मैं हतजीविता सुन रही हूं । इस प्रकार कहते-कहते रानी मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ीं । क्रम से संज्ञा को प्राप्त होती हुई भैमी को अंक में लेकर नल ने कहा," यद्यपि जो कुछ मैंने कहा वह असह्य था फिर भी उसमें मेरा दोष मत समझना -- तुम्हारे दुःखों की परम्परा ने ही मुझे इतना मुखर बना दिया । इसी समय दिनान्त की संध्या पृथ्वी पर व्याप्त हो गई । उस दिन और रात से रहित समय में नल वैदर्भी के साथ निद्रा को प्राप्त हुए ।

इसी बीच अन्धकार को देखकर पूर्वानुभवानुसार दमयन्ती ने कहा," सखियो ! जल्दी से कर्पूर चूर्ण से क्रीडा-सरोवर की परिसर भूमि को आच्छन्न कर दो तब इसमें शिशिर की निर्मल चन्द्र-किरणों का अनुभव होगा ।" भैमी के भ्रम निवारणार्थ नल ने कहा । हे भैमि ! हृदय में धैर्य धारण करो । यह तुम्हारे संगीतज्ञों द्वारा रागभेद को प्रकट करने वाला गायक नहीं है, वरन् यह कीचक की ध्वनि श्रवण-गोचर हो रही है ।" इस प्रकार के वचनों से प्रबुद्ध होकर भैमी ने किसलयों के सदृश कोमल हाथों से वृक्षों के नीचे नल के लिए शय्या बना दी । यह शून्य वन है और राजा अपनी पत्नी के साथ हैं मानो इसी विचार से रात्रि में क्षण भर को भी राजा की आंखों में निद्रा ने अनुराग नहीं किया । इस प्रकार परस्पर स्नेह क्रम से शोक के कम होने पर कुछ दिन व्यतीत हुए परन्तु इतने से कलि का मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ । कलि ने अपने मित्र द्वापर से सलाह की और पक्षी का रूप धारण करके दोनों, उस युगल को अलग अलग करने की इच्छा से दृष्टिपथ में आने वाले वृक्षों के नीचे संचार करने लगे । रत्न खचित उन पक्षियों को समीप देखकर कौतूहल से तरलिता दमयन्ती उन दोनों के पास चावल फैला कर अन्य विषयों से विरक्त हो गई । कहीं पर हाथ में आते हुए से और कहीं दूर चले जाने वाले वे पक्षी, पत्नी सहित राजा को अज्ञात संचार वाले वन में ले गए । इस प्रकार उस दम्पति को प्रतारित करके एक पक्षी पूरब और दूसरा पश्चिम दिशा की ओर

उड़ चला । मणिमय पक्षी पर दृष्टि जमाए नल और दमयन्ती पृथक् होकर चिन्तित हो उठे । मार्ग में खेद सहने में असमर्थ होकर दमयन्ती विचार करने लगी, अभी ही नल उस मणिमय पक्षी को ग्रहण करके आते होंगे ।" प्रिया को पास में न देख कर नल विचार करने लगे " आकाश में विचरण करते हुए पक्षी की इच्छा से जो मैंने प्रिया को खो दिया, इससे भी अधिक मेरा क्या अपयश होगा ? मैं किस मार्ग से आया हूं और कब कहां जाना चाहता हूं इसको भी जानने में असमर्थ इस अवस्था में नैमृगेक्षणा को कहां खोजूं ।" तदनन्तर झरने के शीकर का स्पर्श करने वाली वायु से श्रम के कम होने पर लताओं का अवलम्ब लेकर कुछ - कुछ चलती हुई भैमी ने कहा, " प्रिय ! अब यह अकाण्ड कौतुक समाप्त करो और यहां वृक्ष के मूल पर बैठो मैं तुम्हारे थके हुए चरण दबा दूं ।" पग-पग पर इस प्रकार कहती हुई दमयन्ती प्रिय को कहीं भी न देख कर विलाप करने लगी " हे नैषध ! तुम्हारे ही अधीन जीवन वाली मुझे यहां छोड़कर तुम कैसे चले गए, ऐसा प्रतीत होता है मानो द्यूत क्रीडा करते हुए तुम्हारे द्वारा राज्यलक्ष्मी की ही भांति करुणा भी दांव पर लगा दी गयी थी । हे पृथ्वी ! तुमसे अंजलि बांधकर कहती हूं कि मैं तुम्हारी सपत्नी हूं, इस कारण क्रोध मत करो और मुझे बता दो कि प्रभु के चरणों से तुम कहां पर अलंकृत हो रही हो दमयन्ती इस प्रकार अश्रु-जल में संचार करती हुई जंगल में विचरती रही । भैंसों के परस्पर युद्ध से कहीं पर खुदी हुई धरती से युक्त कहीं भूखे तरक्षु द्वारा आक्रान्त हरिण शिशु वाले भयंकर वन में भी भैमी को अधिक भय नहीं लगा,क्योंकि नए शोक से सन्तप्त हृदय में अन्य भाव नहीं उठता । ब्रह्मा के द्वारा प्राणियों को मृत्यु के लिए बनाए गए अति दारुण यन्त्र के सदृश एक विशालकाय अजगर के खुले हुए मुख में दमयन्ती ने पर्वत की गुफा के भ्रम से प्रवेश किया । तदनन्तर उसी सर्प के मुख में एक मृग और फिर उसका पीछा करते हुए सैकड़ों शबर भी प्रविष्ट हो गए । सर्प के विशाल मुख में चारों ओर घूमती हुई भैमी उसके कण्ठ के समीप भी नहीं पहुंच पायी थी कि किरातों ने अप्रमेय तीक्ष्ण फरसों से उस सर्प के खण्ड-खण्ड कर दिए ।

विष के दाह से अचेतन दमयन्ती को स्वस्थ करने में असमर्थ वे शिकारी अन्यत्र चले गए । तदनन्तर उस स्थल पर समिधा आहरणार्थ आए हुए किसी तपस्वी

ने दमयन्ती को उस अवस्था में देखकर सोचा, " यदि संयमियों का मन मोहने के लिए यह स्वर्ग से इन्द्र द्वारा प्रेषित कोई सुरवधू है तो यह इस दशा को कैसे प्राप्त हो गई ।" इस प्रकार विविध वितर्क करने के पश्चात् समाधि-बल से वास्तविकता का ज्ञान होने पर मुनि को बहुत दु:ख हुआ । अभिमंत्रित जल के सम्पर्क से दमयन्ती को उसने स्वस्थ किया और फिर उसे आशीर्वाद देकर कहने लगा , " हे कृशोदरि । मेरा कुछ संचित तप है, जिससे तुम्हें नल सुलभ हो जाएं और तुम्हारे साथ प्रसन्न होकर पृथ्वी पर चिरकाल तक शासन करें ।" तब मुनि को प्रणाम करके वन में भटकती हुई विदर्भजा ने मार्ग में जिसे जिसे देखा उस उस के समीप जाकर उसने कहा -- हे तोते । तुम अनुराग को चंचु में ही धारण करते हो चित्त में नहीं जो स्फुट वाणी वाले होकर भी प्रभु का वृत्तान्त स्पष्टरूप से नहीं कह देते । प्रलाप करती हुई विदर्भजा दिनान्त के समय एक व्यापारियों के दल को विश्राम करता हुआ देखकर वृक्षों में छिपकर बैठ गई । परिश्रान्त व्यापारियों को तो नींद आ गई परन्तु शोक-तरंगों से बाध्यमान दमयन्ती को नींद न आ सकी । तूफान की भांति एक मस्त हाथियों की घटा को वहां आता देखकर रानी के पुन: पुन: चिल्लाने पर भी वह यात्रियों का दल हाथियों के पैरों तले रौंद दिया गया । हाथियों के दांतों से भग्न शरीर वाले कुछ यात्रियों ने रक्त के साथ ही प्राण भी छोड़ दिए और कुछ चूर्ण होकर शय्या के समान हो गए । हाथियों के समूह के चले जाने पर प्रात:काल जो यात्री जीवित थे,उन्होंने उपकारिणी दमयन्ती को प्रणाम किया । तदनन्तर बहुत दिनों पश्चात् मार्ग में पथिकों का अनुसरण करती हुई भैमी राजा सुबाहु के नगर में प्रविष्ट हुई जहां राजमाता ने उसका पुत्री के समान पालन किया । कुछ समय पश्चात् चरों से पता लगाकर विदर्भराज अपनी पुत्री को विदर्भ ले आए और नल के अन्वेषणार्थ उन्होंने विश्वस्त दूतों को चारों ओर भेजा ।

विलाप करते हुए नैषध ने वन में फैलती हुई दवाग्नि देखी । अग्नि के ऊपर व्याप्त धूम वाली शिखाओं ने आकाश को अवरुद्ध कर दिया । चारों ओर से जलती हुई वन की पंक्ति को अत्यधिक वेग से पार कर लेने वाले चामरों की विशाल चामर में लगी हुई अग्नि दुरुस्तर हो गई । फैलती हुई अग्नि ने केवल

जीवधारियों के ही प्राण नहीं लिए,अपितु सरोवरों और नदियों के भी तट पर फैलकर वही किया । चारों ओर बढ़ती हुई अग्नि को देखकर नल कहने लगे," दमयन्ती ! मुझ धूर्त द्वारा परित्यक्ता तुम वन में किसकी शरण में जाओगी ? विवाह की साक्षी अग्नि की भी परिक्रमा करने में नितान्त खिन्न होने वाली कोमलांगी तुम दवाग्नि के विषम ताप को कैसे सहन करोगी ? इस प्रकार से वन में विलाप करते हुए राजा से किसी सर्प ने मनुष्य की वाणी में कहा," दवाग्नि के समान अलक्ष्य मुनि के शाप से दह्यमान मेरी हे पृथ्वी के चन्द्र ! तुम मेरी रक्षा करो। हे राजन् ! अमृत हाथ से मुझे उठाकर चलते हुए तुम कदम गिनो । मैं सर्पों का स्वामी कर्कोटक हूं । दसवें पग पर मैं तुम्हारा कल्याण करूंगा ।" राजा के ऐसा ही करने पर सर्प ने राजा को दक्षिण बाहु में दंशन कर लिया जिससे ग्रहण लगे हुए चन्द्र की तरह राजा शीघ्र ही वर्णभेद को प्राप्त हो गए । तत्क्षण दिव्यशरीर धारण करके वह नाग बोला," राजन् ! मेरा विष तुम्हारी त्वचा को ही स्पर्श करेगा जिससे काले चन्दन के लेप के समान यह तुम्हारे शरीर की कालिमा है । अब तुम राजा ऋतुपर्ण के पास जाओ । वहां रहते हुए हे पृथ्वी के चन्द्र ! तुम शीघ्र ही दमयन्ती को प्राप्त कर लोगे । हे राजन् ! विदर्भजा को देखने पर देववस्त्रों को धारण करके तुम स्वरूप प्राप्त कर लोगे ।" यह कहकर नागराज ने नल को दो वस्त्र प्रदान किए और स्वयं अन्तर्धान हो गया । अयोध्या नगरी में पहुंचकर नल बाहुक नाम से प्रसिद्ध हुए । एक ही शरीर में रहते हुए नल ने भैमी के वियोग से और कलि ने कर्कोटक के तीक्ष्ण विष से तीव्र ताप प्राप्त किया । जैसे वर्षा का जल क्रमशः से निचले मार्गों से होता हुआ सागर में पहुंचता है उसी प्रकार ऋतुपर्ण को चरों के द्वारा बाहुक के गुणों का प्रकर्ष पता हुआ । शील स्वभाव के कारण ऋतुपर्ण और नल की प्रीति उस प्रकार वृद्धि को प्राप्त हुई जिससे अमात्य-समुदाय भी उन दोनों को शरीर मात्र में पृथक्-पृथक् समझता था । अब वर्षा का आगमन हुआ । आकाश में मालाबद्ध बलाकाएं सुशोभित हुईं । भीम के भवन में खिन्न भैमी तथा ऋतुपर्ण के यहां नैषध के दर्शन के लिए ही मानो विद्युत आकाश में पुनः पुनः आने जाने लगी । वर्षा को समृद्ध देखकर पक्षी नीड़ों में प्रविष्ट हो गए परन्तु जामाता

के अन्वेषणार्थी भीम द्वारा नियुक्त चर फिर भी घूमते रहे । अयोध्या में पहुंचकर एक चर ने नल से एकान्त में दमयन्ती के रहस्यार्थ कहे । अपने पूर्व कृत्य पर विचार करके किसी प्रकार अश्रुओं को रोककर निषधाधिनाथ ने कहा, " रात्रि व्यतीत होने पर चक्रवाक पक्षी कल्याण को प्राप्त होते हैं, परन्तु वियोग के असह्य खेद को प्राप्त करके भी वे प्राणत्याग नहीं करते ।" नल का वृत्तान्त चर ने विदर्भ में दमयन्ती से कह सुनाया । इसी बीच नल के दर्शन की कामना से उनका कोई सुत सुबकता हुआ नल के पास आया । वन-भूमि में इस प्रकार से निष्कल प्रेयसी के विषय में सोच-सोच कर सायंकाल के समय नल अधीर होकर विलाप करते थे । मित्र के कारण पूछने पर नल ने दाक्षिण्य पूर्वक उत्तर दिया " चन्द्रमा जिसके गोत्र का वृद्ध है, इन्द्र का भी निरादर करके वैदर्भी ने जिसका वरण किया था, उस राजा नैषध के विषय में क्या तुमने कभी सुना है ? मैंने उन्हें प्रिया के साथ विंध्याटवी में घूमते हुए देखा था । उसके पश्चात् प्राणेश्वरी की विरहाग्नि से विधुर उनके इस विलाप को स्मरण करके मेरा चित्त खिन्न होता है । सारथी ने निःश्वास लेते हुए कहा -- " हे बाहुक ! तुम धन्य हो, जो बिना श्रम के ही तुमने नैषध को देख लिया । अल्प भाग्य के कारण सागर पर्यन्त पृथ्वी पर उन्हें खोजता हुआ मैं उनके दर्शन न कर सका । वन में भटकती हुई दमयन्ती अजगर के मुख से किसी किसी प्रकार बच कर अब पिता के ~~मुख से किसी किसी प्रकार बचकर~~ भवन में रहती हुई नल के ही विषय में चिन्तित है ।

मंत्रियों के साथ सभा में आसीन राजा ऋतुपर्ण के पास आकर कुण्डिनपुर से आए हुए एक चर ने कहा -- हे नाथ ! आपने सुना होगा कि नगर से वन में गए हुए नल कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं हुए और उनकी पत्नी यदृच्छा से पिता के घर पहुंच गई । किसी तपस्वी द्वारा दिए गए वर पर विश्वास करके वह किसी प्रकार समय व्यतीत कर रही है, परन्तु परसों वह अवश्य ही अग्नि में प्रविष्ट हो जायेगी । पुत्री के इस निश्चय को जानकर नागरिकों और बन्धुओं सहित विदर्भाधिपति शोक सागर में निमग्न हैं ।" चर के चले जाने पर शीघ्र ही कुण्डिनपुर जाने की इच्छा वाले ऋतुपर्ण ने अपने आसनार्ध पर आसीन बाहुक से कहा " आज मैं उस शोक विमूढ़ चित्त

वाले मित्र भीम श्रे को देखने की इच्छा करता हूं क्योंकि वही मैत्री अकृत्रिम होती है , जो विपत्ति में भी विकृत नहीं होती । रथ में स्थित मुझे एक ही दिन में वहां पहुंचाने में तुम समर्थ हो ।" तदनन्तर बाहुक द्वारा चलाया गया रथ विदर्भा नगरी की ओर अत्यन्त वेग से बढ़ चला । ऋतुपर्ण ने रथ में उक्त प्रकार के कौतूहल पौरुष सम्पन्न बाहुक को अक्षविद्या सिखाई और बदले में उनसे अश्वविद्या सीख ली । मार्ग में अक्षविद्या के परीक्षण के लिए नल ने जैसे ही निश्चय किया कलि ने नल के शरीर से बाहर आकर अपना परिचय दिया और अभीष्ट वरों से नल का अभिनन्दन करके वह स्वर्ग की ओर चला गया । सूर्य के अस्ताचल पर पहुंचने पर, दमयन्ती की शोकरूप नदी के वेग को लोगों के आंसुओं के द्वारा प्रकाशित करती हुई उस पुरी में ऋतुपर्ण ने बाहुक के साथ प्रवेश किया । भीमजा ने अपने सुख और दु:ख की साथिन सखी से एकान्त में कहा," क हे केशिनि । जिस रथ की ध्वनि श्रवणगोचर हो रही है, उसके सारथि नल ही होंगे । हे केशिनि । शीघ्र ही तुम उसके पास जाकर पता लगाओ कि यह सारथी कौन है ?" तब विविध उपायों से नल की परीक्षा लेकर भी कुछ निश्चय न कर पाने वाली उस सखी की बात सुनकर विदर्भजा ने उससे एकान्त में कहा --" अहो मेरे विषय में विधाता की प्रतिकूल वर्तिता तनिक भी शान्त नहीं हुई जो पुन: प्रिय-संगम की दुराशा से मुझे संयुक्त कर रहा है । हे सखि । अगले जन्म में भी नल की प्राप्ति के लिए इस अग्नि की ज्वालाएं मेरे मृत्यु होवें । ऐसा कहकर उठती हुई ज्वालाओं वाली अग्नि को प्रणाम करके जब दमयन्ती उसकी प्रदक्षिणा करने लगी तो नगरवासियों के हाहाकार को चीरती हुई देवताओं की वाणी श्रवणगोचर हुई --" हे नलप्रिये । तुम दुष्कर, शीघ्र विनाशकारी साहस को रहने दो, इसी क्षण के पश्चात् तुम्हारा प्रिय तुमको शोक रहित कर देगा ।" देवों की वाणी सुनकर भैमी क्षण भर के लिए स्तिमित-सी हो गई और नागेन्द्र द्वारा प्रदत्त वस्त्र को पहनकर नैषध भी अपने रूप में प्रकट हो गए । तदनन्तर सर्पदष्ट बाहुकत्व का परित्याग करके अपने रूप को प्रकट करने वाले नैषध को देखकर प्रसन्न होते हुए ऋतुपर्ण ने शीघ्र ही नल से मैत्री की याचना की । वैदर्भी के साथ विदर्भ

में कुछ दिन रहने के अनन्तर क्रम से वहां आए हुए अपने मुख्य मंत्रियों द्वारा निर्दिष्ट मार्ग वाले वैरसेनि निषध पहुंचे । इस प्रकार समस्त विपत्ति को पार करके अपने नगर में आए हुए वृद्ध अमात्यों और उज्ज्वल पुष्कर से युक्त चरणों वाले वैरसेनि, घने व अनुराग से तरल हृदय वाली भैमी और राजलक्ष्मी को प्राप्त हुए ।

महाभारतीय नल कथा के अनुसार दमयन्ती के प्रति कामपीड़ा से विह्वल होकर नल ने अन्तःपुर के समीपवर्ती वन में विहार करते समय स्वर्णमय पक्षों वाले अनेक हंसों को देखा । इ उनमें से एक को राजा ने ग्रहण कर लिया । उस पक्षी ने आत्मरक्षा के लिए नल से पहले तो प्रार्थना की और फिर अन्त में दमयन्ती को नल में अनुरक्त कराने का कार्य अपने ऊपर ले लिया[1] ।परन्तु 'सहृदयानन्दम्' में लगभग यही घटना कुछ अन्य प्रकार से उपलब्ध होती है । आखेट के लिए वन में गए हुए नल को एक सरोवर के तट पर जोते हुए बहुत से हंस दृष्टिगोचर हुए[2] । वहां पर नल ने कमलिनी के दल पर निषण्ण , और प्रिया के मुख में बालमृणालांकुर अर्पित करते हुए एक स्वर्ण हंस को देखा[3] । हंस को ग्रहण करने के लिए जैसे ही नल ने सम्मोहनास्त्र निकाला उन्हें वनदेवियों की वाणी सुनाई पड़ी[4] । हे राजन् ! चाप से हटाकर बाण को वापस तूणीर में रख लो क्योंकि यह हंस तुम्हारी अभीप्सित और अनुरूप गृह लक्ष्मी का सम्पादन करेगा[5] । हंस नल के समीप आकर बैठ गया और अपना परिचय देने लगा[6] , फिर नल से अनुमति लेकर यथाभिमत स्थान को चला गया । इसके पश्चात् वह पक्षी दुबारा फिर गृहदीर्घिका के पास नल से मिला[7] । इस बार हंस ने विस्तारपूर्वक भैमी के सौन्दर्य का वर्णन किया[8] । कामदेव के मुख से दमयन्ती के अतुलित सौन्दर्य के विषय में सुनकर हंस पहले विदर्भा में जाकर दमयन्ती

१- म०भा० वनपर्व ५०

२- सहृदयानन्दम् १।५६

३- सहृदयानन्दम् १।६०

४- सहृदयानन्दम् १।६१

५- सहृ० १।६२

६- सहृ० १।६३-६६

७- सहृ० २।३०

८- सहृ० २।४६-६१

से मिला[1]। भैमी के हृदय में नल के प्रति अनुरागांकुर को प्रवृद्ध करके ही हंस भैमी के उपहार रूप हार के साथ नल के पास मिलने आया था[2]। इस प्रकार सहृदयानन्दम् महाकाव्य में नल की उस मित्र हंस से कई बार भेंट होती है। हंस के प्रसंग में यहां पर जो आकाशवाणी का सहारा लिया गया है, वह उचित ही प्रतीत होता है। दिव्य हंस के सम्बन्ध में आकाशवाणी होना अस्वाभाविक नहीं प्रतीत होता साथ ही साथ पकड़े गए हंस द्वारा यदि उपकार करने की बात कही जाये तो वह उतनी श्लाघनीय नहीं होती जितनी कि एक मित्र के रूप में बैठे हुए पक्षी की बात। यहां पर प्रथम भेंट में हंस उपकार और दमयन्ती की चर्चा लेकर नहीं बैठ जाता। प्रथम भेंट में तो दोनों की मैत्री सुदृढ़ होती है और फिर हंस मित्र के लिए दौत्य कर्म सम्पन्न करता है। इस प्रकार कथा में परिवर्तन लाकर कवि कृष्णानन्द ने कथावस्तु को अधिक स्वाभाविक बनाया है।

मूल कथा के अनुसार कलि पहले मूत्र त्याग के पश्चात् बिना पांव धोये संध्या कर्म में प्रवृत्त नल को अभिभूत करता है। तत्पश्चात् पुष्कर को नल से द्यूत खेलने के लिए प्रोत्साहित करता है[3]। 'सहृदयानन्दम्' के अन्तर्गत यही घटना दूसरे रूप में उपलब्ध होती है। यहां कलि मुनि का रूप धारण करके पहले पुष्कर को नल से द्यूत खेलने के लिए प्रोत्साहित करता है, तत्पश्चात् रत्नसारी पर पक्षदृष्टि नल में प्रवेश करता है[4]। इस परिवर्तन का न तो कोई विशेष कारण प्रतीत होता है और न इसका कुछ विशेष महत्त्व ही परिलक्षित होता है।

मूल कथा के अनुसार नल कलि से अभिभूत होने के कारण सोच-विचार कर वन में एकाकिनी दमयन्ती का परित्याग करते हैं[5] परन्तु 'सहृदयानन्दम्' में इस घटना में पर्याप्त परिवर्तन परिलक्षित होता है।

१- सहृदयानन्दम् २।७१ से ३।१-३१

२- सहृदयानन्दम् ३।३२-४६

३- म०भा० वनपर्व ५६।३-५

४- सहृ० ८।१-६१

५- म०भा० पर्व ५६

नलोपाख्यान के समान यहां स्वर्णमय पक्षी नल के वस्त्र का अपहरण नहीं करते अपितु वे नल को प्रिया दमयन्ती से वियुक्त कर देते हैं । कलि ने मित्र द्वापर के साथ मन्त्रणा की और दोनों मित्रों ने हेमपक्ष युक्त विहंग का रूप धारण किया[1]। मणिमय विहंगों को देखकर नल की महिषी उनके सम्मुख नीवार कण बिखेर कर उत्फुल्लहृदया हो गई[2]।उन पक्षियों पर दत्तदृष्टि होकर उनका अनुसरण करते हुए नल और दमयन्ती अज्ञात संचार वाले वनप्रदेश में पृथक्-पृथक् होकर भटक गए[3]। इस प्रकार से महाभारत की पक्षियों द्वारा नल के वस्त्रापहरण तथा नल द्वारा दमयन्ती का परित्याग -- इन दो घटनाओं को मिला-जुलाकर कवि कृष्णानन्द ने इस नवीन घटना को प्रस्तुत किया है । नलोपाख्यान में उपलब्ध होने वाली ये दो घटनाएं उतनी अधिक मर्मस्पर्शी नहीं हो सकी हैं जितनी कि वे 'सहृदयानन्दम्' में हो गई हैं । यही नहीं, कथावस्तु में इस प्रकार का परिवर्तन ग्रन्थ को अनावश्यक विस्तार से बचाता है । इस परिवर्तन के मूल में जो तीसरा प्रयोजन समझ में आता है,वह है नायक का चरित्र-चित्रण । मूल कथा के अनुसार नल ने स्वयं शस्त्र से दमयन्ती का वस्त्र काटकर पत्नी का परित्याग किया । इस प्रकार नायक के उज्ज्वल चरित्र में कलि के प्रभाव को स्वीकार करने पर भी कालिमा की छाया प्रतिबिम्बित हो उठती है ।'सहृदयानन्दम्' के नायक नल का दमयन्ती से वियुक्त होने में कोई भी दोष नहीं है । उन्होंने विचारपूर्वक पत्नी का परित्याग नहीं किया था , वह तो कलि की मूर्तिमती माया ने उन्हें प्रतारित किया था । इस प्रकार नायक के चरित्र की निर्मलता की रक्षा करते हुए ग्रन्थकार ने बड़ी कलानिपुण विधि से प्रयोजन की सिद्धि कर ली है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान की कथा के अनुसार वन में नल द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती को ग्रसने के लिए एक क्षुधापीड़ित अजगर बढ़ आया । दमयन्ती नल के लिए विलाप ही करती रही और अजगर के मुख में समा गई । आत्मरक्षा के

१- सहृ० १०।३३

२- सहृ० १०।३४-३६

३- सहृ० १०।४१-४६

लिए दमयन्ती बार-बार पति को पुकारती हुई विलाप करने लगी । इस रुदन को सुनकर वहां एक किरात ने सर्प को मार कर दमयन्ती की रक्षा की । बाद में कामान्ध होने पर वही किरात दमयन्ती की क्रोधाग्नि में भस्म हो गया [1] । 'सहृदयानन्द' महाकाव्य में भी यह घटना उपलब्ध होती है, परन्तु पर्याप्त परिवर्तन के साथ । वन में अत्यधिक विशाल आभोग वाले अजगर के खुले हुए मुख में दमयन्ती ने स्वयं ही पर्वतीय कन्दरा के भ्रम से प्रवेश किया [2] । यह भ्रम केवल दमयन्ती को ही नहीं हुआ, एक मृग और उसका अनुसरण करते हुए, धनुष बाण से युक्त सैकड़ों शबर भी उसमें प्रविष्ट हो गए [3] । सर्प के मुख में पहुंचकर भी दमयन्ती नल के लिए विलाप करती हुई घूमती रही । इस प्रकार घूमती हुई वह सर्प के कण्ठ तक भी न पहुंच पाई थी कि शबरों ने उस सर्प को कृपाणों से काटकर खण्ड-खण्ड कर दिया [4] । और मूर्च्छिता दमयन्ती को बाहर निकाला । दमयन्ती को संज्ञा प्राप्त कराने में असमर्थ होकर वे उसे उसी दशा में छोड़कर अन्यत्र चले गए [5] । उसी समय समिदाहरणार्थ वहां आए हुए एक मुनि की दृष्टि दमयन्ती पर पड़ी । समाधि के बल से दमयन्ती के वृत्तान्त को ज्ञात करके उन्होंने अभिमन्त्रित जल से दमयन्ती को स्वस्थ किया [6] । मूल कथावस्तु में यह परिवर्तन नायिका के चरित्र-चित्रण की दृष्टि से किया गया प्रतीत होता है । सर्प के मुख में पहुंच कर भी दमयन्ती को वस्तुस्थिति का ज्ञान नहीं हो पाता । वह नल के ध्यान में इतनी तन्मय हो रही थी कि उसे कराल विष से व्याप्त सर्प के मुख में पहुंचकर भी आत्मचिन्ता नहीं व्यापी । वह न रोयी न चिल्लायी और न उसे प्रिय वियोग के सम्मुख किसी बात का भय ही हुआ । उसी सर्प के मुख में जो सैकड़ों किरात, मृग के पीछे प्रविष्ट हो गए थे उन्होंने सर्प को मारा और दमयन्ती को वहां मूर्च्छित देखकर बाहर निकाला । दमयन्ती ने किसी से सहायता की

१- म०भा० वनपर्व ६०

२- सहृ० ११।५२-५७

३- सहृ० ११।५८-५६

४- सहृ० ११।६०,६१

५- सहृ० १२।१-४

६- सहृ० १२।५-१८

याचना नहीं की थी । फिर वे आखेटक दमयन्ती को संज्ञा प्राप्त कराने में असमर्थ होकर मृग की खोज में अन्यत्र चल पड़े । घोर वन में किसी असहाय सुन्दरी को देखकर किसी शबर का काममोहित हो जाना सामान्य सहज बात है । फिर पातिव्रत्य रक्षा के लिए दमयन्ती द्वारा प्राणरक्षक के प्राण ले लेना, जहां एक ओर नायिका के चरित्र को ऊंचा उठाता वहीं दूसरी ओर उसे कृतघ्नता की ज्वाला से झुलसा देता । सम्भवत: इसीलिए कवि कृष्णानन्द ने बड़ी सावधानी से ऐसा प्रसंग ही नहीं आने दिया । किरातों ने दमयन्ती की प्राणरक्षा की और फिर वे मृग-लोलुप अन्यत्र चले गए । तब मुनि ने आकर दमयन्ती की मूर्च्छा दूर की । संयमी, तपस्वी मुनि ने समाधि बल से दमयन्ती का सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रत्यक्ष कर लिया और उसे पति से पुनर्मिलन का आश्वासन दिया[1] । इस प्रकार मुनि से आश्वस्त होकर ही वह किसी प्रकार पति से विमुक्त होकर भी प्राण धारण किए रही । कथावस्तु को इस प्रकार से परिवर्तित करके कवि ने नायिका के चरित्र को तनिक भी कलुषित नहीं होने दिया । सहृदयानन्दम् में जहां तक अजगर के विशालाभोग के वर्णन का तथा उसमें पर्वतीय कन्दरा के भ्रम से दमयन्ती के स्वयं प्रविष्ट हो जाने का प्रश्न है, यह सब उस वन की भयंकरता प्रदर्शित करने के लिए किया गया प्रतीत होता है ।

नलोपाख्यान की कथा के अनुसार वन में भटकती हुई दमयन्ती ने नदी पार करते हुए एक वणिक्सार्थ को देखा । वणिक्सार्थ के साथ दमयन्ती सुबाहु के नगर की ओर चल पड़ी । कुछ दिनों तक चलने के बाद वे पद्मसौगन्धिक सरोवर के तट पर पहुंचे । रात्रि के समय मत्त हाथियों के एक दल के द्वारा विश्राम करता हुआ वह यात्रियों का दल नष्ट कर दिया गया । बचे हुए यात्रियों ने दमयन्ती को ही अपनी विपत्ति का कारण समझ कर पत्थरों से उसे मार डालने का निश्चय किया ।

१- सहृ० १२।२२

उनके दारुण वचनों को सुनकर भयभीत दमयन्ती वन में छिप गई और फिर उन्हीं यात्रियों के पीछे पीछे चलती हुई चेदिनगर में पहुंच गई[1]। सहृदयानन्द में यह घटना कुछ भिन्न प्रकार से उपलब्ध होती है[2]। बहुत समय बाद वन में मनुष्यों को देखकर दमयन्ती नल प्राप्ति की कामना करती हुई वृक्षों की ओट में पृथ्वी पर बैठ गई। इसी समय सूर्यास्त होने से चारों ओर अंधकार छा गया। मार्ग श्रम से परिश्रान्त व्यापारी सो गए परन्तु दमयन्ती को शोक के कारण नींद न आई। इसी समय वृक्षों को गिराती हुई हाथियों की ~~सघन~~ घटा वहां तूफान की तरह आ पहुंची। हाथियों के दल को आता हुआ देखकर दमयन्ती बार बार चिल्लाने लगी फिर भी कुछ यात्री नहीं जागे और हाथियों ने उन्हें समाप्त कर दिया। प्रात: काल हाथियों के दल के चले जाने पर जीवित अवशिष्ट यात्रियों ने विपत्ति में उस प्रकार से उपकार करने वाली वैदर्भी को प्रणाम करके उसकी अर्चना की। तदनन्तर मार्ग में पथिकों का अनुसरण करती हुई वह राजा सुबाहु के नगर में पहुंची। 'सहृदयानन्दम्' में प्रस्तुत इस घटना को देखने से प्रतीत होता है कि पतिव्रता साध्वी दमयन्ती को वन में पुरुषों को देखकर उनसे संकोच होता है। वह वृक्षों के पीछे छिपी रहती है। इस प्रकार नायिका के शील और लज्जा को व्यक्त होने का उपयुक्त अवसर प्राप्त होता है। तदनन्तर व्यापारियों को विपत्ति में देखकर दमयन्ती उनकी रक्षा के लिए पुन: पुन: चिल्लाने लगी। इस प्रकार चिल्ला कर कुछ यात्रियों को उसने सावधान कर दिया। इस प्रकार परोपकार द्वारा भैमी का चरित्र और भी निखार प्राप्त करता है। तीसरा परिवर्तन जो परिलक्षित होता है वह है यात्रियों से दमयन्ती को सम्मान प्राप्त होना। महाभारतीय कथा में जहां यात्री दमयन्ती को पत्थरों द्वारा मारने का संकल्प करते हैं, वहां इस महाकाव्य में वे दमयन्ती को प्रणाम करके उसकी अर्चना करते हैं। महाभारतीय कथा में यात्री दमयन्ती को अपनी विपत्ति का कारण समझते हैं तो यहां वे उसे उपकारिणी और प्राणरक्षक

१- म०भा० वनपर्व ६१-६२

२- सहृ० १२।३७-५४

समझते हैं । घटना में इस परिवर्तन के मूल में सम्भवत: यही नायिका का चरित्र-चित्रण उद्देश्य है ।

नलोपाख्यान के अनुसार चेदिनगर में सुबाहु की माता के संरक्षण में रहती हुई भैमी को भैमी के अन्वेषणार्थ भेजे गए ब्राह्मण सुदेव ने पहचान लिया और अपने साथ कुण्डिनपुर ले गया । महाभारत में इस घटना का काफी विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है[1] । 'सहृदयानन्दम्' में लगभग इसी घटना की ओर मात्र संकेत कर दिया गया है । केवल एक ही वाक्य में यह[2] कार्य सम्पन्न हो गया । परिवर्तन केवल इतना है कि 'नलोपाख्यान' के अनुसार चेदिनगर से दमयन्ती को सुदेव लाया था और सहृदयानन्दम् के अनुसार विदर्भराज स्वयं । यह घटना न अधिक मर्मस्पर्शिनी थी और न ही रोचक अतएव केवल कथावस्तु की कड़ी जोड़ने के लिए कवि कृष्णानन्द ने इसको अत्यन्त संकुचित रूप में प्रस्तुत किया है ।

महाभारतीय कथा के अनुसार नल का सूत वार्ष्णेय रानी दमयन्ती की आज्ञा से इन्द्रसेन और इन्द्रसेना को कुण्डिनपुर पहुंचा देता है । तदनन्तर वह राजा ऋतुपर्ण के पास जाकर सारथी हो जाता है । इधर बाहुक नामधारी नल वहीं अश्वशाला के अध्यक्ष हो गए जहां वार्ष्णेय तथा जीवल उनके अधीन हुए । बाहुक नामधारी नल नित्य रात्रि में दमयन्ती के लिए विलाप किया करते थे । एक बार जीवल के पूछने पर उन्होंने जीवल को बहाने से अपने दु:ख का कारण सुना दिया[3] । 'सहृदयानन्दम्' महाकाव्य में वार्ष्णेय का प्रसंग नहीं उपलब्ध होता परन्तु नल का अन्वेषण करता हुआ उनका एक सूत अयोध्या में बाहुक वेषधारी नल के पास पहुंचा तथा रात्रि में दमयन्ती के लिए विलाप करते हुए नल से उसने उनके दु:ख का कारण पूछा ऐसा उल्लेख मिलता है[4] । बाहुक नामधारी नल उस मित्र सूत को बताते हैं कि

१- म०भा० वनपर्व ६५-६६

२- सहृ० १२।५६

३- ~~सहृ०-१४~~ म०भा० वनपर्व ६४

४- सहृ० १४।५५,५६,६३

विंध्याटवी में घूमते हुए उन्होंने नल तथा दमयन्ती को देखा था, तदनन्तर प्राणेश्वरी की विरहाग्नि से विधुर उनके इस विलाप को स्मरण करके मेरा चित्त खिन्न होता है[1]। शोक सन्तप्तहृदयवाले उस मित्र दूत ने बाहुक नामधारी नल को दमयन्ती का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया[2]। वार्ष्णेय और जीवल दोनों के ही स्थान पर कवि कृष्णानन्द ने एक अज्ञातनामा, नलान्वेषण पर, नल के दूत की अवतारणा की है, वह संभवत: वार्ष्णेय के प्रसंग को न लाने की इच्छा से है। अभी आगे इस पर विचार करेंगे। वैसे यह परिवर्तन कोई विशेष महत्वपूर्ण नहीं प्रतीत होता। केवल प्रसिद्ध कथावस्तु में नवीनता की झलक ले आना ही इसका एक मात्र प्रयोजन प्रतीत होता है।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अनुसार बाहुकरूप धारी नल के विषय में भीम द्वारा प्रेषित पर्णाद से सब कुछ जानकर दमयन्ती ने माता से मंत्रणा करके सुदेव नामक ब्राह्मण को दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर का मिथ्या समाचार सुनाने के लिए महाराज ऋतुपर्ण के पास भेजा। दमयन्ती को प्राप्त करने के लिए उत्सुक ऋतुपर्ण बाहुक के साथ रथ पर आरूढ़ होकर कुण्डिनपुर के लिए चल पड़े। कुण्डिनपुर में आए हुए बाहुक की दमयन्ती ने केशिनी की सहायता से विविध परीक्षाएं लीं और उसपर भी कुछ निश्चय न हो पाने पर माता-पिता की अनुमति लेकर बाहुक को अपने भवन में बुलवाया। नल को पूर्व वृत्तान्त का स्मरण दिलाया और नल ने अपनी विपत्ति के मूल कारण के रूप में कलि का उल्लेख किया। इसी समय आकाशवाणी द्वारा दमयन्ती की पवित्रता प्रमाणित कर दी गई और नल ने कर्कोटक प्रदत्त वस्त्र धारण करके अपना वास्तविक रूप प्राप्त किया[3]। मूल कथा की यह घटना सहृदयानन्दम् में परिवर्तित रूप में उपलब्ध होती है[4]। कुण्डिनपुर से आए हुए ऋतुपर्ण के एक चर ने बताया कि यदृच्छा से विदर्भ पहुंची हुई भैमी अगले जन्म में प्रिय दर्शन की कामना से परसों अग्नि में अपना शरीर होम करने की इच्छा कर रही है पुत्री

१- सहृ० १४।६५

२- सहृ० १४।६८।७३

३- म०भा० वनपर्व ६७-६८

४- सहृ० १५।४-५२

को इस प्रकार कृतनिश्चया जान कर विदर्भाधिपति अत्यधिक दुखी है। मित्र विदर्भाधिपति को इस विपद्काल में आश्वासन देने के लिए ऋतुपर्ण ने कुण्डिनपुर जाने की इच्छा की और उन्होंने अपने मित्र बाहुक के साथ शीघ्रतापूर्वक कुण्डिनपुर में प्रवेश किया। नल के द्वारा चलाए जाते हुए रथ की ध्वनि पहचान कर दमयन्ती ने अपनी सखी केशिनी द्वारा बाहुक नामधारी नल की विविध उपायों से परीक्षा की परन्तु वह इस प्रकार कुछ भी निश्चय न कर सकी। तब ज्वालाओं से युक्त अग्नि को प्रणाम करके दमयन्ती, उसमें प्रवेश करने से पूर्व अग्नि की प्रदक्षिणा करने लगी। उसी समय दिव्य वाणी ने दमयन्ती को इस कार्य से रोका और नल ने दिव्य वस्त्र धारण करके अपने वास्तविक रूप को प्राप्त किया घटना में इस प्रकार से परिवर्तन के द्वारा कवि कृष्णानन्द ने एक ओर महाकाव्य को निरर्थक विस्तार से बचाया है दूसरी ओर इस प्रकार नायिका के चरित्र का स्खलन तो दूर स्खलन का प्रवाद भी नहीं सहन किया। पतिव्रता दमयन्ती द्वितीय स्वयंवर का मिथ्या समाचार भेज कर पति को नहीं प्राप्त करती। इसके स्थान पर वह चिता में जल कर अगले जन्म में नल को पति रूप में प्राप्त करने की कामना करती है। इसी प्रकार न तो नल को दमयन्ती की पवित्रता पर सन्देह होता है और न उसे दूर करने के लिए आकाशवाणी होती है। आकाशवाणी होती अवश्य है परन्तु वह दमयन्ती को चिता में प्रवेश करने से रोकने के लिए। ऋतुपर्ण सच्चे मित्र हैं। वे महाभारतीय कथा के अनुसार दमयन्ती को प्राप्त करने की कामना नहीं करते, उसके स्थान पर मित्र भीम को आश्वासन देने के लिए कुण्डिनपुर जाते हैं। इस प्रकार धीरे धीरे परिवर्तन करके कवि कृष्णानन्द ने इस महाकाव्य के चरित्रों के चरित्र को उज्ज्वल बनाने की चेष्टा की है। 'सहृदयानन्दम्' महाकाव्य में नलोपाख्यान के कुछ तत्वों की ओर केवल संकेत और कुछ की नितान्त उपेक्षा भी की गई है। नल द्वारा संपादित वैदर्भी के प्रति जिस देवदौत्य का महाभारत में विस्तार से वर्णन है[1] उसकी ओर 'सहृदयानन्दम्' में संकेत मात्र कर दिया गया है[2]। इस संकोच का कोई विशेष कारण तो प्रतीत नहीं होता केवल महाकाव्य के कलेवर

१- म०भा० वनपर्व ५२।१२ से ५३।३१

२- सहृ० ५।४७

को कम करने के लिए ऐसा किया गया हो यही समझा जा सकता है ।

महाभारत में दमयन्ती स्वयंवर में लोकपालों के नल रूप में उपस्थित होने की कथा मिलती है[1] परन्तु 'सहृदयानन्दम्' में इसकी भी उपेक्षा की गई है[2]। नल और दमयन्ती की सत्यनिष्ठा और पवित्रता से देव पहले ही सन्तुष्ट हो गए थे, इस अवस्था में स्वयंवर में उनके जाने की अपेक्षा न जाना ही अधिक उचित प्रतीत होता है ।

महाभारतीय कथा के अनुसार नल-दमयन्ती के इन्द्रसेन और इन्द्रसेना नामक दो सन्तानें थीं[3]। 'सहृदयानन्दम्' में नल की सन्तति की एकदम उपेक्षा की गई है । इन्द्रसेन और इन्द्रसेना का सम्पूर्ण महाकाव्य में नामोल्लेख भी नहीं उपलब्ध होता । यही कारण है कि राजा नल को द्यूत में पराजित होता देखकर वैदर्भी द्वारा वार्ष्णेय के साथ सन्तानों को कुण्डिनपुर भिजवाने की महाभारतीय घटना की भी यहां पूर्ण उपेक्षा की गई है । इस उपेक्षा के कारण के रूप में कवि के हृदय में क्या बात होगी, यह कह सकना कठिन है ।

इसी प्रकार दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर के लिए अयोध्या से कुण्डिनपुर जाते समय रथ पर आसीन ऋतुपर्ण के उत्तरीय के गिर जाने की महाभारतीय घटना[4] की भी यहां उपेक्षा की गई है । सम्भवत: ग्रन्थ को संक्षिप्त करने के लिए ही कवि कृष्णानन्द ने इस घटना को उपेक्षित किया है । वैसे भी नीरस होने के कारण इसे जो कवि ने कोई महत्त्व नहीं दिया वह ठीक ही प्रतीत होता है ।

१- म०भा० वनपर्व ५४।१०

२- सहृदयानन्दम्

३- म०भा० वनपर्व ५४।४६

४- म०भा० वनपर्व ७०।२

अर्थप्रकृतियां

'सहृदयानन्दम्' महाकाव्य में पताका अर्थप्रकृति को छोड़ के शेष सभी अर्थप्रकृतियां उपलब्ध होती हैं ।

नल के कार्य को हृदय में धारण करके विदर्भा में भैमी के पास पहुँचे हुए हंस ने दमयन्ती को पहले से ही नल में अनुरक्त जानकर कहा --' तुम माधवी हो और यह वसन्त । तुम चण्डिका हो और यह चन्द्र । परस्पर सदृश तुम दोनों का सम्बन्ध अभिनन्दनीय है[1] ।

हंस के इस वाक्य में बीज अर्थप्रकृति का उपन्यास प्रतीत होता है ।

दमयन्ती के स्वयंवर में जाते हुए नल की देवताओं से भेंट के समय[2] मुख्य कथा सूत्र विच्छिन्न हो जाता है परन्तु देवताओं ने जो नल को भैमी के प्रति दौत्य का काम सौंपा[3] वह कथासूत्र को पुनः संयुक्त कर देता है अतएव यहां 'बिन्दु' नामक अर्थ प्रकृति है ।

कामदेव के मुख से वैदर्भी के अलौकसामान्य रूप के विषय में सुनकर भैमी पर पहले से ही बद्धानुराग और मुनि नारद से दमयन्ती के स्वयंवर के विषय में सुनकर इन्द्रादिक लोकपालों की दमयन्ती प्राप्ति की चेष्टा 'प्रकरी' के अन्तर्गत आती है ।

नल तथा दमयन्ती का विवाह, कलि की बाधा के कारण वियुक्त इस दम्पति का पुनर्मिलन तथा नल को पुष्कर से अपने राज्य की प्राप्ति होना सहृदयानन्दम् में 'कार्य' अर्थप्रकृति है ।

१- सहृ० ३।४७

२- सहृ० ५। ३६-४२

३- सहृ० ५।४३

कार्यावस्थाएं

नल तथा दमयन्ती दोनों ही में परस्पर प्राप्ति के लिए उत्सुकता[1] आरम्भ अवस्था है ।

नल द्वारा दमयन्ती के पास हंस भेजने[2] में यत्न अवस्था परिलक्षित होती है ।

इसके पश्चात् देव दूत नल, दमयन्ती को देवताओं के वरण के लिए तैयार कर सके अतएव यहां तक प्राप्त्याशा अवस्था है[3] ।

नल-दमयन्ती के विवाह के से लेकर पन्द्रहवें सर्ग में दमयन्ती के चिताप्रवेश के समय में आकाशवाणी होने तक[4] नियताप्ति आती है, इसके बाद से ग्रन्थ की समाप्ति तक फलागम अवस्था मिलती है ।

सन्धियां

प्रथम सर्ग से द्वितीय सर्ग की समाप्ति तक मुख सन्धि है । तृतीय सर्ग के प्रारम्भ से लेकर पंचम सर्ग में नल के देवताओं का दमयन्ती के प्रति दौत्य स्वीकार कर लेने तक[5] प्रतिमुख सन्धि मिलती है ।

इसके पश्चात् स्वयंवर में दमयन्ती द्वारा नल के वरण से पूर्व तक[6] गर्भ संधि प्रतीत होती है ।

दमयन्ती द्वारा नल के वरण से[7] प्रारम्भ[8] होकर पन्द्रहवें सर्ग में दमयन्ती के चिता में प्रवेश करते समय आकाशवाणी होने तक अवमर्श संधि का प्रसार मिलता है ।

१- सहृ० सर्ग ३
२- सहृ० ५।१७
३- सहृ० ६।४७
४- सहृ० १५।५१
५- सहृ० ५।४६
६- सहृ० ५।५६
७- सहृ० ५।५६

इसके पश्चात् ग्रन्थ की समाप्ति तक निर्वहण सन्धि प्राप्त होती है ।

नलाभ्युदयम्

'नलाभ्युदयम्' महाकाव्य के उपलब्ध आठ सर्गों में मिलने वाली कथा बिल्कुल मूलकथा के समान है । वे ही घटनाएं हैं तथा उनका वही क्रम भी है । इस अवस्था में नलाभ्युदयम्' की कथा को यहां प्रस्तुत करना पिष्टपेषण मात्र होगा ।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत 'कामपीड़ित नल अन्त:पुर के समीपस्थ वन में गए जहां उन्होंने वन में विचरते हुए स्वर्णमय पखों वाले हंसों को देखकर उनमें से एक को पकड़ लिया । इस सम्पूर्ण घटना का केवल दो श्लोकों में उल्लेख मिलता है[१] । 'नलाभ्युदयम्' में यही घटना २१ श्लोकों में पर्याप्त विस्तार के साथ वर्णित है[२] । इस स्थान पर कवि ने शृंगार रस के उद्दीपन विभाव के रूप में बाह्य प्रकृति का वर्णन किया है[३] । इसकी दृष्टि से यह विस्तार विशेष महत्त्व रखता है । उद्यान भूमि में जाकर भी नल का स्मरताप शान्त नहीं हुआ तब वे केलिसरोवर के तट पर किसी लता मण्डप में बैठकर दमयन्ती के विषय में विचार करते हैं । इसी समय नल ने काम केलि में निरत हेममय पखों वाले अनेक हंसों को देखकर उनमें से एक को पकड़ लिया[४] । यहां भी हंसों की कामकेलि में शृंगाररस का प्रसंग प्रस्तुत करने के लिए सम्भवत: कवि ने महाभारतीय घटना को विस्तृत रूप दिया है । यह परिवर्तन भी इसकी दृष्टि से उत्तम है ।

नलोपाख्यान में नल द्वारा गृहीत हंस सीधे सीधे नल से अपनी मुक्ति के लिए कहता है, और उसी समय वह राजा को आश्वासन भी देता है कि वह उनसे दमयन्ती की संघटना करवा कर उनका प्रिय करेगा[५] ।

१- म०भा० वनपर्व ५०।१८-१९

२- नलाभ्युदयम् पृ० ४-६

३- नलाभ्युदयम् १।४७-५३

४- नलाभ्युदयम्,पृ०५-६

५- म०भा० वनपर्व ५०।२०-२२

'नलाभ्युदयम्' के अन्तर्गत यह हंस पहले राजा की प्रशंसा करता है, तत्पश्चात् अपना महत्व दिखाते हुए उन्हें बताता है कि वह भी सामान्य हंस नहीं है, वह आकाशगंगा में रहने वाला है तथा तीनों लोकों में अपनी इच्छा से संचार करने में समर्थ है। तथा उसका कुलकूटस्थ हंस ब्रह्मा का वाहन था[1]। इसके पश्चात् वह दमयन्ती का वर्णन करके उसे नल की संघटना कराने का वचन देता है। इस प्रकार इस महाकाव्य में वही बात पर दूसरे रूप में प्रस्तुत की गयी है। हंस का इतना ऊंचा कुल उसकी बात को अधिक गौरव प्रदान करने में समर्थ होता है तथा जो तीनों लोकों में यथेच्छा से विहार करता है ऐसे उस पक्षी के लिए नल से दमयन्ती का संघटना कराना कोई कठिन कार्य नहीं होगा। इस प्रकार से यह परिवर्तन घटना को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने में सफल हुआ है।

महाभारतीय नलोपाख्यान में राजा नल से मुक्त किया गया वह हंस, हंसों के साथ विदर्भ में दमयन्ती के पास पहुंचा इतना संकेत मात्र मिलता है[2]। परन्तु 'नलाभ्युदयम्' महाकाव्य में यही घटना पर्याप्त विस्तार के साथ वर्णित है। यहां पर महाकाव्यों की रीति[3] के अनुसार नगर का वर्णन किया गया है[4]।

मूलकथा में लोकपालों के दमयन्ती-स्वयंवर में आने की बात तो मिलती है[5] परन्तु उनकी इस यात्रा का वर्णन नहीं मिलता। 'नलाभ्युदयम्' महाकाव्य में देवताओं के विदर्भ तक आने तक का ही वर्णन विस्तार से किया गया है[6]। महाकाव्यों में यात्रा का वर्णन होना चाहिए[7] सम्भवतः इसीलिए कवि ने मूलकथा की इस संक्षिप्त घटना का इस प्रकार से विस्तार किया है।

नलोपाख्यान के अन्तर्गत दमयन्ती से विवाह करके नल ने दमयन्ती के साथ रमण किया ऐसा उल्लेख मिलता है[8]। 'नलाभ्युदयम्' में इसी प्रसंग में वसन्त वर्णन भी

१-नलाभ्युदयम् २।८-११

२- म०भा० वनपर्व ५०।२३

३- मुनिस्वर्गपुराध्वरा:.... । सा०द०६।३२३

४- नलाभ्युदयम् ३।४२-५६

५-म०भा० वनपर्व ५१।२६

६-नलाभ्युदयम् ३।४२-५६

७-रणप्रयाणोपयमन्त्रपुत्रोदयादय:। सा०द०६।३२३

८- म०भा० वनपर्व ५४।४६-४८

मिलता है[1]। महाकाव्यों में ऋतुवर्णन उचित स्वीकार किया गया है[2], ऋतुवर्णन के लिए कवि ने बहुत ही उचित स्थल खोज निकाला है। नवविवाहित दम्पति के लिए वसन्त ऋतु का वर्णन उद्दीपन विभाव के रूप में प्रस्तुत होकर सोने में सुहागे का काम करता है।

इसी प्रकार उन्होंने रमणीय वनोपवनों में विहार किया[3] इसके स्थान पर 'नलाभ्युदयम्' महाकाव्य में उनके उपवन विहार का वर्णन उपलब्ध होता है[4], इसी प्रकार यहां जलक्रीड़ा[5] का भी वर्णन मिलता है। मूलकथा का इस प्रकार का विस्तार सम्भवत: महाकाव्यों के शास्त्र निर्दिष्ट विषयों के समावेश के लिए किया गया होगा।

दमयन्ती-स्वयंवर से लौटते हुए लोकपालों से कलि की भेंट के बाद से लेकर दमयन्ती के चेदिनगर में सुनन्दा के साथ रहने तक की कथा महाभारतीय नलोपाख्यान में बड़े विस्तार से आठ अध्यायों में उपलब्ध होती है[6]। 'नलाभ्युदयम्' महाकाव्य में यही कथा अत्यन्त संकुचित रूप में प्रस्तुत की गयी है[7]। एक ही सर्ग में यहां इतनी कथा का वर्णन मिलता है। सम्भवत: इतनी कथा को अधिक रुचिकर न समझकर कवि ने संक्षेप में उसका वर्णन कर दिया है अथवा हो सकता है कि नल चरित के पूर्वार्द्ध का वर्णन ही कवि को अभीष्ट रहा हो। शेष कथा का इसलिए संक्षेप में वर्णन कर दिया गया हो।

इसी प्रकार वन में दमयन्ती का परित्याग करके नल द्वारा कर्कोटक की रक्षा के प्रसंग से लेकर नलान्वेषण के लिए भेजे गए विदर्भाधिपति के चरों के पृथ्वी पर परिभ्रमण तक की कथा महाभारत के अन्तर्गत बड़े विस्तार से मिलती है[8]। 'नलाभ्युदयम्' महाकाव्य के अन्तर्गत इतनी सब कथा का निबन्धन केवल एक सर्ग में

१-नलाभ्युदयम् ६।१- ११
२-प्रातर्मध्याह्नमृगयाशैलर्तुवनसागरा:।सा०द०६।३२२
३-म०भा०वनपर्व ५४।४८
४-नलाभ्युदयम् ६।४५-५१
५-नलाभ्युदयम् ६।५२-६३
६-म०भा०वनपर्व ५५-६२
७-नलाभ्युदयम् सर्ग७
८-म०भा०वनपर्व ६३-६७

किया गया है[1] । सम्भवत: कवि का लक्ष्य नल-कथा के पूर्वार्द्ध का वर्णन रहा होगा । नल-दमयन्ती - कथा के उत्तरार्द्ध के वर्णन के प्रति कवि की विशेष रुचि नहीं परिलक्षित होती ।

'नलाभ्युदयम्' महाकाव्य में आठ ही सर्ग उपलब्ध होते हैं, अतएव प्रस्तुत ग्रन्थ के अनुपलब्ध अंश में नलदमयन्ती की कथा का किस प्रकार से विकास हुआ होगा, यह कहना कठिन है । इस महाकाव्य के उपलब्ध भाग के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नलदमयन्ती कथा के रस की दृष्टि से विकास के विषय में यह ग्रन्थ महत्वपूर्ण है ।

'नलाभ्युदयम्' पूरा नहीं मिलता है अतएव इसमें कार्य अर्थप्रकृति के रूप में ग्रन्थकार को क्या अभिप्रेत रहा होगा, यह कह सकना कठिन है । इसी प्रकार फलागम अवस्था तथा निर्वहण सन्धि के विषय में भी कहा जा सकता है । इस अवस्था में यहां अर्थप्रकृतियों अवस्थाओं तथा सन्धियों का निर्देश नहीं किया जा सका है ।

नलोदयम्

जैसा कि प्रस्तुत प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में कहा जा चुका है, 'नलोदयम्' यमक काव्य है । इसमें महाभारतीय नल दमयन्ती कथा लगभग उन्हीं घटनाओं के साथ प्रस्तुत की गयी है । इसमें घटनाओं का क्रम भी लगभग वैसा ही है जैसा मूलकथा में मिलता है । इस अवस्था में यहां पर नलोदयम् की कथा को प्रस्तुत करना मूलकथा की पुनरुक्तिमात्र होगा अतएव यहां नलोदयम् की कथावस्तु न देकर केवल मूलकथा से उसमें भेदों का विवेचन किया जायगा ।

महाभारतीय नलोपाख्यान में नारद और पर्वत के इन्द्रभवन में जाने की कथा मिलती है[2] । नारद इन्द्र को दमयन्ती स्वयंवर का समाचार देते हैं[3] ।

१-नलाभ्युदयम् सर्ग८
२-म०भा० वनपर्व ५१।१४
३-म०भा० वनपर्व ५१।२२

'नलोदयम्' में नारद का यह वृत्तान्त नहीं उपलब्ध होता [१]।

महाभारतीय नल-दमयन्तीय कथा के अन्तर्गत वन में दमयन्ती की तापसों से भेंट की घटना आयी हुई है [२]। 'नलोदयम्' के अन्तर्गत यह घटना एकदम ही नहीं मिलती [३]। सम्भवत: कवि ने इस घटना को अरोचक समझ कर छोड़ दिया होगा।

मूल कथा में नल एवं दमयन्ती के विवाह के पश्चात् वसन्त वर्णन नहीं मिलता [४]। 'नलोदयम्' के अन्तर्गत इस प्रसंग में वसन्त ऋतु का वर्णन मिलता है [५]। जैसा कि इसी अध्याय में 'नलाभ्युदयम्' महाकाव्य के प्रसंग में स्पष्ट किया गया है, यह नवीनता उचित प्रतीत होती है।

महाभारतीय नलोपाख्यान में कलि ने मूत्रत्याग के पश्चात् बिना पैर धोये सन्ध्या करते हुए नल में प्रवेश कर लिया' ऐसा उल्लेख मिलता है [६]। परन्तु 'नलोदयम्' के अन्तर्गत वन की ओर जाते हुए नल में छिद्रान्वेषण-निरत कलि के प्रवेश की कथा मिलती है [७]। इस परिवर्तन का कोई विशेष कारण नहीं प्रतीत होता।

'नलोदयम्' के अन्तर्गत कलि के आक्रमण से नल को जलोदर होने की कथा मिलती है [८]। 'नलोपाख्यान' में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं मिलता है [९]। 'नलोदयम्' की प्रबोधिनी टीका में इसे पुराणवार्ता कहा गया है।

मूलकथा के अन्तर्गत वन में नल तथा दमयन्ती के परस्पर वियुक्त हो जाने के पश्चात् पहले दमयन्ती के [१०] तथा उसके बाद नल के वृत्तान्त [११] का वर्णन उपलब्ध होता है। परन्तु 'नलोदयम्' में पहले नल का [१२] और उसके पश्चात् दमयन्ती के वृत्तान्त [१३] का वर्णन मिलता है। कलि के प्रसंग से लेकर यहां तक की कथावस्तु 'नलोदयम्' के एक ही सर्ग में निबद्ध की गयी है। नल ने दमयन्ती का परित्याग किया, इसके पश्चात् संभवत:

१- नलोदयम्
२-म०भा० वनपर्व ~~नलोपाख्यान~~ 61/64-84
३-नलोदयम् २।१-१५
४-म०भा० वनपर्व ~~५६।३~~ नलोपाख्यान
५-नलोदयम् ~~३।६~~ 2/1-15
६-म०भा०वनपर्व ~~६३।६४-६४~~ 56/3
७- नलोदयम् 2/6
८- नलोदयम् ३।७
९-म०भा०वनपर्व-नलोपाख्यान
१०-म०भा०वनपर्व ६०-६२
११-म०भा०वनपर्व ६३-६४
१२-नलोदयम् ३।१२-२३
१३-नलोदयम् ३।२४-५४

वर्णन की सुविधा को दृष्टि में रखते हुए कविने इसी प्रवाह को अक्षुण्ण रखते हुए नल के आगे का वृत्तान्त का भी वर्णन प्रस्तुत कर दिया होगा । इसके अतिरिक्त इस पौर्वापर्य का कोई विशेष कारण नहीं परिलक्षित होता है ।

'नलोदयम्' में केवल चार सर्गों के अन्तर्गत ही नल-चरित के पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध दोनों को ही प्रस्तुत किया गया है । इस अवस्था में मूल कथा की सभी घटनाओं का यहां संक्षिप्तरूप उपलब्ध होता है । नलोपाख्यान के अन्तर्गत मिलने वाली पक्षियों द्वारा नल के वस्त्रापहरण की घटना का[1] यहां बहुत ही संक्षेप में उल्लेख मिलता है[2] । मद हाथियों द्वारा वन में वणिक् सार्थ के मर्दन की महाभारतीय घटना[3] की 'नलोदयम्' में उपेक्षा की गयी है[4] । इसका कोई विशेष कारण नहीं प्रतीत होता ।

जैसा कि प्रस्तुत ग्रन्थ के द्वितीय अध्याय में कहा जा चुका है, नलोदयम् यमक काव्य है । कवि का लक्ष्य भिन्न-भिन्न प्रकार की यमक रचना ही प्रतीत होता है । नल दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से यह ग्रन्थ कुछ विशेष महत्त्व नहीं रखता है । आचार्य मम्मट के अनुसार यह अवर कोटि का काव्य है[5] । यहां कवि की दृष्टि केवल यमक निबन्धन की ओर केन्द्रित प्रतीत होती है । जैसे-तैसे नलोपाख्यान को कथा को प्रस्तुत कर दिया गया है, सन्धियों आदि के निबन्धन की ओर कवि की रुचि एकदम ही नहीं प्रतीत होती इस दशा में यहां उनका निर्देश महत्त्वहीन समझकर नहीं किया गया है ।

राघवनैषधीयम्

जैसा कि प्रस्तुत प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में कहा जा चुका है, 'राघवनैषधीयम्' में राम तथा नल दोनों की कथाओं का एक साथ ही श्लेष के बल

१- म०भा० वनपर्व ५८।१३-२०

२- नलोदयम् ३।१०

३- म०भा० वनपर्व ६२।६-६

४- नलोदयम्

५- काव्यप्रकाश १।५

से निबन्धन किया गया है । 'राघवनैषधीयम्' की कथावस्तु [illegible] [1]
ही है अतएव यहाँ पर उसका उपादान अनावश्यक प्रतीत होता है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान के विपरीत 'राघवनैषधीयम्'
महाराज नल के राजा सुबाहु का मर्दन करके उससे कर लेने की बात आ
इसका श्लेष रचना से इतर कोई अन्य प्रयोजन नहीं प्रतीत होता ।

मूलकथा में दमयन्ती का सन्देश महाराज नल तक पहुंचा है
उस हंस की कोई भी बात नहीं उल्लिखित है[2] । परन्तु 'राघवनैषधीयम्' [illegible]
के ब्रह्मलोक-गमन की ओर निर्देश मिलता है[3] । इसका भी प्रयोजन श्लेष विधान की
सुविधा के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं परिलक्षित होता है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत नल की माताओं का उल्लेख नहीं
मिलता है[4] परन्तु 'राघवनैषधीयम्' के अन्तर्गत विवाह के पश्चात् नल ने अपनी
माताओं को प्रणाम किया ऐसा उल्लेख मिलता है[5], यह भी कोई विशेष महत्व
नहीं रखता प्रतीत होता है ।

महाभारतीय नल-दमयन्ती की कथा के अन्तर्गत महाराज ऋतुपर्ण के
राजर्षि होने का रहस्य, रहस्य ही रह जाता है[6] परन्तु राघवनैषधीयम् के अन्तर्गत
ऋतुपर्ण स्वयं अपने मित्र बाहुक(नल) के सम्मुख अपनी कथा सुनाते हैं[7] । सम्भवत:
राम की कथा के साथ नल की कथा को प्रस्तुत करने में कवि को इतनी कथा और
जोड़ देने से कुछ सुविधा प्रतीत होती होगी वैसे इस नवीनता का भी कथा के विकास
की दृष्टि से कुछ मूल्य नहीं प्रतीत होता ।

उक्त कथा के पश्चात् ही इन्द्रजाल द्वारा ऋतुपर्ण के स्वर्गीय पिता के
चरित का विस्तार[8] भी यहां मूल कथा से भिन्नता है । राम की कथा में भरत

१- रा०नै०१।७
२- म०भा० वनपर्व ५०-५१
३- रा०नै० १।२४
४- म०भा० नलोपाख्यान
५- रा०नै० १।३५
६-म०भा० नलोपाख्यान
७-रा०नै० १।५२-५५
८-रा०नै०१।५६

दशरथ की मृत्यु का वृत्तान्त सुनाते हैं, इस कथा के निबन्धन के साथ-साथ नल की कथा के प्रवाह को भी अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सम्भवत: कवि ने इस इन्द्रजालादि की कल्पना की होगी ।

महाभारतीय नलोपाख्यान के विपरीत राघवनैषधीयम् के अन्तर्गत ऋतुपर्ण के पास रहते हुए बाहुक(नल) के नारायण की वन्दना करके पत्नी से पुनर्मिलन रूप वर मांगने[1] का उल्लेख मिलता है । यह नवीन कल्पना भी सम्भवत: श्लेष की पूर्ति के उद्देश्य से की गयी होगी । कथा के विकास के सम्बन्ध में इसका भी अपना कोई विशेष महत्व नहीं परिलक्षित होता है ।

राघवनैषधीयम् में कवि का प्रयत्न एक मात्र श्लेष द्वारा दो कथाओं को समानरूप से उपन्यस्त करने की ओर केन्द्रित प्रतीत होता है । नल दमयन्ती - कथा के विकास की दृष्टि से यह ग्रन्थ महत्व-हीन है । यह भी आचार्य मम्मट के अनुसार अवर कोटि का काव्य ठहरता है । इसमें संधियों आदि के निबन्धन की ओर कवि की तनिक भी रुचि नहीं परिलक्षित होती । अतएव उनका निर्देश यहां अनपेक्षित प्रतीत होता है ।

उत्तरनैषधम्

'उत्तरनैषधम्' महाकाव्य में नल-चरित के उत्तरार्द्ध का वर्णन मिलता है । किस इसकी भी कथावस्तु प्राय: मूलकथा के समान ही मिलती है । अतएव यहां उसकी कथावस्तु देना अनपेक्षित प्रतीत होता है । इस स्थिति में यहां पर मूलकथा से उसके वैषम्यों का ही विवेचन किया जायगा ।

'उत्तरनैषधम्' महाकाव्य के प्रारम्भिक पांच सर्गों में महाकाव्यों में वर्णन के लिए उपयुक्त ऋतुवर्णन[2], उद्यान विहार[3], जलक्रीडा[4], चन्द्रोदय[5], हिमालय[6] और सागर[7]

१- रा०नै०१।६६
२- उत्तरनैषधम् सर्ग १
३- उत्तरनैषधम् सर्ग १
४- उत्तरनैषधम् सर्ग २
५-उत्तरनैषधम् सर्ग १४
६-उत्तरनैषधम् सर्ग ५
७-उत्तरनैषधम् सर्ग ५

आदि का वर्णन किया गया है । नलोपाख्यान में हैम हंस केवल नल और दमयन्ती को परस्पर अनुरक्त कराने का ही कार्य करता है परन्तु 'उत्तरनैषधम्' में वह नल और दमयन्ती के विवाह के पश्चात् भी क्रीडाओं में उनका साथ देता है[1]। हिमालय पर्वत पर पहुंचे हुए नल और दमयन्ती को वह उमा के तप की कथा[2] और सागर की कथा सुनाता है[3]। नलदमयन्ती कथा में आने वाले सभी पात्रों को 'उत्तरनैषधम्' में भी स्थान मिला है । केवल हंस का सम्बन्ध मूल कथा के अन्तर्गत इस कथा के पूर्वार्द्ध मात्र से था अतः कवि ने कथा के उत्तरार्द्ध में भी उसके लिये स्थान बना लिया ।

सप्तम सर्ग में नल में प्रवेश प्राप्त करने के लिए अधीर कलि के खेद का प्रदर्शन किया गया है । वहां विभीतक पर स्थित कलि पुष्पावचयन करती हुई सुन्दरी दमयन्ती को देखकर काममोहित हो जाता है और तब वह भैमी या नल किसी भी एक में प्रविष्ट होने के लिए अधीर हो उठता है । नलोपाख्यान में ऐसा कोई उल्लेख नहीं मिलता । इस नवीन कल्पना में कोई विशेष प्रयोजन या चमत्कार नहीं परिलक्षित होता ।

नलोपाख्यान के अनुसार वन में भटकती हुई दमयन्ती चेदिनगर की ओर प्रस्थित एक वणिक्सार्थ के साथ साथ चेदिनगर की ओर जाती है । मार्ग में रात्रि के समय एक वन्य गज यूथ सोये हुए यात्रियों पर आक्रमण करके उस सार्थ को नष्टप्राय कर लेता है । अब दुष्टयात्रियों से भयभीत दमयन्ती छिप जाती है और फिर उनके पीछे-पीछे चलकर चेदिनगर में पहुंचती है , ऐसा उल्लेख मिलता है । उत्तरनैषधम् में वन्यगजों द्वारा वणिक्सार्थ के मर्दन की घटना की अवहेलना की गयी है[4]।

निषधा में पुन: अधिष्ठित नल का राजसभा में अपने मन्त्री सुमति से सम्भाषण[5] भी नलोपाख्यान से 'उत्तरनैषधम्' की नवीनता है । मन्त्रिप्रवर सुमति ने

१- उत्तरनैषधम् सर्ग २-५

२- उत्तरनैषधम् सर्ग ४

३- उत्तरनैषधम् सर्ग ५

४- उत्तरनैषधम् सर्ग१०

५- उत्तरनैषधम् सर्ग १५

महाराज नल को राजधर्म का उपदेश दिया । महाभारतीय नलोपाख्यान में महाराज नल एवं दमयन्ती को इन्द्रसेन तथा इन्द्रसेना इन दो सन्तानों की उत्पत्ति का तो उल्लेख मिलता है[1] परन्तु उनके संस्कारों आदि के विषय में कोई भी संकेत नहीं उपलब्ध होता[2] । 'उत्तरनैषधम्' के अन्तर्गत दमयन्ती के गर्भाधान से लेकर इन्द्रसेन के वेदाध्ययन तक की कथा पर्याप्त प्रपंच के साथ उपन्यस्त की गयी है[3] । महाकाव्य में पुत्र का सांगोपांग वर्णन उचित ही कहा गया है[4] । इसके अतिरिक्त वात्सल्य रस के लिए इसप्रकार से कवि ने अनुकूल भूमि तैयार की है

मूल कथा के अन्तर्गत 'पुष्कर' के कहने से महाराज नल द्यूत में प्रवृत्त में हो गए केवल इतनी ही सूचना मिलती है[5] । 'उत्तरनैषधम्' के अन्तर्गत इस स्थल पर महाराज नल एवं पुष्कर में वाक्कलह का निबन्धन किया गया है[6] । कलि से प्रचोदित पुष्कर की उद्धत प्रकृति तथा महाराज नल की कलि के प्रभाव से ऐसी स्थिति के कारण दोनों में कलह होना अस्वभाविक नहीं प्रतीत होता । इसके अतिरिक्त इसप्रसंग के विस्तार के द्वारा कवि ने दोनों राजाओं के वंश की ओर भी प्रकाश डाला है ।

मूल कथा में नलचरित के उत्तरार्द्ध में होने वाले नल दमयन्ती के पुनर्मिलन की घटना[7] का अधिक विस्तार नहीं मिलता है । 'उत्तरनैषधम्' के अन्तर्गत यही घटना काफी विस्तार के साथ उपलब्ध होती है[8] । संभोग-शृंगार के लिए उपयुक्त स्थान होने के कारण सम्भवत: कविने इस घटना का वर्णन विस्तारपूर्वक किया है ।

'उत्तरनैषधम्' की शेष कथावस्तु मूल कथा के समान ही प्रतीत होती है ।

अर्थप्रकृतियां

यह काव्य इस दृष्टि से विचित्र प्रतीत होता है कि इसमें प्रारम्भ के छ: सर्गों में केवल प्रकीर्ण विषयों का ही वर्णन किया गया है । बीज का उपन्यास सप्तम सर्ग में जाकर उपलब्ध होता है । कलि ने द्वापर से कहा[9], 'वह धार्मिक राजा

१- म०भा० वनपर्व ५४।४६
२- म०भा० नलोपाख्यान
३- उत्तरनैषधम् सर्ग ६
४- सा०द० ६।३२३
५- म०भा० वनपर्व ५६।७-८
६- उत्तरनैषधम् सर्ग ८
७- म०भा० वनपर्व ७४।४८-५४
८- उत्तरनैषधम् सर्ग १४
९- उत्तरनैषधम् सर्ग७

नल हमारे-तुम्हारे द्वारा भला किस प्रकार से मध्य हो सकता है क्योंकि मेरा कामादिक वर्ग वहां निष्प्रभ होकर अभिसार की भांति मुझे ही मथता है ।[1] इसी वाक्य में बीज का उपन्यास किया गया है ।

वन में स्वर्णमय पक्षियों को देखकर उन्हें ग्रहण करने के लिए नल यत्नवान् हो गए । इस प्रकार मुख्य कथा का प्रवाह कुछ ठहर-सा गया परन्तु उसी समय वस्त्र का भक्षण करते हुए पक्षियों के उड़ जाने से मुख्य कथातन्तु पुनः संयुक्त हो जाता है । अतएव यहां 'विन्दु' नामक अर्थप्रकृति स्वीकार की जा सकती है ।

पताका तथा प्रकरी अर्थप्रकृतियों की यहां योजना नहीं की गयी है ।

प्रिया दमयन्ती, पुत्रों और राज्यलक्ष्मी से नल का पुनः युक्त हो जाना 'कार्य' नामक अर्थप्रकृति है ।

अवस्थायें

कर्कोटक के कथनानुसार प्रिया के पुनर्मिलन के लिए बाहुक रूप से नल का ऋतुपर्ण के यहां दासत्व ग्रहण करना,[2] आरम्भ नामक अवस्था है ।

अपने द्वितीय स्वयंवर का समाचार भिजवाने वाली दमयन्ती की मनोगत बात ज्ञात करने के लिए, कुण्डिनपुर जाने की इच्छा करने वाले बाहुक द्वारा ऋतुपर्ण को कुण्डिनपुर पहुंचाने की शपथ लेना[3] यत्न नामक अवस्था है ।

ऋतुपर्ण से अक्षविद्या सीखते ही नल कलि-निर्मुक्त हो गये परन्तु दमयन्ती द्वितीय स्वयंवर करना चाहती है, इस बात से उनका चित्त व शंकित है[4] । इस दशा में प्राप्त्याशा अवस्था स्वीकार की जा सकती है ।

आकाशवाणी द्वारा दमयन्ती की पवित्रता प्रमाणित हो जाने पर[5] नियताप्ति नामक अवस्था है ।

१- उत्तरनैषधम् सर्ग६
२- उत्तरनैषधम् सर्ग ११
३- उत्तरनैषधम् सर्ग १२
४-उत्तरनैषधम् सर्ग १३
५-उत्तरनैषधम् सर्ग १३

~~नि[illegible]-नामक-अवस्था-है~~

नल का प्रिया और राज्यलक्ष्मी में पुन: संयोग फलागम अवस्था है ।

संधियां

ग्रन्थके प्रारम्भ से लेकर निश्चित अर्थ वाला, वह धार्मिक राजा हमारे तुम्हारे द्वारा भला किस प्रकार से मध्य हो सकता है[१] इत्यादि वाक्य तक मुख सन्धि है ।

पुष्कर से द्यूत में निरन्तर पराजित होते हुए नल पुष्कर के प्रोत्साहित करने पर भी, दमयन्ती का पण नहीं करते[२] । मुखसन्धि के पश्चात् यहां तक प्रतिमुख संधि स्वीकार की जा सकती है ।

ऋतुपर्ण के साथ बाहुक के कुण्डिनपुर आने तक[३] गर्भ संधि है ।

तदनन्तर नल के विकृत रूप और दमयन्ती के द्वितीय स्वयंवर की बात से[४] नल के प्रियासमागम में विघ्न होता है अतएव यहां अवमर्श सन्धि है ।

इसके पश्चात् आकाशवाणी द्वारा दमयन्ती की पवित्रता प्रमाणित हो जाने पर स्वरूप प्राप्त नल को प्रिया और राज्य की प्राप्ति होना निर्वहण संधि है[५] ।

कल्याण नैषधम्

'कल्याणनैषधम्' के अन्तर्गत ग्रन्थकार ने नल तथा दमयन्ती की सम्पूर्ण महाभारतीय कथा को लगभग उसी रूप में प्रस्तुत कर दिया है । सम्पूर्ण कथावस्तु में कोई भी नवीनता नहीं परिलक्षित होती व सभी घटनाएं अपरिवर्तित हैं । इस स्थिति

१- उत्तरनैषधम् सर्ग ७

२- उत्तरनैषधम् ८ सर्ग

३- उत्तरनैषधम् १३ सर्ग

४- उत्तरनैषधम् १३ सर्ग

५- उत्तरनैषधम् १४-१५ सर्ग

५-क

में यहां प्रस्तुत महाकाव्य की कथावस्तु का उपादान अपेक्षित है । यहां पर तुलना से इसकी कथा में जो भेद मिलते हैं केवल उनका विवेचन किया जाता । ग्रन्थ में दो स्थानों[1] पर नल के सारथी का नाम वार्षेय और अन्य स्थल[2] पर वार्ष्णेय उल्लिखित है । इससे प्रतीत होता है कि ग्रन्थकार को परम्परा से प्राप्त वार्ष्णेय अभिधान ही अभीष्ट है, वार्षेय नहीं । जो वार्षेय नाम मिलता है, वह सम्भवत: लेखन की त्रुटि होगी ।

इसी प्रकार नलोपाख्यान के अन्तर्गत दमयन्ती के पिता का 'भीम' नाम निर्दिष्ट है[3] और कल्याणनैषधम् में भी कहीं-कहीं उनका 'भीम' ही नाम आया हुआ है[4]। परन्तु 'कल्याणनैषधम्' में एक स्थल[5] पर दमयन्ती के पिता का नाम 'भीम' के स्थान पर 'भीष्म' उल्लिखित है । सम्भवत: यह भी लेखन की त्रुटि ही होगी ।

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है, मूल कथा के अन्तर्गत वन में[6] परस्पर वियुक्त नल तथा दमयन्ती में से पहले दमयन्ती का और उसके पश्चात् नल का वृत्तान्त[7] वर्णित है । परन्तु 'कल्याण नैषधम्' [8] में इस विषय में पौर्वापर्य मिलता है । इस परिवर्तन का कोई विशेष ~~परिवर्तन~~ प्रयोजन नहीं समझ में आता है ।

मूल कथा में वन्य गजों द्वारा वणिक्सार्थ के मर्दन की घटना आयी हुई है[9]। 'कल्याणनैषधम्' में इसका कोई भी उल्लेख नहीं मिलता[10]। इसका भी कोई विशेष कारण नहीं प्रतीत होता ।

नल-दमयन्ती कथा के विकास की दृष्टि से यह महाकाव्य कुछ विशेष महत्त्व नहीं रखता । अर्थप्रकृतियों आदि के सन्निवेश के प्रति कवि की तनिक भी रुचि नहीं परिलक्षित होती । अतएव यहां पर उनका निर्देश नहीं किया जा रहा है ।

१-कल्याण नैषधम् पृ०६(उपचरदति प्राज्ञावार्षेयं नलसारथिं, तथा तेति गत्वा वार्षेयो विदर्भान्बालकावुभौ।।

२-कल्याण,नैषधम,पृ०१८(आरुरोह रथं राजा वार्ष्णेय चाध्यरोहयत्।)

३-म०भा०वनपर्व ५०।७-१०

४- अथभीमो महीपालो दमयन्तीकल्याणम्५।१

५- विदर्भ विषये धीमांन् भीष्मो नाम महीपति:।।१।७

६- म०भा० वनपर्व ६०-६२

~~७- म०भा०वनपर्व६३-६४~~

७- कल्याण नैषधम ३-४

८- म०भा०वनपर्व ६२।६-१०

इस प्रकार से महाभारतीय नलोपाख्यान पर आधारित महाकाव्यों की एक परम्परा मिलती है । इनमें से कुछ महाकाव्य उपलब्ध ही नहीं होते, तथा कुछ प्रस्तुत कथा के विकास की दृष्टि से महत्त्वहीन हैं । परन्तु ऐसे भी अनेक महाकाव्य मिलते हैं जिनमें मूल कथा का पर्याप्त विकसित रूप परिलक्षित होता है । महाकाव्यों मे मूलकथा से ये परिवर्तन कहीं नायक अथवा नायिका के चरित्र को उदात्त रूप देने के लिए, कहीं उनके चरित्रगत मालिन्य के प्रक्षालन के लिए, कहीं रस को दृष्टि में रखकर और कहीं पर किसी विशिष्ट प्रयोजन के अभाव में परम्परागत कथा को कुछ नवीनता देने के लिए ही कर दिये गये हैं । ये परिवर्तन कहीं मूल कथा में नवीन घटनाएं जोड़कर कहीं उसकी कुछ घटनाओं की उपेक्षा करके, कहीं संक्षिप्त घटनाओं का विस्तार करके, कहीं विस्तृत घटनाओं का,संकोच करके, और कहीं घटनाओं का क्रम बदलकर किया गया है । जैन कवियों ने इस कथा के अन्तर्गत उपलब्ध होने वाले पात्रों के नामों में भी कुछ भेद किया है । कहीं पर नलोपाख्यान की सम्पूर्ण कथा का , कहीं पर केवल उसके पूर्वार्द्ध का और कहीं पर केवल उसके उत्तरार्द्ध का ग्रहण किया गया है । उसकी कथा का कहीं सौ सर्गों में और कहीं चार ही सर्गों में वर्णन मिलता है । ये परिवर्तन किस दृष्टि से कितने महत्त्वपूर्ण हैं, यही इनके औचित्य को निर्धारित करता है । इस प्रकार से नलोपाख्यान विषयक सम्पूर्ण महाकाव्य साहित्य को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि महाकाव्यों के रूप में भी नल-दमयन्ती कथा का पर्याप्त विकास हुआ है ।

-0-

पंचम अध्याय

-0-

चम्पू काव्य के रूप में नलदमयन्ती कथा का विकास

पंचम अध्याय

-o-

चम्पू काव्य के रूप में नल दमयन्ती कथा का विकास

नल दमयन्ती कथा के आधार पर संस्कृत साहित्य नाटक और महाकाव्य ही नहीं चम्पू काव्यों की भी रचना हुई है ।

चम्पू काव्य का स्वरूप

दण्डी[1] तथा विश्वनाथ[2] ने चम्पु काव्य को गद्य-पद्यमयी रचना कहा है । कथा और आख्यायिका में भी गद्यों के बीच पद्य तथा पद्यात्मक पुराणों मेंपद्यों के बीच गद्य के दर्शन होते हैं । नाटक में भी गद्य और पद्य दोनों का प्रयोग मिलता है परन्तु नाटक में गद्य और पद्य का समानरूप से मिश्रण नहीं होता । यही नहीं, उसमें नान्दी,प्ररोचना, अवस्थाओं,अर्थप्रकृतियों तथा सन्धियों आदि का सन्निवेश मिलताहै । चम्पू में पद्यों के लिए कोई स्थान निश्चित नहीं किया गया है । इसमें किसी विचार विशेष को सूचित करने के लिए किसी आलंकारिक वर्णन के लिए,नैतिकता सूचित करने के लिए अथवा भावावेश के वर्णन के लिए ही श्लोकों का प्रयोग नहीं मिलता है । अपितु वही

१- काव्यादर्श - ३१

२- सा०द० ७।३३६

बात गद्य में भी और पद्य में भी कहा जा सकता है । इसमें गद्य और पद्य का समान स्थान होता है[1] । चम्पू में कवि जिस उत्साह से एक विषय का वर्णन गद्य में प्रस्तुत करता है, उसी उत्साह से पद्य में भी उसका वर्णन करता हुआ दृष्टिगोचर होता है । इस प्रकार काव्य की इस विधा में गद्य और पद्य दोनों का ही उत्कृष्ट रूप दृष्टिगोचर हो सकता है तथा गद्य अथवा पद्य एक ही शैली में निबद्ध काव्य को पढ़ने से जो विरक्ति-सी होने लगती है, वह भी यहां नहीं होने पाती ।दासगुप्त तथा डे महोदय ने अपने इतिहास ग्रन्थ में इसे गद्य काव्य का ही विकसित रूप स्वीकार किया है[2] ।

प्राचीन गद्य काव्यों में पद्य की मात्रा अत्यल्प थी परन्तु परवर्ती गद्यकाव्यों में शनैः शनैः पद्य की मात्रा में वृद्धि होने लगी । गद्य काव्य में पद्य प्रयोग के विषय में निर्धारित नियमों पर कवियों ने ध्यान नहीं दिया । सभी स्थलों में सभी प्रकार के पद्यों का प्रयोग होने लगा । इस प्रकार की नई शैली को चम्पू नाम से अभिहित किया गया[3] । सम्भवत: इसीलिए चम्पू और गद्य काव्यों में विषय और शैली की दृष्टि से कोई भेद नहीं है । दोनों में ही लम्बे-लम्बे काव्य तथा समस्त शब्दों से पूर्ण अलंकारों से बोझिल भाषा का प्रयोग मिलता है । दोनों ही में कल्पना और भावुकता के चमकीले रंग भरे हुए हैं । समासों के प्रयोग,और कृत्रिमता की दृष्टि से भी दोनों समान ही हैं ।दोनों में ही वर्ण्य वस्तु की अपेक्षा वर्णन का प्राधान्य , देवस्तुति,पूर्व कवियों की प्रशंसा, नायक-नायिका में से अन्यतम के जन्म के विषय में दैविक प्रभाव,अद्भुत घटनाओं आदि के विषय में समानता है । परन्तु गद्य काव्य के अन्तर्गत कवि की प्रतिभा का परिचायक गद्य होता है । जब कि चम्पू काव्य के अन्तर्गत गद्य और पद्य दोनों । गद्य काव्य में कथा का विकास केवल गद्य के माध्यम से होता है जब कि चम्पू में गद्य और पद्य दोनों ही इस विषय में सहायक होते हैं । चम्पू में इस गद्य-पद्य के समान सम्मिश्रण की ओर आचार्यों ने संकेत किया है । भोजकृत

१- हिस्ट्री आफ संस्कृत लिट्रेचर--दासगुप्त तथा डे,पृ०४३३-४३४

२- हिस्ट्री आफ संस्कृत लिट्रेचर --दासगुप्त तथा डे , पृ०४३०

३-डा० भोलाशंकर व्यास : संस्कृत कवि दर्शन,पृ०५१६

चम्पू रामायण[1] में गद्य-पद्य दोनों के मिश्रण के कारण चम्पू काव्य को विविध वाद्यों कलाओं में युक्त संगीत की तरह आह्लादकारी कहा गया है । यहां गद्य और पद्य के सम्मिश्रण के कारण इसे अन्यत्र[2] द्राक्षा से युक्त मधु के समान प्रसन्न करने वाला कहा गया है । कुछ ऐसे भी चम्पू मिलते हैं जिनमें पद्य का बाहुल्य है और गद्य लगभग नगण्य हैं । परन्तु इस प्रकार के चम्पू उच्चकोटि के नहीं कहे जाते हैं ।

पद्य विषयक भेद के अतिरिक्त भी चम्पू काव्य तथा गद्य काव्य की इतर विधाओं में पर्याप्त भेद है । आख्यायिका में उत्तम पुरुष का प्रयोग किया जाता है किन्तु चम्पू काव्य में प्रथम पुरुष का । कथा में उच्छ्वास नहीं होते जब कि चम्पू काव्य में उच्छ्वासों का प्रयोग मिलता है ।ये उच्छ्वास भी अंकित होते हैं । इस प्रकार चम्पू काव्य का स्वरूप गद्य-पद्य मिश्रित अन्य काव्य-विधाओं से नितान्त भिन्न होता है ।

दण्डी द्वारा प्रतिपादित चम्पू लक्षण की गद्य-पद्यमय नाटकादिकों में अतिव्याप्ति की आशंका से ईसा की बारहवीं शताब्दी में हेमचन्द्राचार्य ने 'काव्यानुशासन' में चम्पू का लक्षण -- गद्य-पद्यमयी सांका सोच्छ्वासा चम्पूः' इस प्रकार किया ।

संस्कृत साहित्य में नल-दमयन्ती कथा पर आधारित दो चम्पू काव्य होते हैं । इनमें से नल चम्पू तो सम्भवतः समस्त चम्पू साहित्य का सबसे उत्कृष्ट रत्न है ।

नल चम्पू

नल चम्पू यद्यपि महाभारतीय नल दमयन्ती कथा को प्रस्तुत करता है परन्तु यहां मूल कथा का रूप बहुत बदला हुआ मिलता है । इस स्थिति में मूलकथा से नल चम्पू की कथा में भेदों और उनके कारणों पर विचार करने से पूर्व संक्षेप

१- भोज: चम्पू रामायण, ३

२- वेंकटध्वरि: विष्णुगुणादर्श चम्पू

में नल चम्पू की कथा को देना आवश्यक प्रतीत होता है । नल चम्पू का कथा इस प्रकार है[1] --

"पृथ्वी के विस्तार की रुचिर लीला स्वरूप आर्यावर्त नामक देश था । उस आर्यावर्त के मध्य में निषध नामक प्रख्यात जनपद है जहां पुण्यात्माओं में अग्रगण्य नल नाम का राजा था । उस राजा का श्रुतशील नामक महामंत्री था । फिर कभी उस अमात्य पर राज्यप्राज्य के चिन्ता-भार को छोड़कर उस राजा ने संसार के सुखों का अनुभव किया । एक बार वर्षाकाल में मृगया वनपालकों ने राजा से कहा 'देव ! दो विशाल दांतों से विकट काल मुख वाला एक वनशूकर आपके क्रीडा वन में रक्षकों को भयभीत करता हुआ घूम रहा है ।' अब प्रशस्त अश्वों से युक्त अश्व पर आरूढ़ होकर राजा वन में पहुंचे । एक पंकिल पल्वल प्रदेश में उस शूकर को देखकर राजा ने उस पर वाणों की वर्षा कर दी । तब किसी प्रकार से शूकर पर विजय प्राप्त करके थके हुए राजा आम्रवृक्ष की जड़ पर बैठ गये उसी समय वहां कहीं से वल्कलधारी कोई एक यात्री आया । राजा की जयजयकार करके राजा के पूछने पर उस पथिक ने कहा, 'दक्षिण दिशा में गोदावरी के किनारे मैं भगवान स्कंददेव के दर्शन के लिए गया था । वहां से लौटने पर मैं मार्ग में एक न्यग्रोध की छाया में विश्राम करने लगा । इसी समय हथिनी पर आरूढ़ होकर कहीं जाती हुई किसी राजपुत्री ने भी उसी वृक्ष का आश्रय लिया । उस राजपुत्री के प्रत्येक वैशिष्ट्य के वर्णनक्रम में वही समर्थ है जिसके शेषनाग की तरह सहस्त्र जिह्वा हो । वहां उसने किसी उदीच्य यात्री से किसी उदीच्य राजा की श्लाघा सुनी । वह यात्री उस कन्या से कहने लगा, 'मनुष्यों में मणि बाल तुम दोनों के योग्य समागम से ब्रह्मा की विचित्र रचना संकल्प की कला का परिश्रम सफल होवे ।' उसी प्रकार वार्तालाप करने के कुछ समय पश्चात् पान्थ को भेजकर, सेवकों से अनुगम्यमान राजा अपने शिविर में आए । तब से निरन्तर वे कामाग्नि के कारण खिन्न थे ।

१- नल चम्पू

शरत्काल में एक बार नल ने शृंगार की पराकोटि को प्राप्त होकर उद्यान का सेवन प्रारम्भ कर दिया । कामिनियों द्वारा निर्दिष्ट वन्य विनोद स्थलों का अवलोकन करते हुए तथा उनके द्वारा किए गए भ्रमर तथा हरिणादिकों के वर्णन सुने । तब सर्वर्तु निवास नामक वन में विहार करते हुए नल ने वहां क्रीड़ानिरत राजहंसों में से एक को ग्रहण कर लिया । राजहंस ने राजा की प्रशंसा की तथा हंसी मोक्षयोग्य हंस के बन्धनकारी राजा को उपालम्भ देने लगी । परन्तु राजा ने अवैध्य पक्षपाती शकुन्त के बन्धन को उचित ही सिद्ध किया । उसी समय कल हंसों ने उस पक्षी के साथ मिथ्या कलह की । हंस ने राजा को आश्वासन दिया कि वह नल को भी प्रेम प्रपंच करने वाला नायक बनाने का उपाय करेगा । इसी समय आकाश वाणी सुनायी दी कि ' राजन् । इस हंस को मुक्त कर दो, दमयन्ती के प्रलोभन में यह तुम्हारा दूत बनेगा ।' तब चकित होकर नल मित्र हंस से वार्तालाप करते हुए लता मण्डप में स्थित एक शिलातल पर बैठ गये । हंस ने कहा, ' दक्षिण दिशा के विदर्भ मण्डल में वरदा नदी के तट पर कुण्डिन नामक नगर है । कुण्डिन नगर में अत्यन्तपराक्रमी भीम नामक राजा राज्य करता है । राजा भीम की प्रिया प्रियंगु-मंजरी समस्त अन्तःपुर की प्रधान महिषी है । एक बार वरदा तट पर एक शिशु को पेट से चिपकाकर तथा अन्य को पीठ पर वहन करती हुई वानरी को देखकर, निःसन्तान होने के कारण वह दम्पति बहुत खिन्न हुआ । सायंकाल उन दोनों ने जाकर भगवान शिव की वन्दना की । इसी बीच चन्द्रोदय हुआ और शिव चरणों की आराधना करते-करते वह प्रियंगुमंजरी दर्भशय्या पर ही निद्राभिभूत हो गयी ।

प्रातःकाल प्रियंगुमंजरी ने स्वप्न देखा कि चन्द्रमण्डल से अवतरित भगवान शिव ने उन्हें एक मंजरी प्रदान की है तथा आश्वासन दिया है कि कल उन्हें दमनक महामुनि का अनुग्रह प्राप्त होगा । प्रियंगु मंजरी ने उसे विनयपूर्वक स्वीकार कर लिया । इसी बीच प्रभात होने पर प्रबुद्ध होकर रानी ने सूर्य की स्तुति की। रानी से सब वृत्तान्त जानकर राजा ने गणेश द्वारा अनुगम्यमान शंकर के दर्शन रूप अपने स्वप्न का भी उल्लेख करके पुरोहित से इन दोनों स्वप्नों के अर्थ पूछे । पुरोहित ने बताया कि देवी को अवश्य ही परम यशस्वी सन्तान की प्राप्ति होगी । उसके पश्चात् तरुण सूर्यमण्डल से उतर कर एक मुनि वहां आए । राजा से सत्कृत होकर

मुनि ने राजप्रशंसा पूर्वक बताया " राजन् । भगवान शिव के आदेश से मैं यहां आया हूं । आपको कामतान्क नारत्न की प्राप्ति होगी ।" राजा ने मुनि को नानाविध तथा आभरण भेंट करने की इच्छा की परन्तु मुनि उन्हें अस्वीकार करके आकाश में चले गए । अब स्नान करके राजा ने धार्मिक कृत्य करने के पश्चात् भोजन किया । तदनन्तर गीतवाद्यादि सुनते हुए तथा नृत्य देखते हुए उन्होंने अपराह्ण पर्यंक पर व्यतीत किया । सन्ध्याकाल में सांध्य विधि सम्पन्न करके तथा उचित समय पर भोजन करके राजा ने प्रियंगुमंजरी के साथ रात्रि व्यतीत की । इस प्रकार आनन्दपूर्वक समय व्यतीत करते हुए प्रियंगुमंजरी ने गर्भ धारण किया । निरन्तर पति द्वारा पूर्ण विविध दोहद वाली रानी ने प्रसव समय के प्राय: पूर्ण हो जाने पर प्रभात काल में एक कन्या रत्न को जन्म दिया । राजा ने उसका नाम दमयन्ती रक्खा । शनै: शनै: वह कन्या सर्वगुण सम्पन्न हो गई और फिर उसमें यौवन का आविर्भाव हुआ ।"

इसे सुनकर पुलकित शरीर वाले राजा ने हंस से दमयन्ती का वय: वृत्तान्त पूछा । हंस ने कहा " देव । उसका लावण्य कुछ अनिर्वचनीय है तथा वह विश्व-विस्मयकारी सौभाग्य की कोई अपूर्व सम्पत्ति है । दमयन्ती का वर्णन सुनकर चकित राजा ने उसे पथिक द्वारा वर्णित कन्या से अभिन्न समझ लिया । दमयन्ती के विषय में पुन: पुन: सुनने की इच्छा रखते हुए भी नल हंस से बिदा लेकर आह्निक कर्म सम्पादन के लिए चले गए । चिरकाल तक वहां क्रीड़ा करने के पश्चात् वह हंस अपने समूह के स साथ उड़कर कुण्डिनपुर में कन्यान्त: पुरोद्यान के क्रीड़ा सरोवर में उतरा । वहां जल-विहार करती हुई कन्याओं से हंसों के आगमन का समाचार प्राप्त करके दमयन्ती ने सखियों को एक-एक हंस ग्रहण करने का आदेश दिया और स्वयं उसने एक हंस पकड़ लिया । दमयन्ती को आशीर्वाद देने के पश्चात् वह हंस नल की प्रशंसा करने लगा । तब दमयन्ती ने विचार किया कि गौरी महोत्सव के लिए प्रस्थित मेरे सम्मुख कहे पथिक ने जिस नल का वर्णन किया था वह नल होते हुए भी अनल है ।" नल के विषय में पूछती हुई दमयन्ती से वह पक्षी बोला " सुन्दरि । नाभि से उत्पन्न ब्रह्मा के समान समर में कभी भी अभिभूत न होने वाला वीरसेन निषध देश का राजा है । एक बार वीरसेन ने भगवान शिव की आराधना की और उससे वरदान प्राप्त करके रूपवती

प्रिया के साथ कामकेलि का फल प्राप्त किया । कुछ समय पश्चात् रानी रूपवती गर्भवती हुई और उन्होंने शुभमुहूर्त में पुत्र रत्न को जन्म दिया । "वह शत्रुओं के धन का अपहरण नहीं करेगा ।" इस अर्थ में ब्राह्मणों ने उसका नाम नल रक्खा । शनैः शनैः चूड़ाकरण आदि संस्कार हो जाने के पश्चात् विद्याग्रहण काल आने पर उपाध्याय को निमित्त मात्र बनाकर वह स्वयं ही सभी श्रेष्ठ विद्याओं में प्रवीण हो गया । नल का मित्र श्रुतशील शील वयो विद्यादिक में नल के ही समान था ।

एक बार प्रभातकाल में प्राभातिक कर्म के पश्चात् सभागृह में आसीन राजा के पास श्रुतशील तथा अन्य सहचरों के साथ जाकर नल ने पिता को प्रणाम किया और आसन ग्रहण कर लिया । अनभिवादन से रुष्ट सालंकायन ने उन्हें प्रणयपरुष वाणी में उपदेश दिया "कुमार ! अविनीत व्यक्ति अग्नि के समान जलता है तथा लोग उसका अभिनन्दन नहीं करते ।" राजा ने भी सालंकायन का समर्थन किया तथा अकेले राज्यभार वहन करने में अपनी असमर्थता प्रकट करके उन्होंने नल के राज्याभिषेक के लिए मौहूर्तिकों से शुभघड़ी निकलवाई । इसी समय कहीं से कुछ महर्षि आ गए । राजा से सत्कृत होकर उन्होंने राजा को कुमार के अभिषेक के लिए मन्दाकिनी, कालिन्दी, गोदावरी नर्मदा और सागर का जल दिया । राजा ने नल का राज्याभिषेक किया । उसी समय आकाश में आशीःश्लोक सुनाई दिए ।

इस उत्सव के कुछ समय पश्चात् नल से विदा लेकर राजा वानप्रस्थ के लिए चले गए । पिता के विरह के विषाद के कारण हा तात ! कहते हुए नल ने कुछ दिन आँखें भी नहीं खोलीं ।"

ऐसा कहकर हंस मौन हो गया । दमयन्ती की कामपरवशता देखकर उनकी सखी परिहासशीला ने हंस से नल का स्वरूपाख्यान करने की याचना की । हंस ने कहा "सुन्दरि ! संसाररूप सागर में नल और दमयन्ती रूपी ये दो रत्न हैं अतएव दमयन्ती सर्वथा नल के योग्य है । अब उत्तर दिशा के लिए प्रस्थित हंस से परिहासशीला ने नल से भी उसी प्रकार कहने का अनुरोध किया । "तुम्हारे विषय में दो बार सुना है-- पथिक से और इस राजहंस से, अब मेरी गति दो ही हैं तुम या मृत्यु," इस प्रकार नल के लिए [illegible] संदेश देती हुई दमयन्ती ने

कण्ठ से अपनी माला निकाल कर दोहरी की और हंस के गले में पहना दी । अब हंस के चले जाने के पश्चात् भी उसी दिशा में देखती हुई दमयन्ती बहुत समय पश्चात् सखियों के साथ घर आयी । तब से स्मरपीड़िता दमयन्ती के निःश्वास आयत हो गए ।

इधर वे पक्षी सरोवरों में विहार करते हुए नगर ग्राम पार करके निषधा के उद्यान में पहुंच गए और वहां स्वच्छन्द रूप से क्रीडा करने लगे । क्रीडा सरोवर में एक राजहंस को देख कर सरोरक्षिका ने राजा से निवेदन किया जिससे राजा ने व उन हंसों के भी आगमन का अनुमान कर लिया। तब वनपालिका द्वारा लाए गए हंस का स्वागत करके राजा ने उसे संताप तथा कामांकुर के प्ररोहक दिनों के विषय में बताया तथा हंस से पूछा कि उसने इतना समय किस प्रकार व्यतीत किया। हंस ने निषधा से जाने से लेकर दमयन्ती के साथ होने वाला समस्त वार्तालाप कह सुनाया । तत्पश्चात् एक चरण से कण्ठगता मुक्तावली निकाल कर उसने राजा को प्रदान की । मुक्तावली धारण करके राजा दमयन्ती के विषय में भांति-भांति की जिज्ञासाएं करते रहे । फिर मध्याह्न के समय हंस को अरविन्ददीर्घिका में विश्राम करने की सलाह देकर नल आह्निक कृत्यों के लिए वहां से चले गए । एक बार प्रात:काल हंसों के समूह से अनुगत उस राजहंस ने राजा से अनुमति लेकर जन्मभूमि की ओर प्रस्थान किया । हंस के चले जाने पर राजा मदन से अभिभूत हो गए । उधर हंस दर्शन के पश्चात् से स्मरपीड़िता दमयन्ती के स्वयंवर के लिए विदर्भराज ने चारों दिशाओं में दूत भेजे । उदीच्यनृपतियों के निमन्त्रणार्थ प्रस्थित किसी वृद्ध ब्राह्मण को सखीमुख से दमयन्ती ने नल को बुलाने के लिए आदेश दिया । जब उत्तर दिशा व के नृपतियों को निमंत्रित करके आए हुए 'सोमशर्मा' से दमयन्ती ने नल का समाचार पूछा । सोमशर्मा बोला, " यहां से प्रस्थित घूमते-घामते मैं निषध पर्वत के दक्षिण की वनस्थली में पहुंचा जहां मुझे मृगया में आसक्त एक अत्यन्त सुन्दर युवक दृष्टिगोचर हुआ । इसी समय एक अन्य अश्वारूढ़ युवक वहां आया ।" प्रथम युवक ने मेरा समस्त वृत्तान्त पूछ कर बताया -- सौम्य ! यह समस्त शास्त्र कोविद नल है, तथा मैं शीलनामक उनका आज्ञाकारी । नल ने तुमसे सम्बन्धित कथाएं सुनकर स्वयंवर में आने की

उत्सुकता प्रकट करते हुए, मुझे रत्नोचित आभरण प्रदान किए ।"

स्वयंवर के लिए आमंत्रित नल अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ तत्काल ही विदर्भमण्डल की ओर चल पड़े । नर्मदा के बालुकामय तट पर नल ने आस्थान गोष्ठी बनाया । उसी समय एक निर्निमेष सुवेश पुरुष ने नल के समक्ष अवतरित होकर राजा को इन्द्र यम वरुण एवं कुबेर के आगमन की सूचना दी । अब निषधेश्वर ने समागत लोकपालों की अभ्यर्थना करके पुरन्दर से कहा "यजन करके तथा सैकड़ों युगों तक तप करके मुनि जिनके संगम सुख की कामना करते हैं, ऐसे स्वयं यहां आकर अनुग्रह करने वाले आप लोगों का मैं क्या प्रिय करूं ?" यह सुनकर कुबेर बोले -- "नारद के मुख से विदर्भराज भीम की सुन्दरी कन्या और उसके स्वयंवर के विषय में सुनकर हम लोग विदर्भ की ओर जा रहे हैं । देशकाल कार्योचित में कुशल तुम देवों के दूत बनकर भैमी के पास जाओ । कन्यान्त:पुर में दमयन्ती के पास जाते हुए तुम किसी को भी दृष्टिगोचर नहीं होगे ।" इसे सुनकर नल ने भक्ति और भय से देवों के दौत्यादेश का समर्थन किया ।

अब दौत्यचिन्ता के भार से आकुल राजा नल को आश्वासन देते हुए श्रुतशील ने कहा "देव ! अधिक चिन्ता न करें । आप में अनुरागिणी दमयन्ती कदाचित् देवों को वंचित कर दे ।" उसी समय मध्याह्न प्राप्त होने पर इन्द्र के आदेश से उद्भ्रान्त अपने चित्त को कमनीय नर्मदा प्रदेश के दर्शन रूप विनोद से स्वस्थ करने के लिए नल उस पुलिन के प्रान्त भाग से पूर्व दिशा की ओर चल पड़े। वहां किरात कामिनियों की जल-क्रीडा देखकर नल का चित्त कुछ मन्मथव्यथा से तथा कुछ धीरता से समाकुल हो उठा । तब प्रदेशान्तर दर्शन के व्याज से शबरसुन्दरी के दर्शन के प्रति राजा के आग्रह को दूर करके श्रुतशील घर लौट आया ।

पुन: "लोकपालों के अर्थी होने पर मैं भला किस प्रकार दमयन्ती को प्राप्त कर सकता हूं । " इस प्रकार से राजा चिन्तित हो उठे । उसी समय नल को सांत्वना सी देता हुआ सूर्य पश्चिम दिशा में अस्त हो गया ।

प्रभात होने पर भगवान शिव और नारायण की वन्दना करके भगवती मेकलकन्या को फिर नर्मदातट के पुण्यारण्य को पार करके नल ने विंध्याटवी में प्रवेश किया । अब किसी मृदुल शाद्वल पर प्रयाण विच्छेद करके नल ने प्रात:काल

पुन: प्रस्थान किया । इस प्रकार बढ़ते हुए राजा ने किसी सरिता के तट पर विश्राम करते हुए पुष्कराक्ष नामक दमयन्ती के दूत को देखा । ~~नरिक्ष ने सम्भा~~ पुष्कराक्ष ने दमयन्ती की कामावस्था का वर्णन किया ।

इसी समय मध्याह्न को संप्राप्त देखकर नल ने सैनिकों को वहीं पयोष्णी तट पर तथा किन्नर मिथुनों को लता मण्डपों में मध्याह्न व्यतीत करने का आदेश दिया । पयोष्णीतट पर स्थित मुनियों को प्रणाम करके नल ने उनके आदेश से सरिता में स्नान किया तत्पश्चात् मुनियों से आशीर्वाद प्राप्त करके पुलिनपालि पर पर्यटन करते हुए नल को परस्पर वार्तालाप में निरत एक किन्नर मिथुन ने प्रणाम करके दमयन्ती का सन्देश सुनाया । तदनन्तर राजा कुछ समय तक अपने शिविर में आकर किन्नरों से गान सुनते रहे । अब निद्रागृह में निर्दिष्ट राजा ने रात्रि व्यतीत होने पर सेना के साथ प्रस्थान किया ।

विंध्यस्कन्ध को पार करके खिन्न होते हुए राजा से पुष्कराक्ष ने कहा "देव । अब हम लोग कुण्डिन पहुंच रहे हैं । यह महाराष्ट्र है जहां विदर्भा नदी बहती है । यहां सभी ऋतुओं में पुष्पों से समृद्ध रहने वाले पुष्पायुध के निवासस्थान आरामप्रदेश हैं ।" इसप्रकार दर्शनीय वे प्रदेशों के प्रकाशन के व्याज से पुष्कराक्ष ने विनोद लीला का पल्लवन किया । अब राजा नल ने सरित्संगमोत्संग भूमि में सेना को विश्राम करने का आदेश दिया । इसी समय समीपवर्ती कुण्डिनपुर में नरपति नैषध के स्वागतार्थ राजमार्गों को सींचने का आदेश देते हुए दण्डपाशिक का स्वर सुनायी पड़ा।

निषधेश्वर नल ने मिलने के लिए आए हुए विदर्भराज भीम से चिरकाल तक वार्तालाप करने के पश्चात् उन्हें विसर्जित किया । अब दमयन्ती द्वारा प्रेषित कुब्जिका तथा वामनिका से वार्तालाप करके नल ने उन्हें भी विदा कर दिया । फिर राजा ने पुष्कराक्ष के साथ पर्वतक नामक वामनक द्वारा दमयन्ती के लिए वस्त्राभरण भेजे । कुछ समय पश्चात् पर्वतक ने उपस्थित हो नल से कहा ," देव । राजभवन में जाकर मैंने सौभाग्य की अधिदेवता के समान दमयन्ती के दर्शन किए । स्वागत प्रश्नों के पश्चात् दमयन्ती ने आपकी कुशल पूछी । मैंने प्रणाम करके उन्हें उपहारभूत वे वस्त्राभरण प्रदान किए । इसी समय पुष्कराक्ष से आपके यहां पर दौत्यकार्यार्थ आगमन को सुनकर विषण्ण दमयन्ती ने तदिस्मरणीय सम्मानदान

पूर्वक मुझे विसर्जित कर दिया ।"

लोकपालों के आदेश को अलंघनीय जानते हुए नल ने एकाकी पैदल ही जाकर भीमभूपाल भवन के कन्यान्तःपुर में प्रवेश किया । सौधपृष्ठ पर दमयन्ती को देखकर नल ने मन में विचार किया " अहो ! लोकपालों का इसमें अभिनिवेश उचित ही है । इस अमुल्य स्त्रीरत्न के कारण यह संसार विजयी है ।" इस प्रकार विचार करते हुए नल ने दमयन्ती के सखी-कदम्ब के मध्य प्रवेश किया । सखियों के समान ही दमयन्ती को भी संभ्रम के कारण निर्निमेष देखकर नल से पुर्वपरिचित विहंगचातुरिका ने नल और दमयन्ती को स्फाटिक प्रवालपीठ पर बिठाया । इस ~~समय~~ समय नल और दमयन्तीदोनों को ही लक्ष्य बना कर शरसंधान में तत्पर हुआ । नल ने दमयन्ती को पुरन्दर का आदेश प्रपंचपुर्वक सुनाया । नल ने दमयन्ती को लोकपालों की सामर्थ्य के विषय में समझा कर उनकी अवज्ञा न करने की सलाह दी किन्तु दमयन्ती किसी भी प्रकार से देवों को पतिरूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुई । तब दमयन्ती ~~किसी भी प्रकार से देवों को पतिरूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुई~~ से विदा लेकर नल अपने निवासस्थान पर लौट आए तथा शिरीषपुष्प के सदृश कोमल शय्या पर दमयन्ती के विचार में मग्न उन्होंने निर्निद्र रहकर ही सम्पूर्ण रात्रि व्यतीत कर दी ।"

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत महाराज नल द्वारा वनशूकर के शिकार की घटना नहीं मिलती है[१]। नल चम्पु में क्रीडा वन में घुस आए हुए वनशूकर के राजा नल द्वारा आखेट का वर्णन मिलता है[२]। ग्रन्थकार का उद्देश्य नायक की वीरता के चित्रण के साथ साथ वर्णन के लिए नूतन विषय का उपादान भी है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत लोगों द्वारा नल के सम्मुख दमयन्ती के तथा दमयन्ती के सम्मुख नल के गुणगान का उल्लेख मिलता है । इस

१- म०भा० नलोपाख्यान

२- नल चम्पू , पृ० २६

प्रकार दोनों के हृदयों में परस्पर एक-दूसरे के लिए अनुरागांकुर उत्पन्न हो जाता है[1]। नल चम्पू में इसी प्रकार की दूसरी घटना का चित्रण किया गया है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके किसी साल वृक्ष के मूल पर क्लान्त होकर निषण्ण राजा नल के समीप अकस्मात कहीं से एक पथिक आ पहुंचता है। राजा के प्रश्नों का उत्तर देते हुए वह दक्षिण दिशा का वर्णन करने के पश्चात् वहां देखी गई किसी राज कन्या की भूरि भूरि प्रशंसा करता है। उसे सुनकर नल के अन्तस् में कामांकुर विजृम्भित होने लगा[2]। उधर गौरी पूजा करके लौटती हुई दमयन्ती ने भी किसी पथिक से नल का वर्णन सुना जिसे सुनकर वह भी उस राजा के प्रति अनुरागिणी हो गई[3]। महाभारत में जहां एक सामान्य सी बात कह कर छोड़ दी गई वहीं नल चम्पूकार ने उसे विशेष रूप दिया है। नल चम्पू में वर्णित यह घटना महाभारतीय उस उल्लेख[4] का उपबृंहण मात्र प्रतीत होती है।

महाभारतीय नलोपाख्यान में नल और दमयन्ती का प्रेमदूत वह राजहंस हैमपक्षों से युक्त था[5] परन्तु नल चम्पू में उसे पुण्डरीक के सदृश श्वेत पक्षों से युक्त वर्णित किया गया है[6]। इस परिवर्तन के मूल में ग्रन्थकार का कोई विशेष प्रयोजन नहीं परिलक्षित होता।

इसी प्रकार महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत नल द्वारा अवरुद्ध हंस स्वयं ही राजा से अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना करता है और अन्त में उन्हें दमयन्ती की प्राप्ति का प्रलोभन देकर मुक्ति प्राप्त करता है[7]। परन्तु नल चम्पू में हंस की प्रिया भी राजा से हंस की मुक्ति के लिए विवाद करती है। यही नहीं फिर वह हंस से ही मिथ्या कलह प्रारम्भ कर देती है। हंस बन्धनमुक्त होने की दशा में नल को भी प्रेमक जाल में डालकर उनपर उपकार करने की बात कहता है।

१- महाभारत- वनपर्व ५०।१६
२- नल चम्पू, पृ०३०-३४
३-नल चम्पू पृ०६२, ३४
४-महाभारत वनपर्व ५०।१६
५- महाभारत वनपर्व ५०।१६
६- नल चम्पू पृ०४४ (पुण्डरीकपाण्डु पक्षपत्र राज्यो राजहंसा:)
७-महाभारत वनपर्व ५०।२०-२३

इसी समय हंस द्वारा नल के दमयन्ती के प्रति भावी दौत्य कर्म की सूचक आकाशवाणी श्रुतिगोचर होती है । यह सब देख सुन कर राजा नल हंस को बन्धनमुक्त कर देते हैं ।[1] एक सामान्य पक्षी की बात अधिक विश्वसनीय नहीं होती इसीलिए सम्भवत: नलचम्पूकार ने उसका समर्थन करने वाली आकाशवाणी की कल्पना प्रस्तुत की है ।

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत दमयन्ती के जन्म की कथा का तो निबन्धन किया गया है[2] परन्तु नल के जन्म के विषय में कोई भी कथा नहीं उपलब्ध होती । नल के पिता का नाम मात्र निर्दिष्ट है[3] माता का वह भी नहीं । परन्तु नल चम्पू में नल एवं दमयन्ती दोनों ही के जन्म की कथाओं का हंस के मुख से विस्तार किया गया है । नल के सम्मुख हंस दमयन्ती के जन्म की सम्पूर्ण कथा सुनाता है[4] । यह कथा महाभारतीय दमयन्ती के जन्म की कथा से अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत रूप में प्राप्त होती है । महाभारतीय कथा के अनुसार दमन मुनि के प्रसाद से महाराज भीम ने दमयन्ती को प्राप्त किया था[5] परन्तु नल चम्पू के अनुसार यह दमन मुनि का प्रसाद शिव की आराधना का फल था[6] । इस प्रकार महाभारतीय दमयन्ती जन्म की कथा के विस्तार का कारण सम्भवत: नल चम्पूकार द्वारा भगवान शिव का माहात्म्य प्रदर्शन ही होगा ।

इसी प्रकार नल चम्पू में नल के जन्म की कथा भी उपलब्ध होती है[7] । नल के पिता का ही नहीं माता का भी यहां नाम (रूपवती) निर्दिष्ट है[8] इस कथा की कल्पना में भी त्रिविक्रमभट्ट का उद्देश्य शिवमाहात्म्य प्रदर्शन प्रतीत होता है[9] । इसके साथ-साथ इसके द्वारा सम्भवत: नायिका के समान नायक का भी महत्त्व स्थापित किया गया है ।

१- नलचम्पू ४७-५०
२- महाभारत वनपर्व ५०।८-९
३- महाभारत वनपर्व ५०।१
४- नलचम्पू,पृ० ५६-८३
५- महाभारत वनपर्व ५०।८-९
६- नलचम्पू,पृ० ७२
७- नलचम्पू,पृ०६३-६५
८- नलचम्पू,पृ०६४
९- नलचम्पू,पृ०६४

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत नल का संदेश लेकर कुण्डिनपुर पहुंचे हुए हंसों का प्रमदावन में दमयन्ती के आसपास उतरने का उल्लेख मिलता है[१]। परन्तु नलचम्पू की कथा के अन्तर्गत पक्षी कुण्डिनपुर पहुंचकर वहां के कन्यान्तःपुरोद्यान में स्थित क्रीडा सरोवर में उतरते हैं[२]। दमयन्ती उस समय वहां उपस्थित नहीं थी। वहां विहार करती हुई कन्याओं से हंसों के आगमन का समाचार प्राप्त करके दमयन्ती शीघ्रता से उस स्थल पर आयी[३]। कन्यान्तःपुर में क्रीडा सरोवर का होना आश्चर्य की बात नहीं है तथा हंसों का जल से अनुराग स्वाभाविक ही होता है। इस दशा में त्रिविक्रम भट्ट की हंसों के क्रीडा-सरोवर में अवतरित होने की कल्पना उचित ही प्रतीत होती है। हंसों के आगमन का समाचार प्राप्त होते ही दौड़कर दमयन्ती का वहां उपस्थित होना, सखियों को एक-एक हंस को ग्रहण करने का आदेश देना और स्वयं भी हंस ग्रहण के लिए प्रयत्नशील होना, नायिका की कौतुकप्रियता के संकेत हैं।

महाभारतीय नलोपाख्यान की कथा में नल प्रारम्भ से ही राजा के रूप में कल्पित किए गए हैं[४]। नलचम्पू में भी कथा का प्रारम्भ कुछ इसी प्रकार है[५]। परन्तु नलचम्पू में दमयन्ती के सम्मुख हंस द्वारा नल के जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा भी प्रस्तुत की गयी है[६]। इसी के बीच में मन्त्री सालंकायन द्वारा कुमार नल को उपदेश देने की भी घटना का चित्रण किया गया है[७]।

महाभारतीय नलोपाख्यान में दमयन्ती द्वारा हंस को मुक्तावली देने का प्रसंग नहीं आता है परन्तु नलचम्पू में दमयन्ती प्रेमदूत हंस को विसर्जित करते समय अपनी हारलता उसके कण्ठ में पहना देती है[८]। ग्रन्थकार की यह कल्पना मौलिक होते हुए सुन्दर भी है।

१- महाभारत ५०।२४

२- नलचम्पू, पृ० ६१

३- नलचम्पू, पृ०६१

४- म०भा०वनपर्व ५०।३

५- नलचम्पू, पृ०१६

६- नलचम्पू, पृ०६३-११३

७-नलचम्पू, पृ०१००-१०४

८- नलचम्पू, पृ०११४

महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत दमयन्ती की प्राप्ति के लिए चार लोकपालों के प्रयत्नशील होने का उल्लेख है । वे देवता क्रमश: इन्द्र,अग्नि और वरुण हैं[1]। नलचम्पू में भी दमयन्ती की कामना से चार देव विदर्भ आते हैं परन्तु यहां इन्द्र,अग्नि और वरुण के स्थान पर आने वाले देव इन्द्र यम बा वरुण और कुबेर हैं[2]। महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत इन्द्र नल को दमयन्ती के प्रति वहां आए हुए सभी देवताओं के लिए दौत्य करने का आदेश देते हैं[3]। परन्तु नलचम्पू में दौत्य के लिए इन्द्र से प्रेरित होकर कुबेर नल को आदेश देते हैं[4]। इस परिवर्तन के कारण रूप में भी कोई विशेष प्रयोजन नहीं प्रतीत होता । नलचम्पू के अन्तर्गत अच्छोदक सरोवर में तरुण किरात कामिनियों की जल क्रीडा का वर्णन है[5]। इसे देखकर राजा नल का चित्त समाकुल हो उठा[6]। राजा का मित्र श्रुतशील बड़ी कठिनाई से शबर सुन्दरी दर्शन के प्रति राजा के आग्रह को दूर करके उन्हें शिविर तक लाता है । महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत ऐसी कोई घटना नहीं उपलब्ध होती ।

इसी प्रकार नलचम्पू में वर्णित म दमयन्ती से प्रेषित पुष्कराक्ष से नल को दमयन्ती की लेखपत्रिका थं[7] की प्राप्ति कुण्डिनपुर के पास पहुंचे हुए नल के दर्शन के लिए महाराज भीम के आगमन[8],दमयन्ती द्वारा प्रेषित कुब्जिका और वामनिका का नल के समीप आगमन[9] तथा पर्वतक वामनक के हाथ नल द्वारा दमयन्ती के पास वस्त्राभरण भेजने[10] के प्रसंग महाभारतीय नलोपाख्यान में नहीं उपलब्ध होते हैं ।

इस प्रकार नलचम्पूकार ने महाभारतीय नल कथा को स्वीकार करते हुए भी व यत्र तत्र अपनी कल्पना के आधार पर उसका विस्तार किया है । वास्तव में

१- म०भा०वनपर्व ५२।६
२- नलचम्पू,पृ०१४२
३- म०भा० वनपर्व ५२।५-६
४- नलचम्पू,पृ०१४५
५- नलचम्पू,पृ०१४६-१५०
६- नलचम्पू,पृ०१५२
७- नलचम्पू,पृ०१६८
८- नलचम्पू,पृ०११६
६- नलचम्पू,पृ०२०३
१०-नलचम्पू,पृ०२०५

ग्रन्थकार का ध्यान कथावस्तु के विकास और उसके सम्यक् प्रवाह की ओर न होकर वर्णन शैली और श्लेषादिक अलंकारों की ओर केन्द्रित प्रतीत होता है ।

दमयन्ती परिणय चम्पू

दमयन्ती परिणय चम्पू की कथावस्तु मूलकथा से यद्यपि बहुत अधिक भिन्न तो नहीं है, फिर भी घटनाओं के संकोच और प्रसार की दृष्टि से इसमें मूलकथा से पर्याप्त वैषम्य है ।

जैसा कि अंशत: कहा जा चुका है कि नलोपाख्यान के अन्तर्गत नल ने उपवन में विचरते हुए हेमपक्षवाले अनेक हंसों को देखकर उनमें से एक को पकड़ लिया[1] । ऐसा उल्लेख मिलता है किन्तु दमयन्ती परिणय चम्पू के अनुसार नल ने उपवन के अन्तर्गत क्रीडासरसी में सोते हुए स्वर्णपक्ष वाले एक हंस को देखा और उसे पकड़ लिया[2] ।जैसा कि चतुर्थ अध्याय में कहा जा चुका है, हंस के साथ सरोवर की कल्पना उचित ही है तथा निद्रित हंस को ग्रहण करना अधिक सहज है । सम्भवत: इसी दृष्टि से ग्रन्थकार ने यह परिवर्तन किया होगा । यहां नैषधीयचरितम् की छाया स्पष्ट ही परिलक्षित होती है ।

मूलकथा के विपरीत यहां भी नैषधीयचरितम् के समान[3] ही नल द्वारा अवरुद्ध हंस भांति भांति से विलाप करके नल की करुणा को जगाने में समर्थ हो जाता है । वह मूलकथा की भांति[4] पहले ही से उपकार का राग नहीं छेड़ बैठता । करुणार्द्रचित्त नल के बन्धन से मुक्ति प्राप्त करके वह नल के हाथ पर स्वेच्छा से आ बैठता है और तब वह दमयन्ती का वर्णन विस्तार से करता है । मूलकथा में हंस दमयन्ती का विस्तृत वर्णन नहीं करता है[5] । इन सभी स्थलों पर कवि नैषधीयचरितम् से प्रभावित हुआ प्रतीत होता है ।

१-म०भा०वनपर्व ५०।१९

२- स तस्यां सरस्यां... निद्रामुपेयिवांसं हंसं चतुषोर्विषयीकापाति --दमयन्ती-परिणय चम्पू,पृ०५-६

३- नै०१।१२५-१४२

४-म०भा० वनपर्व ५०।२१-२२

५- म०भा० वनपर्व अध्याय ५०

मूलकथा के विपरीत[1] यहां भैमी के उपवन का, भारतवर्ष का, नल के उद्यान की वापी का, नल का और फिर अन्त में भेरी नाद का जो विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है वह सम्भवत: चम्पू की शैली के कारण ही किया गया है । चम्पू काव्यों में नायक, नायिका, नगर आदि के विस्तृत वर्णनों की ओर कवियों की प्रवृत्ति रही है । इस अवस्था में वष्णु नायक-नायिका और उनसे सम्बन्धित वस्तुओं का उत्कर्ष दिखाने के साथ-साथ चम्पू काव्य में ये अपना विशेष महत्त्व रखते हैं ।

मूलकथा के अन्तर्गत हंसों के नल के उपवन अथवा वापी में ५-६ दिन निवास का कोई उल्लेख नहीं मिलता[2] परन्तु दमयन्ती परिणय चम्पू में दमयन्ती के प्रति नल का दौत्य करते समय हंस ने दमयन्ती से, नल की वापी में अपने ५-६ दिन तक निवास की बात कही है । इसका कोई विशेष कारण नहीं प्रतीत होता है । सम्भवत: नल की वापी इतनी मनोरम थी कि वहां इस हंस का मन रम गया और वह ५-६ दिन वहीं ठहर गया यह दिखाने के लिए ही इस घटना को चम्पू में स्थान दिया गया हो ।

मूलकथा में हंस दमयन्ती के पास जाकर अपनी प्रशंसा नहीं करता[3] । परन्तु दमयन्ती परिणयचम्पू के अन्तर्गत हंस दमयन्ती को बताता है कि वह दमयन्ती से नल की संघटना अथवा दमयन्ती जिसकी इच्छा करती हो, उसी से उसकी संघटना सहज ही में करा सकता है, इसी प्रसंग में वह अपनी दौत्य-प्रशंसा करता है । अपने दूत्य चरित के वर्णन के प्रसंग में उसने पार्वती में शिव को, लक्ष्मी में विष्णु को और सरस्वती में ब्रह्मा को अनुरक्त कराने में सामर्थ्यवान् अपनी अपार शक्ति बतलाई[4] । इस प्रकार से हंस दमयन्ती का विश्वास प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है । एक साधारण से पक्षी से अपनी बात व्यर्थ में कहने से कोई लाभ नहीं होता अतएव इसे

~~म०भा० नलोपाख्यान~~

म०भा० नलोपाख्यान

१- ~~म०भा० नलोपाख्यान~~- ~~दमयन्ती परिणय चम्पू~~ ~~नलोपाख्यान~~

२- म०भा० नलोपाख्यान ~~म०भा० वनपर्व अध्याय ५०~~

~~३- म०भा० वनपर्व अध्याय~~ ~~दमयन्ती परिणय चम्पू~~

३. म० भा० वनपर्व अध्याय ५०

४. दमयन्ती परिणय चम्पू

हो सकता था कि दमयन्ती नल से संघटना इस कार्य के लिए उस हंस को असमर्थ समझ कर उसपर अपनी अभिलाषा व्यक्त करना व्यर्थ समझकर मौन रह जाती । उसी शंका को दूर करने के लिए हंस ने दौत्य-कर्म के विषय में अपनी प्रशंसा की जिससे कि दमयन्ती उसपर विश्वास करके अपने मन की बात कह दे । इसके अतिरिक्त इस विषय के सहारे कवि को एक और वर्णन का प्रसंग मिल गया है । चम्पू की शैली की दृष्टि से भी यह वर्णन अपना विशेष महत्त्व रखता है । यह कवि की मौलिक कल्पना है ।

महाभारतीय नलदमयन्ती कथा में दमयन्ती हंस को नल का चित्र नहीं दिखाती है[1]। परन्तु दमयन्ती परिणय चम्पू के अन्तर्गत वह हंस को अपने प्रिय का नाम सीधे सीधे न बताकर घुमा-फिराकर बताती है । वह हंस से कहता है कि जिसके नाम का पूर्वार्द्ध `नहुष` प्रस्तुत करता है, `ल` जिसका उत्तरार्द्ध है और जो तुम्हारे शिर पर है वही मेरा प्रिय है । इसके पश्चात् हंस की अन्य शंकाओं को दूर करने के लिए वह उसे नल का चित्र भी दिखा देती है । दमयन्ती में लज्जा भाव का इस प्रकार से सुन्दर प्रदर्शन किया गया है । लज्जा के कारण वह एक पक्षी के सामने भी सीधे-सीधे प्रिय का नाम नहीं ले पाती है, उसी को वह बहुत घुमा-फिराकर स्पष्ट करती है । दमयन्ती द्वारा नल का चित्रप्रदर्शन भी महत्त्वपूर्ण है । इससे नल में दमयन्ती के अनुराग की प्रगाढ़ता व्यंजित होती है । प्रिय का नाम घुमा-फिराकर बतानेद में नैषधीयमचरितम्[2] की छाप स्पष्ट है ।

मूलकथा से इसकी कथा में एक और भी भेद दृष्टिगोचर होता है । नलोपाख्यान में दमयन्ती के स्वयंवर के लिए भीम द्वारा सभी राजाओं को निमंत्रित करने का प्रसंग मिलता है[3] परन्तु दमयन्ती परिणय चम्पू में इसके अतिरिक्त नल को इस विषय में निमंत्रित करने के लिए आए हुए दूत का प्रसंग मिलता है । यह दूत

१-नलोपाख्यान

२-नैषधीय चरितम् ३।६७

३- म०भा० वनपर्व ५१।६

नल को स्पष्टतः से बता देता है कि दमयन्ती को नल में अनुरक्त जानकर तथा नल को ही कन्यादान के कार्य में पात्र निश्चित करके, उसके पिता भीम ने अन्य राजाओं के प्रत्याख्यान से उत्पन्न अपने दोष के मार्जन के लिए तथा उन्हीं की विशेषता प्रकाशित करने के लिए इस स्वयंवर का आयोजन किया है । इसके पश्चात् वह नल की प्रशंसा करता है । इस सम्पूर्ण घटना का चम्पू शैली की दृष्टि से तो महत्त्व है ही साथ ही नल को दमयन्ती की प्राप्ति के विषय में इस प्रकार और भी निश्चय हो जाता है । यह घटना कवि की मौलिक कल्पना है ।

मूलकथा से दमयन्ती परिणय चम्पू की कथा में इतनी भिन्नताओं के अतिरिक्त घटनाओं में कुछ पौर्वापर्य भी मिलता है । नलोपाख्यान में कथा नल के वर्णन से प्रारम्भ होता है[1] तथा उसके बाद दमयन्ती का वर्णन किया गया है ।[2] परन्तु दमयन्ती परिणय चम्पू में स्थिति उल्टी है । यहां ग्रन्थ के प्रारम्भ में दमयन्ती का वर्णन तथा भीम की राजसभा में किसी प्रतीहाररक्षी के मुख से नल का वर्णन मिलता है ।[3] यह पौर्वापर्य सम्भवतः नायक की अपेक्षा नायिका का अधिक महत्त्व दिखाने के लिए किया होगा । ग्रन्थ के शीर्षक से ही कवि का अभिप्राय स्पष्ट हो जाता है कि वह नल की अपेक्षा दमयन्ती को अधिक महत्त्व देना चाहते हैं, इसीलिए ग्रन्थ का प्रारम्भ दमयन्ती के वर्णन से किया गया प्रतीत होता है ।

इसके अतिरिक्त दमयन्ती परिणयचम्पू में एक और स्थल पर मूलकथा की घटनाओं में पौर्वापर्य मिलता है । महाभारतीय नलोपाख्यान में दमयन्ती के पास हंस के आने की घटना के पश्चात् दमयन्ती-स्वयंवर का प्रसंग उठता है[4] परन्तु

१- म०भा० वनपर्व ५०।१

२- म०भा० वनपर्व ५०।५-१४

३- दमयन्ती परिणय चम्पू

४- म०भा० नलोपाख्यान

दमयन्ती परिणय चम्पू के अन्तर्गत पहले ही भीम दमयन्ती के स्वयंवर का निश्चय करके राजाओं को निमंत्रित करने के लिए चारों ओर दूत भेज देते हैं और उसके बाद हंस दमयन्ती के पास आता है । इस पौर्वापर्य का कोई विशेष कारण नहीं प्रतीत होता है ।

इस प्रकार नल-दमयन्ती -कथा पर आधारित समस्त चम्पू साहित्य के विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रस्तुत कथा को लेकर चम्पू काव्य यद्यपि संख्या में बहुत कम ही है परन्तु गुण की दृष्टि से उसमें कोई कमी नहीं है ।

-0-

षष्ठ अध्याय

-o-

नल-दमयन्ती साहित्य

में

पात्रों का चरित्र-चित्रण

षष्ठ अध्याय

-०-

नल-दमयन्ती साहित्य में पात्रों का चरित्र-चित्रण

वास्तव में इस निबन्ध का मुख्य लक्ष्य नल-दमयन्ती-कथा के उद्भव और विकास से ही सम्बन्धित है, जिसे प्रस्तुत निबन्ध के प्रथम, तृतीय, चतुर्थ तथा पंचम अध्यायों में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है । परन्तु कथा का विकास और सौन्दर्य पात्रों के चरित्र-चित्रण पर भी निर्भर करता है । रसोद्रेक के साथ-साथ समाज के सम्मुख उच्च आदर्श चरित्रों को प्रस्तुत करना भी काव्य का प्रयोजन होता है[१] । कला केवल कला ही के लिए नहीं होती, उसका उद्देश्य मानव-कल्याण भी होता है । मानव-कल्याण रूप प्रयोजन भिन्न-भिन्न प्रकार के चरित्रों की सृष्टि के द्वार से ही सिद्ध होता है । यही कारण है कि नल एवं दमयन्ती की कथा के विकास में के साथ-साथ इसमें पात्रों का चरित्र-चित्रण किस प्रकार का हुआ है, यह प्रस्तुत प्रबन्ध के विषय से बाहर नहीं प्रतीत होता ।

१- का० प्र० १।२

काव्य में नायक चार प्रकार के होते हैं-- धीर ललित, धीर शान्त, धीरोदात्त एवं धीरोद्धत[1]। नायकों का यह चतुर्विध विभाग उनके स्वभाव के आधार पर किया गया है। वास्तव में किसी भी नायक के सम्पूर्ण जीवन का चित्रण एक ही कोटि का नहीं होता है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए दशरूपक के वृत्तिकार 'धनिक' ने धीरललितादिक पारिभाषिक शब्दों को तत्तत् प्रकरण में वर्णित गुणों से समारोपित अवस्था का अभिधायक स्वीकार किया है[2]। इस प्रकार एक ही नायक में कभी धीर ललित, कभी धीर शान्त, कभी धीरोदात्त और कभी धीरोद्धत अवस्था हो सकती है। यह ललित शान्त आदि नायक के गुण हैं, जाति नहीं। भरत, धनन्जय आदि आचार्यों ने अपने ग्रन्थों में नायक-नायिका, दूत, विदूषक और प्रतिनायकादिकों का स्वरूप तथा कार्य निर्धारित किया है। परवर्ती कवियों ने इन लक्षणों का यथासम्भव पालन किया है। वास्तव में रस को काव्य की आत्मा स्वीकार किया गया है। इस दशा में कवियों ने रसाभिव्यक्ति को मुख्य उद्देश्य मान कर काव्यों में पात्रों के स्वभाव - चरित्रादि का चित्रण किया है। पात्रों के चरित्र तथा स्वभाव का वर्णन सीधा अभिधेय रूप में न करके कवियों का प्रयत्न, इसे पात्र के वचनों एवं कार्यों से व्यंग्य रूप में करने की ओर परिलक्षित होता है। काव्य में पात्रों के स्वभावादि का साक्षात् वर्णन नीरस एवं हृदयोद्वेजक हो जाता है।

संस्कृत काव्यों में लगभग सभी नेता किसी न किसी आदर्श को प्रस्तुत करते हैं। यहां काव्यों में पात्रों के इतिहास एवं लोकवृत्त में प्रतिष्ठित रूप की उपेक्षा न करते हुए उनके विशिष्ट वैयक्तिक स्वभाव का व्यंजन उपलब्ध होता है।

नल-दमयन्ती साहित्य में नल

नल-दमयन्ती कथा के उपलब्ध प्राचीनतम रूप महाभारतीय नलोपाख्यान में नल का सामान्य स्वरूप चित्रित किया गया है। यहां नल राजा हैं जो सभी

१- दशरूपक २।३

२- दशरूपक २।५,६ की वृत्ति

इष्ट गुणों से उपपन्न थे[1]। नल तेजस्वी[2] वेदविद्[3] शूर[4] तथा उदार थे[5]। ये धर्मपूर्वक प्रजा का पालन करने वाले[6] तथा प्रभुत दक्षिणाओं द्वारा यज्ञ करने वाले थे[7]। महाराज नल रूप में अश्विनीकुमारों के सदृश थे[8]। पुण्य श्लोक राजा नल वीर्यसम्पन्न[9] यष्टा दाता तथा योद्धा थे[10]। नाट्य-साहित्य में नल का चरित्र पर्याप्त विकसित हुआ है, विपत्तिकाल में केवल दमयन्ती के साथ कुण्डिनपुर जाना उन मानधनी नल को उचित नहीं प्रतीत हुआ[11]। महाराज नल प्रियंवद भी थे। देवी सरस्वती को उन्होंने नादविन्दु कलामयी कान्मयी एवं शब्द ब्रह्म कहते हुए सम्मान प्रदान किया है[12]। महाराज नल परम धार्मिक थे, उनके राज्य में प्रजा किसी प्रकार अधर्म शब्द का स्मरण भी नहीं करती[13]। विषम स्थान में ही धर्म की परीक्षा की जाती है तथा अपने कार्य के लिए बुद्धिमान् धर्म का त्याग नहीं करते[14], इस प्रकार सुदर्शनाचार्य ने धार्मिकता की कसौटी प्रस्तुत की है, जिस पर ब नल का चरित्र खरा उतरता है। पवित्र मन वाले महाराज नल के लिए सन्देहास्पद स्थलों में अपने हृदय का परिबोध ही प्रमाण था[15]। नल निषध कुल के प्रदीप थे[16]। इस प्रकार नल का चरित्र अत्यन्त लोकप्रिय है[17]। महाकाव्य-साहित्य में नल का चरित्र और भी उज्ज्वल चित्रित किया गया है, महाराज नल अष्टादश विद्याओं में पारंगत थे[18]। परम धार्मिक नल के राज्य में धर्म चारों पैरों से स्थिर था। अतएव उस सतयुग में भला कौन धर्मपरायण नहीं था? औरों की तो बात छोड़िए, तब स्वयं अधर्म भी केवल एक पाद से पृथ्वी का स्पर्श करता हुआ क्षीण होकर तपस्वी बन गया था[19]।

१- म०भा० वनपर्व ५०।१
२- म०भा० वनपर्व ५०।२
३- म०भा० वनपर्व ५०।३
४- म०भा० वनपर्व ५०।३
५- म०भा० वनपर्व ५०।४
६- म०भा० वनपर्व ५४।४७
७- म०भा० वनपर्व ५४।४७
८- म०भा० वनपर्व ५०।२८
६- म०भा० वनपर्व ६१।४७
१०- म०भा० वनपर्व ६१।५२
११- इदानीं दमयन्तीमात्र परिच्छद: कुण्डिनं प्रविशंस्तत्रत्य पौर जनानामपि हास्य पात्र भविष्यामि।। --न०वि०, पृ०२१
१२- नल चरित्रम् १।४४
१३- मञ्जुलनैषधम् १।६
१४- अ०न०च० ४।३५
१५- नलदमयन्तीयम्, पृ०२०
१६- दमयन्ती कल्याणम्, पृ०५
१७- दमयन्ती कल्याणम्, पृ०५
१८- नैषध १।५
१६- नैषध १।७

राजा नल शास्त्र चक्षु थे। भगवान शंकर ने जो कि स्वयं एक दिक्पाल हैं, अपने तृतीय नेत्र द्वारा कामचारिता (काम की उद्दण्डता) का प्रशमन किया था तो दिक्पालों के अंश रूप तथा दिशाओं के प्रभु राजा नल ने अपने शास्त्र रूपी तृतीय नेत्र द्वारा कामचारिता का प्रशमन करके अपने-आपको भगवान त्रिनेत्र का अवतार प्रमाणित कर दिया[1]। शूरवीर महाराज नल के भयानक टंकार वाले धनुष से की जाने वाली असह्य एवं घनघोर बाणवृष्टि से संग्राम में शत्रुओं की प्रतापाग्नि शान्त हो जाती और बुझे हुए दग्धकाष्ठ के सदृश, उनकी श्याम अपकीर्ति मात्र अवशिष्ट रह जाती[2]। नल के त्याग के विषय में कहां तक कहा जाय ? उस महादानी के सम्मुख कल्पवृक्ष भी अल्प था, तथा उसने याचक की दरिद्रता को ही दरिद्र बनाकर 'यह दरिद्र होगा' इस प्रकार की उसके ललाट में जागरूक विधि रेखा को भी असत्य नहीं किया[3]। नायक नल उच्चवंश के प्रदीप थे, इसी भरत क्षेत्र में भरत वंश के भूषण महाराज नल, निषध में राज्य करते थे[4]। त्याग, शूरता, धैर्य, प्रज्ञा एवं विनम्रता के वे अपूर्व आस्पद थे[5]। उन्होंने शैशव रहते ही उद्दाम दिग्विजय करके अपने कोश को अक्षय बना लिया[6]। तदनन्तर निरन्तर याचकों को प्रभूत दान दिया[7]। अत्यन्त बुद्धिमान राजकुमार नल ने क्रम से सभी विद्याओं में उस प्रकार से परिश्रम किया कि संशयित अर्थतत्त्व के विषय में गुरुओं का समूह उनको ही निश्चायक मानता था[8]। कान्ति विशेष की वृद्धि की औषधि के समान, स्मरपार्थिव की साम्राज्यलक्ष्मी के समान, तथा विक्रम कुंजर की नीराजना के समान नव यौवन श्री नल की सेवा करती थी[9]। रणरंगभूमि में लास्य विलास की शिक्षा

१- नै० १।६

२- नै० १।९

३- नै० १।१५

४- नलायनम् १।१।५

५- नलायनम् १।१।४९

६- नलायनम् १।२।१

७- नलायनम् १।२।२

८- सहृदयानन्दम् १।३३

९- सहृदयानन्दम् १।३४

देतो हुई वीर नल की खड्गवल्ली को देखकर ही संघर्ष को प्राप्त हुए कबन्ध ताण्डव करने लगते थे[1]। उस मधुरमूर्तिवाले निषधाधिप की रूप प्रतिद्वन्द्विता न तो अश्विनी कुमार, न कामदेव और न विष्णु ही [illegible]। युद्ध में सदैव अपराजित , सूर्य सदृश कान्तिमान्, उस वीर नल से दिशाएं सुशोभित थीं[3]। नल कामदेव के समान मनोहर आकृति वाले थे[4]। नायक नल अभिराम आकृति सम्पन्न थे[5]।वे अत्यधिक दयावान् के रूप में प्रसिद्ध थे फिर भी उन्होंने अत्यधिक कृश बेचारे अधर्म को भूमण्डल से बहिष्कृत कर दिया था[6]। महाराज नल धर्मात्मा, पुष्करादि शत्रुओं को तिरस्कृत करने वाले,श्रेष्ट कुल के रक्षक, तथा मधुराकृति थे[7]।

चम्पू साहित्य में भी नल का चरित्र-चित्रण अच्छा ही हुआ है, बुद्धिमान नल ने विद्याग्रहणकाल में उपाध्यायों को केवल निमित्त बना कर स्वयं ही समस्त अनवद्य विद्यासागर का पार प्राप्त कर लिया[8]। विद्वान् होने के साथ-साथ वे कलाओं के भी ज्ञाता थे[9]। उष्णीषाकार शारीरिक लक्षण से युक्त तथा भ्रूमध्य में ऊर्णा से सुशोभित विस्तीर्ण ललाट पट्ट वाले, सुस्निग्ध मुर्ति वाले तथा उन्नत अंसस्थल वाले नल किसके लिए नयनाभिराम नहीं थे[10]? नल का औदार्य कल्पद्रुम को भी धिक्कारने वाला था[11]। उनका भुज प्रताप शत्रुओं को सन्तप्त करने वाला था[12] तथा समस्त कलाओं के विषय में उनका कौशल अनन्य सामान्य था[13]।

बृहत्कथामंजरी में भी नल को ललिताकृति प्रतिपादित किया गया है[14]।

१- नलाभ्युदयम् १।५
२- नलाभ्युदयम् १।१४
३- नलोदय १।१०
४- नलोदय १।११
५- राघवनैषधीयम् १।२
६- उ० नै० १।१३
७- कल्याणनैषधम्, पृ०१
८- नल चम्पू,पृ० ६७
९- नल चम्पू,पृ० ६७
१०- नल चम्पू,पृ०६८--६६
११- दमयन्ती परिणय चम्पू,पृ०२
१२- दमयन्ती परिणय चम्पू,पृ०२
१३-दमयन्ती परिणय चम्पू,पृ०२
१४- बृ०क०मं०--लम्बक१५,श्लोक ३३१

राजा नल के रूप से विजित कामदेव ने अपमानित होकर त्रिपुरारि को क्रुद्ध किया और उनकी नेत्राग्नि में अपना शरीर होम कर दिया[1] ।

नाट्य-साहित्य में पुण्य श्लोक निषधाधिप महाराज नल का सामान्यत: धीरललित नायक[2] के रूप में चित्रण उपलब्ध होता है[3] । राज्य की चिन्ता से दूर वे शृंगार चिन्ता में लीन दिखायी देते हैं । नाटक की समाप्तिपर्यन्त नायक नल को राज्यचिन्ता नहीं व्यापती । 'नलचरित्रम्' में प्रारम्भ से लेकर पंचम अंकपर्यन्त नल का धीरललित रूप ही प्रस्फुटित होता है । तदनन्तर षष्ठम अंक के उपलब्ध अंश से प्राप्त होने वाले संकेतों[4] से अनुमान किया जा सकता है कि सम्भवत: इस नाटक के अनुपलब्ध भाग में नायक नल में धीरोदात्त नायक[5] के गुणों को अधिष्ठित किया गया हो । 'मंजुल नैषधम्' में भी नायक नल का[6] धीरललित रूप ही प्रस्फुटित होता है । सप्तम अंक में पुष्कर को क्षमा करके वे क्षमाशीलता का परिचय देते हैं जो वास्तव में धीरोदात्त नायक का गुण है । अन्य नाटकों में भी नल का धीरललित स्वभाव ही प्रमुख रूप से परिलक्षित होता है । परन्तु सभी नाटकों में यत्र-तत्र धीरोदात्त नायक के रूप में भी उनका स्वभाव चित्रित किया गया है । समस्त राज्यलक्ष्मी एवं वैभव त्याग कर वन की ओर जाते हुए नल के अन्त: सत्त्व को कोई भी विकार अभिभूत नहीं कर पाता[7] । इस विपत्काल में वे स्वयं दूसरों को धैर्य बंधाते हैं, कष्ट में विलाप करने को वे प्राकृत मनुष्यों की चेष्टा कहते हैं[8] । महाराज नल व्यसनों को अनागत सम्पत्ति का स्थान स्वीकार करते थे ।

१- कथासरित्सागर, लम्बक ९, अलंकारवती तरंग ६, श्लोक २३८
२- निश्चिन्तो धीरललित: कलासक्त: सुखी मृदु: ।। दशरूपक २।३
३- नलस्येदं हृद्यं किमपि चरितं धीरललितम् । नलविलास १।२
४- नलचरित्रम् ६।७
५- महासत्त्वोऽतिगम्भीर: क्षमावानविकत्थन: ।
स्थिरो निगूढाहंकारो धीरोदात्तो दृढव्रत: ।। दशरूपक २।४-५
६- मंजुल नैषधम् ७।१३५
७- नलविलास, पृ० ५६-५७
८- नलविलास-- किमेतेन प्राकृत प्रकृति सब्रह्मचारिणा चेष्टितेन? ननु धैर्यमवलम्व्य समयोचितमाचरत ।।, पृ० ५७

मनुष्यों की विपत्तियां सम्पत्ति के लिए ही होती हैं, प्रज्ज्वलिताग्नि में स्वर्ण का प्रपात तेज की वृद्धि का कारण होता है[१]। दमयन्ती में बद्धानुराग तथा भगवती सरस्वती और सावित्री द्वारा अनुमत होने पर भी महाराज नल दमयन्ती के विषय में शक्रादि देवताओं की प्रार्थना को न ठुकरा सके, यही नहीं, दमयन्ती के प्रति देवदौत्य का कार्यभार अपने ऊपर लेकर भी उन्होंने किंचिन्मात्र दु:ख नहीं अनुभव किया[२]। पुष्कर के आदेश से राज्य से दूर, जीर्णवस्त्र धारण करके जाते हुए नल का चित्त विकृत नहीं होता,उल्टे उन्होंने पुष्कर की निन्दा करने में निरत नगरवासियों को इस कृत्य से रोका है[३]। देव परिषद की चाटुकारितापूर्ण बातों को सुनकर दमयन्ती के अभिलाषी होते हुए भी नल ने बलात् आरोपित उस देवदौत्य-भार को स्वीकार कर लिया, इस समय भी उनका अन्तर विकारों का दास ह नहीं हुआ । देवों के परितोषणार्थ किए गए कर्म को बुद्धिमान् लोग धर्म कहते हैं, इस प्रकार उसके प्रतिकूल काम या अर्थ त्याज्य है । इस विचार से उसके ~~प्रतिकूल-काम-या-अर्थ-त्याज्य~~ महाराज नल ने देवमनोरथ प्रणयिनी उस कान्ता का भी परित्याग करके चित्त को निर्लिप्त बनाया[४]। हंस के मुख से भीमसुता का वृत्तान्त सुनकर तथा स्वप्न में दमयन्ती का दर्शन करके अत्यधिक कामपरवश होते हुए भी महाराज नल ने अपनी व्यथा गुप्त ही रखने का प्रयत्न किया । और तो और, अपने मित्र वसन्तक को भी पहले उन्होंने अपने हृदय की बात अपने आप नहीं बतायी । परन्तु मित्र से बात कहां तक छिपती है, अन्तत: उसे सन्देह हो ही गया । नल के हृदय में कपट नहीं था जब उन्हें विदूषक को बताना ही पड़ा तब उन्होंने निश्छल भाव से उसे सभी कुछ बता दिया[५]।

१- नलविलास,पृ०५६

२- नलचरित्रम्,पृ०६१-६२ तथा अनर्घ नलचरित्र चतुर्थांक

३- अनर्घ नलचरित्र,पृ०१२७

४- मंजुलनैषधम् ३।४६

५- अनर्घ नलचरित्र,पृ०२३-२५

नल की क्षमाशीलता भी श्लाघनीय है । जिस पुष्कर ने उन्हें राज्य से भी निर्वासित कर दिया था, उसी को दास्यरूप में प्राप्त करके भी महापुरुष नल के हृदय में प्रतिशोध की ज्वाला नहीं धधकती । उन्होंने उसे दास्य से मुक्त कर दिया । यही नहीं, अपने राज्य से पांच ग्राम भी उसे देकर[1] अपनी उदारता एवं महानता का परिचय दिया है । उन्होंने पुष्कर से कहा, "यद्यपि तू दण्ड के योग्य है तथापि इसमें तेरा कुछ दोष नहीं । यह सब कलि का दोष है जिसने तेरी और मेरी बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया । मैं तुझे अब भी उसी स्नेह की दृष्टि से देखता हूं और जो कुछ प्रथम तेरा अधिकार था, उसे फिर मैं तुझे देता हूं[2] । यही है महाराज नल के चरित्र की अनर्घोदारता । अत्यन्त अपकारी एवं दुष्ट प्रकृति कलि भी महाराज नल की महानुभावता से प्रभावित हो गया ।" इस प्रकार ताप से जीर्णांग वाला मैं जैसे ही महाराज नल के सम्मुख प्रकट हुआ वैसे ही मुझे कलि जानकर मारने के लिए उन्होंने कृपाण उठा ली परन्तु कातर होकर जीवनयाचना करने वाला कठोर अपराधी होने पर भी मैं जीवन दान द्वारा अनुगृहीत किया गया[3] ।

देवों की स्वार्थैकपरता को अच्छी तरह समझते हुए[4] भी महाराज नल ने अंगीकृत देवदौत्य के भार का पूरी तरह से निर्वाह किया है[5], देवता कृत्य के साधनार्थी दृढ़व्रत नल का अंगीकृत कार्य के सम्पादनार्थ बद्धनिश्चय होना चित्रित है[6] ।

१- मंजुल नैषधम् ७।१३५

२- अनर्घनल चरित्र, पृ०१६०

३- नलदमयन्तीयम् पृ०११७

४- मंजुल नैषधम्, पृ०३६

५- नलदमयन्तीयम् ३।६१-६६

६- नलदमयन्तीयम्-- "तदलमावेगेन, निरुध्य समुपात्त महामोहमन्तःकरणतत्त्वम् देवता-कृत्यसाधनार्थी स्वांगीकृतमेव प्रतिपालयेयम् ।।" पृ०४०

७-

धर्मभीरुता के साथ-साथ अपनी नल की निःस्वार्थता का यहां बड़ा ही सुन्दर सम्मिश्रण मिलता है ।

नल के विषय में एक बात और विशेष महत्व रखती है । वह यह कि महाराज नल एक ही पत्नी में आदि से अन्त तक अनुरक्त दिखाया पड़ते हैं । उनके दाम्पत्य प्रेम की पराकाष्ठा विप्रयोग शृंगार के वर्णन के प्रसंग में फलकने लगती हैं । कलि के प्रभाव के कारण अपनी सहधर्मिणी पतिव्रता पत्नी को वन में त्यागने के पश्चात् वे प्रिया के लिए पागल-से हो उठे उन्हें घोर पश्चाताप हुआ और वे कभी सहकार वृक्ष से तो कभी अशोक वृक्ष से, कभी शार्दूल से और कभी कोकिल से अपनी प्रिया के विषय में पूछने लगे[1] ।

अत्यधिक बुद्धिमान होते हुए भी महाराज नल को दर्प ने स्पर्श तक नहीं किया था । जो अमात्यवृद्धों से सलाह करके ही वे महान् कार्यों में प्रवृत्त होते थे,[2] वह उनकी महानता ही थी ।

अपनी प्रियतमा को अपने में अनुरक्त जानकर अत्यन्त स्मरपीड़ित होने पर भी नल उसकी प्राप्ति के विषय में अपनी विवेक-बुद्धि की अवहेलना नहीं करते । प्रियतमा को किस प्रकार से प्राप्त किया जाये, इस विषय में उनके चित्त की दोलायमान अवस्था उनके प्रियतमा के प्रति स्नेह, आत्मगौरव तथा ~~[illegible]~~ वीरता को प्रकट करती है । उन्होंने कहा, " क्या राजा से उस चन्द्रमुखी को मांग लूं, परन्तु नहीं, याचना करना राजा के लिए उचित नहीं है । तो फिर युद्ध करके उसे प्राप्त कर लूं , पर नहीं, इस प्रकार आत्मीयजनों के नाश के कारण वह विरक्त हो जायगी तो क्या प्रियतमा को बलपूर्वक हर लाउं, लेकिन यह तो राक्षस-विवाह होगा , जो ठीक नहीं[3] । इससे स्पष्ट है कि महाराज नल याचकों का मनोरथ

१- मंजुल नैषधम्-- पंचम अंक

२- भैमीपरिणयम्-- १।६०

३- किं याचेय महीपतिं शशिमुखीं याञ्चा न राजोचिता,
युध्वा किं वशयेय तां स्वजनसंक्षयभाद्विरज्येत सा ।
आहोस्वित् प्रसभं हरेय दयितां दुष्यत्स रक्षोविधि:
कर्तव्यानि न मे स्फुरन्ति बहुधा चेत: परिभ्राम्यति ।
-- भैमी परिणयम् १।५८

पूर्ण कर सकते थे परन्तु स्वयं किसी से याचना करना उनके स्वभाव के प्रतिकूल था । याचना राजा के योग्य ही नहीं होती फिर वह चाहे किसी भी वस्तु के लिए क्यों न हो । वे दमयन्ती के कारण कामपरवश हो रहे थे परन्तु उससे क्या ? आत्मगौरव का भी तो अपना स्थान था । महापराक्रमी नल को अपनी वीरता के विषय में पूर्ण विश्वास था । यद्यपि वे युद्ध करके अपनी प्रियतमा को प्राप्त कर सकते थे, किन्तु वे केवल वीर ही तो नहीं थे । जिस प्रकार वे अपनी भावनाओं को महत्वपूर्ण समझते थे, उसी प्रकार प्रिया की भावनाओं को भी उन्होंने कम महत्व नहीं दिया । यह नल की व्यवहारकुशलता ही तो है जिसके कारण वे युद्ध द्वारा प्रिया को प्राप्त करके उसकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाना चाहते । इसके अतिरिक्त वे दयिता का बलपूर्वक हरण करके भी उससे विवाह कर सकते थे परन्तु इस राक्षस-विवाह को दोषपूर्ण समझ कर वे अन्य किसी उपाय की चिन्ता में लीन परिलक्षित होते थे । नल के उदात्त चरित्र के साथ-साथ भावकुशलता की व्यंजना करते हुए कवि रामचन्द्र ने यह उत्तम काव्य का नमूना प्रस्तुत किया है ।

महाकाव्य तथा चम्पूसाहित्य में भी महाराज नल का धीर ललित रूप ही अधिक स्फुट है,[1] राज्य तन्त्र का भार मन्त्रियों को सौंप कर स्वतन्त्र राजा नल क्रीडा में निरत हुए[2] । परन्तु नाटकों के समान ही महाकाव्यों में भी नल का चरित्र कहीं-कहीं धीरोदात्त नायक के गुणों से भी अलंकृत किया गया परिलक्षित होता है । देवपरिषद् की चाटुकारितापूर्ण बातों को सुनकर दमयन्ती के अभिलाषी होते हुए भी नल ने बलात् आरोपित उस देवदौत्य के भार को स्वीकार कर लिया[3] ।

१- देखिए --'नलायनम्'-- निर्मलं धीरललितं विशालं विश्वविश्रुतम् ।
पुण्यश्लोकस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम् ।।१।१।२६

२- नलायनम् १।२।५

३- नैषध ५।१३७

अपने प्रेमानुबन्ध के प्रतिकूल इस कठिन कार्य को स्वीकार करते समय भी उनका अन्तस विकारों से आन्दोलित नहीं हुआ । इसी प्रकार राज्यभ्रष्ट होने पर समृद्ध श्री का परित्याग करके वन जाते समय महाराज नल को शोक नहीं हुआ, क्योंकि दैववश आयी हुई सम्पत्ति तथा विपत्ति में सज्जनों का चित्त विकृत नहीं होता ।[1]

दमयन्ती के प्रति प्रेम ने नल की समस्त चेतना को आच्छन्न कर लिया था । वे कभी मिथ्या विषाद का अभिनय करके विरह जन्य आहों को छिपाते, तथा अंगराग में कपूंर के आधिक्य की विभावना द्वारा पाण्डुता का अपलाप करते ।[2] इस प्रकार अपनी व्यथा को अन्तर में छिपाने के लिए प्रयत्नशील होने पर भी सभा में मदन के असंगोप्य लक्षणों के शनै: शनै: स्पष्ट हो जाने पर जितेन्द्रियों में अग्रणी नल लज्जित हो जाते थे[3]। उन्होंने दमयन्ती के प्रति अपने अनुराग का ढिंढोरा नहीं पीटा अपितु अनंग चिह्नों के गोपन में अपनी असामर्थ्य समझ लेने पर उन्होंने उपवन विहार के व्याज से निर्जन स्थान में जाने की अभिलाषा प्रकट की[4] । हंस के प्रस्ताव को सुनकर नल ने उस पक्षी के सम्मुख ही अपनी मनोव्यथा प्रकट की । एक तो हंस पक्षी था और दूसरे दमयन्ती को नल में अनुरक्त कराने का कार्य वह स्वयं संभालने के लिए नल से अनुमति मांग रहा था[5] । इस स्थिति में अपने मनोगत भावों को पक्षी के सम्मुख प्रकट करते हुए भी उन्होंने अपने अधैर्य को धिक्कारा है[6] । स्मरविह्वल होने

१- सहृदयानन्दम् ६।१

२- नैषध १।५१

३- नैषध १।५३

४- नैषध १।५५

५- नैषध २।४८

६- नैषध २।५६

पर भी दमयन्ती विषयक विविध विचारों को वे धैर्यपूर्वक चित्त में ही छिपाए रहे, अम्भोधि के सदृश वे भी अविभावनीय ही रहे[1]। कलि के प्रयत्न से घोर विपत्ति में पड़कर भी वे धैर्य से च्युत नहीं हुए। चिरकाल तक उनके शरीर में निवास करता हुआ कलि भी उनका धैर्य नाश नहीं कर सका[2]।

देवताओं को अपने सम्मुख याचक रूप में प्राप्त करके महाराज नल ने विनय एवं स्वाभिमान दोनों को ही अक्षुण्ण रखते हुए देवताओं की अभिलाषापूर्ण करने का वचन दिया। उन्होंने कहा है, "यह नर बालक प्राणों से अथवा इससे भी अधिक जो आपको अभीष्ट हो, उससे आपके चरणों की अर्चना करने के लिए प्रस्तुत है। आप आज्ञा दें, इस प्रकार की क्या वस्तु है[3]?" नलायन[4] के अन्तर्गत नल ने निःस्पृहता एवं विनयशीलता को प्रकट करते हुए राज्याभिषेक के लिए तत्पर पिता से कहते हैं, "हे तात! मुझे क्यों छोड़ रहे हैं? मैंने आपका क्या अपराध किया है, मैं राज्य-भार वहन करने योग्य नहीं हूँ।"

दृढ़व्रती नल कर्त्तव्य के सम्मुख अपनी भावनाओं और सुख से पूर्णरूपेण निरपेक्ष थे। उस धीर राजा ने दूत धर्म के निर्वाह में दमयन्ती के वियोग की उसी प्रकार तनिक भी चिन्ता न की जिस प्रकार से उर्वशीपुत्र अगस्त्य ने पयोधिपान के समय बड़वाग्नि की कोई चिन्ता नहीं की थी[5]।

पुण्यश्लोक महाराज नल के चरित्र में कुछ असामान्य गुणों का भी संस्कृत साहित्य में निबन्धन किया गया है।

१- नलायनम् १।५।२१

२- नलायनम् ७।२।२४

३- नैषध ५।६७

४- नलायनम् १।१४।१४-१५

५- नैषध ६।२

महाभारत में महाराज नल को अश्वकोविद[1] तथा हयतत्त्वज्ञ[2] कहा गया है । नाट्य साहित्य में भी इनके इस गुण का यत्र-तत्र चित्रण अथवा उल्लेख किया गया है । नल विलास नाटक में नल के सारथ्य कर्म में प्रवृत्त होने पर रथ के अश्व नल के पिता निषध से अधिष्ठित होने के कारण वेग में पवन को भी मानि पराजित करने लगे[3] । इसी प्रकार 'मंजुल नैषधम्' नाटक में भी उन्हें अश्वलक्षण वेत्ता कहा गया है[4] । अनर्घनल चरित्र नाटक में महाराज नल 'अश्ववैधक निधि'[5] कहलाते हैं । अश्वविद्या को केवल महाराज नल ही जानते हैं[6] । अश्वविद्या में नल के चातुर्य का उल्लेख 'नलदमयन्तीयम्' में भी उपलब्ध होता है[7] ।

महाकाव्यों में भी नल का अश्व विद्या चतुर के रूप में वर्णन किया गया है[8] । 'नलायनम्' में उन्हें 'अश्वहृदयज्ञ'[9] तथा सहृदयानन्दम्' में उन्हें अद्वितीय सारथी[10] कहा गया है । नवन्दनवाहन में महाराज नल का 'लोकोत्तर पौरुष' कहा गया है[11] । 'उत्तर नैषधम्' में भी रथ से च्युत वस्त्र का क्षण भर में योजन भर पीछे छूट जाना नल की सारथ्य-चातुरी का निदर्शक है[12] । बृहत्कथामंजरी में भी नल को 'वाजि-हृदयज्ञ'[13] तथा कथासरित्सागर में 'राजानौ'[14] कहा गया है ।

१- महाभारत वनपर्व ५०।१

२- म० भा० वनपर्व ६६।२१

३- नलविलास, पृ०७६

४- मं०नै० 'अश्व लक्षणं स सम्यग्जानाति ।' पृ०७२

~~५--अन०-च०-पृ०-१७४~~ तथा

सत्यमश्वहृदयज्ञो महाराज नैषधः।पृ०७३

५- अ०न०च०, पृ० १०१

६- अ०न० च०, पृ० १७४

७- नलदमयन्तीयम् ,पृ० १०८

८- नैषध १।५८-७३

९- नलायनम् ७।१।४०

१०-सहृ० १५।१४

११-सहृ० १५।१८

१२-देखिए, उत्तरनैषधम् १३।१४

१३-बृ०क०मं० लम्बक १५, श्लो०३६६

१४-कथासरित्सागर लम्बक ९, तरंग६

श्लोक ३६७

महाभारत में नल की सूर्यपाक में भी आकर्षक प्रदर्शित की गयी है। 'मुट्ठी में तिनके लेकर सूर्य का ध्यान करते ही सहसा वहां अग्नि प्रज्वलित हो गयी।'[1] परवर्ती साहित्य में भी नल के चरित्र की यह विशेषता अक्षुण्ण मिलती है। प्रच्छन्न नल द्वारा सूर्यपाक का उल्लेख 'नलविलास'[2] में उपलब्ध होता है। बाहुक के सूदविद्या विज्ञान से चकित होकर केशिनी को महाराज नल का सन्देह होने लगा।[3] 'अनर्घनलचरित्र' नाटक में यम ने नल को वरदान दिया 'तुम्हारे द्वारा किए गए पाक में दिव्य स्वाद होवे।'[4] स्वेच्छा से अग्नि और जल को प्रकट कर लेना भी नल के चरित्र की एक विशेषता है। 'अनर्घनलचरित्र' में वरुण के प्रसाद से स्वेच्छा से जल की प्राप्ति[5] तथा अग्नि के प्रसाद से स्वेच्छा से अग्नि की उपलब्धि[6] रूप नल की शक्तियां प्रदर्शित की गयी हैं। नैषध में भी यथोक्त देवों में सुरूप अग्निदेव द्वारा नल को वर प्रदान करने का वर्णन है। अग्नि देव ने नल से कहा 'राजन्! हम जानते हैं कि सूपकार क्रिया में आपकी विशेष अभिरुचि है। आपके द्वारा साधित अन्न, मत्स्य, रस आदि पदार्थ अमृत से भी अधिक स्वादिष्ट होवें।[7] वरुण देव ने भी उन्हें वरदान दिया 'आपको जिस स्थान पर अभिलाषा हो, वह चाहे मरुभूमि ही क्यों न हो, वहीं पर शीघ्र जल उत्पन्न हो जायगा।'[8] अग्नि देव ने अपनी पाकरूप मूर्ति के साथ-साथ दाहरूप मूर्ति को भी नल की इच्छा के अधीन कर दिया[9]। नलानन्द के अन्तर्गत भी देवताओं के प्रसाद से नल में इन शक्तियों का स्वामित्व परिलक्षित होता है। वरुण ने नल को वर दिया है -' हे पार्थिव नायक! तुम्हारी इच्छानुसार जल

१- म०भा० वनपर्व ७३।१२-१३

२- न० वि०, पृ० ८६

३- मंजुलनैषधम्, पृ० ७३

४- अ० न० च० ५।५०

५- अ०न०च० ५।५१

६- अ०न०च० ५।४६

७- नैषध १४।७८

८- नैषध १४।८३

९- नैषध १४।७७

स्थल में परिणत हो जाये अथवा उसका विपर्यय हो जाय[1]। अग्नि ने उन्हें वर दिया -- आपकी इच्छानुसार अविकृत रूप से मेरा सूर्यकिरणों में संक्रमण होगा[2]। इस प्रकार यहां नल सूर्यपाक में प्रवीण कहे गए हैं[3]। इसी प्रकार के वरदानप्राप्ति का उल्लेख नलाभ्युदयम में भी उपलब्ध होता है। 'कल्याणनैषधम्' में भी अग्नि के प्रसाद से नल के बनाए गए अन्न में रसोत्कर्ष[4] तथा वरुण के प्रसाद से यथेष्ट जलोद्भव[5] का उल्लेख मिलता है। उत्तरनैषधम् के अन्तर्गत भी नल की इच्छामात्र से कलश में जल के सुलभ हो जाने तथा इन्धन के जल उठने का उल्लेख किया गया है[6]। इसी प्रकार का उल्लेख 'कल्याणनैषधम्' में भी उपलब्ध होता है[7]। कथासरित्सागर के अन्तर्गत नल के सूदकर्म में प्रवृत्त होने पर चरु में जल डाले बिना ही वहां जल की उत्पत्ति तथा लकड़ियों के स्वयं ही प्रज्ज्वलित हो जाने का उल्लेख किया गया है[8]।

महाभारतीय नलोपाख्यान में महाराज नल को पहले ही अश्वप्रिय[9] तदनन्तर ऋतुपर्ण के सौहार्द्र से अश्वहृदयज्ञ[10] कहा गया है। अनर्घनल चरित्र में भी नल ऋतुपर्ण से कहते हैं, "मैं तो प्रथम से ही आपको मित्र समझता हूं, उसपर भी आपने मुझे जो संख्याशास्त्र बताया है इससे मेरे हृदय पर आपका स्नेह और भी अधिक आरूढ़ हो गया है[11]। सम्भवत: अश्वविद्या और संख्यान विद्या उस काल में अभिन्न ही रही होंगी। नल ने ऋतुपर्ण से पादपपर्णसंख्यान विद्या प्राप्त की थी ऐसा उल्लेख 'नलदमयन्तीयम्' में भी प्राप्त होता है[12]। ऋतुपर्ण के अश्वहृदय सीखकर

१-नलायनम् ३।८।४०
२-नलायनम् ३।८।४१
३-नलायनम् ७।३।४२
४-कल्याणनैषधम्, पृ०७७
५-कल्याण नैषधम् पृ० ७
६-उत्तरनैषधम् १३।६०
७-कल्याणनैषधम्, पृ०२१
८-कथासरित्सागर ल०९,त०६,श्लोक ३६५
९-म०भा० वनपर्व ५०।३
१०-म०भा० वनपर्व ७०।३०
११- अ०न०च०,पृ० ९७ १८७
१२-अहोसामर्थ्यं प्रियसुहृदे नलाय. ऋतुपर्णेन विसृष्टाया: पादपपर्णसंख्यानविद्याया: । न०द०,पृ०११६
~~१३-नलाभ्युदयम् ५।४७~~

नल को अक्षहृदय मन्त्र प्रदान किया ऐसा प्रसंग 'नलायनम्' में भी उपलब्ध होता है[1]। ठीक ऐसा ही उल्लेख 'सहृदयानन्दम्'[2] तथा 'उत्तरनैषधम्'[3] में भी मिलता है। बृहत्कथा-मंजरी में नल को ऋतुपर्ण द्वारा प्रदिष्ट अक्षहृदय की प्राप्ति का[4] तथा द्यूत में पुष्कर पर नल की विजय का वर्णन है[5]। कथासरित्सागर[6] में भी नल को अक्षों को वश में कराने वाली, तथा संख्याज्ञान कराने वाली अक्षविद्या की प्राप्ति का उल्लेख मिलता है[7]।

नलोपाख्यान में नल को वरुण के प्रसाद से उत्तमगन्धाढ्य मालाओं की प्राप्ति का[8] तथा नल द्वारा परिमृदित पुष्पों के पूर्व से अधिक सुगन्धित हो उठने का उल्लेख किया गया है[9]। इसी प्रकार अनर्घनल चरित्र[10] में भी नल को वरुण से सदैव गन्ध से परिपूर्ण रहने वाली दिव्य पुष्पमालाओं की प्राप्ति का चित्रण मिलता है। नैषध में भी वरुण ने प्रसन्न होकर नल को वरदान किया 'आपके अंगस्पर्श से पुष्प मलिन न हों तथा उनकी सुगन्धि दिव्य होवे[11]।' नलाभ्युदय के अन्तर्गत प्रसन्न होकर वरुण ने नल को सुरभित तथा भ्रमरों से परिपूर्ण माला दी ऐसा उल्लेख मिलता है[12]। 'उत्तरनैषधम्' में केशिनी बाहुक की परीक्षा लेने के पश्चात दमयन्ती से कहती है, 'पाक कर्म के समाप्त हो जाने पर उसके द्वारा हाथ से परि-मृदित होने पर भी परिमल तथा रूप में अक्षीण इस माला को देखो[13]।' 'कल्याण-नैषधम्'[14] में नल को वरुण द्वारा शोभना माला की प्राप्ति का उल्लेख किया गया है।

१- नलायनम् ७।२।३६
२- सहृदयानन्दम् १५।१८
३- उत्तरनैषधम् १३।२१
४- बृ०क०मं०लम्बक १५।३६७
५- बृ०क०मं० लम्बक १५।२७०
६- कथासरित्सागर ६।६।३७८
७- क०स०सा० ६।६।३८१
८-म०भा०वनपर्व ५४।३८
९-म०भा०वनपर्व ७३।१६
१०-अ०न०च० ५।५१
११-नैषध १४।८५
१२-नलाभ्युदयम ५।४७
१३-उ०नै० १३।६१
१४-कल्याण नैषधम्,पृ०७

महाराज नल की एक और विशेषता यह है कि वे अग्नि का सम्यक् रूपेण स्पर्श करते हुए भी उससे नहीं जलते । महाभारत में महाराज नल की इस विशिष्टता का उल्लेख मिलता है[1] । तत्पश्चात् नलदमयन्तीयम्[2] तथा उत्तरनैषधम्[3] में भी इस प्रकार के उल्लेख मिलते हैं ।

संस्कृत साहित्य में महाराज नल के चरित्र में कुछ और भी असामान्य वैशिष्ट्यों का समावेश किया गया है । नलदमयन्तीयम्[4] में सैरिभ के तथा नलायन[5] में मत्त हाथी के वशीकरण में नल की अपूर्व सामर्थ्य का उल्लेख किया गया है । नलदमयन्तीयम् में नल को पक्षिभाषामर्मज्ञ के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है । कामदेव कलि से कहता है, "तब शकुनिभाषाओं के परमाभिज्ञ राजा ने उस कातर पक्षी के पान भोजनादि के लिए प्रार्थनापूर्ण वचनों के कारण दयापर होकर पान भोजनादि दान द्वारा उसे समुज्जीवित किया[6] । नैषध के अन्तर्गत देवगण नल से कहते हैं, " हे नल । यात्रा करने वाले के लिए भरत,कार्तवीर्य तथा पृथु की भांति तुम भी स्मरणमात्र से अभीष्टप्रद होते हो[7] ।" "नलायनम्[8] " में नल को श्रीधराचार्य से जृंभकास्त्रों की प्राप्ति का भी उल्लेख मिलता है । अत्यन्त दयालु महाराजा नल पक्षी को पकड़ने में संकोच करते हैं,क्योंकि इस प्रकार उसे पीड़ा होगी[9] । पुण्यश्लोक महाराजा नल के गुणों की गणना के प्रसंग में नैषधकार की उक्ति है " यदि समस्त त्रैलोक्य गणना पर हो जाए तथा यदि उस त्रैलोक्य की आयु कभी समाप्त न हो तथा गणित की संख्यायें परार्द्ध से भी अधिक हों तब कहीं नल के समग्र गुणों की गणना की जा सकती है[10] ।

१- म०भा० वनपर्व ७३।१४
२- ~~उत्तरनैषधम्-१३।६१~~ नलदमयन्तीयम्,पृ०६५
३- उत्तरनैषधम् १३।६१
४- नलदमयन्तीयम्,पृ० १२१
५- नलायनम् ४।१३।१३-२३
६-नलदमयन्तीयम्,पृ०३०
७-नैषध ५।१३४
८-नलायनम् १।१३।५४
९-नलदमयन्तीयम्,पृ०२६
१०-नैषध ३।४०

अनर्घ नलचरित्र में[1] महाराज नल के चरित्र को संक्षेप में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है । " महाराज नल पाप में क्रूर हैं, पुण्य में प्रसन्न हैं, मोक्ष में कृत-कृत्य हैं, द्वेष पर ही क्रुद्ध होते हैं, धन से विरक्त तथा श्रीनारायण में अनुरक्त हैं । वे ज्ञानरूपी धन में लुब्ध हैं । अश्वविद्या के समुद्र तथा गानशास्त्रज्ञ हैं । वे दीन जनों पर स्निग्ध तथा सेवक गणों के प्रति सेवा कृतज्ञ हैं । महाराज नल कीर्ति में चन्द्र किरणों का , धैर्य में पर्वत का, गाम्भीर्य में समुद्र का, विद्या में बृहस्पति का प्रताप में सूर्य का हरिसेवा में शेष का, रूप में कामदेव का तथा शैतिल प्रकृति में चन्द्र का अनुकरण करते हैं । "

शृंगाररसप्रधान कथा के नायक महाराज नल का सर्वत्र अनुकूल नायक के ही रूप में चित्रण किया गया है । सामान्यत: तो नल की एक ही पत्नी स्वीकार की गयी है परन्तु जहां[2] अन्य पत्नियों का उल्लेख मिलता है वहां भी उनकी अन्य पत्नियों में आसक्ति का वर्णन नहीं उपलब्ध होता । इस प्रकार नल सर्वत्र अनुकूल नायक के रूप में ही चित्रित कियो गए हैं ।

वस्तुत: नल के चरित्र को पूर्णता को लक्ष्य करके कही गई नैषधकार की उक्ति उचित ही है --" यदि महापुरुषों को श्रेणियों में विभक्त किया जाय तो वह व्यक्ति (नल) प्रथम माना जाएगा[3] । "

नल के चरित्र को दृष्टि में रखकर नल-दमयन्ती की कथा पर आधारित सम्पूर्ण साहित्य के पर्यालोचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि नल का चरित्र अत्यन्त उदात्त है । लौकिक तथा अलौकिक दोनों प्रकार के गुणों को अपने में समेटता हुआ महाराज नल का चरित्र लगभग सभी अर्थों में पूर्ण है । जिसकी सहायता के लिए देवलोक तथा नागलोक दोनों लोकों के प्राणी समानरूप से अर्थी हों तथा जो अपनी कितनी भी हानि क्यों न हो, अर्थी का मनोरथ भंग नहीं करता, ऐसा महान चरित्र सभी अर्थों में उज्ज्वल अतएव श्लाघ्य है ।

१- अनर्घनलचरित्र १०।१६-२०

२- नलायनम् १।१४।५

३- नैषध ३।२३

दमयन्ती

नलोपाख्यान में दमयन्ती को रूप,तेज,यश,श्री, एवं सौभाग्य से समन्वित कहा गया है[1]।

विनय तो दमयन्ती में कूट-कूट कर भरी हुई है । नल द्वारा वन में अकारण ही परित्यक्ता होने पर भी उसने नल के स्थान पर अपने को ही अपराधिनी समझा ।`नलविलास[2]`के अन्तर्गत पति को क्षमायाचना करते देखकर दमयन्ती कहती है,--` मेरे ही कारण घोरधोण द्वारा आर्यपुत्र इस अवस्था को प्राप्त कराए गए हैं । इस प्रकार मैं ही आर्यपुत्र की अपराधिनी हूं,आर्य पुत्र ने मेरा कोई अपराध नहीं किया ।` इसी प्रकार स्वयंवर मण्डप में अपने प्रिय नल को सम्मुख देखकर भी दमयन्ती क्षण भर को ठिठक गई जिसे वह मन से पहले ही पति-रूप में स्वीकार कर चुकी थी उसी नल को स्वयंवर मंडप में सम्मुख देखकर भी दमयन्ती लज्जावश उन्हें अपने आप जयमाल नहीं पहनातीं । अपना निश्चय अन्तर में छिपाए हुए ही वे प्रतीक्षा करती रहीं । जब सखी ने उनसे नल के वरण के लिए सलाह दी तो उस प्रकार से मानो सखी के कहने से ही वह नल का वरण कर रही हो, उसने प्रिय को जयमाल पहना दी । इतनी लज्जा और इतना संयम और इनके साथ इतनी विनयशीलता दमयन्ती के चरित्र में चार चांद लगा देते हैं ।दमयन्ती को विलम्ब करती देखकर कपिंजला उसका कारण पूछने लगी ।विनय की रेखा करती हुई दमयन्ती ने सखी को उत्तर दिया,[3]`कपिंजले । जैसा तुम कहती हो, मैं वही कर रही हूं ।` दमयन्ती स्वयं ही नल का वरण करना चाहती थीं परन्तु साथ ही साथ सखी से इस प्रकार कह कर उन्होंने अपनी विनयशीलता का भी परिचय दे दिया।

१- म०भा० वनपर्व ५०।१०

२- नलविलास,पृ० ८७

३- नलविलास,पृ० ५३

नलदमयन्तीयम्[1] के अन्तर्गत महाराज नल की अत्यधिक कृतज्ञता को अनपेक्षित समझ कर ऋतुपर्ण स्नेहवश दमयन्ती को उस विषय में उपालम्भ सा देने लगे । अत्यन्त बुद्धिमती एवं वाग्मिनी होते हुए भी दमयन्ती ने विनयवश अपने को शुभाशुभ निर्णय के सम्बन्ध में अबला कहकर उस विषय में अपनी असामर्थ्य प्रकट की । राजकुमारी तथा रानी होते हुए भी दमयन्ती किरात राज को प्रणाम करने से नहीं हिचकतीं[2] । 'सहृदयानन्दम्[3]' के अन्तर्गत नल से प्रेरित रथनिर्घोष को सुनकर प्रिय संगम की अपनी आशा को व्यर्थ समझती हुई दमयन्ती ने अपनी सखी से कहा, 'कहां तो पापों के कारण मलिन यह विदर्भजा और कहां संसार के अद्वितीय अलंकारभूत नैषध । इन दोनों की संगति होती नहीं दिखायी पड़ती ।' निराशा के साथ विनय का मंजुल सम्मिश्रण मिलता है यहां । इसी प्रकार उत्तर नैषधम् के अन्तर्गत पति को द्यूत में निरन्तर पराजित होते देखकर उन्हें द्यूत से निवृत्त करने के लिए दमयन्ती परुष वाक्यों का प्रयोग नहीं करतीं । विनम्रता एवं पातिव्रत्य का युक्तिपूर्वक प्रदर्शन करते हुए वे नल को द्यूत-विरत करने की चेष्टा करती हैं[4] । राजा के पांव पकड़ कर दमयन्ती ने कहा, 'पृथ्वी, प्रजा आपके बालकों तथा मेरी रक्षा के निमित्त आपसे द्यूत-जन्य मद का परित्याग करने के लिए आपकी पत्नी तथा ये मन्त्री प्रार्थना कर रहे हैं । राज्य त्यागकर यदि आप वन में जायं तो मैं आपके साथ चल सकती हूं परन्तु सुकुमार शरीर वाले तथा केवल सुख से ही परिचित ये दोनों बालक क्या करेंगे ? माता-पिता से पृथक जो क्षण भर भी नहीं रहे हैं, उन्हें सम्बन्धियों के घर भेज देने में असमर्थ होती हुई मैं घोर संकट में पड़ गयी हूं ।'

१- नलदमयन्तीयम्, पृ० १३४
२- नलदमयन्तीयम्, पृ० १४१

३- सहृद० १५।३७

४- उ०नै० ८।३५-३७

~~५- अ०न०च०, अंक ७~~

दमयन्ती एक आदर्श पत्नी होने के साथ-साथ माता भी है। अनर्घनलचरित्र[1] के अन्तर्गत वन में पति के साथ भ्रमण करती हुई दमयन्ती मातामह के साथ रहते हुए बालकों की याद किया करती थी। उनकी ललित चेष्टाओं को स्मरण करती हुई वह पुत्र के मुख को स्मरण करके कहने लगी,[2] "वत्स इन्द्रसेन ! सोकर उठे हुए तुम्हारे निमेष जाल से सुशोभित, जृम्भा से बार-बार दिखते हुए दांतों से युक्त मंद-मंद शब्द वाले तथा तन्द्रा से भोले-भाले तुम्हारे मुख को स्मरण करती हूं।"

दमयन्ती अतीव बुद्धिमती है। स्वयंवर में नल के ही समान रूप वाले पांच पुरुषों को देखकर भी वह विचलित नहीं होती। मन एवं वाणी से नमस्कार करती हुई वह देवों की ही शरण लेती है[3]। इसी प्रकार पति की द्यूत में निरन्तर पराजय से शंकित दमयन्ती बालकों को कुण्डिनपुर भेज कर[4] अपनी दूरदर्शिता का परिचय देती है। नैषध के अन्तर्गत इन्द्रदूती को दिए गए उत्तर[5] में दमयन्ती की बुद्धिमत्ता स्पष्ट परिलक्षित होती है। दमयन्ती कहती है, "मैं उन्हीं (इन्द्र) को पतिरूप में शुश्रूषा करना चाहती हूं। उन्हीं से भोग सुख भी प्राप्त होगा तथा उन्हीं से मेरे पातिव्रत्य का वैभव भी बढ़ेगा। विशेषता केवल इतनी होगी कि वे देवरूप में नहीं होंगे अपितु नृप रूप में उन्हीं के एक अंश होंगे।" दमयन्ती अत्यन्त वाग्मिनी है। स्वयंवर मण्डप में उपस्थित राजाओं के निषेध में नलविलास[6] के अन्तर्गत वह अपनी वाक्पटुता का सुन्दर रीति से प्रदर्शन करती है। माधवसेन से काश्मीरेश्वर का वर्णन सुनकर दमयन्ती स्पष्ट रूप से उनका निराकरण नहीं करती।

१- अ०न०च०, अंक ७

२- अ०न०च० ७।१५

३- म०भा० वनपर्व ५४(३३-३४

४- म०भा० वनपर्व ५७।१५-२१

५- नैषध ६।६४

६- नलविलास अंक ४

वह कहती है,[1] ' आर्य माधवसेन । क्या आप नहीं जानते कि मेरा शरीर तुषारसंभार प्रणयभीरु है ।' इसी प्रकार 'नलदमयन्तीयम्'[2] के अन्तर्गत देवदूत नल के मुख से देवताओं का सन्देश सुनकर दमयन्ती अलौकिक वाक्चातुर्य का परिचय देते हुए कहती है--' सखि! मैं जानती हूं कि पुरन्दरादि देव मुझपर अत्यधिक अनुरक्त हैं फिर भी यदि उनमें से एक का वरण कर भी लूं तो अन्य तीन देवताओं को मानस संतोष नहीं होगा । तो वैसा करने पर भी यदि देवकोप से बचना सम्भव नहीं है तो मैं नारीधर्म का ही भला क्यों परित्याग करूं ?' दमयन्ती का स्वभाव दयालु है । 'नलदमयन्तीयम्'[3] के अन्तर्गत जिनसे अपनी रक्षा के लिए की गयी दमयन्ती की प्रार्थना निष्फल हो गयी उन्हीं के प्राणों की रक्षा के लिए दमयन्ती एक किरात से प्रार्थना करती है ।

दमयन्ती में कृतज्ञता की भी कमी नहीं है । उपकारक हंस के प्रति दमयन्ती अपनी कृतज्ञता प्रकट करती है --' हंस । यदि तुम मेरे प्राण मुझे दोगे तो मैं अपने प्राणों को देकर तुम्हारा ऋण चुका सकती हूं --परन्तु प्राणों से भी अधिक को देने वाले तुमसे मैं किस प्रकार से उऋण होऊंगी[4] ।'

दमयन्ती की आकृति की चारिमा का वर्णन तो साहित्य में भरा पड़ा है । महाभारतीय नलोपाख्यान के अन्तर्गत दमयन्ती को अतीव रूपवती तथा श्री के सदृश आयत लोचना कहा गया है[5] । 'नलविलास'[6] में दमयन्ती का सौन्दर्य-वर्णन बड़े विस्तार से मिलता है । एक हंस नल को दमयन्ती के विषय में बताता है[7] -- 'देव । उसके नेत्रपत्र चल कमल के विलास को अभ्यास कराने वाले हैं, उसके अधर

१- नलविलास,पृ०४६
२- नलदमयन्तीयम्,पृ०५०
३- नलदमयन्तीयम्,पृ०१२६
४- नैषध ३।८६
५- म०भा०वनपर्व ५०।१३
६- न०वि० द्वितीय अंक
७- न०वि० २।५

बन्धुजीव को कष्ट देते हैं तथा स्मर भार से परिवृद्ध पाण्डिमा में गूढ लड्डुति चन्द्र को पराजित करने वाली उसकी गण्डभित्ति सुशोभित होती है।" 'दमयन्ती कल्याणम्'[1] के अन्तर्गत भी दमयन्ती के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए राजा नल कहते हैं," उसके अत्यधिक ललित तथा अत्यन्त मनोहर अंग-अंग पर मेरा नेत्र उसी प्रकार भ्रमण कर रहा है जैसे पुष्पों पर भ्रमर समूह भ्रमण करता है।" नैषध के अन्तर्गत तो सम्पूर्ण सप्तम सर्ग में दमयन्ती का नख-शिख वर्णन उपलब्ध होता है। दमयन्ती को देखकर नल कहते हैं--[2] "दमयन्ती के प्रत्यंग में जो असीम लावण्य विद्यमान है तो क्या भगवान कामदेव ने सुन्दरी में शरीर रचना का कोई नवीन कौशल प्रदर्शित किया है।" 'सहृदयानन्दम्' के अन्तर्गत भी द्वितीय सर्ग में[3] दमयन्ती का विस्तृत सौन्दर्य वर्णन प्राप्त होता है।" चन्द्र के कलंक से दुषित तथा पंकजों के प्रदोष काल में संकुचित हो जाने से विलज्जित शिल्पमनोहर विधि ने उसके कमनीय आनन की रचना की[4]। 'नलाभ्युदय' के अन्तर्गत भी सुन्दरी दमयन्ती की लावण्यविशेष के कारण परिवृद्ध चारिमा का वर्णन उपलब्ध होता है[4]। 'उत्तर नैषधम्' के अन्तर्गत भी कलि के मुख से दमयन्ती का सौन्दर्य वर्णन कराया गया है। कलि कहता है,[5] "इसका मुख तो मानो चन्द्र के समान सुन्दर कामदेव का रथ है जिसपर उच्चनासिका मानो विजयपताका है। इसके दांत बीज के समान तथा ओष्ठ बिंबफल के समान हैं। समुद्र में चन्द्र तथा शंख में परस्पर स्पर्द्धा को देखकर ब्रह्मा ने इस मृगाक्षी के मुख और कण्ठ के व्याज से दोनों में चन्द्र की श्रेष्ठता प्रतिपादित कर दी।"

दमयन्ती का चरित्र-चित्रण साहित्य में एक आदर्श भारतीय नारी के रूप में उपलब्ध होता है। किसी भी अवस्था में वह पति की निन्दा नहीं सुन सकती।

१- दमयन्तीकल्याणम्, पृ०२२

२- नैषध ७।१२

३- सहृदयानन्दम् २।५०

४- नलाभ्युदयम् १।३०

५- उ०नै० ७।११-१४

नलविलास के अन्तर्गत बाहुक रूप से प्रच्छन्न नल द्वारा नल की निन्दा दमयन्ती किसी तरह नहीं सुनती । दमयन्ती रुष्ट होकर अपने पति के निन्दक को उत्तर देती है--[1] "यह कौन दुर्मुख आर्यपुत्र की निन्दा कर रहा है ? हे वैदेशिक ! मैं अरण्य में पति द्वारा परित्यक्ता नहीं हूं,किन्तु स्वयं ही मार्गभ्रष्ट हो गयी थी ।" गुरुजनों के आदेश को दमयन्ती अलंघ्य मानती है[2]। द्यूत में सर्वस्व हारे हुए पति को लज्जित करना पतिव्रता नारी का धर्म नहीं है । अनर्घनलचरित्र के अन्तर्गत विदूषक के कहने पर भी दमयन्ती राज्यभ्रष्ट पति को लज्जित करना स्वीकार नहीं करती,उल्टे विदूषक को प्रदत्त उनका उत्तर उनके चरित्र की उज्ज्वलता को प्रकट करती है । दमयन्ती विदूषक से कहती है--[3] "कान्तक ! इस पूछने से क्या बनेगा ? जो समय था उस समय तुम लोगों ने भी बहुत कहा, मैंने भी बहुत कहा, आर्यपुत्र नहीं माने, अब तो इस बारे में उनसे कुछ कहकर उन्हें लज्जित करने के बिना और कुछ फल नहीं और मेरा यह धर्म नहीं कि अब मैं उनको कुछ कहूं । मेरा धर्म यही है कि जिस दशा में आर्यपुत्र रहेंगे उस दशा में रहूंगी, जिधर को जाएंगे, उधर को उनके पीछे-पीछे चली जाऊंगी ।" पतिपरायणा दमयन्ती के लिए पति ही परमेश्वर है । देवगण भी उसकी समता नहीं कर सकते[4]। पति के साथ विहार करती हुई दमयन्ती कान्तार में भी किसी कष्ट का अनुभव नहीं करती[5]। मनसा नल का वरण कर लेने वाली दमयन्ती नल की दासी होना चाहती है । उसने हंस से कहा है[6] "जो नल की केवल दासी होना चाहती है उसकी उस पद से भी उत्कृष्ट किसी अभिलाषा को साधने की तुम्हारी इच्छा को धन्यवाद । परन्तु अमृत का आधार होकर भी चन्द्रमा कमलिनी के किस काम का, क्योंकि

१- नलविलास,पृ०८२

२- मं०नै०-"अलंघणिज्जो गुरुअणादेसो" पृ० ८१

३- अ०न०च०,पृ० १२३

४- अ०न०च०,पृ० १८०

५- नलदमयन्तीयम् "प्रियंवद नाहं त्वया सह विहरन्ती कष्टलेशमपि अनुभवामि ।" पृ०६५

६- नै० ३।८०

कमलिनी को तो दुर्य चाहिए ।" नैषध में दमयन्ती का आदर्श-गृहिणी के रूप में भी चित्रण किया गया है । गौरी आदि देवताओं का पूजन करके, तथा पति के भोजन कर लेने के पश्चात् दमयन्ती का स्वयं भोजन करना उसकी धार्मिकता तथा पातिव्रत्य के परिचायक हैं ।[1]

'सहृदयानन्दम्' के अन्तर्गत वन में दमयन्ती के साथ कष्ट झेलते हुए नल ने दमयन्ती को उनके पिता के राज्य विदर्भ का मार्ग समझाया है । नल का संकेत समझ कर वाष्पाम्बु से क्लिन्न कपोलों वाली दमयन्ती नल से कहने लगी है,[2] " हे नरेन्द्र ! जिसका तुमसे भी अधिक अपने शरीर में प्रणय है ऐसा मुझे धिक्कार है । यदि ऐसा नहीं है तो भीम के घर में मुझे रखने की इच्छा क्यों करते हो ।" पतिव्रता दमयन्ती के लिए पति ही सर्वस्व है ।[3] 'नलाभ्युदयम्' के अन्तर्गत कुण्डिनपुर का मार्ग प्रदर्शित करते हुए नल से दमयन्ती ने कहा, --" अपि जीवितनाथ ! तुम्हारे चरणों की शुश्रूषा में स्थित, दुःख तथा सुख में समान की भाग लेने वाली मुझको तुम अन्य स्त्री की भांति क्यों कह रहे हो ?" सम्पूर्ण नल-दमयन्ती साहित्य में दमयन्ती का चित्रण परम साध्वी पतिव्रता नारी के रूप में किया गया है । 'नलोपाख्यान' के अन्तर्गत ही एक बार मन में नल को पतिरूप में स्वीकार कर लेने के पश्चात् वह देवों को भी नहीं स्वीकार करती ।[4] नल से प्रत्याख्यान की अवस्था में वह विष, अग्नि, जल अथवा रज्जु की सहायता से प्राण त्याग करने के लिए भी उद्यत हो गई ।[5] एक वस्त्र धारण करके राज्यभ्रष्ट पति का वन में अनुसरण करती हुई दमयन्ती[6] पतिव्रताओं में अग्रगण्य है । दमयन्ती के सत्य पातिव्रत्य का प्रमाण भी अनेक स्थलों पर मिलता है । स्वयंवर मण्डप में उपस्थित पांच नलों में से अपने पातिव्रत्य के बल से ही दमयन्ती नल को पृथक् पहचान सकी ।[7]

१- नै० २१।१२१

२- सह० ६।५०

३- नलाभ्युदयम् ७।३०

४- म०भा०वनपर्व ५३।१४

५- म०भा० वनपर्व ५३।४

६- म०भा० वनपर्व ५८।८

७- म०भा० वनपर्व ५४।२२

इसीप्रकार वन में कामुक किरात को अपने पातिव्रत्य तेज से भस्म करके दमयन्ती ने अपने सतीत्व की रक्षा की[१]।

'नलविलास'[२] के अन्तर्गत राज्यभ्रष्ट होकर वन में जाते हुए महाराज नल ने दमयन्ती को कुबर के समीप रहने को अथवा पिता के घर चले जाने का सलाह दी परन्तु दमयन्ती इसके लिए तय्यार नहीं हुई। दमयन्ती कहने लगी --'आर्यपुत्र ! मैं यहां रह जाऊंगी परन्तु प्राण तो आपके साथ ही जाएंगे।' वन के क्लेशों की तनिक भी परवाह न करके उन्होंने पति के साथ जाने का आग्रह किया[३]।

पतिव्रता दमयन्ती ने क्षत्रियाचार के अनुसार प्रिय का अप्रिय निवारण करने के लिए[४] चिता में प्रवेश करने की इच्छा की[५]। पति के लिए उन्हें प्राण देने में भी संकोच नहीं होता। पतिव्रता दमयन्ती, नल के प्रेम में आपाद मस्तक निमग्न है। उसका प्रेम सत्य है, हरेक कसौटी पर खरा उतरने वाला है। क्या पूर्वराग और क्या विप्रयोग शृंगार दोनों ही स्थलों पर दमयन्ती की कामकामावस्था के चित्रण में कवियों ने तनिक भी प्रमाद नहीं किया है। विरह-विह्वला इसमें क्रमश: दसों स्मरदशाएं स्थान प्राप्त कर लेती हैं[६]। दमयन्ती के विरह की गम्भीरता उसके पति-प्रेम का प्रतिरूप है। प्रेम में जितनी वास्तविकता तथा प्रगाढ़ता होती है, विरह में उतनी ही अधिक व्यथा होती है, इसी सार्वभौम सिद्धान्त को प्रतिपादित करते हुए किसी कवि ने कहा है :--

प्रेम सत्यं तयोरेव ययोर्योगवियोगयो: ।
वत्सरा वासरीयन्ति,वत्सरीयन्ति वासरा: ।।

दमयन्ती को अपने पातिव्रत्य पर पूर्ण विश्वास था। अपनी विलासक्ति के कारण

१- म०भा० वनपर्व ६०।३३-३६

२- नलविलास,पृ०५७

३- नलविलास,पृ०५७

४- नलविलास,पृ०८२

५- नलविलास ,पृ०८४

६- द्रष्टव्य: नैषध-- चतुर्थ सर्ग

उसे विश्वास था कि स्वप्न में दृष्टिगोचर होने वाला युवक नल से भिन्न नहीं हो सकता । 'अनर्घनलचरित्र'[1] के अन्तर्गत दमयन्ती ने अपनी सखी मालिका से कहा है "हे सखि ! पातिव्रत्य धर्मधुरन्धर मेरा चित्त जो स्वप्नदृष्ट राजकुमार में आसक्त है, इससे मैं जानती हूं कि वह हंसराज ने जिस नल का संदेश दिया था, वही है ।" नल से भिन्न जीव का दमयन्ती भर्तृभाव से स्पर्श भी नहीं करना चाहती । उसका विचार है कि[2] "विधाता ने स्त्रियों के लिए पातिव्रत्य ही परम धर्म बनाया है । इसी धर्म को लक्ष्य करके श्रुति ने 'नैका बहून् पतीन्' इत्यादि धर्म कहा है ।" दमयन्ती को अपने पातिव्रत्य पर सुदृढ़ विश्वास है । नैषध[3] के अन्तर्गत देवदूत नल से वह सखी के मुख से कहती है--"यदि स्वाप्नावस्था के अधीन होने पर भी मेरे आशय को नल के सिवाय किसी अन्य ने स्पर्श तक किया हो तो देवगण समस्त लोक के सभी वृत्तों की साक्षी अपनी बुद्धि ही से क्यों नहीं पूछ लेते ।" इसी प्रकार नलायनम्[4] के अन्तर्गत भी दमयन्ती ने अपनी सखी केशिनी के माध्यम से देवदूत नल को इस प्रकार उत्तर दिया है --" क्या तत्त्व को जानकर भी देवगण परस्त्री की कामना करते हैं और क्या एकपतिव्रत धारण करने वाली मैं उन कामार्तों का भजन करूं ?"

'नलायनम्' के अन्तर्गत द्यूत में सर्वस्व हारे हुए तथा वन के लिए प्रस्थित नल के साथ जाने की अनुमति कूबर ने किसी को भी नहीं दी । नल की कनकावली आदि प्रियाओं को उसने उनके पिताओं के घर पहुंचवा दिया[5] । परन्तु[6] दमयन्ती के पातिव्रत्य तेज से प्रभावित होकर वह दमयन्ती को नहीं रोक सका । दमयन्ती ने देवर से स्पष्ट कह दिया[7] --" मुझे पति का अनुगमन करने से रोकना तुम्हारे लिए उचित नहीं है । पति मेरा शरीर हार गए हैं परन्तु प्रणय का पण

१- अ०न०च० १।२७

२- अ०न०च० ५।४७

३- नै० ६।३२

४- नलायनम् २।१३।२३

५- नलायनम ४।८।५-६

६- नलायनम् ४।८।१२

७- नलायनम् ४।८।१६-१७

तो नहीं किया गया था । तुम्हारे द्वारा रुद्ध होकर मैं यहां रह तो जाऊंगा, परन्तु प्राण त्याग के मार्ग में तुम भला कैसे दण्डधर होगे ।[१]

`सहृदयानन्दम्` के अन्तर्गत वन में भटकती हुई तथा नल द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती से तपस्वी ने आश्रम में कुछ दिन सुखपूर्वक निवास करने के लिए कहा परन्तु राजकुमारी दमयन्ती के हृदय को कहीं विश्राम नहीं था, क्योंकि पतिव्रता स्त्रियां सुखी अथवा ० दुखी प्रिय की दशा का ही अनुकरण करती हैं ।[१] नल के विरह से अत्यन्त सन्तप्त होकर दमयन्ती ने चिता में जलकर भी जन्मान्तर में नल के लाभ की कामना की[२] । मृत्यु एवं नैषध के विप्रयोग में दमयन्ती के लिए द्वितीय ही दुःसह है[३] ।

नल-दमयन्ती की कथा शृंगाररस प्रधान है । इसकी नायिका दमयन्ती सामान्यतः सभी ग्रन्थों में स्वयंवर से पूर्व तक परकीया कन्या के रूप में प्रस्तुत की गयी है । स्वयंवर में नल का वरण कर लेने के पश्चात् दमयन्ती का स्वीया नायिका के रूप में वर्णन कियागया है । `नैषधीय चरितम्` के अन्तर्गत हंस का किंचिन्मात्र भी अपराध न करने पर भी उस पक्षी से क्षमायाचना करती हुई दमयन्ती शील तथा आर्जव का परिचय देती है । दमयन्ती हंस से कहती है--[४] हे सौम्य । इस कुमारी ने जो कुछ अशिष्ट व्यवहार किया हो उसे क्षमा करना । हंस होते हुए भी देवांश होने के कारण तुम उसी भांति वन्दनीय हो, जैसे श्रीवत्स से अंकित होने के कारण (नारायण की) मत्स्यमूर्ति वन्दनीय होती है ।

दमयन्ती में नारीसुलभ लज्जा प्रभूत मात्रा में परिलक्षित होती है । `मंजुल नैषधम्` के अन्तर्गत प्रिय को सम्मुख प्राप्त करके लज्जावश दमयन्ती उनसे कुछ

१- सहृदयानन्दम् १२।२३-२५

२- सहृदयानन्दम् १५।४१

३- सहृदयानन्दम् १५।४४

४- नैषध ३।५७

भी पूछने में असमर्थ हो जाती है । दमयन्ती अपनी सखी से कहती है, " सखि! लज्जा के कारण मैं नहीं पूछ सकती हूँ ।"[1] "नलदमयन्तीयम्"[2] में स्मर पीड़िता होने पर भी दमयन्ती लज्जावश अपने विकार ~~अपनके~~ पहले अपनी प्रियसखी कल्पलता पर भी व्यक्त नहीं करती । दमयन्ती की शारीरिक अवस्था देखकर ही उनकी सखी सब कुछ समझ लेती है । इसी प्रकार जब कल्पलता से दमयन्ती को पता चलता है कि उनके माता-पिता दमयन्ती का सब भाव जान गये हैं तो उन्हें अत्यधिक लज्जा होता है । वे कल्पलता से कहती हैं, " हा प्रमाद को धिक्कार है । क्या केवल माता को ही नहीं पिता को भी मेरा वृत्तान्त पता हो गया है । सखि कल्पलते ! मेरी दुरन्तमूर्च्छा ने अत्यधिक अपराध किया है जिसके कारण गुरुजनों को मेरे मानस विकार का ज्ञान हो गया । अब तो लज्जातिशय्य से दुर्भर मेरा मन वसुन्धरा विवर में समा जाने की कामना करता है । हा धिक्कार है । मोहवश मैंने कुमारीजन के विरुद्ध यह लोक का अतिक्रमण करने वाला व्यवहार किया है ।"[3] यहाँ कवि ने नायिका के चरित्र का बहुत ही मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत किया है । नल विषयक चित्तानुराग को वह अपने आप तक ही सीमित रखना चाहती है । और तो और अपना अन्तरंग सखी पर भी अपना मनोभाव प्रकट करते वह लज्जा का अनुभव करती है । जब सखी से इतना संकोच हो तब माता और पिता पर उस भाव की अभिव्यक्ति कितनी लज्जाजनक होगी । दमयन्ती अपनी मनोव्यथा जिह्वा पर अन्त तक नहीं लाई परन्तु शारीरिक विकारों पर उसका भला क्या वश ? पिता को भी यह भाव ज्ञात हो गया है यह जानकर दमयन्ती लज्जा ~~वे~~ के बोझ से दबती जा रही है । लज्जा संचारी भाव की कितनी सुन्दर व्यंजना की है कवि ने । नल-दमयन्ती साहित्य में नल को दमयन्ती से इतर किसी क्रिया का वर्णन नहीं उपलब्ध होता । ~~परन्तु नाटकिम~~ "नलाभ्युदयम्"[4]

१- मंजुल नैषधम् पृ० ३०

२- नलदमयन्तीयम्,पृ० ३५

३- नलदमयन्तीयम्,पृ० ३८-३९

४- नलाभ्युदयम् ६।१३-२९

में दमयन्ती कोमुग्धा नायिका के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है । 'अत्यधिक लज्जित होती हुई वह चकोर लोचना कुछ दिनों में चतुर सखियों के अनुरोध से पति के आसनार्ध को प्राप्त हुई[1] ।' 'नैषधीयचरितम्' में शृंगार रस के उन्मेष के स्थलों का बाहुल्य है । श्रीहर्ष ने नायिका दमयन्ती को अष्टादश सर्ग में मुग्धा नायिका के रूप में प्रस्तुत किया है । 'लज्जा की सरिता में स्नान करती हुई के समान, सिर झुकाए हुए द्वार पर खड़ी चित्रलिखित युवति के समान उस (दमयन्ती) ने प्रिय के सैकड़ों बार बुलाने को भी अनसुना कर दिया[2] ।'

'उत्तरनैषधम्'[3] में दमयन्ती प्रगल्भा नायिका के रूप में उपलब्ध होती है । 'नलविलास'[4] में मकरिका से की गयी मंत्रणा के अनुसार कुसुमाकर उद्यान में प्रिय से मिलन के लिए उत्सुक दमयन्ती का विरहोत्कण्ठिता नायिका का रूप स्फुट है । दमयन्ती अपनी सखी से कहती है, ' सखि कपिंजले ! कुसुमाकर में निषधपति का आवास है यह सुनकर कामपूजा के व्याज से मैं यहां आयी।हू मैंने तरुनिरूपण के छल से समस्त आराम में खोज लिया परन्तु कोई भी कहीं भी नहीं दिखायी दिया ।' इसके अनन्तर प्रिय से मिलन हो जाने पर अभिसारिका रूप में दमयन्ती के दर्शन होते हैं[5] । वन में नल द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती प्रोषित प्रिया नायिका है । नल के पुनर्मिलन के पश्चात् पुन: वह स्वाधीन पतिका नायिका के रूप में चित्रित की गयी है ।

'नलायनम्'[6] में दमयन्ती के गुणों का एकत्र उल्लेख करने का प्रयत्न किया गया है वह वेद, सिद्धान्त, पुराण, आगम, संहिताओं, तर्क, व्याकरण, छन्द तथा अलंकार समूह को भी जानती थी । गीत नृत्य लिखित गणित वैद्यक भूतविद्या शय्या

१-नलाभ्युदयम् ६।१६

२- नैषध १८।३४

३- उ०नै० सर्ग १४

४- नलविलास,पृ०३४

५- नल विलास ,पृ०३६

६- नलायनम् १।१०।१६-२१

पुष्प ग्रन्थन वरण चित्र छेद्यादि कर्म होरा चारायण , रसवती शाकुन कृत आदि में कुछ भी ऐसा नहीं था जो वह न जानती हो । इस प्रकार सर्वकलाकलाप कुशला सर्वांग शृंगारिणी सर्वानन्दविधायिनी वह सर्व लोकोत्तरा है ।"

नल चम्पू[१] में भी दमयन्ती के गुणों के आकलन करने का प्रयत्न किया गया है ।" शैशव व्यतीत होने पर पिता की आज्ञा से , गुरु के उपदेश से वृद्ध सज्जनों के सहवास से तथा बुद्धि के विकास से दमयन्ती शीघ्र ही पुण्य कर्मों में निपुण, वीणा में प्रवीण,कुलाचारों में निराकुल,निभ्रान्त तुलिका द्वारा चित्र-निर्माण में कुशल,शतरंज में विशारद, ग्रन्थों के आलोचन में प्रबुद्ध तथा आतुर एवं अनाथ जनों की चिकित्सा में चतुर हो गई । उसने लास्य में अनालस्य धन्य एवं उचित व्यवहार में प्राधान्य,आलेख्यों में वैचित्र्य,गीतशास्त्र में चातुर्य, हस्तिचिकित्सा में कौशल,पटहवादन में पटुता,मालाग्रन्थन में निर्मलता, गीतों में प्रसिद्धता तथा कामवार्ताओं में प्राकाम्य प्राप्त किया । न कोई ऐसा काव्य था न नाटक न विद्या और न कला जहां प्रबुद्ध उस (दमयन्ती) की बुद्धि विकसित न हुई हो ।"

दमयन्ती के उज्ज्वल चरित्र को देखते हुए नैषधच में उन्हें जो "पृथ्वी का अनर्घभूषण[२]" कहा गया वह उचित ही है ।

हंस

भारतीय प्रेमाख्यानों में मनुष्येतर प्राणियों द्वारा प्रिय के पास सन्देश भिजवाने की एक प्रथा स्वसी चली आयी है । प्रेमियों के संयोग अथवा वियोग की अवस्थाओं में किसी भावविशेष के आलम्बनभूत पशुपक्षियों की दूत रूप में कल्पना से कथानक की प्रेमानुभूति में और भी अधिक तीव्रता आ जाती है, ये भोले भाले पक्षी , अपने व्यक्तित्व का मिश्रण किये बिना ही, सन्देश को उसी सुमधुर रूप में

१- नलचम्पू तृतीय उच्छ्वास

२- नैषध ५।२६

प्रिय तक पहुंचा देते हैं । प्रिय के लिए एक निरीह प्राणी से प्राप्त प्रिय का सन्देश और भी मधुर हो उठता है । उसके अतिरिक्त किसी पुरुष दूत अथवा स्त्री दूती के सम्मुख प्रेमी को अपने हृदयोद्गार व्यक्त करने में लज्जा भी हो सकती है, जब कि पक्षी के सामने लज्जा की कोई बात नहीं ।

नल तथा दमयन्ती के प्रसिद्ध प्रेमाख्यान में प्रेम दूत के रूप में हंस की कल्पना की गई है । यह हंस साधारण पक्षी नहीं है । उसके पक्ष स्वर्णमय हैं[1] । नलचम्पू[2] में इसे श्वेतपक्ष भी कहा गया है ।

यह हंस मानुषी वाणी में बोलता है[3] । नलायन के अन्तर्गत तो अव्यक्तवादी हंस पक्षी के मुख से मानुषी भाषा सुनकर दमयन्ती को सन्देह होने लगा कि कहीं यह वेदवश देव या दानव न हो[4] । इसी प्रकार नल के हस्तपंजर में अवरुद्ध होकर वह प्रस्फुट वर्ण मण्डल वाले प्रगल्भ शब्दों में मनुष्य के समान नल से बात करने लगा[5] ।

हंस सहृदय जीव है । अपने को बंधनग्रस्त समझकर वह अपने लिए ही नहीं चिन्तित होता, उसे अपनी वृद्धा माता और अपनी पतिव्रता हंसिनी की दुर्दशा -- विषयक विचार आते हैं । वह कहता है, "हाय ! मुझ इकलौते पुत्र वाली मेरी जरातुरा माता तथा मेरी नवप्रसूता पतिव्रता हंसिनी । यही अकेला प्राणी उन दोनों का जीवनोपाय है । विधे ! उसे भी मारने में तुझे दया नहीं आती[6] ।" उसे अपने बच्चों का ध्यान आता है "मेरे प्यारे बच्चो ! अब चूं चूं शब्द करते हुए देर तक किसको बुलाकर भोजन मांगोगे ? अब किसकी ओर अपने चंचल चंचु करके कथा

१- म०भा०वनपर्व ५०।१६

१क नलाभ्युदयम २।३

२- नलचम्पू पृ०४४

३- म०भा० वनपर्व ५०।२७

४- नलायनम १।१२।३१

५- नलाभ्युदयम २।७

६- नैषध १।१३५

कहोगे ? हाय ! अब तुम्हारी कहानी ही रह जायगी ।[1]

नल दमयन्ती का प्रणय दूत एक भोला भाला जीव मात्र नहीं है । यह पूर्ण व्युत्पन्न है । धर्म की ओर लक्ष्य करके वह राजा नल से कहता है आपके दर्शन से ही मेरी अन्तरात्मा आपके प्रति विश्वस्त हो गई थी । अतएव मुझे मारने से केवल जीवहिंसा ही नहीं होगी अपितु एक विश्वस्त की हत्या होगी और धर्मधुरीणों ने विश्वास प्राप्त शत्रुओं को भी मारना विशेष रूपेण निन्दित बताया है ।[2] उत्तरनैषधम्[3] के अन्तर्गत भी हंस एक स्थान पर काम के चरित तथा उमा के तप का वर्णन करके तथा अन्यत्र सागर का वर्णन करके[4] अपनी व्युत्पत्ति का परिचय देता है ।

यह हंस कलाओं में भी प्रवीण है । नलायनम्[5] के अन्तर्गत दमयन्ती के अनुरोध करने पर अपने नख से नल का चित्र अंकित कर देता है ।

अपने ऊपर किए गए उपकार को हंस भली भांति समझता है । वह कृतज्ञ पक्षी है । वह नल से अपने प्राणों की रक्षा के लिए याचना करता है परन्तु साथ ही साथ वह बदले में दमयन्ती को नल में अनुरक्त करने का वचन दे कर[6] प्रत्युपकार द्वारा अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर देता है । इसी प्रकार नैषध के अन्तर्गत भी बंधनमुक्त होकर हंस ने नल से कहा राजन् ! मैंने आपको जो कुछ अप्रिय कहा है, उसका कुछ प्रिय करके प्रतिकार करना चाहता हूं ।[7]

हंस, में सच्चे मित्र के सभी लक्षण विद्यमान हैं । नल के साथ वह अपनी मैत्री का पूर्णरूप से निर्वाह करता है । नल के देवदौत्य सम्पादन के प्रसंग में दमयन्ती के सम्मुख आत्मप्रकाशन कर बैठने के कारण पाश्चाताप से व्याकुल मित्र को

१- नैषध १।१४२

२- नैषध १।१३१

३- उ०नै० सर्ग ४

४- उ०नै० सर्ग ५

५- नलायनम् १।१४।३७

६- म०भा० वनपर्व ५०।२१-२२

७- नैषध २।११

हंस आश्वासन देता है[1]। इसी प्रकार 'नलायनम्'[2] में देव कार्य में प्रवृत्त मित्र नल से वह उस कार्य से विरत होने का आग्रह करता है। मित्र नल के कार्य की चिन्ता उसे सदैव बनी रहती है। दमयन्ती के विषय में सुनकर वह शीघ्रता पूर्वक मित्र का कार्य सम्पन्न करने की इच्छा से विदर्भ जाने का कष्ट उठाता है[3]।

हंस कर्तव्यपरायण है। कर्तव्य के सामने उसे अपने सुख-दुख की तनिक भी चिन्ता नहीं रह जाती। यही कारण था कि कुण्डिनपुर जाते समय मार्ग में उसने विशाल वृक्षों से सुशोभित किसी भी वन में न तो आश्रय ही लिया और न अपनी जाति के लोगों की ध्वनि का प्रतिशब्द ही किया[4]। कोटि-कोटि रमणीय नग,नगर,गिरीन्द्र,द्वीपादि को लांघता हुआ चण्डवेग वाला वह ब हंस मित्र का कार्य पूर्ण करने के लिए शीघ्र ही कुण्डिनपुर पहुंच गया[5]।

पक्षी होते हुए भी हंस निर्भीक है। नलायनम्[6] के अन्तर्गत नल द्वारा गृहीत होने पर भी हंस न तो चिल्लाया और न उसने विलाप ही किया। 'सहृदयानन्दम्'[7] के अन्तर्गत हंस राजा नल के समीप ही जा बैठा। उसे नल से भय नहीं लगा।

हंस को अपने ऊपर विश्वास है। नलायनम् के अन्तर्गत वह पूर्ण आत्मविश्वास के साथ नल को आश्वासन देता है कि 'आप अपने प्रकृतिवर्ग को रहने दीजिए। पक्षिमात्र होता हुआ भी मैं मैत्री को आपकी शरण में ला दूंगा, इसमें कोई संशय नहीं है[8]।'

यही नहीं, यहां पर हंस प्रियम्वद भी है। राजा नल से बन्धनमुक्ति प्राप्त करके वह हंसिनी के कटुवचनों के मूलमें उसकी अज्ञानता को दिखाता हुआ

१- नैषध ६।१२६
२- नलायनम् २।१६।१४
३- सहृदयानन्दम् २।७१
४- नैषध २।७२
५- नलायनम ३।११।२२
६- नलायनम् १।८
७- सहृ० १।६३
८- नलायनम् १।११।१२

राजा की प्रशंसा करता है[१]।

'नलदमयन्तीयम्'[२] के अन्तर्गत पितामह देवाधिपति द्वारा दमयन्ती के प्रति नल को आवर्जित करने के लिए भेजा गया यह हंस पितामह का वाहन है। 'नलायनम्' में हंस द्वारा नल और दमयन्ती को परस्पर आवर्जित किए जाने के मूल में दूसरी कथा उपलब्ध होती है[३]। यहां यह हंस शारदा का बालचन्द्र नामक वाहन है। एक बार कार्य में प्रमाद करने के कारण देवी शारदा द्वारा शप्त होकर शाप से निर्मुक्ति के लिए वह नल और दमयन्ती का विवाह कराने में प्रयत्नशील होता है।

'उत्तरनैषधम्'[४] में हंस दमयन्ती के साथ विहार करते हुए नल के मित्र के रूप में ही उपलब्ध होता है। यहां उसका कोई विशेष महत्व नहीं है। इसी प्रकार 'दमयन्ती कल्याणम्' में स्वर्ग से विमान में लौटते हुए नल के मित्र साथी के रूप में हंस का चित्रण मिलता है। यहां हंस नल का दमयन्ती के प्रति दौत्य करते नहीं परिलक्षित होता अपितु नल और हंस दोनों ही दमयन्ती का साक्षात् दर्शन करते हैं।

नलदमयन्ती साहित्य में सामान्यतः हंस का निसृष्टार्थ दूत के रूप में चित्रण उपलब्ध होता है। हंस स्थान और अवसर को अनुकूल समझ कर ही रहस्य की बात कहता है। वह सखियों के बीच ही दमयन्ती को नल का सन्देश नहीं सुनाने लगता। पहले दमयन्ती को एकान्त में ले जाता है[५] तत्पश्चात् अपनी सामर्थ्य की प्रख्यापना द्वारा वह दमयन्ती का अपने ऊपर विश्वास उत्पन्न करता है। इसी समय व्याज से वह नल की प्रशंसा करने में नहीं चूकता[६]। अब वह दमयन्ती के हृदयगत भावों को जानने का प्रयत्न करता है। दमयन्ती का नल में अनुराग जानकर भी

१- नलायनम् १।८।२६-३०
२- नलदमयन्तीयम् पृ०३१
३- नलायनम् १।६
४- उ०नै०सर्ग २-५
५- नैषध ३।१२
६- नैषध, सर्ग ३

वह अच्छी तरह दमयन्ती के हृदय की परीक्षा ले लेता है ताकि उसके दौत्य की सफलता में तनिक भी शंका न रह जाय। दमयन्ती को नल में बद्धानुराग देखकर हंस बड़ी सावधानी से उन्हें नल का सन्देश सुनाता है।

इसी प्रकार सहृदयानन्दम्[1] के अन्तर्गत भी नल का सन्देश लेकर दमयन्ती के पास पहुंचा हुआ हंस दमयन्ती के सम्मुख प्रेम दौत्य में अपनी अनुपम सामर्थ्य का प्रख्यापन करता है। वह दमयन्ती को बता देता है 'सुन्दरि। तुम मुझे कर्णाभिराम बोलने वाले केलिकीर के समान मत समझो। मैं ब्रह्मा का वैमानिक हूं, मेरे लिए सातों लोकों में कुछ भी दुष्कर नहीं है।[2] इस प्रकार दमयन्ती के मन में विश्वास उत्पन्न करके वह उनके मनोभावों का परिज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। इसके पश्चात् ही वह नल का रहस्य दमयन्ती के सम्मुख स्पष्ट करता है।

'नलचरित्र नाटकम्' में हंस सन्देशहारक दूत के रूप में चित्रित किया गया है[3]। यहां भगवती सरस्वती द्वारा नल के लिए प्रेषित एक लेख को नल तक पहुंचा देने में ही हंस के कार्य की इतिश्री हो जाती है।

'नलायनम्'[4] में महाराज नल ने हंसी से हंस की प्रशंसा करते हुए ठीक ही कहा है --' बाले। यह तुम्हारा पति मराल प्रियदर्शन विवेकी, विनयी, विद्वान्, श्रीमान्, सौम्य, शर्मा, तथा पवित्र है।

१- सहृदयानन्दम् सर्ग ३

२- सहृदयानन्दम् ३।४४

३- नलचरित्रम्, प्रथम अंक

४- नलायनम् १।१६।२४

कलि

नल एवं दमयन्ती के प्रेमाख्यान में कलि की प्रतिनायक के रूप में अवतारणा हुई है, नल दमयन्ती के प्रसिद्ध प्रेमाख्यान के सहज ही दो भाग प्रतीत होते हैं। इसमें नल एवं दमयन्ती के विवाह तक की कथा को कथा का पूर्वार्द्ध तत्पश्चात् नल और दमयन्ती के पुनर्मिलन तक की कथा को कथा का उत्तरार्द्ध समझा जा सकता है। इस कथा के पूर्वार्द्ध में इन्द्रादि लोकपालों का तथा उत्तरार्द्ध में कलि का प्रतिनायक के रूप में वर्णन किया गया है।

यहाँ कलि, नल का अकारण शत्रु है[1]। बिना किसी कारण के ही वह अपनी दुष्प्रकृति के कारण नल और दमयन्ती का विघटन करने के लिए प्रयत्नशील हो जाता है[2]।

नल-दमयन्ती का विवाह हो जाने से कलि ने यद्यपि दमयन्ती के प्रति अपनी अभिलाषा का परित्याग कर दिया परन्तु नल के प्रति उसमें दया का लेश भी नहीं है[3]। वह अकारण ही नल के विषय में प्रतिज्ञा करता है वह (कलि) नल से दमयन्ती तथा पृथ्वी दोनों को पृथक् करेगा और इस प्रकार नल पर विजय प्राप्त करेगा[4]। 'नलदमयन्तीयम्' के अन्तर्गत भी वह कुछ इसी प्रकार की प्रतिज्ञा करता है[5]। वह स्वयं पापात्मा होते हुए नल को पापात्मा कहता है[6]। वह घोषणा करता है आज से लेकर मेरा नल से निश्चल वैर है[7]।

१- म०भा०वनपर्व ५५।१४-१५

२- मंजुल नैषधम्--अये द्वापर। कथंचिन्नलदमयन्त्यो-विघटनप्रयत्न: करणीय:।पृ०५३

३- नैषध १७।१३६

४- नैषध १७।१३८

५-नलदमयन्तीयम्,पृ०५७

६- नलायनम्४।२।४६

७- नलायनम् ४।२।५०

क्रुपिताशय कलि का नैषध पर रोष बढ़ रहा था[१]। 'उत्तरनैषधम्' के अन्तर्गत भी कलि द्वारा नल को मैत्री एवं भूमि दोनों से च्युत कराने की प्रतिज्ञा का उल्लेख मिलता है[२]।

कलि के शब्दों में मात्सर्य फलकता रहता है। 'मंजुलनैषधम्' के अन्तर्गत वह नैषध को ललकार कर कहता है "देव कलि द्वारा कांक्षित कन्या का जिसने वरण किया है वह मूढ़ तुम। उसके साथ कितने समय तक भोग कर सकोगे[३]।" नल का उत्कर्ष देखकर कलि को अत्यन्त शोक होता है[४]।

कलि बढ़-बढ़कर अपनी प्रशंसा अपने ही मुख से करने वाला है[५]।

नल पर विजय प्राप्त करने के लिए कलि माया का भी आश्रय लेता है। वह स्वयं वृष[६] का रूप धारण करके पुष्कर को द्यूत में वृष का ही पण करने की सलाह देता है[७]। अपनी माया से सौवर्ण विहंगों की रचना करके वह छलपूर्वक नल का वस्त्र भी हरण कर लेता है।

'मंजुलनैषधम्' के अन्तर्गत नल से अकारण ही बद्धवैर कलि छलपूर्वक नल को राज्यभ्रष्ट करता है[८]। वह झूठमूठ ही नल से शिकायत करता है कि पुष्कर ने द्यूत के छल से उसका सर्वस्वापहरण कर लिया है। इस दशा में वह राजा को वाक्छल से प्रतिज्ञाबद्ध करके पुष्कर से द्यूत खेलने के लिए विवश करता है।

'नलदमयन्तीयम्' के अन्तर्गत वन में नल को दमयन्ती से पृथक् करने की इच्छा से कलि किरात का कपटवेश धारण करके नल को छलता है[९]। 'सहृदयानन्दम्'

१- सहृदयानन्दम् ८।१

२- उ०नै० ७।४७

३- मं०नै० ४।८१

४- नलायन ४।४।२४

५- नलदमयन्तीयम्,पृ०५७

६- म०भा० वनपर्व ५६।६-७

७- नलदमयन्तीयम्,पृ०७४

८- मंजुलनैषधम् अंक-४

९- नलदमयन्तीयम्--तृतीयांक

के अन्तर्गत वह तापस का वेश बनाकर पुष्कर के पास जाता है और उसे नल से द्यूत क्रीडन के लिए प्रेरित करता है[1]।

कलि अत्यधिक पापी है। 'नलदमयन्तीयम्' के अन्तर्गत पुष्कर को छलपूर्वक नल का राज्य दिलवा कर वह पुष्कर को राज्य में यह घोषणा करवाने का आदेश देता है कि गाएं तथा देवगण भक्ति विहित पूजा न प्राप्त करें, धर्मविधि क्षीण होकर समाप्त हो जाए तथा सौहार्द का उच्छेदन कर दिया जाये[2]। 'नलायनम्'[3] में कलि के पाप की पराकाष्ठा देखने को मिलती है जहां वह लोकपालों से कहता है 'अभी भी मेरे साथ पृथ्वी के प्रति लौट चलो। वहां नल को मार कर विदर्भजा का अपहरण कर लाएं।'

देवगण

नलदमयन्ती-की कथा के अन्तर्गत नल एवं दमयन्ती के विवाह में विघ्नकारियों के रूप में देवताओं की अवतारणा की गयी है। इस प्रकार प्रतिनायकों के रूप में देवताओं की कल्पना द्वारा जहां एक ओर दमयन्ती का चरित्र अधिक स्निग्ध निखार प्राप्त करता है वहीं दूसरी ओर देवताओं को नल के सम्मुख याचक रूप में कल्पित करके नल की महानता एवं चरित्र की उत्कृष्टता का सहज ही प्रतिपादन हो जाता है। प्रतिनायक जितना ही बलवान हो, उसपर विजय प्राप्त करने वाले नायक का महत्त्व उतना ही बढ़ जाता है। यहां स्वयं इन्द्रादि लोकपाल भी जो नायक नल के आगे नहीं टिक सके वह नल का चरमोत्कर्ष ही है।

१- सहृदयानन्दम् अष्टम६ सर्ग६

२- नलदमयन्तीयम्, पृ० ५६-५७

३- नलायनम् ४।२।३४

नलदमयन्ती कथा पर आधारित लगभग सभी साहित्य में नल के प्रतिद्वन्द्वी के रूप में देवताओं की कल्पना परिलक्षित होती है । इन देवताओं में इन्द्र तो सर्वत्र समान रूप से मिलते हैं, परन्तु शेष देवताओं के विषय में सर्वत्र समता नहीं है[1] । जो भी हो, देवताओं की विशिष्टताएं सर्वत्र ही लगभग समान हैं ।

ये देवगण परम निर्लज्ज हैं । अपने स्वार्थ-साधन में इन्हें और कुछ नहीं दिखायी पड़ता । यही कारण है कि नैषध के अन्तर्गत वे नल से कहते हैं "विश्वसाक्षी हम देवगण, गुणों के अगाध सागर, तुमको, भली भांति जानते हैं । अतएव इस विश्वस्त कार्य में तुम्हें प्रयुक्त किए बिना हमें सन्तोष नहीं हो सकता[2] ।

देवताओं में अहंकार की मात्रा भी कम नहीं है । "व नलचरित्र नाटकम्" के अन्तर्गत इन्द्र की देखिए--" जगत् के श्रेष्ठ वीरों पर शासन करने वाले मेरे अर्थी के रहते वह (दमयन्ती) केवल पृथ्वी के स्वामी मनुष्य की कैसे इच्छा कर सकती है[3] ।"

देवगण दमयन्ती में आसक्त मन को वहां से निवारण करने में समर्थ नहीं है[4] । इससे इनकी कामुकता स्पष्ट ही है ।

देवगण अपने स्वार्थ में ही लीन हैं, वे अपने स्वार्थसाधन के विपरीत कुछ भी नहीं सुन सकते । देवताओं से दमयन्ती के प्रति उनके दौत्य संपादन के विषय में नल की तनिक भी अरुचि देखते ही देवता नल को उनकी पुर्वकृत प्रतिज्ञा को लक्ष्य करके वैसा करने के लिए बाध्य करते हैं । वे नल से बोले "नैषध ! पहले हमसे 'करूंगा' इस प्रकार से कहकर अब 'नहीं करूंगा' यह कैसे कह रहे हो[5] ?"

देवताओं के कपट का सर्वाधिक ज्वलन्त रूप तब परिलक्षित होता है जब वे दमयन्ती को नल में आसक्त पतिव्रता जानकर भी दमयन्ती स्वयंवर में नल

१- द्रष्टव्य: प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय

२- नैषध ५।१०१

३- नलचरित्रम् २।३१

४- नलचरित्रम् पृ०५१

५- म०भा० वनपर्व ५२।६

का रूप धारण करके उपस्थित होते हैं।[1] कदाचित् नल के भ्रम से ही दमयन्ती हमें स्वीकार कर ले इस आशा में वे इन्द्रादि चारों देव किंवा अद्भुत मिथ्या रूप वाले चार नल ब हो गए।[2]

ये देवगण मुख मधुर विष कुम्भ के सदृश हैं। विनय से प्रच्छन्न कपट उनके वचनों में भरा हुआ है। नलायन के अन्तर्गत वे निर्लज्ज होकर नल से क कहते हैं, " राजन्! सब कुछ सहन कर लेने वाले आप निश्चय ही न्यवीकार्यधाम हैं, तो केवल वाग्व्यय मात्र में सम्पन्न हो जाने वाला हमारा कार्य आपको पूर्ण करना होगा।[3]

इन्द्र कपटाचार्य हैं अपने कुटिल अभिप्राय को व्यक्त करते उन्हें तनिक भी व्रीडा नहीं होती। नैषध के अन्तर्गत वे किस प्रकार नल से कहते हैं," हे महीन्दो! हम दमयन्ती से पाणिग्रहण महोत्सव के अभिलाषी हैं। तो हे जितस्मर! स्मरभीति को त्याग कर इस विषय में हमारा दौत्य करो।[4] कितनी निर्लज्जता से वे नल को जितस्मर[5] और स्वयं अपने को स्मराकुलितचित्त वाला[6] कह देते हैं।

देवगण अवसर देखकर चाटुकारिता में भी नहीं चूकते। 'नलायनम्' के अन्तर्गत नल की अपने कार्य संपादन के प्रति कुछ इधर उधर करता देखकर प्रचेता राजा नल से कहते हैं--" हे राजन्! आप सार्वभौम, पवित्र, श्रीमान्, अर्थियों का मनोरथ पूर्ण करने वाले, महत्वाकांक्षी, महिमा के सागर, विद्वान् वाग्मी तथा जितेन्द्रिय हैं, अतः आप ही राजदूती के लिए दूत बनने योग्य हैं, क्योंकि अन्तःपुर में प्रायः प्राकृत मनुष्य प्रवेश करने योग्य नहीं होता।[7]

१- म०भा०वनपर्व ५४
२- नैषध १०।१८
३- नलायनम् २।५।२४
४- नैषध ५।६६
५- नैषध ५।६६
६- नलायनम् २।५।२६
७- नलायनम् २।५।४५,४६

इतने दुर्गुणों के आगार होते हुए भी देवताओं में कुछ गुण भी परिलक्षित होते हैं । इन्द्र अतिथिसेवा-परायण हैं । अपने भवन में महाप्राज्ञ एवं महाव्रती नारद और पर्वत को अतिथि रूप में प्राप्त करके इन्द्र उनका सत्कार करते हैं । विभु होते हुए भी वे अतिथियों से उनका कुशल तथा अनामय के विषय में जिज्ञासा करते हैं[1] ।

देवगण गुणग्राही भी हैं । देवदौत्य के सम्पादन में नल की सत्यनिष्ठा तथा दमयन्ती के नैषध नल में दृढ़ानुराग से वे अत्यन्त प्रसन्न होकर नल को वर प्रदान करते हैं[2] । कलि के सम्मुख वे नल की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं[3] । वे कलि के नल के प्रति प्रयुक्त दुर्वचन सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध हो जाते हैं । नलायनम् के अन्तर्गत वे कलि से कहते हैं आ: पाप । कर्ण कुहरों में प्रविष्ट होते हुए तुम्हारे वाक्यों से हमारी अन्तरात्मा घोर मषी पंक से लिप्त सी हो रहा है[4] । हे दुष्ट । तू अपने ही समान, देवों को भी परिप्लुत समझता है । मूढ़ तू गूढ़तर परमार्थ को नहीं जानता[5] ।

पुष्कर-कूबर

नल-दमयन्ती-कथा में प्रतिनायक कलि के सहायक के रूप में[6] एक चरित्र उपलब्ध होता है । अधिकतर इसका नाम पुष्कर और कहीं कहीं कूबर भी मिलता है । 'नलविलास' में यह कूबर प्रतिनायक लम्बोदर का सहायक है । यहां यह कूबर युवराज है[7] । 'मंजुलनैषधम्' में पुष्कर महाराज नल के दायाद के रूप में आया हुआ है[8] ।

१- म०भा० वनपर्व ५१।१५

२- म०भा० वनपर्व ५४।३४-३५

३- म०भा० वनपर्व ५५।८-१०

४- नलायनम् ४।२।३६

५- नलायनम् ४।२।३७

६- नलायनम् ४।६।६

७- न०वि०,पृ०२६

८- मं०नै०,पृ०५७

`नलदमयन्तीयम्` के अन्तर्गत पुष्कर को स्पष्टरूप से नल को भाई स्वीकार किया गया है[1]। `नलायनम्` में भी कूबर अथवा पुष्कर नल का अनुज है[2]।तथा `उत्तरनैषधम्` में पुष्कर नल का भाई है[3]।

पुष्कर धूर्त प्रकृति वाला तथा अहंकारी है । नल को पुन: द्यूत क्रीडा के लिए आया हुआ देखकर वह दमयन्ती को जीतने का स्वप्न देखता हुआ प्रलाप करने लगा[4]। द्यूत में अपनी जय को सुनिश्चित समझता हुआ वह कहने लगा `नैषध ! भाग्यवश तुम्हारे द्वारा अर्जित धन द्यूत के लिए है, सौभाग्य से दमयन्ती के पाप अब क्षीण हो गये[5]।`

नल से द्यूत में राज्य प्राप्त कर लेने के पश्चात् पुष्कर का व्यवहार क्रूर हो जाता है`अनर्घ चरित्र` नाटक में वह राज्य भ्रष्ट नल को नगर से बहिष्कृत करने की आज्ञा देता है तथा नल और दमयन्ती का जल से भी आदर करने वालों के लिए प्राणदण्ड निर्धारित करता है[6]। इसी प्रकार का प्रसंग `उत्तरनैषधम्`[7] में भी उपलब्ध होता है । नलायन के अन्तर्गत राज्यभ्रष्ट होने पर भी मन से निर्मल महात्मा नल को शल्य समझकर कूबर ने अपने राज्य से निकाल दिया । नल के मार्गानुगामी सभी लोगों को उसने कठोरभाषी,क्रूर,शस्त्रधारियों की सहायता से अवरुद्ध कर दिया । यही नहीं,दमयन्ती से इतर नल की कनकावली आदि पत्नियों को भी उसने नल के साथ जाने की अनुमति नहीं दी[8]।

कहीं-कहीं पुष्कर का धर्मभीरु रूप भी दृष्टिगोचर होता है । वह स्वयं अपना अपराध समझकर मंजुलनैषधम् के अन्तर्गत नल से क्षमायाचना करता हुआ दिखायी पड़ता है[9]। वह नल को प्रणाम करके उनसे कहता है,` आर्य ! मैं

१-नलदमयन्तीयम्,पृ०६१ तथा १३७
२- नलायनम् ४।५।६
३- उ०नै० १५।३७
४- म०भा०वनपर्व ७६।१५-१६
५- म०भा०वनपर्व ७६।१२ तथा उ०नै०१५।२३
६-अनर्घनलचरित्र,पृ०२३७
७-उत्तरनैषधम् ८।५५
८-नलायनम् ४।८।४-६
९-मंजुलनैषधम्,पृ०६६

आपकी शरण में आया हूं । मेरे द्वारा किए गए अपराधसमूह को क्षमा कीजिए ।`

`नलदमयन्तीयम्` के अन्तर्गत नल को अपने राज्य से निर्वासित करने के पश्चात् उसे प्रबोध होता है और राज्य के लिए धर्मव्रत पुण्यश्लोक नल का पराभव करना उसे अन्याय प्रतीत होता है[1]। `उ०नैषधम्` के अन्तर्गत नल से द्यूत क्रीडा के लिए प्रेरित करने वाले अपने अतिथिभूत कलि से वह विनयपूर्वक कहता है-- `निःसन्देह आप लोगों ने मुझपर अत्यधिक वात्सल्य प्रदर्शित किया है, फिर भी निरपराध पुण्यश्लोक महाराज नल के प्रति महान् अपराध करने से मैं डरता हूं[2]।`

पुष्कर के विषय में प्रमुख बात तो यह है कि कहीं भी उसका अपना व्यक्तित्व विकसित नहीं हो पाया है । पुष्कर सर्वत्र कलि के हाथ की कठपुतली बना हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

`नलदमयन्तीयम्` में कलि स्वयं पुष्कर की अवस्था को स्पष्ट करते हुए कहता है,` इस पुष्कर ने जो भी पूर्व व्यवहार किया है, द्यूत के छल से नल को कठोर कष्ट दिया, उस सब में पुष्कर को मेरी योजना से प्रवृत्त होने वाला जानो । मध्यस्थ मैं हूं, वह तो अन्यवृत्त वाला है[3]।`

`नलविलास` नाटक में नल और दमयन्ती के प्रेमपूत हंस के स्थान पर नल के मित्र कलहंस तथा करंकवाहिनी मकरिका की अवतारणा की गई है तथा प्रतिनायक के रूप में घोरघोण की कल्पना की गई है ।

इन प्रमुख पात्रों के अतिरिक्त इस कथा और उसके विकासक्रम में ऋतुपर्ण,कर्कोटक,केशिनी ,विदर्भराज,सरस्वती, सावित्री, नारद,पर्वत,चेदिराज सुबाहु की माता , सुनन्दा, सुदेव,पर्णाद,इन्द्रसेन,किरात आदि अनेक पात्र दृष्टिगोचर होते हैं परन्तु उनका चरित्र अधिक विकसित नहीं हो पाया है ।

१- नलदमयन्तीयम्,पृ०६१

२- उ०नै० ७।३७

३- नलदमयन्तीयम्,पृ०१३७

इस प्रकार नल-दमयन्ती की कथा पर आधारित साहित्य के अन्तर्गत लौकिक तथा अलौकिक गुणों से मण्डित नल का चरित्र सर्वत्र ही उदात्त रूप में प्रस्तुत किया गया है । अनुपम सुन्दरी दमयन्ती पतिव्रताओं की शिरमौर है । देवताओं की भी अवहेलना करके वह नल का वरण करती है और कठिन से कठिन अवस्था में भी वह पति का साथ नहीं छोड़ती । नल और दमयन्ती आदर्श दंपति हैं जिनका अद्भुत प्रेम युग-युग से रस-कवियों को आकर्षित करता ~~रहता~~ रहा है । नल और दमयन्ती का प्रणय दूत हंस भी अलौकिक है । उसका बाह्य ही नहीं, अन्तस् भी अत्यधिक सुन्दर है । यही नहीं, वह अपने अंगीकृत कार्य का पूर्ण रूप से निर्वाह करने वाला है । जिस प्रकार हंस नल और दमयन्ती के मिलन में सहायक होता है, उसी प्रकार कलि उनके विघटन का कारण बनता है । कलि अत्यन्त उद्धत एवं दम्भी है । अपने प्रयोजन की वह छल कपट से भी सिद्धि करने में नहीं चूकता । वह नल का अकारण वैरी है । यहां देवताओं का भी अत्यन्त स्वार्थी रूप दृष्टिगोचर होता है । दमयन्ती की प्राप्ति के लिए वे दमयन्ती में पहले से ही अनुरक्त नल से दमयन्ती के प्रति दौत्य करने के लिए कहते हैं । स्वार्थ के कारण वे नल के सम्मुख याचक तक बन जाते हैं । यही नहीं, दमयन्ती को नल में बद्धभाव जानकर भी जो वे नल का रूप धारण करके स्वयंवर में उपस्थित होते हैं वह उनकी धूर्तता की पराकाष्ठा है । परन्तु दूसरी ओर ये देवगण गुणग्राही भी हैं । स्वयंवर में दमयन्ती के प्रयत्न से प्रसन्न होकर वे नल को वरदान देते हैं और कलि को नल से वैर न करने के लिए समझाते हैं । पुष्कर कलि के हाथ की कठपुतली बना रहता है । कलि की प्रेरणा से वह नल से द्यूत खेलता है । और नल का राज्य हाथ में आते ही वह नल के साथ दुर्वचनों का व्यवहार करने लगता है । परन्तु कहीं-कहीं वह अपनी गल्ती अनुभव करके स्वयं ही नल का राज्य नल को लौटा देता है । राजर्षि ऋतुपर्ण और केशिनी सच्चे मित्र हैं । विदर्भराज भीम और देवी वे सरस्वती तथा सावित्री वात्सल्य की मूर्ति हैं तथा चेदिराज सुबाहु की माता दयालु और स्नेहमयी हैं ।

-0-

सप्तम अध्याय

-0-

[illegible]-का[illegible]न्तो दया के विकास

में

[illegible]

सप्तम अध्याय

-०-

नल दमयन्ती कथा के विकास में रस निरूपण

प्राचीन आचार्यों ने काव्य की आत्मा के रूप में 'रस' की स्थापना की है। रस ही काव्य में मुख्य तत्व होता है।[1] चूंकि काव्यरूप में नल-दमयन्ती-कथा के विकास का अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय है एवं काव्य की आत्मा रस है, अतएव इसमें रस की दृष्टि से नल-दमयन्ती कथा के विकास पर विचार करना नितान्त आवश्यक है।

रस के स्वरूप पर विचार करते हुए भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में इस प्रकार कहा है --

'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।' . '

आचार्यों ने इस काव्यात्मभूत 'रस तत्व' के चार अवयव स्वीकार किए हैं -- (१) स्थायी भाव, (२) विभाव, (३) अनुभाव एवं (४) संचारी भाव। सहृदयों के हृदय में स्थित वासना रूप रति आदि स्थायीभाव ही विभाव, अनुभाव एवं संचारी भावों की सहायता से अभिव्यक्त होकर रस के स्वरूप को प्राप्त होते हैं। स्थायी भाव वह है जो अपने से प्रतिकूल अथवा अनुकूल किसी भी प्रकार के भाव से विच्छिन्न

१- काव्यप्रकाश ७।४६ तथा ८।६६

नहीं हो पाता तथा दूसरे सभी प्रतिकूल या अनुकूल भावों को आत्मरूप बना देता है[1]। लोक में जो रत्यादि स्थायी भावों के उद्बोधक हैं, वे ही काव्य और नाटकादिकों में विभाव कहलाते हैं[2]। विभाव के आलम्बन तथा उद्दीपन नाम दो भेद होते हैं। आश्रय का हृदयगत स्थायी भाव जिस पात्र अथवा जिस वस्तु के प्रति उद्बुद्ध हो, वह पात्र अथवा वस्तु उसके लिए आलम्बन विभाव है। इसी प्रकार उस पात्र अथवा वस्तु की अवस्थायें,चेष्टायें या परिस्थितियां जिनके कारण आश्रय के हृदय में वह भाव विशेष उद्दीप्त होता है,उद्दीपन विभाव कहलाती है। स्थायी भाव की सूचना देने वाले आश्रय-गत विकार अनुभाव कहलाते हैं[3]। आश्रय में सत्व से उत्पन्न होने वाले स्तम्भादिक आठ सात्विक भाव होते हैं[4]। स्थायीभाव के अन्तर्गत विशेष रूप से उन्मग्न तथा निमग्न होने वाले भाव संचारी भाव कहलाते हैं[5]।

शृंगार रस का रस राजत्व

साहित्य के मर्मज्ञों, विशेषत: भरत मुनि,कालिदास,भोज,काश्मीर के रसवादी आचार्यों एवं उज्ज्वल नीलमणि एवं भक्ति रसामृतसिन्धु के निर्माता जीवगोस्वामी आदि ने शृंगार रस का गौरव प्रतिपादित व प्रतिष्ठित किया है[6]। वस्तुत: शृंगार रस सब रसों में निर्मल व आत्मा को उच्च बनाने वाला रस है। यही कारण है कि साहित्य में कुछ आचार्यों ने इसका रसराजत्व स्वीकार किया है। शृंगार रस के विषय में भोजराज की यह धारणा कितनी उदात्त है --

शृंगारवीरकरुणाद्भुतरौद्रहास्यबीभत्सवत्सलभयानकशान्तनाम्न: ।
आम्नासिषु: दश रसान् सुधियो, वयं तु शृंगारमेव रसनाद्रसमामनाम: ।।[7]

१- द०रू० ४।३४

२- सा०द० ३।२६

३- द०रू० ४।३

४- द०रू० ४।४-६

५- द० रू० ४।७

६- नाट्य शास्त्र अध्याय ६

७- भोज की शृंगार सम्बन्धी विस्तृत व्याख्या के लिए दे० डा० वी० राघवन : भोजाज़ शृंगार प्रकाश,वाल्यूम २, पार्ट २,पृ०४६२-४७० ।

इसी प्रकार शृंगार रस के सम्बन्ध में शारदातनय की धारणा भी अत्यन्त उच्च है, उनके अनुसार आत्मा का प्रेम ही बाह्य पदार्थों अथवा व्यक्तियों के प्रति प्रेम के रूप में प्रवाहित होता है । शृंगार रस में अभिव्यक्त होने वाला प्रेम सात्विक कोटि का होता है[१]।

वस्तुत: शृंगार का विस्तार बहुत दूर तक है । इसकी सीमा के भीतर प्राणीमात्र ही नहीं, उन वनस्पतियों के वर्ग भी आ जाते हैं, जिन्हें हम साधारणतया जड़ समझते हैं । अन्य किसी रस का विस्तार इतना अधिक नहीं है । स्मरण रखना चाहिए कि शृंगार से तात्पर्य उस सीमाबद्ध भावना से नहीं है, जिसके लिए प्राय: इस शब्द का प्रयोग अब रूढ़ सा हो रहा है । इस शृंगार के दायरे में प्रेम, वात्सल्य, स्नेह, श्रद्धा, भक्ति और सख्य-- सभी कुछ आ जाता है । इतना विस्तार और किसी का नहीं और न इतने व्यापक भेद-प्रभेद ही किसी रस या भाव में पाए जाते हैं । इतना ही नहीं, यह हृदय की संकीर्णता को भी अपने प्रभाव से उदारता में परिणत कर देता है । इस दृष्टि से विचार किया जाय तो करुण, वीर और शान्त रस में हृदय का विस्तार कुछ दीख पड़ता है, अन्य रसों में वह भी नहीं[२]।

शृंगार रस अपने विप्रलम्भ एवं संयोग पक्षों द्वारा मानव-हृदय की समस्त वृत्तियों पर अधिकार कर लेता है । इस रस की स्थिति प्राणीमात्र में व्याप्त है । साहित्य में जितने भी स्थायी भाव अथवा संचारी भावों की स्थिति स्वीकार की गई है वे सभी शृंगार रस के अन्तर्गत समाविष्ट हो जाते हैं । शृंगाररस के अन्तर्गत मानवेतर समस्त चराचर प्रकृति का उद्दीपन के रूप में ग्रहण हो जाता है ।

इसके अतिरिक्त मनोवैज्ञानिकों ने जिस काम-भावना को सभी भावनाओं का मूल रूप माना है, उसी भावना को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले शृंगार का रस

१- या चैयमिच्छा जाता सिसृक्षो: परमात्मन: ।विषयासक्ता रति: सैव शृंगार इति गीयते । उद्धृत डा० वी० राघवन : भोजाज़ शृंगार प्रकाश, वाल्यूम १, भाग २, पृ० २६२ ।

२- आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य--डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल, पृ० ३७-३८ ।

राजत्व क्यों न स्वीकार किया जायेगा । कामतत्त्व सभी प्राणियों में सुलभ तथा परिचित होने के कारण मनोज्ञ सा प्रतीत होता है । यही कारण है कि शृंगार रस का साधारणीकरण जितना सहज होता है, उतना कदाचित् अन्य किसी रस का नहीं ।

नल-दमयन्ती-साहित्य में अंगीरस

पुण्यश्लोक महाराज नल एवं दमयन्ती की प्रसिद्ध कथा एक प्रेमाख्यान है । शृंगार रस के उपकरणों को अपने में समेट कर यह उपाख्यान चिरकाल से अत्यन्त लोकप्रिय रहा है । इसमें अंगीरस शृंगार है । अंगरूप से अन्य रसों की भी यत्र-तत्र व्यंजना हुई है ।

आचार्यों ने सामान्यतः शृंगार रस के दो भेद स्वीकार किए हैं -- सम्भोग या संयोग तथा विप्रलम्भ या वियोग[१] ।

विप्रलम्भ शृंगार

अति उत्कट प्रेम की अवस्था में भी जहां प्रिय समागम नहीं होता, उसे विप्रलम्भ शृंगार कहते हैं[२] ।

आचार्यों ने विप्रलम्भ शृंगार को चार[३] अथवा पांच प्रकार का[४] स्वीकार किया है, इनमें से सौन्दर्यादि गुणों के श्रवण अथवा दर्शन से परस्पर अनुरक्त नायक और नायिका की समागम से पूर्व की दशा का नाम पूर्वराग है[५] । दूत बन्दी अथवा सखी के द्वारा गुण-श्रवण होता है तथा दर्शन, इन्द्रजाल में चित्र में, साक्षात् अथवा स्वप्न में होता है[६] ।

१- तत्र शृंगारस्य द्वौ भेदौ--सम्भोगो विप्रलम्भश्च--का०प्र० चतुर्थ उल्लास
२- यत्र तु रतिः प्रकृष्टा, नाभीष्टमुपैति विप्रलम्भोऽसौ ।-- सा०द०३।१८७
३- सा०द० ३।२१३ तथा द०रू० चतुर्थ प्रकाश
४- अपरस्तु अभिलाषविरहेर्ष्याप्रवासशाप हेतुक इति पंचविधः --का०प्र०चतुर्थ उल्लास
५- सा०द० ३।१८८
६- सा०द० ३।१८९

विप्रलम्भ शृंगार की अवस्था में अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मृति-- ये दश काम-दशायें होती हैं[1]। पूर्वराग तीन प्रकार का होता है-- नीली राग, कुसुम्भ राग और मंजिष्ठाराग।

कार्यवश, शापवश अथवा सम्भ्रम वश नायक के अन्य देश में चले जाने को प्रवास विप्रलम्भ कहते हैं। इसमें नायिकाओं के शरीर और वस्त्रों में मालिन्य, एक वेणी एवं निःश्वास, उच्छ्वास, रोदन और भूमिपतन आदि होते हैं।

नल-दमयन्ती की कथा के अन्तर्गत नल और दमयन्ती के विवाह से पूर्व पूर्वराग विप्रलम्भ एवं वन में नल से दमयन्ती के वियोग के पश्चात् प्रवास विप्रलम्भ का चित्रण उपलब्ध होता है।

पूर्वराग शृंगार

'नलविलास' के अन्तर्गत चित्र में भैमी के दर्शन से नल के हृदय में दमयन्ती के प्रति अभिलाषा उत्पन्न होता है[2]। कलहंस और मकरिका द्वारा नल के गुण-श्रवण से दमयन्ती में पूर्व राग उत्पन्न होता है। 'नलचरित्र' के अन्तर्गत पूर्वराग स्वप्नदर्शन से होता है[3]। 'मंजुलनैषधम्' के अन्तर्गत चित्रकार द्वारा लायी गयी भैमी की प्रतिमा को देखकर महाराज नल के हृदय में दमयन्ती के प्रति अभिलाषा उत्पन्न हो जाता है[4]। 'अनर्घ नल चरित्र' के अन्तर्गत मनोभिलाष का कारण स्वप्नदर्शन भी है और हंस द्वारा गुणश्रवण भी[5]। इस प्रकार 'नलदमयन्तीयम्' में मूर्ति दर्शन के कारण नल के हृदय में दमयन्ती के प्रति अभिलाषा उत्पन्न होता है[6], तथा हंस द्वारा दमयन्ती के हृदय में नल के प्रति रागानुबन्ध परिवृद्ध किया गया[7]। 'दमयन्ती कल्याणम्' में नल और दमयन्ती के परस्पर अनुराग का कारण साक्षात् दर्शन है[8]। दमयन्ती के

१- सा०द० ३।१९०
२- नलविलास १।१६-१७
३- नलचरित्रम् १।१६
४- मंजुल नैषधम् १।१५-१६
५- अ०न०च० १।६ तथा द्वितीयांक
६- नलदमयन्तीयम्, प्रथम अंक
७- नलदमयन्तीयम्, प्रथम अंक
८- दमयन्तीकल्याणम्, पृ०२०,२४

प्रति अनुरक्त होकर नल कभी तो उसके वक्ष स्थलादि की सराहना करते हैं[1] और कभी उसके उत्कृष्ट लावण्य का[2]। राजा की कामदशा बढ़ती ही जाती है। पत्ते टूटने पर भी वे साशंक होकर उधर मुंह घुमा लेते हैं, विषय-व्यापार से निस्संग दीर्घ दृष्टि से कहीं देखते रहते हैं, अपने हृदय में कुछ सोचते रहते हैं तथा दीर्घ निःश्वास लेते हैं। इस प्रकार उनका करुण चिन्ता-ज्वर बढ़ता ही जाता है[3]। वे मदन को उपालम्भ देते हैं[4]। उन्हें तन्वी दमयन्ती की स्मृति अत्यन्त व्यथित करती है[5]। उनके गण्डस्थल पर प्रौढ़कान्ति वाली पाण्डिमा सुशोभित होती है, वचनों के बीच-बीच में प्रिया का नाम स्फुरित होने लगता है। श्वास दीर्घ हो जाता है, दृष्टि शून्य के समान हो जाती है तथा देह-यष्टि अत्यन्त क्षीण[6]। नल को सर्वत्र दमयन्ती का दर्शन होता है। वीचिश्रेणियों में उन्हें प्रिया की भुज-लताओं का मार्दव, पद्मोत्पल में हाथ-पैरों का सौष्ठव, शैवाल में केशपाश की मसृण शोभा, हंस में प्रिया के सौम्यस्मित की सुभगता तथा पद्मबन्ध में प्रिया की गन्ध प्रतीत होती है[7]। नल के शरीर पर परिलेप करते ही आर्द्र चन्दनरस शुष्क हो कर उनके अन्तः-परिताप की सूचना देता है तथा विरह के कारण वे शारीरिक से भी विमुख रहते हैं, सरस विहार के विषय में तो फिर कहना ही क्या[8]?

राजहंस से सन्देश प्राप्त करने के पश्चात् नल के प्रति अनुरक्त दमयन्ती क को रात्रि में चन्द्र-किरणें व्यथित करती हैं[9]। महाराज नल के दर्शन के लिए दमयन्ती व्याकुल है[10], उनके हृदय में शान्ति नहीं है तथा संसार भर में प्रिय के रूप से इतर कुछ भी उन्हें अच्छा नहीं लगता[11]। उन्हें सर्वत्र प्रिय ही दृष्टिगोचर होता है[12]।

१- नलविलास--१।१६ तथा अ०न०च०२।२६-२८
२- नलविलास १।१७
३- नल चरित्रम् १।२५
४- नलचरित्रम् २।२५,२६
५- नलचरित्रम् २।२६
६- नलदमयन्तीयम्, प्रथम अंक
७- नलदमयन्तीयम्, प्रथम अंक
८- दमयन्ती कल्याणम्, पृ०१३०
९- मंजुल नैषधम्, द्वितीय अंक
१०- मंजुल नैषधम्, द्वितीय अंक
११- अ०न०च० १।२५
१२- अ०न०च० १।२६

नल की इच्छा करती हुई दमयन्ती कहती है -- " कमल को भ्रमरी के समान, तथा मेघ के मंजुल शरीर को चल चातकी के समान, उस चन्द्र के सदृश मनोरम मुख वाले प्रियतम को मैं अपने नेत्रों से कब देखूंगी ?[1] वे स्मर के कारण किंचित् स्मेरमुख वाले प्रिय को स्मरण करती है ।[2] " स्वभाव से तनुशरीरा दमयन्ती विरहपर्युत्सुका होने के कारण और भी क्षीणकाय हो गयीं, केवल लावण्य ही अवशिष्ट रह गया । कपोल-तल पर पाण्डुता सुलक्षित हो गयी, क्षीणकण्ठ स्वर के कारण यथोचित वाणी का व्यवहार भी नहीं कर पातीं । प्राय: निर्निमेषनयन वाली वे दृश्यमात्र से विनिवृत्त-मानसा भावना व्यापृत परिलक्षित होती है । पुन: पुन: अनुरोध करने पर भी वे दिवसकृत्यों में मन नहीं लगातीं और पौर्णमासी की रात्रि में चन्द्रमा को देखती हुई वे मूर्च्छित हो जाती है[3] ।

नल दमयन्ती कथा पर आधारित महाकाव्य साहित्य में रस की अभिव्यक्ति पर विचार करने से पूर्व इस विषय में नाट्य तथा महाकाव्य में पड़ने वाले पारस्परिक भेद को भी समझ लेना आवश्यक है । नाटक में संक्षेप में होता है और महाकाव्यों में विस्तार । रंगमंच पर प्रदर्शित किया गया मात्र एक दृश्य ही सहृदय में रसोद्रेक के लिए पर्याप्त हो जाता है जब कि काव्य में ऐसा सम्भव नहीं है । काव्य के श्रोता को उसके दर्शनार्थ मानस चक्षु का अवलम्ब लेना पड़ता है । अतएव महाकाव्यों के अन्तर्गत रसोन्मीलन के लिए दृश्य को दृश्यकाव्य की अपेक्षा अधिक स्थायी बनाना पड़ता है । महाकाव्यों के अन्तर्गत क्षणिक दृश्य विभावानुभावव्यभिचारि की अंशपूर्ति करने पर भी रस-निष्पादन में असमर्थ हो सकता है । महाकाव्यों में भाव को पुष्ट करने के लिए पर्याप्त क्षेत्र होता है । 'नैषध' महाकाव्य में पूर्वराग का सुन्दर रूप परिलक्षित होता है । दमयन्ती के विषय में लोगों से सुनकर उनका मन दमयन्ती के लिए अभिलाषायुक्त हो गया[4] । उन्हें अधीरता तथा

१- अ० न० च० ३।३

२- अ० न० च० ३।५

३- नलदमयन्तीयम्, द्वितीय अंक

४- नैषधम् १।४४

अनिद्रा[1] ने आ घेरा । वे प्रयत्नपूर्वक कभी अपने विरहजन्य निःश्वासों को छिपाते और कभी शरीर में व्याप्त पाण्डुता को[2] । उद्विग्न नल मोहवश दमयन्ती का मिथ्या दर्शन करके प्रलाप करने लगते हैं[3] । दमयन्ती के सम्मुख हंस नल की काम-पीड़ा का अत्यन्त मार्मिक वर्णन करता है । नल का शरीर विरह-ताप से सन्तप्त है[4] ।नल में चक्षुराग,[5] निःश्वास,[6] निद्रानाश,[7] त्रपानाश,[8] उन्माद[9] एवं मुर्च्छा[10] की अवस्थायें परिलक्षित होती हैं । `नलायनम्` के अन्तर्गत पान्थ के मुख से दमयन्ती के रूप-गुण की प्रशंसा सुनकर दमयन्ती में अभिलाष-बन्ध वाले धीर-प्रकृति महाराज नल का मन क्षुब्ध हो गया[11] । काम के प्रभाव से इनमें अरति,[12] कम्प,स्वेद आदि लक्षण[13] प्रकट होने लगे । वे पुनः पुनः स्मर को उपालम्भ देते[14] । काम-ज्वर से उनके अंग संतप्त होने लगे[15] । हंस के वचन सुनने के पश्चात् नल में दीर्घ और उष्ण निःश्वास प्रकट हो चले[16] । इस प्रकार बढ़ती हुई कामदशा वाले वे अन्ततः मूर्छित हो गए[17] ।

इसी प्रकार `सहृदयानन्दम्` के अन्तर्गत हंस से दमयन्ती की प्रशंसा सुनकर महाराज नल अधीर होकर अपनी दशा हंस से बताते हैं । चन्द्रमा उनके हृदय को जलाता है,चन्दनगिरि के समीर उन्हें कष्टदायी हैं तथा पिक का पंचम स्वर उन्हें अत्यधिक क्लेशकर[18] । उन्हें चन्द्रमा जलता हुआ प्रतीत होता है[19] । उन्मत्त नल को प्रिया का मिथ्या नुपुर-शिञ्जित श्रवणगोचर होता है[20] । स्वप्न में वापस जाती हुई प्रिया को लौटा लाने के लिए अधीर हो कर वे हंस से क्षण-भर के लिए उसके पक्ष-युगल की याचना करने लगते हैं[21] ।

१- नैषधम १।४६
२- नैषध १।५१
३- नैषध १।५२
४- नैषध १।१०२
५- नैषध १।१०३-१०४
६- नैषध ३।१०६
७- नैषध ३।१०८
८- नैषध ३।११०,१११
९- नैषध ३।११२
१०-नैषध ३।११३
११-नलायनम् १।४।५८
१२- नलायनम् १।५।४
१३- नलायनम् १।५।६
१४- नलायनम् १।५।१४
१५- नलायनम् १।५।१५
१६- नलायनम् १।११।२
१७- नलायनम् १।११।८
१८- ~~न-नयनम्~~सहृदयानन्दम्४।१७
१९- सहृदयानन्दम् ४।२०
२०- सहृदयानन्दम् ४।३५
२१- सहृदयानन्दम् ४।४०

'नलाभ्युदय' के अन्तर्गत लोगों से दमयन्ती के विषय में सुनने के कारण नल के चित्त में दमयन्ती के प्रति दर्शन से भी अधिक अभिलाष बन्ध उत्पन्न हो गया। अब नल नगरों में केवल कुण्डिनपुर का, देशों में केवल विदर्भ नामक देश की, तथा राजाओं में केवल राजा भीम की अकारण ही प्रशंसा करने लगे[1]। उनके शरीर में पाण्डिमा व्याप्त हो गई[2] तथा भीमपुत्री के संकल्प-सिद्ध समागमों में उनका शरीर रोमांचित हो गया[3]। वे विचार करते कि त्रस्त हरिण के नेत्रों के समान सुन्दर नेत्रों वाली विदर्भ कुल की दीपलेखा वह तन्वी पुराकृत पुण्य के कारण कब मेरे नेत्रों को कृतार्थ करेगी[4]।'

दमयन्ती भी स्वप्न में प्रत्यक्ष में स्वीकृत नल के दर्शन करती[5]। उनमें नि:श्वास[6], पाण्डुता, ताप[7], आदि लक्षण स्फुट ही थे[8]। अन्तत: वे मूर्च्छित भी हो गयीं[9]। पहले ही पथिक से नल के रूप गुण की प्रशंसा सुनकर उनमें पुलक तथा उत्कण्ठा स्पष्ट होने लगी थी[10]। नल का चित्र देखकर उनमें विनिविष्ट चित्तवृत्ति वाली[11] दमयन्ती में पाण्डिमा[12] अरति[13] ताप[14] दीर्घ नि:श्वास, अनिद्रा[15] वेपथु[16] तथा कृशता[17] की अवस्थायें दिखायी देने लगीं। स्मर से विह्वल दमयन्ती के कण्ठतट पर सखियों ने सान्द्र मृणाल-लतिकायें रखीं जो ताप के आधिक्य से शीघ्र ही श्याम होकर स्निग्ध इन्द्रनीलमणिहार की समता करने लगीं[18]। 'नलाभ्युदय' के अन्तर्गत राजहंस से नल की गुणसम्पत्ति का वर्णन सुनने पर दमयन्ती में कामदशायें प्रकट होती हुई दिखायी गयी हैं। वे सांजन अश्रुजल की वर्षा करती हैं[19], मन्मथ-ज्वर से परिवर्धित ऊष्मा के कारण उनका ताप हारी हार भी तत्क्षण टूट गया[20]।

१- नलाभ्युदयम् १।३८
२- नलाभ्युदयम् १।४०
३-नलाभ्युदयम् १।४२
४- नलाभ्युदयम् १।५४
५- नैषध १।३६
६- नैषध ४।१४
७- नैषध ४।१५
८- नैषध ४।१७
६- नैषध ४।११०
१०-नलायनम् १।४।५३
११- सहृदयानन्दम् १+४+५३।१८
१२- सहृदयानन्दम् ३।८
१३- सहृदयानन्दम् ३।६-१०
१४- सहृदयानन्दम् ३।११
१५- सहृदयानन्दम् ३।२०
१६- सहृदयानन्दम् ३।२२
१७- सहृदयानन्दम् ३।२३
१८- सहृदयानन्दम् ३।३०
१६- नलाभ्युदयम् ३।२
२०- नलाभ्युदयम् ३।६

नैषध के रूप-गुण-वर्णन में वे किसी-किसी प्रकार से दिन व्यतीत करतीं परन्तु निद्रा से विरहित यामिनी को वे कोटि कल्पों के समान समझतीं[1]। मज्जना, विलेपन आदि आह्निक कृत्यों में भी उन्हें अरुचि हो गयी तथा हंसतूल शयनीय का परित्याग करके उन्होंने पृथ्वी का ही आश्रय लिया[2]।

प्रवास विप्रलम्भ

कलि के प्रभाव से वन में दमयन्ती को एकाकिनी छोड़ने के पश्चात् नल विरह-पीड़ित होकर प्रिया के विषय में विविध चिन्तायें करते हैं[3]। उन्मत्त होकर कभी वे वन-प्रदेश से ही प्रिया को मांगने लगते हैं[4]। प्रिया के विषय में कभी वे शार्दूल से[5], कभी अशोक से[6], कभी [7] वृक्ष से और कभी कोकिल से[8] प्रश्न करते हैं। अन्तत: प्रिया को नष्ट समझ कर वे विलाप करते हैं -- 'हा पूर्णचन्द्रमुखि! हा मदिरायताक्षि! हा नैषधप्रियतमे! मुझे छोड़कर कहां चली गयी हो। यद्यपि मैंने निष्कृप हो कर तुम्हारा त्याग कर दिया परन्तु तुम तो ऐसी नहीं हो। फिर बोलती क्यों नहीं?'[9]

'अनर्घनलचरित्र' महानाटक में दमयन्ती का परित्याग करने के पश्चात् नल की विरहावस्था का सुन्दर चित्रण किया गया है। वे वन में 'मेरी जीवनवेलि! तुम कहां हो, कहां हो' इस प्रकार विलाप करते फिरते हैं[10]। नल कहते हैं -- 'हा कष्ट है, मेरे विप्रलम्भसागर का पार नहीं दृष्टिगोचर होता। हे प्रिये! क्या मैं फिर कभी तुम्हारा मुख देखूंगा?' इस प्रकार से चिन्तित होते हुए नल ताप[11] और अनिद्रा[12] के स्थान बन गए। प्रिया के नील अलकों से अलंकृत मुख[13] और उसके रूप[14] का स्मरण करते हुए नल की 'स्मृति' काम-दशा व्यक्त की गयी है।

१- नलाभ्युदयम् ३।६
२- नलाभ्युदयम् ३।१०
३- मं०नै० पंचम अंक
४- मं०नै० ५।६८
५- मं०नै ५।१००
६- मं०नै०५।१०१
७- मं० नै० ५।१०२
८- मं०नै० ५।१०४
९- मं०नै० ५।१०५
१०- अ०न०च० ६।६
११- अ०न०च० ६।१०
१२- अ०न०च० ६।१३
१३- अ०न०च० ६।११
१४- अ०न०च० ६।१२

इसी प्रकार 'नलदमयन्तीयम्' के अन्तर्गत भी नल 'अहह! क्या करूं, कहां जाऊं, किसे हृदय-वेदना सुनाऊं?'[1] इस प्रकार किंकर्तव्यविमूढ़ होकर प्रलाप करने लगते हैं। उन्हें दमयन्ती का भिक्षुक रोदन सुनायी पड़ता है। नल श्वासों के दैर्घ्य, हास के विलोप तथा मालिन्य के विकास आदि विकारों से युक्त हो जाते हैं।[2]

महाकाव्यों में भी नल की 'प्रवास-विप्रलम्भ' अवस्था का वर्णन उपलब्ध होता है। नल में चिन्ता[3] के साथ-साथ कीरादिक पक्षियों[4] तथा कौतुक-स्थानों[5] से अरति उत्पन्न हो गई। उनका शरीर विरह-यातना से विह्वल होकर जलने लगा[6]। अन्वेषण करते हुए[7] वे अधीर होकर 'हा प्रिये! भामिने![8] तुम कहां हो? दमयन्ति! मुझे दर्शन दो।' इत्यादि प्रकार से विलाप करने लगे[9]।

नल-दमयन्ती-साहित्य में नल की अपेक्षा दमयन्ती की प्रवास-विप्रलम्भ दशा के चित्रण की ओर कवियों की रुचि अधिक परिलक्षित होती है। प्रिय-विरह के कारण उन्मादावस्था में दमयन्ती चक्रवाकी से प्रिय के विषय में प्रश्न करती है[10]। कभी निम्ब[11], रम्भा[12], रसाल और कदम्ब[13] से और कभी पर्वतराज[14] से ही अपने प्राणेश्वर के विषय में पूछने लगती है। विरह-व्यथा के आधिक्य से वह प्रलाप करने लगी -- 'आर्य पुत्र तुम मुझे दिखायी पड़ रहे हो, अब कहां जा रहे हो?'[15]

१- नलदमयन्तीयम् षष्ठ अंक
२- नलदमयन्तीयम् षष्ठ अंक
३- नलायनम् ६।५।४१
४- नलायनम् ६।४।१४
५- नलायनम् ६।४।१५
६- नलायनम् ६।४।१७
७- सहृदयानन्दम् १३।२
८- नलायनम् ६।४।१८
९- नलविलास ६।६
१०- अ०न०च० ८।५
११- अ०न०च० ८।६
१२- अ०न०च० ८।७
१३- अ०न०च० ८।८
१४- नलदमयन्तीयम् पंचम अंक तथा नलाभ्युदयम् १७।७५।
१५- नलविलास षष्ठ अंक
१६- मंजुल नैषधम् ५।६१

दमयन्ती के वस्त्र मलिन हैं, शरीर धूलिधूसरित तथा समस्त अंग कृश हो गए हैं[1]। दमयन्ती की आंखों में नींद नहीं आती[2] और वे एक वन से दूसरे वन में रोती हुई[3] प्रिय को खोजती भटकती हैं। विकल हृदय से वे प्रिय के लिए विलाप करती हैं[4]। नल को अपने समीप न देखकर वे[5] मूर्च्छित हो जाती हैं, पुन: संज्ञा प्राप्त होने पर वे 'हा निषधेश्वर! कहां चले गए' इत्यादि प्रकार से चिरकाल तक विलाप करती रहीं[6]।

'नलायन' के अन्तर्गत प्रोषित पतिका दमयन्ती के विलाप[7], मूर्च्छा[8] इत्यादि का चित्रण किया गया है। पत्ते के भी खड़कने पर नल के संचार की आशंका से उसने वनोद्देशों को देखा[9]। दमयन्ती रोदन करती हैं[10] और कभी प्रिय को उपालम्भ देती हैं[11], दमयन्ती ने स्रक् चन्दनादि वस्तुओं का परित्याग कर दिया[12], उनका शरीर मलाक्लिष्ट हो गया[13]। कभी वह विलाप करतीं[14] और कभी प्रिय के गुणों को स्मरण करतीं[15]।

'सहृदयानन्दम्' के अन्तर्गत पति से वियुक्त होकर भैमी प्रलाप करती हैं[16]। दमयन्ती की अश्रुधाराओं का तो कहना ही क्या?[17] वे कभी नैषध की समता करने वाले पर्वत से[18], कभी नदी से[19] और कभी हरिण से[20] प्रिय विषयक प्रश्न करती हैं।

१- मंजुल नैषधम् ५।६१

२- अ०न०च० ८।१३

३- अ०न०च० ८।२०

४- अ०न०च० ८।३५

५- नलदमयन्तीयम् चतुर्थ अंक

६- नलदमयन्तीयम् चतुर्थ अंक

७- नलायनम् ५।१।२१

८- नलायनम् ५।११।२६

९- नलायनम् ५।२।५

१०- नलायनम् ५।२।११

११- नलायनम् ५।२।२६

१२- नलायनम् ५।२।३३

१३- नलायनम् ६।१।२७

१४- नलायनम् ६।७।१८-३३

१५- नलायनम् ६।७।३४

१६- सहृदयानन्दम् ११।१५-१६

१७- सहृदयानन्दम् ११।३९

१८- सहृदयानन्दम् १२।२९

१९- सहृदयानन्दम् १२।३१

२०- सहृदयानन्दम् १२।३४

'उत्तरनैषधम्' के अन्तर्गत भी नल द्वारा परित्यक्ता भैमी की विविध कामदशाओं का वर्णन किया गया है, उनमें रुदन[1], प्रलाप[2], विलाप[3] तथा उन्माद[4] की दशायें प्रकट हो जाती हैं। 'दमयन्ती' के केश विप्रकीर्ण हैं तथा पृथ्वी पर लोटने के कारण धूलि धूसरित हो गए हैं। इस प्रकार की विरह-व्यथिता दमयन्ती में केवल श्वास के कारण ही प्राणों की स्थिति का अनुमान होता है[5]।

संयोग शृंगार

नल-दमयन्ती-साहित्य में शृंगार रस के विप्रलम्भ पक्ष का जितना उत्कृष्ट रूप उपलब्ध होता है, उतना संयोग पक्ष का नहीं। अधिकतर ग्रन्थों में तो शृंगार रस का यह पक्ष उपेक्षित ही कर दिया गया है। 'नल विलास' के अन्तर्गत स्वयंवर में वरमाला प्राप्त करके नल में हर्ष एवं रोमांच हो जाता है[6]। 'नलचरित्र' नाटक में देवी सरस्वती के प्रयत्न से नल का साक्षात्कार करती हुई दमयन्ती में निःश्वास[7] अनुभव दृष्टिगोचर होता है। देवी सरस्वती के अतिथि का सत्कार करने का आदेश प्राप्त करके दमयन्ती लज्जा और अधीरता का अनुभव करती है, जिसकी सुन्दर व्यंजना इसमें प्रस्तुत की गयी है। वह मन-ही-मन कहती है --" भगवति! मुझे लज्जा आ रही है, देवी प्रसन्न होवें, क्षण भर के लिए धैर्य देकर मेरी रक्षा करेंगे।[8] 'मंजुलनैषधम्' में वियोग के पश्चात् पुनः पति को देखकर दमयन्ती में 'स्तम्भ' सात्त्विक भाव प्रदर्शित किया गया है[9]।

१- उ०नै० १०।४

२- उ०नै० १०।६

३- उ०नै० १०।६

~~४०~~ उ०नै० १०।४६

५- उ०नै० १०।७

६- ~~नलचरित्रम्पृ०~~ नलविलास, पृ० ५४

७- नलचरित्रम, पृ० ७७

८- नलचरित्रम्, पृ० ७६

६- मंजुल नैषधम्-- सप्तम अंक

महाकाव्यों में नाटकों की अपेक्षा संयोग शृंगार की अभिव्यंजना अधिक स्पष्ट होती है । स्वयंवर में प्रिय को वरमाला पहनाते समय दमयन्ती की लज्जा का सुन्दर चित्रण किया गया है । "माला से युक्त दमयन्ती का हाथ प्रिय की ओर उठ कर फिर रुक गया, उसी प्रकार प्रिय के मुख की ओर आधी दूर जाकर उसका चंचल कटाक्ष लौट आया ।[१]" स्वयंवर में नल को वरमाला पहनाने के अवसर दमयन्ती में रोमांच[२] तथा सात्विक स्तम्भ[३] का नैषध चरित में सुन्दर चित्रण किया गया है । कण्ठ में पड़ी हुई वरमाला के स्पर्श से नल के हाथ में स्वेदोद्गम[४] हो जाता है । नल में उस समय कम्प[५], हर्ष[६] तथा स्तम्भ[७] सात्विक भाव प्रकट होते हुए परिलक्षित होते हैं । इसी प्रकार विवाह[८] के समय भी सात्विक भावोदय के कारण वर और वधू दोनों के हाथ आर्द्र हो उठे तथा महाराज भीम ने इतना दान दिया कि जिसे देखकर लोगों को रोमांच हो[९] आया और इस प्रकार नल और दमयन्ती का अनुराग-जन्य रोमांच उसमें छिप गया । मुग्धा दमयन्ती की लज्जा एक अत्यन्त मनोरम चित्र इसमें अंकित है --"दमयन्ती सिर झुकाए खड़ी थी, मानो वह नवोढा लज्जा की सरिता में स्नान कर रही हो । द्वार के निकट मुग्धा चित्रलिखिता सी खड़ी रही, उसने प्रिय के सैकड़ों बार बुलाने को भी अनसुना कर दिया ।[१०]" नैषध में रतिक्रीडा के अवसर पर नायिका दमयन्ती के सत्त्वज अलंकारों का भी वर्णन किया गया है ।

उद्दीपन विभाव के रूप में सखियों के साथ नायक-नायिका के परिहास[११] चन्द्रिका[१२] आदि का निबन्धन किया गया है । वियोग के पश्चात् पुनर्मिलन के अवसर

१- नैषध १४।२८
२- नैषध १४।५३,५४
३- नैषध १४।५५
४- नैषध १४।५६
५- नैषध १४।५७ ५७
६- नैषध १५।५८
७- नै० १५।५६
८- नै० १६।४२ तथा सा०द०६।३८
९- नै० १६।४३
१०- नै० १८।३४
११- नै० सर्ग २०
१२- नै० सर्ग २१

पर नल और दमयन्ती दोनों में हर्षातिरेक के कारण सात्विक भावों की स्थिति दृष्टिगोचर हुई[1]। प्रथम संगम के समय पति को देखकर रोमांचित सुन्दरी का कवि ने अतीव मनोहर चित्र प्रस्तुत किया है --" आयताक्षी ने अपने शरीर में उद्भूत दुर्निवार पुलक को देखकर समीपस्थ नारियों के देखने से पहले ही वस्त्र से उसे ढक लिया[2]। शृंगारिक चेष्टाओं[3] तथा श्रम-भाव[4] का भी सुन्दर चित्रण किया गया है। उद्दीपन के रूप में मधुमास[5] जलकेलि[6], वनविहार[7] और स्वान्त[8] आदि के वर्णन द्वारा रति भाव की व्यंजना की गई है।

नल दमयन्ती-साहित्य के अन्तर्गत रसादिकों की भी अभिव्यंजना की ओर कवियों ने रुचि दिखायी है। अनुचित रूप से प्रवर्तित होने वाले रसों को काव्य में 'रसाभास' संज्ञा मिली है[9]। अनेक स्थानों[10] पर दमयन्ती में इन्द्रादि देवों की रति का चित्रण उपलब्ध होता है। स्वयं इन्द्र यह कहते हुए दिखायी पड़ते हैं कि जिसके लिए तपस्या करती हुई सहस्रों स्त्रियां निराश हो जाती हैं, वही लज्जा त्याग कर जिसकी याचना कर रहा है उसी इन्द्र के प्रति यह (भैमी) उदासीन है। इस रति भाव का अनौचित्य भी इन्द्र के शब्दों से स्पष्ट हो जाता है --" कहां सम्पूर्ण स्वर्ग के स्त्री समूह के लिए परिरम्भण प्रणय के योग्य हम, और कहां यह नारी ?" यहां यह रति स्थायी उभयनिष्ठ नहीं है। एकनिष्ठ रति स्थायी अनौचित्य प्रवर्तित है, अतएव यहां शृंगार रस न होकर रसाभास है[11]। 'नलदमयन्तीयम्'[12] एवं 'नलायनम्'[13] में दमयन्ती के प्रति किरातों की किञ्चित् आसक्ति में शृंगाराभास का दर्शन होता है। नैषध[14] तथा 'सहृदयानन्दम्'[15] में वर्णित पुरांगनाओं की नल

१- सहृ० १५।१४
२- नलाभ्युदयम् ६।१५
३- नलाभ्युदयम् ६।२३ तथा उ०नै०१४।१८
४- नलाभ्युदयम् ६।३७
५- नलाभ्युदयम् ६।११ तथा उ०नै० प्रथम सर्ग
६- सहृदयानन्दम् ७।२६
७- नलाभ्युदयम् ६।५२-६२, उत्तरनैषधम् द्वितीय सर्ग
७- नलाभ्युदयम् ६।४५-५१, उ०नै० प्रथम सर्ग
८- नलाभ्युदयम् ६।१६
९-काव्य प्रकाश ४।३६
१०- नलचरित्रम् २।३४-३५
१० अ०न० च० तृतीय अंक
नलायनम् २।५।२६
११- सा०द०३।२६३
१२- नलदमयन्तीयम्, पंचम अंक
१३- नलायन् ५।५।२-४
१४- सहृदयानन्दम् ८।२७-३३ नै०
१५- सहृदयानन्दम् ८।२९-३३

के प्रति आसक्ति भी अलौकिकत्व-प्रवर्तित रति स्थायिभाव है । इसके अतिरिक्त मनुष्येतर जगत् की भी शृंगारिक चेष्टाओं के वर्णन द्वारा नल-साहित्य के विभिन्न कवियों ने यत्र-तत्र शृंगार रसाभास का चित्रण किया है । हंस का रतिक्रीडा[1] एवं भ्रमर की शृंगारिक चेष्टाओं[2] में यह शृंगार-रसाभास उपलब्ध होता है । 'भाव' के भी एकाध चित्रण मिलते हैं जैसे 'मंजुनैषधम्' के अन्तर्गत[3] नारद की देव विषयक रति 'भाव' है ।

वीररस

नल सम्बन्धी-साहित्य के अन्तर्गत शृंगार के अतिरिक्त अन्य सभी रसों की भी अंग रूप में व्यंजना की गयी है । वीर रस का स्थायिभाव उत्साह है तथा यह उत्तम पात्र में आश्रित होता है[4] । वीर रस भी अनेक प्रकार का होता है । दयावीर, युद्धवीर एवं दानवीर के अतिरिक्त कुछ आचार्य[5] धर्मवीर को भी वीर रस के एक प्रकार के रूप में स्वीकार करते हैं । प्रस्तुत साहित्य के अन्तर्गत नल को ही आश्रय बनाकर वीररस की व्यंजना मिलती है । दानवीर रस का कई स्थलों पर प्रसंग मिलता है । महाराज नल के विषय में वाचस्पति विरुदावद से कहते हैं --

अपि दद्यामिदं राज्यमपि दद्यां च जीवितम्[6] ।
अर्थिनो न तु पश्येयमसम्पूर्णमनोरथान् ॥

'अनर्घ नल चरित्र' नाटक में भी नल में दानवीरता की झलक दिखायी गयी है । महाराज नल के दान से वहाँ दरिद्र लोग भी इतने धनी हो गए हैं कि वे हाथी रखने लगे हैं[7] । कल्पवृक्ष, कामधेनु तथा चिन्तामणि अभीप्सित वस्तु प्रदान करने में

१- नैषध
२- सहृ० २।२४ तथा नलाभ्युदयम् ६।६
३- मं० नै० ३।४१,४६
४- सा० द० ३।२३२
५- सा० द० ३।२३४
६- नलचरित्रम् २।१४
७- अ०न० च० ५।३४

समर्थ कहे जाते हैं, परन्तु नल इन सभी से बढ़कर थे । इस भाव को `नलाभ्युदय` के अन्तर्गत एक श्लोक में यह कहकर व्यक्त किया गया है कि महाराज नल प्रसन्नतापूर्वक लाखों कल्पवृक्षों, सैकड़ों कामधेनुओं तथा सहस्रों चिन्तामणियों का दान कर देते हैं । `नैषधीयचरितम्` के अन्तर्गत इसका सांगोपांग चित्रण मिलता है । पंचम सर्ग के अन्तर्गत देवताओं की नल से याचना के प्रसंग में नल की दानवीरता का विशद रूप परिलक्षित होता है[1] ।

धर्मवीर रस का सांगोपांग रूप इस साहित्य में यद्यपि नहीं परिलक्षित होता, तथापि अनेक स्थलों पर उसकी ओर संकेत मिलता है । `मंजुलनैषधम्` में नल को धर्मतरु कहा गया है जिसकी छाया में मनुष्य पुण्यवान् हो जाते हैं और इस प्रकार वहां कोई `अधर्म` शब्द का स्मरण तक नहीं करता[2] । इसके अतिरिक्त नल संशयमात्र से किसी को दण्ड न देकर दण्ड्य व्यक्ति को, विचार पूर्वक दण्ड देते हुए अपनी धर्मवीरता को स्पष्ट करते हैं[3] । `नैषधीयचरितम्` में केवल एक स्थल पर इसकी ओर संकेत मात्र मिलता है[4] । इसी प्रकार `उत्तरनैषधम्` के अन्तर्गत ब नल की यज्ञादिकों में प्रवृत्ति का उल्लेख मिलता है[5] ।

नल दमयन्ती-साहित्य के अन्तर्गत युद्धवीर रस के भी कुछ स्थल मिलते हैं[6] । `मंजुलनैषधम्` के अन्तर्गत इन्द्रसेन और पुष्कर के युद्ध के प्रसंग में इसका सांगोपांग चित्रण उपलब्ध होता ह । यहां इन्द्रसेन उत्साह भाव का आश्रय है पुष्कर और उसके वचन उद्दीपन `नैषधीयचरितम्` के अन्तर्गत भी नल की युद्धवीरता का प्रसंग मिलता है[7] । `अनर्घनलचरित्र`[8], `नलदमयन्तीयम्`[9], `नलायनम्`[10], `नलाभ्युदय`[11] तथा `उत्तरनैषधम्`[12] में नल की युद्धवीरता की ओर संकेत मिलता है । `नलचम्पू`[13] के अन्तर्गत नल की युद्धवीरता का सांगोपांग रूप परिलक्षित होता है । यहां आश्रय नल है, आलम्बन शूकर है तथा शूकर की विभिन्न चेष्टाएं उद्दीपन विभाव हैं ।

१- नैषध परिशीलन,पृ०१८७-१८८
२- मं०नै० १।६
३- मं०नै० १।८
४- नै० १।७
५- उ०नै० १६।४६
६- मं० नै० ,पृ०८५-८७
७- नै० १।६-११
८- अ०न०च० ५।३५
९- न०द०,पृ०१२२-१२३
१०- न० १।१।५३तथा १।१४।२६
११- नलाभ्युदयम् १।६
१२- उ०नै० १।२६
१३- नल चम्पू,पृ० २६

नल की दयावीरता हंस को ग्रहण करने पर झलकती है[1]। 'नैषधीय चरितम्' के अन्तर्गत करपंजरस्थ के उमड़ते हुए आंसू[2] और तदनन्तर हंस की मुक्ति[3] दयावी के अन्तर्गत जब कर्कोटक नाग नल का दंशन कर लेता है, उ मारते, वह उनकी दयावीरता ही प्रतीत होती है[4]। अप और दमयन्ती दोनों की दया भी दयावीरता ही है[5]। केवल दयावीर के आश्रय और आलम्बन के ही दर्शन होते स्थित बच्चों को गले से लगाए हुए बन्दरों पर नल करुण छोड़ते[6]।

रौद्र रस

नल-दमयन्ती-साहित्य में अनेक स्थलों पर र है। 'नलविलास'[7] के अन्तर्गत तापसवेशधारी लम्बोदर को क्रुद्ध हो उठते हैं। उनके अभ्यन्तर को उद्वेलित करने वाले अपसर्प कर्णेजप, आकुल, क्रूराशय, अतिपाप, अन्नदावानल, इत्यादि वाक्यों में मिलती है[8]। 'मंजुनैषधम्' में ऐन्द्रना नल के ऊपर कलि के क्रोध में रौद्ररस का प्रसंग आता है दो वद्ध परस्पर विवाद करते-करते मारपीट पर उतर आते हैं। यहां दोनों ही वद्ध क्रमशः आश्रय और आलम्बन बनते हैं। द्वापर के आलम्बन होने पर कलि के[10,11] और दमयन्ती के आलम्बन होने पर कामवास के वाक्यों में[12] क्रोध भाव की व्यंजना हुई है। 'नैषधचरितम्'[13] तथा 'नलायनम्'[14] दोनों ही में चार्वाक की अनर्गल बातों को सुनकर

१- न०द०,पृ०२६
२- नै० १।१४२
३- नै० १।१४३
४- न० ४।१२।४६
५- न० ८।४।६-१२
६- सहृ० १।५६
७- न०वि०,पृ०३३ ८४
८- मं०नै०,पृ०३३
६- मं०नै० ४।८१
१०- मै०प०,पृ०६६-६७
११- मै०प०,पृ०११०-११३
१२- मै०प०,पृ०१८८
१३- नै०१७।८४-८५ तथा ६२,६५,६६, १०२।
१४- न० ४।२।७०१४-१५

देवताओं के वाक्यों में क्रोध की सुन्दर व्यंजना हुई है । 'नलायनम्'[1] के अन्तर्गत देवी सरस्वती के मुख से नल का वर्णन सुनकर क्रुद्ध कलि के वाक्यों में रौद्र रस आस्वाद्य होता है ।

'नल चरित्रम्'[2] के अन्तर्गत नल के वाक्यों में क्रोध भाव की व्यंजना हुई है । यहां आलम्बन[3] महेन्द्र हैं तथा उद्दीपन है उनका लेख । यहां पर यह अनौचित्य-प्रवर्तित होने के कारण रौद्र रस न होकर रसाभास है ।

हास्यरस

नलदमयन्ती-साहित्य के अन्तर्गत हास्यरस का प्रसंग अनेक स्थलों पर आया है । नल-विलास के अन्तर्गत कापालिक को देखकर विदूषक द्वारा कहे गए वचनों में हास्य रस का अच्छा पुट प मिलता है । कभी वह कापालिक को ब्रह्मराक्षस समझ कर भय के कारण राजा के पीछे छिपने लगता है[4] और कभी उसे अपना साला कहने लगता है[5] । इसी प्रकार लम्बस्तनी को देखकर भी विदूषक उसी प्रकार से उस स्थूलशरीरा के गिर पड़ने से अपनी मृत्यु की आशंका करने लगता है[6] । एक स्थल पर मकरिका विदूषक को गर्दभमुख कह कर हास्य का उद्रेक करती है[7] । 'नलचरित्रम्' के अन्तर्गत महाराज नल से वार्तालाप के प्रसंग में विदूषक हास्यच्छटा बिखेर देता है[8] । 'अनर्घनलचरित्र' के अन्तर्गत विदूषक का मदनिका के साथ हास-परिहास और 'भैमीपरिणयम्' के अन्तर्गत दमयन्ती स्वयंवर में उपस्थित पुष्कर का दमन के प्रति कथन[9] हास्यरस के स्थल हैं । 'नैषधीयचरितम्' के अन्तर्गत भी हास्य का प्रसंग है कई बार आया है[10] ।

१- न० ४।२।४७-५४

२- न०च० ४।२६-२७

३- रौद्रं गुर्वादिगतकोपे ।सा०द०३।२६४

४- न० वि०,पृ० ७

५- न०वि०,पृ०८

६- न०वि०,पृ०२४

७- न०वि०,पृ०१८

८- न केवलं तथा लम्बस्तन्या रोषः: अपि तु तस्या उत्संगे शयितो नायं समय इति चारायणमप्युन्मत्त एव परिजनेन समं स्थाप- यिष्यसि ।न०च०पृ०१०७ ।

९- भै०प०,पृ०७६

१०- नैषध परिशीलन,पृ०१६१-१६३

वात्सल्य

वात्सल्य रतिभाव का ही रूपान्तर प्रतीत होता है । वन में भटकते हुए नल और दमयन्ती का हृदय बालकों को स्मरण करके द्रवित हो जाता है,[१] अथवा इन्द्रसेन और इन्द्रसेना को देखकर बाहुक वेशधारी नल की अवस्था का चित्रण[२] वात्सल्य के प्रसंग हैं । इसी प्रकार 'उत्तरनैषधम्' के अन्तर्गत दमयन्ती को देखकर चेदिनगर में सुनन्दा की माता के व्यवहार[३] में भी वात्सल्य का आस्वादन होता है ।

अद्भुत रस

'नलविलास'[४] के अन्तर्गत भुजग परीक्षा करके निषधराज द्वारा नल का रूपपरिवर्तन के मूल में विस्मय भाव ही मिलता है । इसी प्रकार का भाव ऐरावत कैलास को देखकर चित्रावसु और इन्द्र के[५] मन में उद्बुद्ध होता है । 'मंजुलनैषधम्' के अन्तर्गत दमयन्ती की प्रतिकृति के प्रसंग में[६] अद्भुत रस का वर्णन होता है । निर्निमेष लोचन वाली उस कन्या (प्रतिकृति) को देखकर राजा को आश्चर्य होता है । वे सोचते हैं कि क्या यह मानुषी हो सकती है, परन्तु संसार में ऐसी तो कोई वस्तु नहीं है[७]। अन्त में शिल्पकार और उस प्रतिकृति का भेद पता चलने पर वसुन्धरा और राजा, दोनों ही के द्वारा कहे गए वाक्यों में विस्मय की छाप है । कुण्डिनपुर की समृद्धि देखते हुए देवदूत नल के वाक्य[८] भी विस्मयमूलक है । छठे अंक में दमयन्ती को केशिनी नल और कर्कोटक का वृत्तान्त सुनाती है[९]। इस सम्पूर्ण स्थल में अद्भुत रस का आस्वादन होता है । 'नैषधीयचरितम्' के अन्तर्गत प्रथम सर्ग में हंस को देखकर नल के[१०] और तृतीय सर्ग में दमयन्ती और उसकी सखियों के हृदय में[११] विस्मय भाव उद्बुद्ध होकर

१- अ०न०च०,पृ०१३६-१३७
२- न०च०,पृ०४२ मै०प० १०।६
३- मं०न०,पृ०-१२-१४ उ०नै०१०।६४-६७
४- मं०नै०-१।६ न०वि०,पृ०६६
५- मं०नै०-३।१६ न०च०,पृ०४२
६- मं०नै०,पृ०११-१४
७- नै०२।११६,११९तथा-१३४ मं०नै०१।६
८- नै०-३।३ मं०नै०३।५६-५६
९- नै०-१२।७१ मं०नै०७५-८०
१०- नै०-१२।८१ नै०१।११६,१२६,१३४
११- नै० १४।७७ ३।३

आस्वाद होता है । दमयन्ती स्वयंवर में सरस्वती द्वारा प्रस्तुत कामरूप[१] और कीकटाधिप[२] के वर्णन और चतुर्दश सर्ग में देवों[३] और सरस्वती[४] द्वारा अपना वास्तविक रूप ग्रहण करने के प्रसंग में भी अद्भुत रस का चित्रण है[५]। 'उत्तरनैषधम्' के अन्तर्गत नल द्वारा परित्यक्ता दमयन्ती को आश्रमवासी तपस्वियों ने आश्वासन दिया और तत्पश्चात् वह आश्रम मण्डल, नदी और मुनि आदि सभी अदृश्य हो गए[६]। इस अवस्था में दमयन्ती के हृदय में विस्मय हुआ । इस प्रकार इस स्थल पर अद्भुत रस की अभिव्यंजना हुई है ।

करुणरस

नल दमयन्ती साहित्य में करुणरस की भी सुन्दर व्यंजना मिलती है । 'भैमीपरिणयम्' के चतुर्थ अंक में दमयन्ती की विदा के प्रसंग में करुण रस का सुन्दर चित्रण हुआ है । विदर्भ राज अपनी कन्या की विदाई के समय विलाप करने लगते हैं[७]। दमयन्ती के भाई दमन भी किंकर्तव्यविमूढ़ होने लगते हैं[८]। पिता गद्गदकण्ठ से पहले पुत्री को उपदेश देते हैं[९] और फिर जामाता को सम्बोधन करके उनसे अपनी पुत्री के विषय में उदार दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रार्थना करते हुए दिखायी देते हैं[१०]। दमन भी अपनी स्वसा पर नल को सर्वाधिकार देते हैं[११]। विदाई के समय नूतन आरोपित यूथिका, लीलागृह की भित्तिका पर अंकित दम, दमन और विदर्भ के अधूरे चित्रों तथा क्रीडापर्वत की चिन्ता करती हुई दमयन्ती को देखकर शारदा भी विह्वल हो जाती हैं[१२]। यही नहीं, दमयन्ती की आंखों से ओझल हो जाने पर वैदर्भ की विकलता से पूर्ण उस

१- नै० १२।७१
२- नै० १२।६१
३- नै० १४।७०
४- नै० १४।६६
५- नैषध परिशीलन, पृ०१८८-१९०
६- उ०नै० १०।७३
७- मैं०प०४।१२
८- मैं०प०, पृ० १०१
९- मैं०प० ४।१३-१४
१०- मैं०प०४।१५-१६
११- मैं०प० ४।१७
१२- मैं०प०, पृ०१०४-१०५

सम्पूर्ण दृश्य में करुण रस का अच्छा परिपाक हुआ है ।

इसी प्रकार पंचम अंक में दमयन्ती द्वारा पुत्र और पुत्री को कुण्डिनपुर के लिए विसर्जन करने में भी करुणरस की अभिव्यंजना हुई है[1] । दमयन्ती भांति-भांति की चिन्ता करती है और फिर बच्चों को कर्तव्योपदेश करती है । यही नहीं, इस समय बच्चों की दारुण-दशा पर विचार करते हुए नल भी अत्यन्त विकल दृष्टिगोचर होते हैं । इसी समय दमयन्ती और इन्द्रसेन का वार्तालाप अत्यन्त करुण है ।अन्त में बच्चों के चले जाने पर दमयन्ती के विलाप में करुण रस की सुन्दर अभिव्यंजना मिलती है ।`भैमीपरिणयम्` में नल के करपंजर में अवरुद्ध हंस के विलाप[2] में भी करुण रस का प्रसंग मिलता है । यहाँ `नैषधीयचरितम्` का ही अनुकरण[3] मिलता है । `नैषध` में इसी स्थल पर करुण रस का विशद चित्रण हुआ है । इस स्थल पर `दमयन्तीपरिणय चम्पू`[4] में भी नैषध का अनुकरण किया गया है, ऐसा प्रतीत होता है ।

भयानक रस

नलदमयन्ती-साहित्य के अन्तर्गत भयानक रस का वर्णन न्यून है । `मंजुल-नैषधम्` में शिष्य और वृद्ध के वार्तालाप[5] के प्रसंग में और वन की भयंकरता के वर्णन में भयानक रस का समावेश मिलता है । वन में अत्यन्त व्याकुल स्त्री को पतिनिवेश में एकाकी विचरती देखकर मुग्ध वृद्ध भयभीत हो जाता है । `नैषधीयचरितम्` में भी यत्र-तत्र `भय` स्थायी की सुन्दर व्यंजना हुई है[6] । स्वयंवर में वासुकि[7] कलिंगाधिपति[8] और उत्कल-नरेश[9] के वर्णन के प्रसंग में भय ही व्यक्त होता है । `सहृदयानन्दम्`[10] में विशालआभोग वाले सर्प के वर्णन में भी भयानक रस का चित्रण मिलता है ।

१- भै०प०,पृ०१३०-१३५
२- भै०प०,पृ०२०
३- नैषध परिशीलन,पृ०१६०-१६१
४- द०प०च०,पृ० ६
५- मं०नै०,पृ० ६०-६२
६-नैषधपरिशीलन,पृ०१६४-१६५
७- नै० १२।२१
८- नै० १२।२५
९- नै० १२।८४
१०- सहृ० ११।५१-५५

बीभत्स रस

नलदमयन्ती-साहित्य के अन्तर्गत बीभत्स रस के भी स्थल बहुत कम हैं । प्राय: बीभत्स रस के वर्णन में केवल आलम्बन का स्वरूप चित्रण कर दिया जाता है । आश्रय में उसकी प्रतिक्रिया नहीं दिखायी जाती । 'नैषधीयचरितम्' के अन्तर्गत दमयन्ती के वियोग से कातर नल को उपवन में विहार करने के प्रसंग में उसकी सुन्दर वस्तुओं के विषय में भी घृणा ही उत्पन्न होती है[1] । उन्हें पलाश के पुष्प वियोगियों के कलेजे के टुकड़ों के समान प्रतीत हो रहे थे । यहां बीभत्स रस का चित्रण मिलता है । 'सहृदयानन्दम्' के अन्तर्गत वन्य करिघटा द्वारा यात्रियों के मर्दन के प्रसंग में[2] बीभत्स रस का आस्वादन होता है ।

शान्तरस

'मंजुलनैषधम्' में आश्रम के वर्णन[3] में तथा 'नलायनम्' के अन्तर्गत चारण श्रमणों के प्रसंग में[4] शान्तरस की झलक मिलती है । 'सहृदयानन्दम्' में[5] वन में मूर्च्छित पड़ी हुई दमयन्ती को संज्ञा प्राप्त कराने वाले और आश्वासन देने वाले मुनि का चरित्र शान्तरस का उद्रेक करने में सफल होता है ।

इसके अतिरिक्त नल दमयन्ती-साहित्य में भावोदय[6],भाव सन्धि,भावशान्ति और भाव शबलता के भी यत्र-तत्र सुन्दर उदाहरण मिलते हैं । इस प्रकार नलदमयन्ती-साहित्य के अन्तर्गत रसों की स्थिति पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि इसमें अंगीरस शृंगार है । शृंगार के दोनों ही पक्षों का यहां सांगोपांग सुन्दर चित्रण हुआ है । शृंगार के अतिरिक्त अन्य रसों का भी इसमें चित्रण हुआ है, परन्तु शृंगार के अंग रूप में ही । इस प्रकार रसों के चित्रण की दृष्टि से संस्कृत का नल-दमयन्ती-साहित्य पर्याप्त ऊंचा ठहरता है ।

-0-

१- नै० १।८४,८६,९६

२- सहृ० १२।४८-५२

३- मं०नै० ७।१२३

४- नलायनम,पंचम स्कन्ध

५- मं०नै० सहृ०१२।५-२६

६- नैषध परिशीलन,पृ०२८५-२८७

अष्टम् अध्याय

-0-

नलदमयन्ती-कथा के विकास की दृष्टि से

नलदमयन्ती-साहित्य का मूल्यांकन

अष्टम अध्याय

-0-

नलदमयन्ती-कथा के विकास की दृष्टि से नलदमयन्ती-साहित्य का मूल्यांकन

पूर्ववर्ती अध्यायों में नलदमयन्ती-कथा पर आधारित साहित्य में प्रस्तुत कथा का विकास किस प्रकार से हुआ है, इस विषय का विवेचन किया जा चुका है। यह साहित्य मुख्यत: त्रिविध है। नाटकों और महाकाव्यों में इस कथा का विकास अधिक और सुन्दर है। चम्पू काव्यों में भी इस कथा को अपनाया गया है। महाभारत में नलदमयन्ती कथा इतिवृत्त का कथन मात्र प्रतीत होती है। उसमें काव्यात्मक सौन्दर्य बहुत कम अतएव नगण्य है। महाभारत में वन में नल से परित्यक्ता दमयन्ती के विलाप में[1] विप्रलम्भ शृंगार तथा तापसारण्य और आश्रम वर्णन में[2] शान्तरस की अनुभूति होती है परन्तु इसे रसानुप्राणित न होने के कारण काव्य नहीं कहा जा सकता। यही स्थिति 'बृहत्कथामंजरी' और 'कथासरित्सागर' में आयी हुई नलदमयन्ती-कथा की भी कही जा सकती है। पुराणों में नलदमयन्ती-कथा मिलती ही नहीं है और नल की जो कथा मिलती

१- म० भा० वनपर्व ६०

२- म० भा० वनपर्व ६१।६१-६५

भी है[1] वहां भी इतिवृत्त कथन मात्र होने से इसका कोई सौन्दर्य नहीं है ।

नलदमयन्ती-कथा पर आधारित ललित साहित्य में प्रस्तुत कथा का विकास कई प्रकार से मिलता है । कहीं पर मूलकथा की घटनाओं की उपेक्षा करके, कहीं उसमें नई घटनायें जोड़कर , कहीं पर मूलकथा की घटनाओं का संक्षेप करके और कहीं उनका विस्तार करके, कहीं कहीं उन्हीं घटनाओं का क्रम बदल कर और कहीं पर उन्हीं घटनाओं को कुछ दूसरे रूप में प्रस्तुत करके मूलकथा का विकास किया गया प्रतीत होता है । कहीं पर नलोपाख्यान के पूर्वार्द्ध मात्र को लेकर और इसी प्रकार से कहीं पर उसके उत्तरार्द्ध मात्र को लेकर नाटकादिकों की रचना मिलती है । अधिकांश साहित्य सम्पूर्ण नलोपाख्यान की कथा को प्रस्तुत करता है । जैन साहित्य में नलदमयन्ती-कथा का स्वरूप सम्भवत: मूलकथा से भिन्न है । सम्भवत: इसीलिए जैन कवियों द्वारा विरचित नल दमयन्ती विषयक ललित साहित्य में कुछ अंशों में परस्पर समानता और मूलकथा से मिलने वाले भेद भी समान हैं । `नलविलास` और `नलायनम्` दोनों में ही दमयन्ती की माता का नाम उल्लिखित है ।

नलदमयन्ती-साहित्य के विधायक कवियों ने जो महाभारतीय नलदमयन्ती कथा की प्राचीन परम्परा में परिवर्तन किए हैं,उनका किस दृष्टि से औचित्य है तथा वे नलदमयन्ती-कथा के सम्यक् विकास में कहां तक सहायक सिद्ध हुए हैं, यही उस साहित्य के मूल्यांकन की कसौटी है । कहीं ये परिवर्तन रस की दृष्टि से , कहीं नायकादि के चरित्र की दृष्टि से , कहीं अभिनय की सुविधा के लिए,कहीं महाकाव्य अथवा चम्पू काव्यों के वर्ण्य-विषयों को दृष्टि में रखकर और कहीं पर केवल कथावस्तु को सरस बनाने में अपना महत्त्व रखते हैं ।

नल एवं दमयन्ती की कथा शृंगाररसप्रधान है । कथा के पूर्वार्द्ध में संयोग और उत्तरार्द्ध में विप्रलम्भ शृंगार का राज्य है । मूलकथा में शृंगार से इतर

१- द्रष्टव्य: प्रस्तुत निबन्ध का प्रथम अध्याय,खण्ड--ख ।

रसों के कोई विशेष स्थल नहीं उपलब्ध होते हैं । परवर्ती नलदमयन्ती-साहित्य के निर्माताओं ने इसमें कुछ अन्य रसों के लिए भी स्थान बनाया है । इसके लिए कहीं पर किसी संकेत मात्र का विस्तार कर दिया है या फिर किसी नवीन घटना को ही ला जोड़ा है । 'भैमीपरिणयम्' में जैसे पुत्रों को कुण्डिनपुर भेजते समय जो करुण एवं वीर रस की सुन्दर झांकी मिलती है, वह मूल-कथा में कुछ विस्तार का ही परिणाम है ।

कवि को प्रख्यात कथानक में भी परिवर्तन करने की स्वतन्त्रता रहती है, परन्तु इनकी भी कुछ मर्यादा होती है । जब ये परिवर्तन नायक के चरित्र-चित्रण में सहायक होते हैं तभी इनका महत्त्व होगा अन्यथा उसमें अपकारक होने पर तो ये दोष ही सिद्ध होंगे । प्रस्तुत कथा के नायक का चरित्र तो स्वत: ही इतना उज्ज्वल है, परन्तु एक - दो स्थलों पर उनके कार्य उनके चरित्र पर धब्बे बन जाते हैं । एक तो दमयन्ती जैसी पतिव्रता निरपराध-पत्नी को वन में छलपूर्वक एकाकी छोड़ देना और दूसरा है उनका द्यूत जैसे व्यसन में आसक्त होना । अधिकांश कवियों ने इन दोनों ही स्थलों पर घटनाओं में थोड़ा-बहुत परिवर्तन करके नायक के चरित्र की उदात्तता की रक्षा की है । कहीं पर वन में पक्षियों को पकड़ने की इच्छा से उनके पीछे भागते हुए इस दम्पति के परस्पर वियुक्त होने की कल्पना की गयी है[1] और कहीं नल की पुष्कर से द्यूत क्रीड़ा उनके सत्यसंधत्व का प्रमाण बना दी गयी है[2] ।

नाटकों में नाटकीयता और अभिनय की सुविधा को दृष्टि में रखकर भी कुछ परिवर्तन किए गए हैं । 'भैमीपरिणयम्' के अन्तर्गत मण्डप में क्रम से पांच नलों का भिन्न भिन्न वैदर्भी और कंचुकियों के साथ प्रवेश नाटकीयता की दृष्टि से बहुत प्रभावोत्पादक हुआ है ।

१- सहृ० सर्ग १०

२- मं० नै०

कहीं-कहीं मूलकथा में उपलब्ध होने वाली कथावस्तु को ही नाटककारों ने कुछ नवीन रूप से प्रस्तुत किया है । महर्षि वामदेव द्वारा प्रणीत 'छायाहरण' नाटक के अभिनय के माध्यम से नल के वृत्तान्त को स्पष्ट करने की पद्धति[१] अत्यधिक रोचक है ।

कहीं-कहीं पर प्रस्तुत कथा को लौकिक स्तर पर चित्रित करने की इच्छा से भी इसमें बहुत परिवर्तन परिलक्षित होते हैं । लगभग सभी अलौकिक पात्रों के स्थान पर लौकिक पात्रों को और अलौकिक घटनाओं के स्थान पर लौकिक घटनाओं को उपन्यस्त किया गया है[२] ।

कहीं-कहीं धर्मप्रचार के लिए भी इस कथा का विविध रूपों में विकास मिलता है । 'नलायनम्' के अन्तर्गत दमयन्ती द्वारा वन में सिकतामयी प्रतिमा की आराधना केवल जैन धर्म के प्रचार की दृष्टि से ही उचित कही जा सकती है । इसी प्रकार से इस कथा में सुभद्रा अर्हतो की शील कथा आदि की संयोजना का औचित्य बौद्ध धर्म से जैन धर्म की श्रेष्ठता प्रतिपादित करने में है ।

महाकाव्य साहित्य में प्रस्तुत होने पर इसी कथा के अन्तर्गत महाकाव्यों के वर्ण्य-विषयों को भी स्थान दिया गया है । उदाहरणार्थ 'उत्तरनैषधम्' के अन्तर्गत जैसे नल एवं दमयन्ती द्वारा कैलास पर्वत,सागर आदि के व दर्शन तथा जलक्रीड़ा आदि का वर्णन मिलता है । इसी प्रकार चम्पू काव्य के रूप में प्रस्तुत होने पर इसी कथा के अन्तर्गत चम्पू के वर्ण्य-विषयों को समेटने का प्रयत्न किया गया है । कहीं नायक और नायिका दोनों के बब जन्म की कथाओं को विस्तृत रूप मिल गया है[३] और कहीं नल की उद्यानवापी तथा भेरी नाद आदि का विस्तृत वर्णन मिलता है[४] ।

१- भै० प०

२- न० वि०

३- नल चम्पू

४- दमयन्ती परिणय चम्पू

कहीं-कहीं किसी विशेष प्रयोजन के अभाव में केवल कथा में नवीनता व लाने के लिए ही मूलकथा में कुछ परिवर्तन कर दिए गए हैं और कहीं कहीं तो ये एकदम निरर्थक ही प्रतीत होते हैं ।

इसी प्रकार से मूल कथा की घटनाओं के विस्तार और संकोच तथा उपादान और उपेक्षा के मूल में भी कवियों की मर्मज्ञता का परिचय मिलता है । कहीं-कहीं पर सामान्य बातों को भी उसी रूप में प्रस्तुत करते हुए ग्रन्थों में प्रस्तुत कथा का विकास निम्नकोटि का भी हुआ है[1] । परन्तु ऐसा कम ही मिलता है ।

प्रस्तुत कथा के पात्रों के चरित्र-चित्रण के विषय में इस साहित्य का यह वैशिष्ट्य है कि यहां गुणों के चित्रण की अपेक्षा गुणानुवाद की प्रवृत्ति अधिक मिलती है । नल एवं दमयन्ती की कथा वास्तव में केवल शृंगार रस की खान है इसमें अन्य रसों के लिए तथा नायक की धीरललित से इतर प्रकृतियों के चित्रण के लिए नायक के गुणों को क्रियाओं से ध्वनित करने के लिए कवि को वैसी घटनाओं की कल्पना करनी पड़ती है । कवियों ने इस विषय में उत्साह दिखाया भी है परन्तु अधिकांश कवि इस विषय में प्रमाद कर गए हैं । यहां नल का चरित्र अत्यन्त उज्ज्वल एवं उदात्त रूप में तथा दमयन्ती का एक विनयशील पतिव्रता के रूप में चित्रित मिलता है । प्रणय दूत हंस यहां सर्वत्र अपना कार्य सिद्ध करने में निपुण दिखाया गया है । किसी-किसी स्थल पर यही चतुर दूत सरस्वती अथवा दमयन्ती की सखी द्वारा सिखा-पढ़ाकर भेजा गया दृष्टिगोचर होता है और कहीं-कहीं वह स्वेच्छा से ही दौत्य में प्रवृत्त होता है । प्रतिनायक के रूप में अभिमानी कलि का धीरोद्धत रूप दृष्टिगोचर होता है । देवताओं का चरित्र स्वार्थ से आच्छन्न है । पुष्कर कलि के हाथों में कठपुतली बना नाचता रहता है ।

रस की दृष्टि से जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है, प्रस्तुत कथा का विविध विकास मिलता है । शृंगार के दोनों पक्षों का चित्रण इस सर्ग

१- द्रष्टव्य: प्रस्तुत निबन्ध का तृतीय तथा चतुर्थ अध्याय

साहित्य में बहुत ही ऊंचा हुआ है । श्रीहर्ष ने संयोग पक्ष को लेकर उसे सब दृष्टियों से पूर्ण बना कर प्रस्तुत किया है । विप्रलम्भ पक्ष का तो लगभग सभी ग्रन्थों में मार्मिक चित्रण मिलता है । शृंगार से भिन्न वीर,करुण आदि सभी रसों का इस साहित्य में सम्यक् आस्वादन हो जाता है

सभंग और अभंग दोनों ही प्रकार के प्रसन्न श्लेष से के प्रयोग से नलचम्पू साहित्य में शिरमौर बन गया है ।

इस प्रकार से यह साहित्य उच्चकोटि का ठहरता है । जो कुछ यमक काव्य अथवा द्विसन्धान काव्य मिलते हैं वे यद्यपि रस की दृष्टि से उतने महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु चित्र काव्यों में उनका स्थान बहुत ही ऊंचा है । `नलोदयम्` में भिन्न भिन्न प्रकार के क्लिष्ट से क्लिष्ट यमक का निबन्धन मिलता है । संस्कृत साहित्य में यमक काव्यों में वह सर्वश्रेष्ठ है । व नल चम्पू का चम्पू साहित्य में उज्ज्वल स्थान है । इस कथा का विकास अधिकत: सरल वैदर्भी रीति में ही दृष्टिगोचर होता है । वैसे श्रीहर्ष तथा वन्दारु भट्ट आदि ने इसे अन्य रूपों में भी विकसित किया है ।

इस प्रकार से यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्कृत का नलदमयन्ती साहित्य काव्य की विभिन्न दृष्टियों से बहुत ऊंचा है । क्या कथावस्तु के विकास की दृष्टि से, क्या चरित्र-चित्रण की दृष्टि से, क्या रसादि की दृष्टि से और क्या चित्रकाव्य की दृष्टि से, `भैमीपरिणयम्` नैषध, नलचम्पू तथा `नलोदय` जैसे ग्रन्थों में विकसित होने वाला यह नल दमयन्ती-साहित्य सभी दृष्टियों से उत्कृष्ट है, संस्कृत साहित्य का रुचिर तिलक है ।

-0-

परिशिष्ट--१

-०-

संस्कृतेतर भारतीय भाषाओं में

नलदमयन्ती-कथा पर

आधारित साहित्य

परिशिष्ट--१

-०-

संस्कृतेतर भारतीय भाषाओं में नलदमयन्ती-कथा पर आधारित साहित्य

दमयन्ती कथा (प्राकृत) -- यह शुभशीलगणि विरचित 'भारतेश्वर बाहुबलि वृत्ति' के अन्तर्गत आयी हुई है।[१]

दमयन्ती चरित्र (प्राकृत) -- यह हरि दामोदर वेलंकर कृत जिनरत्न-कोश का प्रथम ग्रन्थ विभाग है।[२]

दमयन्ती प्रबन्ध (प्राकृत) -- यह गद्य रूप में मिलता है।[३]

दमयन्ती प्रबन्ध (प्राकृत) -- यह पद्य रूप में मिलता है।[४]

दमयन्ती स्वयंवर (हिन्दी) -- इस नाटक के रचयिता पं०बालकृष्ण भट्ट हैं तथा इसकी रचना १८८५ई० में हुई है, इसमें १० अंक हैं।[५]

दमयन्ती स्वयंवर (हिन्दी) -- इस नाटक की रचना १८८५ ई० में चरखारी के 'गौरीशंकर भट्ट' ने की है।[६]

१- न० वि० प्रस्तावना
२- पुना भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट-१९४४ ई०
३- न० वि० प्रस्तावना
४- न० वि० प्रस्तावना
५- सनाढ्य शास्त्री--हिन्दी के पौराणिक नाटक पृ०१३४-१३५
६- सनाढ्य शास्त्री--हिन्दी के पौराणिक नाटक पृ०१३४-१३५

दवयन्ती चरितम् (प्राकृत) -- यह मल्लिनाथ महाकाव्य के अन्तर्गत आया है । इसके रचयिता विनयचन्द्र सूरि हैं ।[1]

दवदन्ती चरियं[2]

दवदन्ती कथा (प्राकृत) -- यह सोमतिलक सूरि विरचित शीलोपदेश मालावृत्ति के अन्तर्गत उपलव्य होती है ।[3]

दवदन्ती कथा (प्राकृत) -- यह जिनसागर सूरि विरचित धर्म कर्पूर प्रकर टीका के अन्तर्गत मिलती है ।[4]

दवदन्ती चरितम् (प्राकृत) -- कुमारपाल प्रतिबोध के अन्तर्गत 'दवदन्तीचरितम्' मिलता है । इसके रचयिता सोमप्रभाचार्य हैं ।[5]

नलदमयन्ती अथवा कथा नलदमयन्ती की -- (हिन्दी) इसके रचयिता जान कवि हैं । इसकी रचना दोहे, चौपाइयों में हुई है, बीच-बीच में सवैये और कवित्त भी हैं । इसका रचना-काल सन् १६६१ ई० है ।[6]

नलदवदन्ति रास (गुजराती) -- इसके रचयिता ऋषिवर्धन तथा रचनाकाल १४५६ ई० है ।[7]

नलदवदन्ती रास (अपभ्रंश) -- इसके रचयिता महीराज तथा रचनाकाल १४७६ई० है ।[8]

नलदमयन्ती चरित्र (बंगाली) -- इसके रचयिता पीताम्बर तथा रचनाकाल १५४४-४५ ई० है ।[9]

१- न०वि० प्रस्तावना

२- न०वि० प्रस्तावना

३- न०वि० प्रस्तावना

४- न०वि० प्रस्तावना

५- न०वि० प्रस्तावना

६- हिन्दी साहित्य कोश

७- हिन्दी साहित्य कोश भाग २

८- हिन्दी साहित्य कोश भाग २

९- हिन्दी साहित्य कोश भाग २

नल चरित्र (कन्नड़) -- कनकदास ने इस नाटक की रचना १६वीं शताब्दी में की है। ये जाति के गड़रिया अथवा व्याध थे।[1]

नल वेणवा (तमिल) -- पुगलेन्दि कवि ने ईसा की ग्यारहवीं शताब्दी में ४२४ कविताओं वाले इस ग्रन्थ की रचना की। यह महाभारत पर ही आधारित था।[2]

नलदमन (हिन्दी) -- फारसी के कवि फ़ैज़ी ने १६ वीं शताब्दी में इसकी रचना की है।[3]

नलचरित्रे (कन्नड़) -- चौंडरस की यह रचना चम्पू है। चौंडरस ब्राह्मण थे। इन्होंने १३०० ईस्वी सन् के आस पास इस ग्रन्थ की रचना की थी।[4]

नलचरित्र (हिन्दी) -- इसके रचयिता अथवा रचना-काल के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। संक्षिप्त [illegible] में इसकी पाण्डुलिपि मिलती है। इसकी पत्र संख्या २० है तथा यह निर्गुण भक्ति काव्य है।[5]

~~नलचरित्र (हिन्दी)~~ -- ~~इसके रचयिता अथवा रचनाकाल के विषय में कुछ भी~~

१- 'धर्मयुग' रविवार ६ जून १९६५

२- हिन्दी साहित्य कोश भाग २

३- प्रकृति और काव्य(हिन्दी मध्य युग) परिशिष्ट-४

४- साहित्य त्रैमासिक मुखपत्र

५- साहित्य त्रैमासिक मुखपत्र

नलदमयन्ती (बंगला) -- कालिदास सान्याल ने सन् १८६६ में इस नाटक की रचना की[1]।

नलदमयन्ती (हिन्दी) -- नलदमयन्ती के प्रसिद्ध कथानक को लेकर १८७६ ई० में इस गद्य-पद्यात्मक नाटक की रचना 'सोकर बापु जी त्रिलोवेकेर' ने की। नाटक में दमयन्ती स्वयंवर से लेकर दमयन्ती और नल के पुनर्मिलन तक की कथा आई हुई है[2]।

नलदमयन्ती (मराठी) -- इसके रचयिता पा कृष्ण विट्ठल शेट हैं तथा इसका रचना-काल १८८१ ई० है। इसपर किर्लोस्कर का अमिट प्रभाव है[3]।

नलदमयन्ती (हिन्दी) -- इसके रचयिता पं० बालकृष्ण भट्ट हैं[4]।

नलदमयन्ती (हिन्दी) -- इसकी रचना महावीर सिंह ने १९०५ में की थी। यह अतिप्राचारण्य नाटक है[5]।

नलदमयन्ती (हिन्दी) -- यह १९४१ ई० में विरचित डा०लक्ष्मण स्वरूप की रचना है। इसमें पाश्चात्य नाट्य शिल्प का समन्वय करने की चेष्टा की गई है[6]।

१- हिन्दी के पौराणिक नाटक,पृ०६२

२- हिन्दी के पौराणिक नाटक,पृ० ७१

३- हिन्दी के पौराणिक नाटक,पृ०७४-७६

४- हिन्दी के पौराणिक नाटक,पृ० १३४

५- हिन्दी के पौराणिक नाटक,पृ०१४२

६- हिन्दी के पौराणिक नाटक,पृ० १६६

नलदमयन्ती (हिन्दी) -- इस नाटक के लेखक कुंवरप्रताप गुप्त हैं।[1]

नल नाटक (--) -- विश्वनाथ महादेव केलकर की यह रचना में पद्य का आधिक्य है। इसका रचना काल सम्भवत: १९ वीं शताब्दी है।[2]

नल नरेश (~~हनि~~ हिन्दी) -- 'नल नरेश' महाकाव्य है। इसके रचयिता प्रतापनारायण [illegible] हैं। यह आधुनिक काल की रचना है। यह ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

नल चरितम् (प्राकृत) -- धर्मसेन गणि विरचित वसुदेवहिण्डी के अन्तर्गत गद्य रूप में नल चरित मिलता है[3]

नल चरितम् (प्राकृत) -- हेमचन्द्राचार्य विरचित त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र के अन्तर्गत यह उपलब्ध होता है[4]।

नल चरितम् (प्राकृत) -- देवविजयगणि विरचित पाण्डव चरित के अन्तर्गत नलचरित मिलता है[5]।

नलचरितम् (प्राकृत) -- गुणविजय गणि विरचित गद्य नेमिनाथ चरित के अन्तर्गत यह उपलब्ध होता है[6]।

नलदमयन्ती चरित्र (प्राकृत)[7] -- यह विनयचन्द्र की रचना है।

नल कथानक[8]

१- हिन्दी के पौराणिक नाटक, पृ०२४२-२४३
२- हिन्दी के पौराणिक नाटक, पृ०९६
३- न०वि० प्रस्तावना
४- न०वि० प्रस्तावना
५- न०वि० प्रस्तावना
६- न०वि० प्रस्तावना
७- ~~अम्बाला से सन् १९२१ में प्रकाशित~~ अम्बाला से सन् १९२१ में प्रकाशित
८- ~~न०वि० प्रस्तावना~~ फिफ्थ रिपोर्ट आफ टूर इन सर्च आफ संस्कृत मैनिस्क्रिप्ट्स बाइ डा०आर०जी० भण्डारकर।

नल चरित्र -- यह नयचन्द्र अथवा विनयचन्द्र की रचना है[1] ।

नलोपाख्यानम् (प्राकृत) -- यह देवप्रभसूरि विरचित पाण्डव चरित[2] के अन्तर्गत आया है ।

नलोपाख्यान (मराठी) -- इसके रचयिता कवि नृसिंह हैं तथा बारहवीं शताब्दी में इसकी रचना हुई है[3] ।

नैषधम् (तमिल) -- अतिवीर राम ने इस महाकाव्य की रचना की । इसी महाकाव्य के कारण अतिवीरराम की गणना तमिल साहित्य के मूर्धन्य कवियों में होती है । यह ईसा की सोलहवीं अथवा सत्रहवीं शताब्दी की रचना है[4] ।

शृंगार नैषध (तेलुगु) -- इसके रचयिता श्रीनाथ हैं जिनकी स्थिति १३६५-१४४० ई० तक मान्य है[5] ।

इसके अतिरिक्त मुनिमेघराज (१६०७ई०), नयसुन्दर(१६०८ई०), समयसुन्दर(१६१६ई०), मानसागर(१६६३ई०), भालण (१४८८ई०), नाकर(१५२४ई०) तथा प्रेमानन्द(१६७१ई० ?) ने गुजराती[6] भाषा में नलदमयन्ती वृत्तान्त पर आधारित साहित्य की सर्जना की है[7] । महाराष्ट्री में पं० रघुनाथ ने इसी विषय पर साहित्य लिखा है ।

-o-

१- लिस्ट आफ मैनुस्क्रिप्ट्स इन भंडार आफ विमलगच्छ उपाश्रय, अहमदाबाद-९(४९)
२- न०वि० प्रस्तावना
३- हिन्दी साहित्य कोश भाग २
४- इंडियन एंटीक्वेरी जिल्द संख्या ४४-१९१५
५- हिन्दी साहित्य कोश भाग २
६- न०वि० प्रस्तावना
७- न०वि० प्रस्तावना

परिशिष्ट--२

सहायक ग्रन्थ सूची

-0-

(क) नल दमयन्ती-कथा पर आधारित हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची

(ख) नलदमयन्ती-कथा पर आधारित प्रकाशित ग्रन्थों की सूची

(ग) सामान्य ग्रन्थ

(घ) अंग्रेजी के ग्रन्थ

-0-

परिशिष्ट--२

-०-

सहायक ग्रन्थ सूची

(क) नलदमयन्ती-कथा पर आधारित हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची

उत्तर नैषधम् — वन्दारुभट्ट — गवर्नमेंट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी

कल्याणनैषधम् — गवर्नमेंट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी

दमयन्तीकल्याणम् — रंगनाथ — गवर्नमेंट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी

दमयन्तीपरिणयचम्पू — गवर्नमेंट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी

(ख) नलदमयन्ती-कथा पर आधारित प्रकाशित ग्रन्थों की सूची

अनर्घनलचरित्र — सुदर्शनाचार्य — बम्बई १९०८

कथासरित्सागर — सोमदेवभट्ट — निर्णयसागर प्रेस, चतुर्थ सं०; बम्बई, १९३०

नलचरित्रम् — नीलकण्ठ सम्पादक- शंकररामशास्त्री, श्रीबालमनोरमा प्रेस, मद्रास १९२५।

नलचम्पू — त्रिविक्रमभट्ट--टीका- चंडपाल, सं० नन्दकिशोर शर्मा, चौखम्बा १९३२

नलदमयन्तीयम् — कालीपदतर्काचार्य- संस्कृत साहित्य परिषद्, कलकत्ता, १९२९।

नलविलास — रामचन्द्रसूरि --सं० जी०के० श्रीगोंडेकर तथा ल० भ० गांधी सेण्ट्रल लाइब्रेरी, बड़ौदा १९२६।

नलाभ्युदयम् वामनभट्ट वाण--संपादक-- टी गणपति शास्त्री, त्रिवेन्द्रम १९०७ ई०

नलायनम् माणिक्यदेव सूरि --यशोविजय जैन ग्रन्थमाला भावनगर, १९३८

नलोदयम् रविदेव? --प्रबोधिनी टीका--संपादक- पं० [illegible] शुक्ला- संस्कृत ज्ञानरत्नाकर प्रेस, कलकत्ता १८७०

नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष--अनु०पं० हरीश्वरनाथ भट्ट--[illegible], बनारस १९४६

बृहत्कथामंजरी

भैमी परिणयम् मंडिक्कलराम शास्त्री मैसूर, १९१४

महाभारतम् शान्तिपर्व १२, संपादक टी०आर०कृष्णाचार्य तथा टी०आर० व्यासाचार्य, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई १९०७

मंजुल नैषधम् वेंकटरंगनाथाचार्य--द्वितीय अंकनावृत्ति, मद्रास १९३२ ।

राघवनैषधीयम् हरदत्तसूरि -- द्वितीय अंकनावृत्ति- निर्णय सागर प्रेस, बम्बई १९२६।

सहृदयानन्दम् कृष्णानन्द, संपादक-- दुर्गाप्रसाद तथा वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री पांशीकर, तृतीय अंकनावृत्ति, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई १९३० ।

(ग) सामान्य ग्रन्थ

अग्नि पुराण

आधुनिक हिन्दी डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल

कविता में प्रेम और सौन्दर्य

काव्य प्रकाश मम्मट, व्याख्याकार डा० सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१, द्वितीय संस्करण, १९६० ई० ।

कूर्म पुराण एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता १८९० ।

चम्पू रामायण भोज

दशरूपकावलोक धनिक धनञ्जय--व्याख्याकार--डा० भोलाशंकर व्यास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१, द्वितीय संस्करण, १९६२ ।

देवीभागवत

नाट्यशास्त्र - भरत मुनि - टीका - अभिनवगुप्त-द्वितीय संस्करण, गायकवाड़, ओरियण्टल
जिल्द संख्या- १ सीरीज, बड़ौदा १९५६ ।

नैषधपरिशीलन डा० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल-- हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तरप्रदेश,
इलाहाबाद, प्रथम संस्करण १९६०

पद्मपुराण

ब्रह्माण्ड पुराण वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई

भागवत पुराण चतुर्थ संस्करण, गीता प्रेस

भारतीय इतिहास की जयचन्द्र विद्यालंकार--प्रथमावृत्ति-हिन्दुस्तानी एकेडमी, यु०पी० १९३३
रूपरेखा, जिल्द सं०१ लाकर पाठशाला प्रेस, इलाहाबाद ।

मत्स्य पुराण

मार्कण्डेयपुराण

माध्यन्दिन शतपथ वेदार्थप्रकाश टीका-- प्रथम भाग-- लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
ब्राह्मण --

लिंग पुराण

वायु पुराण वेंकटेश्वर मुद्रणालय, बम्बई

वाल्मीकि रामायण निर्णय सागर प्रेस

विष्णु पुराण वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई

वैदिक इण्डेक्स मैक्डानल तथा कीथ -- अनु० रामकुमार राय, प्रथम संस्करण,
चौखम्बा, १९६१ ।

संस्कृत साहित्य का बलदेव उपाध्याय -- शारदा मंदिर, बनारस, पंचम संस्करण
इतिहास १९५८ ।

संस्कृत कवि दर्शन	भोलाशंकर व्यास
स्कन्दपुराण	
साहित्यदर्पण	विमला -- व्याख्याकार-शालग्राम शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, चतुर्थ संस्करण, १९६१
हिन्दी महाभारत का परिशिष्टांक	सम्पादक [illegible] पाण्डेय, इंडियन प्रेस, प्रयाग, १९३९ ।
हिन्दी नाट्य दर्पण	संपादक- डा० नगेन्द्र, डा०दशरथ ओझा तथा डा० सत्यदेव चौधरी, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९६१ ।
हिन्दी काव्यादर्श	व्याख्याकार रणधीर सिंह- ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली